CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विष्णुदास कविकृत

रामायन कथा

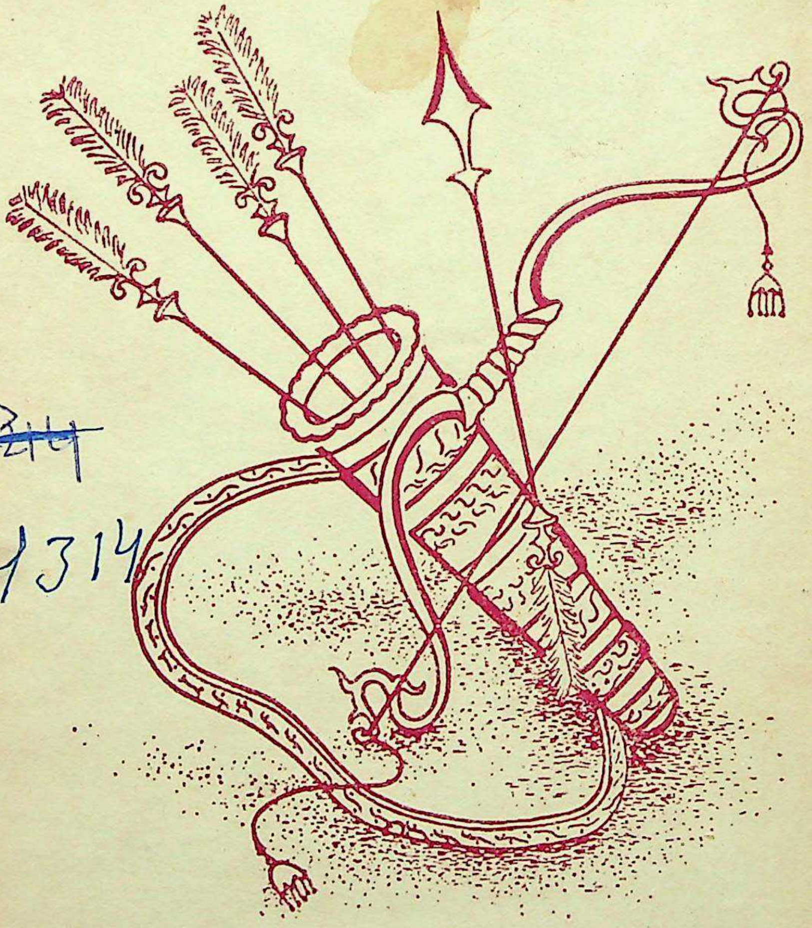

~~प्रदेश~~
4314

सम्पादन

पं. लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

4314

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विष्णुदास कविकृत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रामायन कथा

[१४४२ ई० का कथाकाव्य]

सम्पादन

पं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी

संशोधन एवं भूमिका

डॉ० भगीरथ मिश्र

आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

सागर विश्वविद्यालय

प्रकाशन

साहित्य भवन (प्रा०) लिमिटेड, इलाहाबाद

कृते बुन्देलीपीठ, हिन्दी विभाग

सागर विश्वविद्यालय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
प्रकाशक—बुन्देलीपीठ की ओर से
साहित्य भवन (प्रा०) लिमिटेड, इलाहाबाद

4314

मूल्य—१०·०० विद्यार्थी संस्करण
१४·०० सजिल्द

State Museum Library Lucknow

© *बुन्देलीपीठ, हिन्दी विभाग*
सागर विश्वविद्यालय

मुद्रक
श्री विष्णु आर्ट प्रेस,
ऋषिकुटी, चक, इलाहाबाद।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाको रूपु न सकौं बखानि।
हंस चढ़ी ता पुस्तक पानि॥
ता पहँ विष्णुदास वरु लह्यो।
सरस बुद्धि रामायनु कह्यो॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषयानुक्रम

भूमिका	डॉ॰ भगीरथ मिश्र	पृ॰	६	से	३६
प्रस्तावना	पं॰ लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी	,,	३६	से	५३
रामायन कथा	मूल पाठ	,,	१	से	२४६

—o—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

डॉ० भगीरथ मिश्र

4314

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१—रामकाव्य का विकास

राम के चरित्र को लेकर लिखे गये साहित्य की एक वहुत लम्बी परंपरा है। इस परंपरा का प्रारंभ कुछ लोग वेदों से करते हैं और वेदों में राम कथा का रूप देखते हैं, परन्तु यह बात मान्य नहीं हो सकती, क्योंकि राम उतर वैदिकाल के महापुरुष हैं—वैदिककाल के नहीं। वैदिक साहित्य के अन्तर्गत 'राम' शबद कहीं कहीं मिलता है, परन्तु उसका अर्थ दशरथ के पुत्र राम से नहीं, वरन् अन्य व्यक्तियों से है।[1] राम वैदिक कालीन व्यक्ति न होने से यह स्वाभाविक है कि वेदों में उनका उल्लेख न हो। इसके साथ ही वाल्मीकि तथा अन्य कुछ राम-कथाओं में यह भी उल्लेख है कि राम ने अपने विद्याध्ययन के प्रारंभ में वेदों का अध्ययन किया। जब राम ने स्वयं ही वेदों का अध्ययन किया, तो वेदों में उनके चरित्र का विवरण कैसे प्राप्त हो सकता है ? अत: वैदिक साहित्य में रामकथा को ढूँढना व्यर्थ प्रयास है।

राम-काव्य की आदि रचना वाल्मीकि रामायण ही है। कुछ लोग बौद्ध जातक कथाओं को रामायण की कथा का मूल मानते हैं। वौद्ध जातक कथाओं में दशरथ जातक, अनामकं जातकम् तथा चीनी त्रिपिटक के अंतर्गत दशरथ कथानम् है। इनमें राम के चरित्र को एक प्राचीन चरित्र के रूप में प्रकट किया गया है जिसमें राम का उससे बहुत पूर्व होना और उनके कथानक का अति प्रख्यात होना स्पष्ट होता है। यह प्रख्याति वाल्मीकि रामायण के द्वारा ही संभव जान पड़ती है। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि रामायण की कथा उस समय खूब प्रचलित होती, तो उपर्युक्त जातकों के अंतर्गत इतनी संक्षिप्त और अनाकर्षक तथा कहीं अमर्यादित रूप में वह क्यों मिलती है ? इसका पहला कारण तो यह है कि ये तीनों ही प्रसंग-कथायें भारत से वाहर की हैं 'दशरथ जातक' 'जातक कट्ठवण्णना' नामक पुस्तक में ही मिलती है जो पाँचवीं शताब्दी ईसवी की एक सिंहली पुस्तक का पाली अनुवाद है। सिंहली होने के कारण इसमें मुख्य प्रसंग रामरावण युद्ध का अभाव है और इस अभाव का दूसरा कारण अहिंसापरक बोद्ध दृष्टिकोण है। सीता इस कथा में राम की बहिन हैं

१—देखिये डॉ० कामिल बुल्के : रामकथा-उत्पत्ति और विकास, पृ० ४,५।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और उनसे राम का विवाह करना, आर्य या भारतीत परंपरा के अनुसार संभव नहीं। दक्षिण में कहीं कहीं पहली (बड़ी) लड़की उसके मामा को ब्याही जाती है और हो सकता है कि सीता को राम की बहिन शान्ता को लड़की के रूप में देखा गया हो अथवा सिंहली संस्कृति में इस प्रकार की विवाह-प्रथायें अमर्यादित न मानी जाती हों। इस प्रकार वाल्मीकि रामायण के मुख्य प्रभावक्षेत्र से दूर की कथा होने के कारण इसमें विकृति है। साथ-ही-साथ इसमें लोककथा के समान मुख्य कथा की अनभिज्ञता का भी स्वरूप स्पष्ट होता दीखता है।

अनामकं जातकं और दशरथ कथानक, ये दोनों ही चीनी स्रोतों से प्राप्त हैं। अतएव इनमें भी मूल और मुख्यकथा का विवरण अप्राप्त है। बौद्ध साहित्य मूलतः दार्शनिक और धार्मिक साहित्य है। विस्तृत प्रबंध बुद्ध को छोड़कर अन्य महापुरुषों को नायक रूप में ग्रहण कर नहीं लिखे गये। इसी कारण से रामायण और महाभारत की कथाओं का प्रभाव उसपर नहीं दीखता। फिर भिन्न धार्मिक दृष्टिकोण होने के कारण भी इन कथाओं को प्रश्रय नहीं मिला।

इसके विपरीत जैन रामकथायें अपने पौराणिक विस्तार से युक्त रूप में मिलती हैं। उनमें रामकथा के पूरे विवरण हैं, पर जैन मतानुसार उनका संकलन और आकलन किया गया है। फिर भी इनमें प्रायः कुछ नामों और घटनाओं के हेरफेर से वाल्मीकि रामायण की कथा का पूरा विस्तार प्राप्त होता है।

जैन रामकाव्य का स्वरूप

रामकाव्य संबंधी अनेक कृतियाँ जैन-काव्य-परम्परा में प्राप्त होती हैं। इनमें राम कथा का काफ़ी विस्तार है, परन्तु इनमें राम का स्वरूप जैन दृष्टि-कोण से प्रस्तुत किया गया है। जैन रामकथाओं में सबसे पृथक "विमलसूरि" द्वारा रचित "पउम् चरियम्" है। विमल सूरि नागिल वंशीय स्थविर आचार्य शतप्रभ के शिष्य थे। "पउम् चरियम्" की रचना वीर संवत् ५३० या विक्रम संवत् ६० में हुई थी। श्री राम को जैनाचार्य पद्म के नाम से पुकारते हैं। इसलिए 'पउम् चरियम्' संस्कृत के पद्म चरितम् का रूप है। विमल सूरि का यह ग्रंथ बड़ी सुन्दर विशद शैली में लिखा गया है। इस ग्रंथ का रामकथा के अतिरिक्त साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, एवं भाषाशास्त्रीय महत्त्व भी है। आगे चलकर दिगम्बर आचार्य जिनसेन ने इस ग्रंथ का "पद्म पुराण" नाम से संस्कृत में अनुवाद प्रस्तुत किया। मूल रूप में यह ग्रंथ प्राकृत में है।

प्राकृत में रामकथा को प्रस्तुत करने वाला दूसरा ग्रंथ "वसुदेव हिण्डी" गुणाढ्य की बृहत कथा के अनुकरण पर लिखा गया ग्रंथ है। यह दो खण्डों में है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहले खण्ड के प्रणेता संघदास गणि वाचक हैं और दुसरे खण्ड के रचयिता धर्मसेन गणी महत्तार है। पहले खण्ड की भाषा जैन प्राकृत है, और दूसरे की भाषा मागधी शौरसेनी है। प्रथम खण्ड छठी शताब्दी और दूसरा अनुमानतः सातवीं शताब्दी में लिखा गया। इसमें कृष्ण की कथा भी काफ़ी विस्तार से है, परन्तु प्रथम खण्ड के ५-७ पृष्ठों में रामकथा का संक्षिप्त वर्णन है जो महत्त्व का है। इसके उपरान्त नवीं शताब्दी में शीलाचार्य ने 'चउपण्ण महापुरिष चरियम्' की रचना की यह रामकथा विमल सूरि की परम्परा में होते हुए भी वाल्मीकि रामायण से काफ़ी प्रभावित जान पड़ती है। इसके उपरान्त प्राकृत में दशवीं शती विक्रमी के लगभग आचार्य भद्रेश्वर सूरि ने कहावली नामक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ के अन्तर्गत लगभग २३ हजार छंदों में रामायण की कथा का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसके वाद प्राकृत में लिखे ग्रंथों के भुवनतुंग सूरि कृत सिया चरियम् तथा राम-लखन चरियम् जैसे ग्रंथ हैं।

प्राकृत के अतिरिक्त जैन रामकाव्य संस्कृत भाषा में भी प्राप्त होता है, जिसमें रामकथा का खण्डशः एवं विस्तार से वर्णन मिलता है। इन ग्रंथों में सब से पहला ग्रंथ रविषेणकृत "पद्म चरित" आठवीं शताब्दी विक्रमी में लिखा गया। नवीं शताब्दी में गुणभद्र कृत 'उत्तर पुराण' लिखा गया। इनके अतिरिक्त कालक्रमानुसार संस्कृत में जैन रामकाव्य की निम्नलिखित रचनाएँ देखी जा सकती हैं।

दशवीं शताब्दी में हरिषेण के कथाकोष में "रामायण कथानकम्" तथा "सीताकथानकम्" प्राप्त होता है। इन पर वाल्मीकि रामायण का प्रभाव है, यद्यपि ये विमल सूरि की परम्परा में हैं। बारहवीं शताब्दी में जैनाचार्य हेमचन्द्र कृत '**त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरितम्**' के अन्तर्गत रामायण की कथा प्राप्त होती है। इसी प्रकार इनकी योगशास्त्र की टीका में सीता रावण उपाख्यान मिलता है। सोलहवीं शताब्दी में पद्मदेव विजयगणि कृत राम-चरित लिखा गया और लगभग इसी समय सोमसेन कृत रामचरित की भी रचना हुई। इनके अतिरिक्त आचार्य सोमप्रभ तथा मेघविजयगणिवर कृत लघु त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित के अन्तर्गत रामकथा का वर्णन मिलता है। इसके उपरान्त भी राम और सीता के चरित से सम्बन्धित अप्रकाशित ग्रंथ प्राप्त होते हैं।

जैन राम कथाओं की दो परम्परायें मिलती हैं। एक परम्परा विमल सूरि की है, और दूसरी परम्परा गुणभद्र कृत उत्तर पुराण की है। गुणभद्र कर्नाटक के निवासी थे और जिनसेन के शिष्य थे। इनका उत्तरपुराण नवीं शताब्दी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के अन्त में लिखा गया है। उत्तरपुराण में रामकथा विमल सूरि और वाल्मीकि के कथानक से बहुत भिन्न है। इस कथा-परम्परा की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें सीता, रावण और मन्दोदरी की पुत्री के रूप में हैं। इसका सम्बन्ध वसुदेव हिण्डी द्वारा प्रस्तुत रामकथा से जोड़ा जा सकता है। इन दोनों ही परम्पराओं की कथा को लेकर अपभ्रंश में जैन रामकाव्यों की रचनाएँ हुईं। अपभ्रंश के जैन राम साहित्य के अन्तर्गत दो काव्य ग्रंथ विशेष रूप से महत्त्व के हैं—(१) स्वयंभू कृत पउम चरिउ और (२) पुष्पदंत्त कृत महापुराण। 'पउम चरिउ' आठवीं और नवीं शताब्दी के बीच की रचना है और महापुराण दशवीं शताब्दी की। स्वयंभू के विवरण से कीर्तिधर और चतुर्मुख नामक दो अन्य रामकवियों का परिचय मिलता है, पर उनके सम्बन्ध में अधिक बात नहीं होती। पंद्रहवीं शताब्दी के आसपास रइधू पदमपुराण या बलभद्र पुराण का उल्लेख मिलता है, परन्तु अपभ्रंश साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्रोत दो ही हैं: पउम चरिउ और महापुराण।

इन जैन राम कथाओं में रामकथा की बहुत सी ऐसी बातें हैं जो जैनेतर संस्कृत रामकथाओं से भिन्न है। इनमें अवतारवाद की भावना नहीं है और अन्य भी अनेक बातें अलौकिक न हो कर अधिक तर्कसंगत हैं। उदाहरण के लिए स्वयंभू कृत पउम चरिउ में रावण को दशानन इसलिए नहीं कहा गया कि उसके दस मुख थे, वरन् इसमें एक दूसरा कारण दिया गया है। वह यह है कि बचपन में रावण खेलते-खेलते एक भांडार में पहुँच गया। वहाँ से उसे एक हार मिला जिसमें नौ मणियाँ जड़ी हुई थीं। इस हार को उसने पहन लिया जिसके कारण प्रत्येक मणि में उसके मुख का प्रतिविम्ब दिखलाई पड़ता था। इसके कारण उसे दस सिर या दसमुख कहने की परम्परा चल पड़ी। इसी प्रकार से अनेक बातें हैं जो कि जैन कथाओं में हिन्दू रामकथाओं से भिन्न हैं। स्वयंभू कृत पउम चरिउ की कथा पुष्पदंत्त कृत महापुराण की कथा से भिन्न है। फिर भी दोनों में ही राम कथा के वर्णन बड़े रोचक हैं। दोनों कथाओं में कुछ विशिष्ट भिन्नता की बातें इस प्रकार हैं। स्वयंभू की कथा में भरत कैकेई के पुत्र हैं और लक्ष्मण सुमित्रा के, परन्तु पुष्पदंत्त की कथा में लक्ष्मण कैकेई के पुत्र कहे गये हैं। राम की माता का नाम स्वयंभू ने अपराजिता और पुष्पदंत्त ने सुबला दिया है। स्वयंभू ने सीता को जनक की पुत्री माना है जैसा वाल्मीकि रामायण में है परन्तु पुष्पदंत्त ने सीता को रावण और मन्दोदरी की कन्या के रूप में लिखा है। स्वयंभू के अनुसार राम का विवाह एक ही हुआ जब कि पुष्पदंत्त के अनुसार आठ विवाह हुए। राम के बनवास का प्रसंग स्वयंभू में है पर

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुष्पदंत्त में नहीं है। इसी प्रकार सीता की अग्निपरीक्षा का प्रसंग भी पुष्पदंत्त ने नही रक्खा, पर स्वयंभू की रचना में इसका प्रसंग है।

जैन कथाओं में अनेक बातें जैन धर्म के अनुकूल हैं, जैसे राम के बनगमन पर दशरथ की मृत्यु नहीं हुई, वरन् उन्होंने जैन धर्म स्वीकार कर सन्यास ले लिया। इसी प्रकार अनेक प्रसंगों में जैन मुनियों से राम को सहायता प्राप्त हुई। इन कथाओं में सूर्पणखा का नाम चन्द्रनखी है और वह खरदूषण की पत्नी है। हनुमान खर और सुग्रीव दोनों के दमाद थे, अतः खर के मारने पर वह राम से रुष्ट हुए तथा वालि के मारने पर प्रसन्न हुए। हनुमान द्वारा लंकादहन का प्रसंग जैन रामायणों में नहीं है। स्वयंभू रामायण में सुन्दरकांड नाम पड़ने का कारण दिया गया है। वह यह है कि हनुमान के अनेक नामों में एक सुन्दर भी था और सुन्दर कांड में हनुमान का अधिक वर्णन होने से उसका यह नाम पड़ा।

इन जैन राम कथाओं में वाल्मीकि रामायण की अपेक्षा अनेक अन्य कथाएँ भरी पड़ी हैं जो इसमें नहीं मिलतीं और ऐसे अनेक नाम आते हैं जिनका उल्लेख वाल्मीकि परम्परा में नहीं है। साथ ही जहाँ इन कथाओं में अनेक नये वर्णन बड़े सुन्दर और विशद रूप से प्रस्तुत किए गये हैं, वहीं वाल्मीकि रामायण में प्राप्त अनेक मर्मस्पर्शी प्रसंग इन कथाओं में नहीं मिलते हैं। सीता विवाह का प्रसंग श्वयंभू ने संक्षेप में दिया है, परन्तु पुष्पदंत्त ने इसका वर्णन बड़े विस्तार से किया है। विवाह के बाद वाराणसी उपवन में राम, सीता, लक्ष्मण तथा रनिवास की उद्यान-क्रीड़ा का पुष्पदंत्त ने बड़ा सुन्दर और रमणीय वर्णन किया है जो अन्य रामायणों में नहीं मिलता। जबकि श्वयंभू रामायण में राम बनवास का प्रसंग बड़ा मार्मिक है। राम की बनवास यात्रा में स्वयंभू ने वन के प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से किया है। इसी प्रकार अनेक स्थल हैं जिनका इन दोनों कवियों ने अपने ढंग से मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया है जो वाल्मीकि परम्परा के काव्यों में नहीं मिलता।

(क) संस्कृत में रामकाव्य

संस्कृत साहित्य में रामकाव्य की बहुत लम्बी और सुदीर्घ परम्परा है। इस परम्परा को हम ३ रूपों में देख सकते हैं। (१) पुराण साहित्य में रामकाव्य (२) प्रबन्ध काव्यों में रामकाव्य और (३) नाट्य साहित्य में रामकाव्य। इन सभी प्रकारों के राम साहित्य का मूल स्रोत आदि कवि वाल्मीकि कृत रामायण है। यद्यपि वाल्मीकि रामायण की कथा का पूर्ण स्वरूप इन सभी ग्रन्थों में नहीं मिलता और अपने-अपने ढंग से विभिन्न ग्रन्थों में घटनाओं और प्रसंगों का

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समावेश हुआ है, फिर भी मूल प्रेरणा वाल्मीकि कृत रामायण से ही प्राप्त हुई है। वाल्मीकि-रामायण, आदि काव्य और रामकथा का मूल स्रोत मानी जाती है। इस ग्रंथ के रचनाकाल के सम्बन्ध में विद्वानों में काफ़ी मतभेद है। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् श्लेगेल, इसकी रचना का समय ई० पू० ग्यारहवीं शताब्दी मानते हैं। साथ ही डॉ० याकोवी इसे छठी और आठवीं शताब्दी ई० पू० के बीच की कृति स्वीकार करते हैं। डॉ० कीथ इसे चौथी शताब्दी ई० पू० की रचना मानते हैं तथा डा० विन्टरनिट्स तीसरी शताब्दी ई० पू० इसका रचना काल स्वीकार करते हैं। कुछ विद्वान् इसे बुद्ध के बाद रची हुई मानते हैं और इसीलिए इसकी रचना तीसरी शताब्दी ई० पू० से पहले स्वीकार नहीं करते, परन्तु वाल्मीकि रामायण में कहीं भी बुद्ध जैसे महापुरुष का उल्लेख नहीं है। उनका जैसा कवि जो राम के चरित्र पर मुग्ध हो सकता है, बुद्ध के करुणामय चरित्र से अप्रभावित रहें, ऐसी कल्पना नहीं की जा सकती। अतएव वाल्मीकि रामायण का रचनाकाल युद्ध के प्रादुर्भाव से पहले है। इससे अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण आदि काव्य माना जाता है और इस नाते भी इसकी रचना काफ़ी प्राचीन समय में होनी चाहिए। इसके साथ ही बौद्ध त्रिपिटक में रामकथा के प्रसंगों का उल्लेख है, अत: यह संभव है कि इन प्रसंगों का प्रत्यक्ष या परोक्ष स्रोत वाल्मीकि रामायण रहा हो। अतएव वाल्मीकि रामायण ई० पू० ग्यारहवीं बारहवीं शताब्दी के आसपास लिखी गई, यही स्वीकार करना चाहिए।

वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ मिलते हैं : (१) दाक्षिणात्य पाठ (२) गौड़ीय पाठ (३) पश्चिमोत्तरीय पाठ। इन तीनों पाठों में थोड़ा बहुत अन्तर मिलता है। गौड़ीय और पश्चिमोत्तरीय पाठ में अधिकांश साम्य है। अन्तर कम है। अतः ये दोनों ही उदीच्य या उत्तरीय पाठ के दो भिन्न रूप माने जा सकते हैं। दाक्षिणात्य पाठ अधिक प्रचलित है, इसमें और उत्तरीय पाठों में कहीं-कहीं काफ़ी अन्तर है। कुछ प्रसंग दाक्षिणात्य पाठ में ऐसे हैं जो उत्तरीय पाठों में नहीं मिलते।

वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ होते हुए भी इसमें राम का चरित्र अत्यन्त उदात्त, विशद और विस्तृत रूप में वर्णित है। इतने विस्तार से इस चरित्र का वर्णन करनेवाला और कोई ग्रन्थ नहीं है, यद्यपि आगे चलकर रामकथा को लेकर अत्यन्त विस्तृत पुराण और काव्य लिखे गये। फिर भी रामायण के विस्तार को कोई नहीं प्राप्त कर सका। आज भी रामायण का पाठ एक सामाजिक और धार्मिक दृष्टकोण से भारत के विभिन्न भागों में किया जाता है। प्रचलन और प्रचार की दृष्टि से इसके समकक्ष आनेवाले दो ही ग्रन्थ है (१) श्रीमद्भागवत और (२) रामचरित मानस।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कालक्रम की दृष्टि से रामकथा को प्रस्तुत करनेवाला दूसरा ग्रन्थ महाभारत है। महाभारत रामायण के बाद का ग्रन्थ है, क्योंकि रामायण में महाभारत के चरित्रों का उल्लेख नहीं मिलता। जबकि महाभारत में न केवल रामकथा, वरन् वाल्मीकि कृत रामायण का भी उल्लेख मिलता है। कुछ लोगों का विचार है कि महाभारत का पूर्व रूप भारत, रामायण से भी पहले का है और रामायण की रचना भारत और महाभारत के बीच में हुई है। और उसका कारण यह बताते हैं कि पाणिनि आदि के ग्रन्थों में भारत का निर्देश मिलता है रामायण का नहीं। पूर्णतः इस मत को सत्य मान लेना सम्भव नहीं है क्योंकि उसका कारण यह हो सकता है कि रामायण की कथा मौखिक रूप में प्रचलित रही हो और उसके वर्तमान लिखित रूप में आने का समय बाद का हो। पर महाभारत में निश्चित रूप से रामायण का उल्लेख है ही। महाभारत के स्वर्गारोहण पर्व के छठे अध्याय में रामायण का उल्लेख इस प्रकार मिलता है:–

वेदे रामायणे पुण्ये भारते भारतवर्षभे।
आदौचान्तेच मध्येच हरिः सर्वत्र गीयते॥

इससे स्पष्ट है कि रामायण की रचना महाभारत के पहले की है।

महाभारत में रामकथा का वर्णन कई स्थलों पर है और अनेक उल्लेख भी उसके मिलते हैं, परन्तु सबसे अधिक विस्तृत रामोपाख्यान है जो लगभग ७०४ श्लोकों में है। इसके अतिरिक्त आरण्यक पर्व में राम की कथा है तथा द्रोण पर्व और शान्ति पर्व में भी राम-कथा का वर्णन है। आरण्यक पर्व में राम का स्वरूप अवतारी स्वरूप है। रामोपाख्यान मार्कण्डेय मुनि द्वारा युद्धिष्ठिर के शोकातुर होने पर कहा गया है। महाभारत का रामोपाख्यान प्रायः रामायण के आधार पर है। यद्यपि अनेक स्थलों पर रामोपाख्यान में रामायण के प्रसंगों से भिन्नता दिखलाई देती है, फिर भी मूल आधार रामायण का ही है। कुछ भिन्नताएँ इस प्रकार हैं—रामोपाख्यान में सीता जनक की औरस पुत्री हैं। इसमें गुह तथा अत्रि का उल्लेख नहीं है। कैकेई को केवल एक वर मिला। सुग्रीव के साथ मित्रता के प्रसंग में राम के बल की परीक्षा इसमें नहीं होती। हनुमान औषधि नहीं लाते, क्योंकि लक्षमण के शक्ति लगने का वृत्तान्त इसमें नहीं है। रामोपाख्यान में सीता की अग्नि-परीक्षा भी नहीं होती। ऐसे छोटे मोटे परिवर्तन इसमें मिलते हैं जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि महाभारत का रामोपाख्यान रामायण के प्रचलित मौखिक रूप पर आधारित है।

इसके उपरान्त रामकथा का रूप अधिकांशतः पौराणिक और धार्मिक

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दृष्टिकोण से प्राप्त होता है ऐतिहासिक दृष्टिकोण से नहीं। राम को अवतार मान कर उनके प्रति दास्य भक्ति भावना का उल्लेख अगस्त्य संहिता, कलि राघव, बृहद् राघव, राघवीच संहिता, रामपूर्वतापनीय उपनिषद् रामोत्तर तापनीय उपनिषद्, रामरहस्योपनिषद् आदि ग्रंथों में मिलता है। डॉ० वेकर जैसे विद्वान् इनका रचनाकाल ग्यारहवीं शताब्दी मानते हैं, परन्तु राम के अवतार रूप की प्रतिष्ठा इसके पहले ही हो चुकी थी जैसा कि महाभारत के उल्लेखों से स्पष्ट है। अतः इनका रचनाकाल पहले मानना चाहिए। इन ग्रंथों में राम की अवतार-भावना की प्रतिष्ठा की गयी और इसी परम्परा में जो अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं उनमें प्रमुख यह है—अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, अद्‌भुत रामायण, सत्योपाख्यान, भुशुंडी रामायण, महारामायण, हनुमत संहिता, राघवोल्लास, रामगीत गोविन्द और आगे चलकर संगीत रघुनन्दन आदि ग्रंथ आते हैं। इनके अतिरिक्त अनेक पुराण हैं जिनमें राम के चरित्र का उल्लेख हुआ है। जिन महापुराणों में रामचरित्र का वर्णन आया है वे हैं विष्णु पुराण, वायु पुराण, भागवत् पुराण और कूर्म पुराण। इनका रचनाकाल क्रमशः चौथी, पाँचवीं, छठी और सातवीं शताब्दी माना जाता है। इनके अतिरिक्त वाराह, अग्नि, लिंग, वामन, ब्रह्म, गरुड, स्कन्ध, पद्‌म, ब्रह्मवैवर्त, पुराणों में भी रामकथा का विवरण प्राप्त होता है। साथ-ही-साथ अनेक उप पुराण भी हैं, जिनमें रामकथा के समग्र रूप के अथवा कुछ प्रसंगों के उल्लेख मिलते हैं। रामायण नामधारी भी अनेक ग्रन्थ हैं, जैसे—मूल रामायण, ब्रह्मरामायण, महारामायण, मन्त्र रामायण, लोमश रामायण, अगस्त रामायण, मंजुल रामायण, सौहार्द रामायण, सौर्य रामायण, चान्द्र रामायण, स्वायंभू रामायण, सुब्रह्म रामायण, सुवर्चस् रामायण, देव रामायण, श्रवण रामायण, दुरन्त रामायण, आदि आदि। इस धार्मिक और पौराणिक साहित्य का विकास सत्रहवीं शताब्दी के पश्चात् रसिक सम्प्रदाय के रूप में विशेष रूप से हुआ। संस्कृत, हिन्दी एवं अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं में प्राप्त असंख्य रामकथाओं को देखकर गोस्वामी तुलसीदास की उक्ति सत्य जान पड़ती है जो इस प्रकार है :—

"हरि अनन्त हरिकथा अनन्ता।

और— 'रामायण सतकोटि अपारा"

इसी रामकथा की विशाल परम्परा का संक्षिप्त दिग्दर्शन यहाँ पर कराया जा रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काव्य ग्रंथों में रामचरित

संस्कृत में रामकथा संबंधी महाकाव्य एवं प्रबन्ध काव्य

संस्कृत के महाकाव्य, प्रबन्ध काव्य आदि के रूप में लिखे गये रामकाव्य ग्रंथ प्रायः वाल्मीकि रामायण पर आधारित हैं और कथानक की दृष्टि से कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन उनमें नहीं मिलता।[1] सबसे पहला महाकाव्य जिसमें रामचरित का उल्लेख है वह कविकुलगुरु कालिदास का रघुवंश है। इस महाकाव्य में केवल राम का चरित्र ही नहीं, वरन् पूरे रघुवंश का वर्णन है। इसके अन्तर्गत रामकथा का वर्णन दसवें से पन्द्रहवें सर्ग तक हुआ है जिसका आधार वाल्मीकि रामायण है। इसमें अलौकिक घटनाओं का भी काव्योचित रूप में उल्लेख है और उनमें वाल्मीकि रामायण से बहुत थोड़ा ही अन्तर है।

इसके पश्चात् छठी शताब्दी के लगभग प्रवरसेन कृत प्राकृत रचना **रावणवहो** नाम से प्राप्त होती है जिसमें पन्द्रह सर्गों के अन्तर्गत राम रावण का युद्ध और उससे सम्बंधित घटनाओं का वर्णन है। इसका आधार भी मुख्यतः वाल्मीकि रामायण है। एक आध सर्ग पउम् चरियम् पर आधारित जान पड़ते हैं।

छठी-शताब्दी के आसपास भट्टिकाव्य अथवा रावण वध नामक ग्रन्थ की रचना की गयी यह ग्रन्थ बाईस सर्गों में है और इसमें राम कथा के साथ साथ व्याकरण के नियमों का भी संकेत किया गया है। ईसमें वाल्मीकि रामायण के उत्तर कांड को छोड़कर अन्य काण्डों की कथा का विवरण मिलता है। इस पर कुछ शैव प्रभाव दिखलाई देता है फिर भी राम का ब्रह्मत्व स्पष्ट है। कथा में वाल्मीकि रामायण की अपेक्षा छोटे मोटे भिन्न तथा नवीन वर्णन मिलते हैं। ग्यारहवाँ सर्ग बिलकुल भिन्न है जिस पर प्राकृत के **रावणवहो** का प्रभाव जान पड़ता है।

इसके उपरान्त जो रामकथा को लेकर प्रसिद्ध ग्रंथ मिलता है वह है कुमारदास-द्वारा रचित "जानकी हरण"। इसकी कथा भी रामायण के प्रथम छः काण्डों पर आधारित है। थोड़ा बहुत परिवर्तन इसमें अवश्य मिलता है पर इसकी मुख्य प्रवृत्ति शृंङ्गारिक जान पड़ती है। यह ग्रंथ पच्चीस सर्गों में समाप्त हुआ है।

नवीं शताब्दी विक्रमय में लिखा हुआ अभिनन्दकृत रामचरित छत्तिस सर्गों में विस्तृत है। इसका भी आधार वाल्मीकि रामायण ही है। इसके रचयिता

---

१. देखिए रामकथा : डॉ० कामिल बुल्केल के (द्वि० संस्करण) पृष्ठ १६१.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभिनन्द ने इस ग्रन्थ की रचना गौड़ देश के पालवंशीय राजकुमार हरिवर्ष की प्रेरणा से की थी। अतः रामायण के गौडीय पाठ का इस पर प्रभाव है, फिर भी वाल्मीकि रामायण से कई स्थानों में भिन्नता है और कुछ सर्गों पर शृंगारिक प्रभाव दिखलाई देता है।

ग्यारहवीं शताब्दी विक्रमी के अन्तिम भाग में संस्कृत के प्रसिद्ध कवि क्षेमेन्द्र ने ५३८६ श्लोकों में वाल्मीकि रामायण का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत किया जो 'रामायण मंजरी' नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह रामायण पश्चिमोत्तरीय पाठ के आधार पर है। इन्हीं काश्मीरी क्षेमेन्द्र-द्वारा **दशावतार चरितम्** की भी रचना की गयी जिसके अन्तर्गत २९४ छन्दों में रामकथा नये ढंग से प्रस्तुत की गई है। इसमें रावण की तपस्या, वर-प्राप्ति और सीता को पुत्री रूप में ग्रहण करने की इच्छा का प्रारम्भ में वर्णन है और उसके उपरान्त थोड़े बहुत परिवर्तनों से जिसमें व्यक्तियों के नाम परिवर्तन विशेष रूप से दिखाई पड़ते हैं, रामायण के आधार पर शेष राम चरित का वर्णन किया गया है। इसमें राम के स्वर्गारोहण तक की कथा वर्णित है। इसके उपरान्त साकल्य मल्ल नामक कवि ने चौदहवीं शताब्दी के आसपास 'उदार राघव' नामक रामकाव्य की रचना की यह रचना १८ सर्गों में है इसकी कथा भी वाल्मीकि रामायण के अनुसार है, परन्तु यह रचना आलंकारिक और शृंगारिक वर्णनों से परिपूर्ण है।

पन्द्रहवीं शताब्दी में वामन भट्ट बाण (अभिनव बाणभट्ट)—द्वारा लिखित 'रघुनाथ चरित' नामक ग्रन्थ मिलता है जो तीस सर्गों में समाप्त हुआ है। सत्रहवीं शताब्दी में चक्र कवि द्वारा "जानकी परिणय" की रचना हुई जिसमें सीता के विवाह तक का वर्णन आठ सर्गों में किया गया है। इसके उपरान्त संवत् १६६५ में 'रामलिंगामृत' की रचना हुई इसके लेखक अद्वैत नामक कवि थे। यह भी एक विस्तृत ग्रंथ है जिसका प्रारम्भ रावण चरित्र से होता है। यह ग्रंथ अठारह सर्गों में समाप्त हूआ है और इस पर भक्ति और शृंगार दोनों का ही काफ़ी प्रभाव है।

इसके उपरान्त संवत् १६८२ में लिखित इन्हीं अद्वैत कवि की रचना 'राघवोल्लास' नाम से प्राप्त होती है यह रचना अद्वैत कवि ने काशी में की थी जैसा कि इसके बारहवें सर्ग के १६८वें श्लोक से स्पष्ट हे जो इस प्रकार है।

अद्वैत नाम प्रविहाय कामान् करोति काश्यामनिशं निवासम् ॥
यद्वाक्यपीयूषरसेनसिक्ताः श्रमैर्विमुक्ता जनता भवंति ॥

इस ग्रन्थ में जो परम् हंस परिव्राजकाचार्य दिगम्बर अद्वैत द्वारा लिखा गया है, राम के अवतारी रूप का बड़े विस्तार से वर्णन है। यद्यपि यह ग्रन्थ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संस्कृत में है, तब भी इस पर रामचरित मानस के दृष्टिकोण का बहुत बड़ा प्रभाव है। इस काव्य में राम के जन्म से लेकर विवाहोपरान्त अयोध्या वापिस आने तक की कथा है। इसके वर्णन रोचक, भाषा सरल और सुबोध तथा विवरण भक्ति भावना से परिपूर्ण है। ग्रन्थ की समाप्ति भक्ति भावना के साथ होती है। इस ग्रंथ की एक हस्तलिखित प्रति ''इण्डिया आफिस लन्दन'' से प्राप्य है, पर यह खंडित प्रति है। यह प्रतिलिपि संवत् १६८२ में की गई। प्रतिलिपि-कार का नाम है—''मानसाहि कायस्थ''। इस ग्रन्थ की रचना बनारस में हुई जैसा कि निम्नलिखित श्लोक से प्रगट है।

वाराणस्यां शिवस्थाने मानसाख्ये सरोवरे।
अद्वैतेन कृतम् काव्यं सीताकान्त नियोगतः ॥१७२

इससे स्पष्ट होता है कि इस ग्रंथ की रचना राम की प्रेरणा या किन्ही सीताकान्त के आदेश से हुई।

इस ग्रंथ में सुमित्रा से कथा कही गई है। प्रथम तीन सर्ग न होने से पता नहीं चलता कि कथा कौन कहता है। इसमें राम को परब्रह्म के रूप में चित्रित किया गया गया है। इस काव्य के अन्तर्गत रामजन्म से लेकर विवाह के उपरान्त अयोध्या लौटने तक की ही कथा कही गई है। स्थल-स्थल पर राम की स्तुतियाँ की गयी हैं। इसके लेखक का पहला नाम मुरारि था उसने वाराणसी में आकर सन्यास लिया और तब गुरु ने इसका नाम अद्वैत रक्खा। इसकी रचना राजा प्रतापसाहि के आदेश से हुई। इस ग्रन्थ का निर्माण कवि ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में किया। ये सब सूचनायें ग्रन्थ में ही मिलती है, अन्य विवरण कवि के जीवन-संबन्धी प्राप्त नहीं।

नाटक साहित्य में रामचरित

संस्कृत के नाटक साहित्य में भी राम कथा को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला परन्तु नाटकों में कथा वस्तु और प्रसंग प्रायः प्रबन्ध काव्यों से भिन्न रूप से होकर आये हैं। नाटक संवाद-काव्य होता ही है अतएव इनमें प्रायः मार्मिक प्रसंगों को लेकर रामकथा को प्रस्तुत किया गया है। अधिकांश नाटकों में श्रृंगार अथवा अद्भुत रस को विशेष महत्व दिया गया है। कालक्रम के अनुसार सबसे पहले भास कृत प्रतिमा और अभिषेक नाटक आते हैं। ''प्रतिमा'' नाटक में रघुवंश की कथा है और सीता को लक्ष्मी की अवतार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह नाटक सात अंकों में लिखा गया है। इसके अंतर्गत राम के बनवास से लेकर रावण बध तक की कथा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भास कृत दूसरा नाटक अभिषेक है। जिसके अंतर्गत वालि वध से राम के राज्याभिषेक तक की घटनाएँ वर्णित हुई हैं। इसके अन्तर्गत राम के विष्णुत्व का संकेत किया गया है। ये दोनों नाटक कालिदास के पूर्ववर्ती कहे जाते हैं।

इसके उपरान्त आठवीं शताब्दी तक और कोई रामकथा से संबंधित नाटक नहीं मिलते। आठवीं शताब्दी में भवभूति ने 'महावीर चरित' ओर 'उत्तर राम चरित' नामक दो नाटकों की रचना की इन दोनों नाटकों का कथानक एक दूसरे का पूरक है। "महावीर चरित" में विवाह से लेकर राम के राज्याभिषेक तक का कथानक सात अंकों में वर्णित किया गया है। किंचित परिवर्तनों के साथ यह वाल्मीकि की प्रसिद्ध कथा पर आधारित नाटक है।

भवभूति का "उत्तररामचरित" अत्यन्त प्रसिद्ध और ज़ोरदार नाटक है। यह करुण रस से ओत-प्रोत नाटक सीता के बनवास के कथानक का वर्णन करता है यद्यपि इसके कथानक में वाल्मीकि रामायण के कथानक से कुछ भिन्नता मिलती है। करुण रस से ओतप्रोत होते हुए भी यह नाटक दुखान्त नहीं है। क्योंकि अन्त में इसके अन्तर्गत वाल्मीकि द्वारा रचित नाटक का अभिनय होता है, जिसके परिणाम स्वरूप अयोध्यावासी दर्शक सीता के चरित्र और सतीत्व पर श्रद्धा और विश्वास प्रगट करते है, तथा सीता की निर्दोषता सिद्ध हो जाती है। उसके उपरान्त राम सीता तथा लवकुश के साथ अयोध्या वापस आ जाते हैं।

आठवीं शताब्दी के आसपास "अनंग हर्ष मातृराज" द्वारा "उदात्त राघव" नाटक की रचना हुई। जिसमें छः अंकों में बनवास से लेकर अयोध्या वापस आने की कथा दी हुई है। इस नाटक में छल-कपट आदि का विशेष स्थान है और अनेक राक्षस और राक्षसी राम हनुमान सीता आदि के रूप धर कर धोखा देने का प्रयत्न करते हैं। इस नाटक का यह पक्ष नवीन है।

ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्व दिङ्नाग द्वारा "कुंदमाला" नाटक की रचना की गई। यह नाटक भवभूति के उत्तर रामचरित जैसा नाटक है। यह पाँच अंकों में पूर्ण हुआ है, और इसमें सीता के द्वितीय वनवास से लेकर सीता-ग्रहण तक की कथा है। इसका नाम सकारण है क्योंकि तीसरे अंक में जब राम और लक्ष्मण वाल्मीकि आश्रम जाते है तो वहाँ नदी के तट पर एक कुंदमाला पड़ी मिलती है जिसे देख कर वे पहचान लेते हैं कि उस माला की रचना सीता ने की होगी। इसी कुंदमाला से सीता के निवास का परिचय मिलने का कारण इस नाटक का नाम कुंदमाला है। इसमें यह भी वर्णन किया गया है कि राम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्रौर उनकी सेना के वाल्मीकि आश्रम जाने पर सभी आश्रमवासी अदृश्य हो जाते हैं और राम जल में सीता की परछाईं देख कर मूर्छित होते हैं। इसमें कुश-लव रामायण का गान करते हैं और सीता सौगंध खाती है तथा पृथ्वी प्रगट होकर उन्हें निर्दोष होने की गवाही देती है। इस प्रकार सीता स्वीकार की जाती हैं।

दसवीं शताब्दी में और भी कई नाटक लिखे गये जिनमें से मुख्य हैं "मुरारि" कृत" अनर्धराघव" राजशेखर कृत "वाल रामायण" अज्ञात कवि कृत "हनुमन्नाटक" शक्तिभद्र कृत "आश्चर्य चूड़ामणि" इनमें कथानक सम्बन्धी अपनी विशेषताएँ हैं। हनुमन्नाटक महानाटक है। जिसमें विभिन्न रसों का वर्णन है। इसमें शृंगार की अधिकता है। "आश्चर्य चूड़ामणि" में सूर्पणखा के आने से लेकर सीता की अग्नि परीक्षा तक की कथा सात अंकों में वर्णित है। इसका भी नाम पड़ने का कारण है। राम और सीता को वनवास के समय मुनियों से एक अँगूठी और एक चूड़ामणि मिलती है जिसकी यह विशेषता होती है कि कपट वेश धारण करने वाले राक्षस अपने असली रूप में प्रगट हो जाते हैं।

बारहवीं तेरहवीं शताब्दियों में दो महत्त्वपूर्ण नाटक रामकथा को लेकर लिखे गये। प्रथम जयदेव कृत "प्रसन्नराघव" नाटक और दूसरा सोमेश्वर कृत "उल्लाघ राघव नाटक"। इन दोनों की कथाएँ सीता-राम विवाह से प्रारम्भ होती हैं, और राम की अयोध्या यात्रा में समाप्त होती हैं।

इसके बाद पन्द्रहवीं सोलहवीं शताब्दी तक अनेक नाटक लिखे गये जो अधिक प्रसिद्ध नहीं हैं इनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं: हस्तिमल्ल कृत "मैथिली कल्याण" और अंजनापवनंजय; सुभट्ट कृत "दूंतांगद", भास्कर भट्ट और विरूपाक्ष कृत उन्मत्त-राघव, व्यासमिश्रदेव कृत "रामाभ्युदय", महादेव कृत अद्भुत दर्पण, रामभद्र दीक्षित कृत जानकी परिणय आदि।

अन्य काव्य

महाकाव्य और नाटकों के अतिरिक्त अनेक फुटकल काव्य भी रामकथा को लेकर लिखे गये। इन काव्यों में एक विशिष्ट स्थान श्लेष काव्यों का है जिनमें रामकथा के साथ साथ महाभारत अथवा भागवत की कथायें श्लेष द्वारा दी गई हैं। इनमें प्रमुख ये हैं—धनंजय कृत राघव पांडवीय, कविराज माधव भट्ट कृत "राघव पांडवीय", हरिदत्त सूरि कृत राघव नैषधीय, चिदम्बर, कृत "राघव पांडव यादवीय" आदि। इनकी विशेषता एकही ग्रंथ के अनेक अर्थ देने में हैं। इनके अतिरिक्त अनेक चित्र काव्य और खंडकाव्य भी रामकथा को लेकर लिखे गये जो सामान्य महत्त्व के हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ख) आधुनिक भारतीय भाषाओं में रामकाव्य

असमिया में रामकाव्य

असमिया के काव्य का प्रारम्भ चौदहवीं शताब्दी से होता है और उसका आदि काल रामकाव्य से ही प्रादुर्भूत हुआ। सर्वप्रथम माधव कंदली की रामायण हमारे सामने आती है जो असम में राम चरित-मानस के समान ही प्रख्यात है। यह रामायण पद रूप में है इसकी रचना पन्द्रहवीं शताब्दी विक्रमी में हुई। माधव कंदली रामायण के कुल पाँच कांड ही मिलते हैं और इस पर वाल्मीकि रामायण का प्रभाव है। यह रामायण काव्य की दृष्टि से भी बड़ी सुन्दर है। माधव कन्दली को कविराज की उपाधि प्राप्त हुई थी और इनका प्रभाव परवर्ती काव्य पर काफ़ी पड़ा। असमिया में प्राप्त रामकाव्यों को चार वर्गों में बाँटा जा सकता है: (१) पद रामायण (२) गीति रामायण (३) कथा रामायण (४) कीर्तनियाँ रामायण। पद रामायण वाल्मीकि या भागवत की राम कथा पर आधारित है और विभिन्न छंदों में महाकाव्य शैली पर लिखी गई हैं। पद रामायणों के प्रमुख रचयिता माधव कंदली के अतिरिक्त शंकरदेव, माधवदेव और अनंत कन्दली हैं शंकरदेव ने "उत्तर कांड" लिखा और अनन्त कन्दली ने जीवस्तुति रामायण, महिरावण बध और पातालखंड रामायण की रचना की।

गीति रामायण में सुप्रसिद्ध कवि दुर्गावर हैं। इन्होंने माधव कन्दली रामायण के चुने हुए प्रसंगों को लेकर उन्हें भावपूर्ण गीतों में प्रस्तुत किया है। इसका रचना काल सोलहवीं शताब्दी है।

कथा रामायण लिखनेवालों में से मुख्य "रघुनाथ महन्त" हैं। जिन्होंने इसे कथा वाचक की गद्य शैली में कथा रामायण की रचना की। इन्होंने अद्‌भुत रामायण की भी रचना की। कीर्तनियाँ रामायणों में "अनन्त ठाकुर आता" का श्रीराम कीर्तन विशेष प्रसिद्ध है। इन चारों प्रकारों में रामकथा का असम में काफ़ी प्रचार है। इनके अतिरिक्त अन्य कुछ ग्रन्थ हैं—माधवदेव का बालकांड, धनंजय का गणक चरित्र, गंगारामदास का सीता बनवास, भवदेव विप्र का श्री रामचंद्र अश्वमेध, श्री चन्द्रभारती का महिरावण बध आदि।

बंगाली में रामकाव्य

बंगला साहित्य के अन्तर्गत भी प्राचीन ग्रन्थ राम साहित्य से सम्बन्धित ही हैं। सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध ग्रन्थ कृतिवास द्वारा लिखित रामायण है, जिसकी रचना सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई। कृतिवास की दूसरी रचना श्री राम पांचाली है। कृतिवास रामायण का मुख्य आधार वाल्मीकि रामायण

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का गौड़ीय पाठ है फिर भी इसके कथानक में कई स्थलों पर भिन्नता दिखलाई देती है, जिसका कारण बंगाल में प्रचलित लोकसाहित्य है। ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जो अन्य प्रदेशों की रामायणों में अथवा वाल्मीकि रामायण में नहीं मिलते और वे केवल कृतिवास रामायण में मिलते हैं। इसका कारण यही है कि उनका चयन बंगाल प्रदेश में प्रचलित लोक राम साहित्य से किया गया है। इसमें बंगाल प्रदेशीय संस्कृति तथा शैव और शाक्त संप्रदायों की भी गहरी छाप है। इस कारण से बंगाल में यह रामायण अत्यन्त लोकप्रिय है।

इसके अतिरिक्त बंगला का अधिकांश राम साहित्य अध्यात्म रामायण या अद्भुत रामायण के अनुवाद रूप में हैं। कुछ रचनाएँ ऐसी हैं जो अनुवाद न हो कर प्रायः इन्हीं ग्रंथों पर आधारित हैं। इनके अतिरिक्त रामलीला सम्बन्धित अनेक पदावलियाँ भी बंगला साहित्य में मिलती हैं जो गेय रूप में प्रचलित हैं। इन पर राधाकृष्ण पदावलियों का प्रभाव है। वास्तव में बंगाल में रामोपासना से अधिक राधाकृष्णोपासना प्रचलित रही है। इसलिए बंगला में रामकाव्य का उतना अधिक विकास नहीं हुआ जितना कृष्ण काव्य का।

उड़िया में रामकाव्य

उड़िया भाषा में रामकथा से संम्बन्धित बहुत से ग्रन्थ मिलते हैं। इसमें सब से प्राचीन रचनाएँ सिद्धेश्वर परिडा की हैं जिनका समय पन्द्रहवीं शताब्दी है। सिद्धेश्वर सारलादास के नाम से प्रसिद्ध हैं और इनकी "बिलंका रामायण" अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसकी कथा लंका युद्ध के उपरान्त राम के अयोध्या गमन से प्रारम्भ होती है। इसमें सीता महात्म्य के रूप में उड़िया प्रदेश के नारी जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। इसके उपरान्त अर्जुनदास कृत राम-बिमां (राम विवाह) नामक गीतिकाव्य की रचना हुई। इसका समय सोलहवीं शताब्दी के लगभग माना जाता है। यह ग्रन्थ विभिन्न रागरागनियों में लिखा गया है और राम विवाह से सम्बन्धित प्रसंगों का इसमें वर्णन है। यह एक उत्तम काव्य ग्रन्थ माना जाता है। सोलहवीं शताब्दी के अन्तर्गत एक लोकप्रिय रामकाव्य सम्बन्धी गीतिकाव्य "कान्त कोइली" नाम का है। इसमें सीता हरण के प्रसंग में सीता का करुणापूर्ण विलाप है। यह कृति बलरामदास कृत मानी जाती है। बलराम दास कृत "विलंका रामायण" भी इन्डिया हाउस लायब्रेरी लन्दन में प्राप्त हुई है परन्तु यह बलराम दास 'दाडीं रामायण' के रचयिता प्रसिद्ध बलरामदास से भिन्न है। कई लोगों ने "बारामासी कोइली" नामक विरह काव्यों की रचना की है। जिनमें से शंकरदास और दीनकृष्ण दास विशेष प्रसिद्ध है। उड़िया साहित्य में रामायण और अध्यात्म रामायण के अनुवाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी हुए हैं। इनमें हलधरदास कृत अध्यात्म रामायण विशेष प्रसिद्ध है। अन्य अनुवाद केवल अनुवाद न होकर उन ग्रन्थों पर आधारित स्वच्छन्द रामकाव्य हैं। उड़िया के रामकाव्य सम्बन्धी कुछ अन्य ग्रन्थ हैं: विश्वनाथ खुँटिया और भुइंया माधवदास की विचित्र रामायणें, त्रिपुरारि दास कृत "राम कृष्ण केलि कल्लोल", गोपीनाथ कवि भूषण कृत रामचन्द्र विहार, धनंजय भंज कृत रघुनाथ विलास और राम विलास उपेन्द्र भंज कृत बैदेहीश विलास और राम लीलामृत, गोपाल कवि कृत अध्यात्म रामायण, रामदास कृत रामरसामृत, कान्हुदास कृत रामरसामृत सिन्धु, पीताम्बर राजेन्द्र कृत रामलीला, यदुमणि महापात्र कृत राघव विलास, भागुणी पट्टनायक कृत रामचन्द्र विहार, केशव हरिचन्दन कृत रामचन्द्र विहार, कृष्णसिंह कृत रामायण, कृष्णचरण पट्टनायक कृत रामायण, भुवनेश्वर कविचन्द्र कृत सीतेश विलास, कपिलेश्वर विद्याभूषण कृत रामायण तथा भट्टेश्वर और वासुदेव कृत टीका रामायण। इनके अतिरिक्त भी अनेक ग्रन्थ रामकाव्य से सम्बन्धित उड़िया में लिखे गये।

मराठी में रामकाव्य

मराठी साहित्य के अन्तर्गत कृष्ण काव्य अधिक प्राचीन है। रामकाव्य अपेक्षाकृत बाद में लिखा गया। मराठी में प्राचीनतम रामकाव्य, भावार्थ रामायण है, जिसकी रचना संत एकनाथ जी ने सत्रहवीं शताब्दी में की। एकनाथ कृत भावार्थ रामायण का मुख्य आधार वाल्मीकि रामायण है परन्तु उसमें आध्यात्म रामायण का दृष्टिकोण काफ़ी अंशों में विद्यमान है; साथ ही आनन्द रामायण का भी उसमें प्रभाव है क्योंकि भावार्थ रामायण के अन्तर्गत आये हुए अनेक प्रसंग वाल्मीकि और अध्यात्म रामायण में नहीं मिलते हैं पर उनमें से कुछ आनन्द रामायण में मिल जाते हैं। किन्हीं-किन्हीं प्रसंगों में स्वयंभू कृत पउम चरिउ का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

मराठी राम साहित्य के अन्तर्गत सीता स्वयंवर को लेकर अनेक रचनाएँ लिखी गईं। इनमें से विशेष प्रसिद्ध सीता स्वयंवर सम्बन्धी रचनाएँ जिन कवियों की हैं उनके नाम ये हैं—जनी जनार्दन, बिठा रेणुका नन्दन, रामदास वेगावाई, वामन जयराम स्वामी, वडगांवकर, आनन्द तनय, गोसावीं नन्दन, नागेश और बिट्ठल।

सत्रहवीं शताब्दी के अन्तर्गत कवीश्वर मुक्तेश्वर ने संक्षेप रामायण, हनुमंताख्यान और अहिरावण वध की रचना की है। इनमें से संक्षेप रामायण विशेष प्रसिद्ध है। यह रचना ६६१ श्लोकों में पूर्ण हुई है। और इसका आधार प्रसन्न राघव और हनुमंन्नाटक है। इस रचना का कलाप क्षे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बड़ा संम्पन्न है। कथा-संक्षेप में लिखी गई है, परन्तु अभिव्यंजना अत्यन्त सुन्दर है। कवि मुक्तेश्वर एकनाथजी के नाती थे। एकनाथजी के समकालीन प्रसिद्ध रामभक्त कवि श्रीकृष्णदास मुद्गल हुए। इन्होंने सं० १६६२ में रामायण की रचना की। इनका युद्धकांड ही अभीतक प्राप्त हुआ है। इसमें ७८ अध्याय और ८००० ओवियाँ हैं। यह वीररसपूर्ण काव्य है। मुद्गल पैठन के रहनेवाले थे। शिवाजी के समय प्रत्येक किले में युद्धकांड का पाठ होता था और वीररसपूर्ण काव्य को विशेष प्रोत्साहन मिला। इसके उपरान्त समर्थ स्वामी रामदास ने लघु रामायण लिखी। यह रामायण संस्कृत वृत्त में है। इसमें भक्तिभाव और आत्म निवेदन है। करुणाष्टक में भी रामदास जी की राम के प्रति भक्ति-भावना प्रकट होती है । इसके साथ ही उन्होंने सुन्दर कांड और युद्धकांड की भी रचना की, जो बड़े महत्त्व की है। समर्थ स्वामी रामदास की शिष्या वेणा बाई देशपांडे ने भी एक रामायण की रचना की जो पाँच कांडों की है। वे कांड इस प्रकार हैं, आदि कांड, अयोध्या कांड, अरण्य कांड, किष्किंधा कांड और सुन्दर कांड। वेणावाई बाल विधवा थीं और स्वामी रामदास जी की कृपा से वे कथाकीर्तन करती थीं। स्वयं महाराज शिवाजी उनके कीर्तन को बड़े चाव से सुनते थे। स्वामी रामदास के शिष्य गिरिधर स्वामी ने भी १८वीं शती के लगभग ६ रामायणों की रचना की जिनके नाम हैं: अब्द रामायण, मंगल रामायण, छन्दों रामायण, सुन्दर रामायण, संकेत रामायण और करुणा रामायण। इनकी अपनी विशेषतायें हैं। इसके उपरान्त निरंजन माधव या माधव स्वामी ने अठारहवीं शताब्दी में राम से संबंधित तीन चार ग्रन्थों की रचना की—निरोष्ठ्य राघव, चिद्बोध रामायण, मंत्र रामायण और राम करुणामृत। निरोंष्ठ्य राघव में पवर्ग के अक्षरों का प्रयोग हीं नहीं हुआ है और इसी प्रकार रामकरुणामृत चित्रकाव्य का ग्रन्थ है। इनकी रचना चमत्कारी है। इनकी चिद्बोध रामायण अध्यात्म रामायण की टीका है। इसके बाद प्रसिद्ध महाकवि मोरोपंत ने रामायण विषयक १६००० सोलह हजार आर्या छंद लिखे और सार रामायण, मंत्र रामायण आदि १० रामायणों की रचना की। मराठी साहित्य के प्रसिद्ध कवि श्रीधर स्वामी ने भी 'राम विजय' नामक रामकाव्य की रचना ८१४७ ओवियों में की। इसमें राम की रावण पर विजय का वर्णन है। मराठी काव्य में भी अधिकांश रचनायें कृष्ण काव्य सम्बन्धी हैं। रामकाव्य पर अधिक रचनाएं उपलब्ध नहीं होती। वैसे कुछ अभंगों में भी राम काव्य लिखा गया और आधुनिक काल में रामचरित मानस के कई अनुवाद हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुजराती में रामकाव्य

गुजराती में भी रामकाव्य की अपेक्षा कृष्ण काव्य अधिक लिखा गया, परन्तु कृष्ण काव्य कथा रूप में नहीं है। चौदहवीं शताब्दी से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक छोटे मोटे पचास कवियों ने फिर भी रामकाव्य की रचना की जिनमें प्रमुख का विवरण यहाँ दिया जाता है। सर्वप्रथम असाईत कृत रामलीला के पद मिलते हैं। जो पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ के हैं। उसके उपरान्त गुजराती के प्रसिद्ध वैष्णव कवि भालण द्वारा राम विवाह और रामबालचरित नामक ग्रन्थों की रचना पन्द्रहवीं शताब्दी में हुई और सोलहवीं शताब्दी में विष्णुदास द्वारा रामायण और उत्तर काण्ड लिखे गये। मन्त्री कर्मण कृत सीता हरण, भीमकृत रामलीला-ना-पदो, भांडण बन्धाशे कृत रामायण भी सोलहवीं शती के आसपास की रचनायें हैं। इसके उपरान्त लावण्य समय कृत रावण मन्दोदरी-संवाद, उद्धव कृत सीता-हनुमान-संवाद और नाकर कृत लवकुशाख्यान भी सोलहवीं शताब्दी के अन्तिम समय में लिखी गई। सत्रहवीं शताब्दी में मधुसूदन कृत युद्धकांड, श्रीधर कृत रावण मंदोदरी संवाद, प्रेमानन्द कृत रण यज्ञ, हरिदास कृत सीता विरह, काशीसुत शेषजी कृत हनुमान चरित्र आदि रचनाओं का उल्लेख मिलता है। अठारहवीं शताब्दी के अन्तर्गत राम चरित्र, राम रक्षा, रामायण नां चन्डावला, रामस्तवराज आदि अनेक रचनाएँ मिलती हैं। आगे चलकर धीरे-धीरे इसी प्रकार की और रचनाएँ लिखी गईं। साथ-ही-साथ योगवाशिष्ठ, अध्यात्म रामायण, रामचरित मानस ादि ग्रन्थों के गुजराती अनुवाद भी प्रस्तुत किये गये हैं, फिर भी गुजरात में विशेष प्रभावशाली कृष्ण काव्य ही रहा। कृष्ण काव्य की विविध और रसमयी रचनाएँ गुजरात की संस्कृति और भावनाओं के विशेष अनुरूप सिद्ध हुईं।

पंजाबी में रामकाव्य

पंजाबी के अन्तर्गत रामकाव्य मौखिक रूप में अधिक प्रचलित रहा और पंजाब के सिक्ख गुरुओं तथा अन्य अधिकांश कवियों ने राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। फिर भी अठारहवीं उन्नीसवीं शताब्दी में रामकाव्य-सम्बन्धी कुछ रचनायें पंजाबी में प्राप्त होती हैं। इनमें से प्रसिद्ध रचना श्री रामलभाया आनन्द दिलशाद की पंजाबी रामायण है। यह रामायण बड़ी प्रभावशाली है और इसमें रामकथा के अन्तर्गत प्राप्त मानव जीवन के तत्वों कों बड़े प्रभावशाली और लोकग्राही रूप में प्रगट किया गया है। इसमें सभी रसों का वर्णन है। इस रामायण के अन्तर्गत विशेष महत्त्वपूर्ण और मार्मिक वर्णन बारह मासों का है यह बारह मासा चित्रकूट से लौटकर आने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाले भरत के दुखमय जीवन को स्पष्ट करने वाला है। काव्य में बारहमासे की परम्परा के अन्तर्गत इसका महत्त्व पद्मावत के नागमती वियोग के समान ही समझना चाहिए । सत्रहवीं शती में सोढ़ी मेहरवान कृत रामायण एवं गोंविन्द रामायण तथा हनुमन्नाटक रचे गये ।

कश्मीरी रामकाव्य

काश्मीरी में भी काव्य की रचना काफ़ी बाद को प्रगट हुई । काश्मीरी में रामकाव्य से सम्बन्धित प्रसिद्ध रचना दिवाकर प्रकाश भट्ट या प्रकाशराम द्वारा लिखित रामावतार चरित या काश्मीरी रामायण है। इसकी रचना उन्नीसवीं शताब्दीं में हुई । काश्मीरी रामायण में समस्त काव्य शिवपार्वती-संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें दशरथ यज्ञ से लेकर सीता के भूमि-प्रवेश व राम के स्वर्गारोहण तक की कथा वर्णित है। इस कथा का मुख्य आधार वाल्मीकि रामायण है फिर भी कुछ बातें उससे भिन्न मिलती हैं जो संभवतः प्रचलित लोक कथाओं से ली गई हैं। उदाहरणार्थ सीता का मन्दोदरी के गर्भ से जन्म, रावण के चित्र के कारण सीता का त्याग, वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि और लवकुश का राम की सेना से युद्ध। इसी प्रकार की कुछ अन्य विशेषताएँ भी काश्मीरी रामायण में मिलती हैं। इसके अतिरिक्त आधुनिक युग में कई रामकाव्य लिखे गये जिनमें दो प्रमुख हैं—एक शंकर रामायण और दूसरा विष्णु प्रताप रामायण । ये दोनों ही अप्रकाशित ग्रंथ हैं । इन पर अध्यात्म रामायण और लोक गीत शैली का प्रभाव है। विष्णु प्रताप रामायण में युद्ध वर्णन का विस्तार अधिक है।

द्रविड भाषाओं में रामकाव्य

तमिळ रामकाव्य

तमिळ भाषा में रामकाव्य पर सर्वप्रथम ग्रन्थ "कम्ब रामायण" है इसके रचयिता कवि चक्रवर्ती कम्बन हैं। इन्होंने बारहवीं शताब्दी में अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "कम्ब रामायण" की रचना की थी। इसमें वाल्मीकि रामायण का आथार होते हुए भी स्वच्छन्द रीति से रामकथा का वर्णन हुआ है। कई प्रसंग ऐसे हैं जो वाल्मीकि रामायण में नहीं मिलते। कुछ लोगों का विचार है कि कम्बन के पूर्व चोल सम्राट के राजकवि ओट्टक्कुत्तर ने रामकथा लिखी थी, परन्तु उन्होंने कम्बन की सुन्दर रचना को सुनकर अपनी रचना को अग्नि में डाल दिया। कम्बन के कहने पर केवल उत्तर कांड बच गया। कुछ लोगों का कथन है कि "कम्ब रामायण" के धनुषभंग के पूर्व राम सीता का पुष्प वाटिका में मिलन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनकी निजी कल्पना है और इसका प्रभाव तुलसी कृत रामचरित मानस पर पड़ा। कम्ब रामायण का अधिकांश आधार वाल्मीकि रामायण का दाक्षिणात्य पाठ है। कम्ब रामायण बड़ी सुन्दर और सरस रचना है।

इसके अतिरिक्त तमिल में दूसरी कृति तक्कै रामायण है। जिसके रचयिता अज्ञात हैं। यह वस्तुतः कम्बारामायण का सार मात्र है। तमिल साहित्य को विशेष गौरव प्रदान करनेवाली रामायण तिरुप्पुट्टल है जिसके रचयिता भी अज्ञात हैं। श्री अरुण गिरिनादर कृत रामनालाट्टम एक सुन्दर नाटक है जिसमें सम्पूर्ण रामकथा बड़े रोचक और रमणीय ढंग से वर्णित की गयी है।

तेलुगु रामकाव्य

तेलुगु साहित्य में रामकाव्य पर बहुत से ग्रन्थ लिखे गये। कहते हैं कि तेलुगु में लगभग २०० कृतियाँ रामकाव्य पर हैं। इनमें से अधिकांश में नवीन प्रसंगों की कल्पना भी है। सर्व प्रथम रामायण द्विपद या रंगनाथ रामायण है। इसकी रचना तेरहवीं शताब्दी में हुई थी, रचयिता का नाम गोन-बुध्दा रेड्डी है। यह गेय रामायण है और प्राचीन होने के साथ ही अपने काव्य गुणों में बड़ी श्रेष्ठ कृति है। महाकवि गोनबुद्धा रेड्डी की कृति रंगनाथ रामायण तुलसी कृत रामायण के समान ही लोकप्रिय है। इस कृत का मुख्य आधार वाल्मीकि रामायण का दाक्षिणात्य पाठ है परन्तु अन्य पाठों के प्रसंग भी इसमें मिलते हैं। रंगनाथ रामायण में उत्तर कांड की कथा-वस्तु नही है अतः इसकी पूर्ति उत्तर रामायण की रचना द्वारा की गई। रंगनाथ रामायण के पश्चात् कालक्रम और उत्कृष्टता की दृष्टि से भी दूसरा प्रसिद्ध रामकाव्य है भास्कर रामायण। इसमें लंका कांड तक की रचना तो मन्त्री भास्कर द्वारा की गई है किन्तु उत्तर कांड की रचना कंकटिपायि राजु द्वारा हुई है। उत्तर कांड भी उतना ही उत्कृष्ट है जितने अन्य कांड। यह चौदहवीं शताब्दी की रचना है उसके पश्चात् सोलहवीं शताब्दी के आसपास "मोल्ला रामायण" लिखी गई। इसकी रचना करने वाली मोल्ला नाम की कवयित्री थीं जो राम की अनन्य भक्त थीं। इसकी रचना भक्ति की प्रेरणा से हुई है। इस ग्रन्थ की रचना करते समय कवयित्री को रामकथा के दृश्य स्वयं दृष्टिगोचर होते थे। यह अत्यन्त सरस रचना है।

इसके उपरान्त अठारहवीं शताब्दी में अनेक रचनाएँ रामकथा को लेकर लिखी गई हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं : आलुरिकुप्पन कवि कृत रामायणमु, गोपीनाथ व्यंकट कृत गोपीनाथ रामायणमु, तथा अध्यात्म रामायणमु, संपूर्ण

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामायणमुं, शतकंठ रामायणमुं, कोक्षगुंड रामायणमुं, विचित्र रामायणमुं आदि भी लिखी गई हैं। इसके अतिरिक्त वालमीकि रामायण और कम्ब रामायण के अनुवाद भी तेलुगु में हुए तथा उत्तर रामायण और उत्तर रामचरित जैसी कृतियों की रचना भी हुईं। आधुनिक युग में कवि सम्राट विश्वनाथ सत्य नारायण द्वारा रचित रामायण कल्पतरु अत्यन्त प्रसिद्ध काव्य है। तेलुगु भाषियों में राम भक्तों की संख्या काफ़ी अधिक है इसीलिए इस क्षेत्र में रामकाव्य का भी प्रचुर विकास हुआ।

कन्नड रामकाव्य

कन्नड भाषा में राम काव्य काफ़ी प्राचीन काल से मिलता है। १०वीं शताब्दी विक्रमीय से अन्तिम चरण में कन्नड के प्रसिद्ध कवि पोन्न द्वारा "भुवनैक्य रामाभ्युदय" नामक ग्रन्थ की रचना हुई। यद्यपि यह प्राप्य नहीं है फिर भी विद्वानों का मत है कि यह एक पौराणिक काव्य है। यह जैन कवि की रचना है। इसके उपरान्त १२वीं शती के लगभग नागचन्द्र नामक जैन कवि ने 'रामचन्द्र चरित्र पुराण' की रचना की। यह ग्रन्थ प्रसिद्ध कन्नड महाकवि पम्प द्वारा रचित महाभारत के आदर्श पर लिखी गयी। इस कारण नागचन्द्र को अभिनव पम्प और उनकी रामायण को "पम्प रामायण" भी कहा जाता है। इसका आधार विमलसूरि कृत "पउम चरिउ" प्रधानरूप से है। जैन रामकथाओं के अनुसार श्रीराम जैनधर्म के शलाका पुरुषों में आठवें बलदेव माने गये हैं। इसमें रावण का भी चरित्र बड़ा उच्च अंकित किया गया है। यह एक चम्पू काव्य है।

इसके पश्चात् चौदहवीं शती में कुमुदेन्दु मुनि नामक जैन कवि ने कुमुदेन्दु रामायण की रचना की। इसकी कथा जैन परम्परा में ही ढली है। इस रचना में पांडित्य प्रदर्शन अधिक है और कवित्व कम। आगे चलकर चौदहवीं शताब्दी के उपरान्त जैन, वीरशैव आदि का प्रभाव कम हुआ और भागवत धर्म का प्रभाव बढ़ा। उस समय रामायण और महाभारत की कथाओं को लेकर अनेक उत्तम काव्य लिखे गये। इस समय का प्रसिद्ध ग्रन्थ है "तोरवे रामायण"। इसकी रचना वीजापुर जिले के तोरवे ग्राम के निवासी कुमार वाल्मीकि ने की थी। इनका असली नाम नरहरि था, पर वाल्मीकि रामायण का आधार ग्रहण करने के कारण इन्हें कुमार वाल्मीकि कहा जाता था। यह एक भक्त थे, अतः तोरवे रामायण पर भी भक्ति भावना का प्रचुर प्रभाव है। इसकी भाषा शैली बड़ी ही सरस है। नरहरि रचित दूसरा ग्रन्थ है अहिरावण-वध, पर वह उतना सुन्दर ग्रन्थ नहीं।

सत्रहवीं शती में तिम्मरस नामक कवि ने "मार्कण्डेय रामायण" की रचना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की। यह एक काफ़ी बड़ा ग्रन्थ है। इसमें मार्कण्डेय मुनि युधिष्टिर को राम-कथा सुनाते हैं। इसका आधार महाभारत का रामोपाख्यान है। अठारहवीं शती में अनेक रामकाव्यों की रचना हुई जिनमें प्रमुख हैं :–निजगुणाचार्य कृत अद्वैतरामायण, चन्द्रशेखर तथा पद्मनाभ कृत रामचन्द्रचरित्र, तिम्मामात्य रचित रामाभ्युदय कथा कुसुममन्जरी अथवा आनन्द रामायण, देवचन्द्र रचित राम-कथावतार, वेंकामात्य कृत रामायण, तथा अज्ञात कवियों द्वारा रचित शंकर रामायण और मूलक रामायण, हरिदास कृत मूल बाल रामायण, अज्ञात कवि कृत जिन रामायण आदि। इनके अतिरिक्त आधुनिक काल में भी अनेक रामकाव्य कन्नड भाषा में लिखे गये हैं।

सम्पूर्ण रामचरित को लेकर लिखे गये काव्यों के अतिरिक्त कन्नड में रामचरित को लेकर अनेक खंडकाव्यों की भी रचना हुईं। इनमें से अधिक महत्त्व पूर्ण ग्रन्थ हैं :—नारायण कृत उत्तर-रामकथे, हेलवनकट्टे गिरियम्मा कृत सीता-कल्याण, अलिय लिंगराज कृत कुशलव-कालग, रामोदय कथे, बनवास-रामायण, बालिसुग्रीव-कालग, सीताकल्याण आदि पैंतालिस खंडकाव्य, शांत-कवि कृत सीतारण्य प्रवेश, नजन गूडु सुव्बाशास्त्री कृत सीता-चरित्रे, सुब्रह्मण्य कृत हनुमद्रामायण, पुट्टण कृत पंचवटी रामायण आदि। ये ग्रन्थ प्रायः अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में लिखे गये। इनके अतिरिक्त आधुनिक युग में भी रामकथा को लेकर अनेक ग्रंथों की रचना हुई जो खंडकाव्य भी हैं और सम्पूर्ण काव्य भी। कन्नड भाषा में रामकथा को लेकर रामकाव्यों की रचना तो हुई ही, इसके अतिरिक्त जैमिनि भारत, चाउण्डराय पुराण जैसे अन्य ग्रन्थों में भी रामकथा के प्रसंग आये हैं, पर उन्हें, रामकाव्य नहीं कहा जा सकता।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कन्नड में रामकाव्य तेलुगु और उड़िया भाषा की भाँति ही खूब फला फूला। विशेष बात यह है कि कन्नड के रामकाव्य में बाल्मीकि की परम्परा पर ही नहीं, वरन् जैन रामकथाओं की परंपरा पर भी बहुसंख्यक काव्य रचे गये।

मलयालम का रामकाव्य

मलयालम साहित्य के अन्तर्गत प्राचीन काल से ही रामकाव्य प्राप्त होता है। कहना चाहिये कि मलयालम का प्राचीनतम ग्रंथ रामकाव्य संबंधी ही है। यह ग्रंथ हैं चीरामन (श्रीरामन) द्वारा विरचित रामचरितम्। यह ग्रंथ १२वीं शती में लिखा गया। कुछ विद्वानों के मतानुसार ये तिरुवितांकुर के राजा थे, पर इसका कोई निश्चित प्रमाण नही है। इसके पश्चात् चौदहवीं

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शती में कण्णश्श पणिक्कर ने सम्पूर्ण रामकथा को लेकर "कण्णश्श रामायण" की रचना की। इस ग्रंथ का आधार वाल्मीकि रामायण है। पन्द्रहवीं शती में पूनम नम्बूतिरी ने मणिप्रवाल शैली में "रामायण चम्पू" की रचना की। संस्कृत मिश्रित मलयालम में गद्यपद्य मय शैली का यह एक सुन्दर काव्य है।

इसके उपरान्त सोलहवीं शताब्दी में "अध्यात्म रामायण" की रचना हुई जो मलयालियों में सब से अधिक लोकप्रिय ग्रंथ है। इसके रचयिता थे महाकवि तुंजत्तु ऐषुतच्छन्न। इसी प्रकार सत्रहवीं शती में अध्यात्म रामायण के आधार पर "पाट्टू" शैली में सम्पूर्ण रामायण कीर के मुख से कहलाया गया है जो किलि पाट्टू नाम से (कीरगीत) प्रख्यात है। यह अत्यन्त लोकप्रिय है। इसी समय के आसपास "इरुपत्तिनाल वृत्तम्" नाम से चौबीस वृत्तों (छंदों) में रामायण लिखी गयी। यह एक अत्यन्त भव्य काव्य है। इसके उपरान्त अठारहवीं शती में राजा केरल वर्मा द्वारा रचित "केरल वर्मा रामायण" है जो एक प्रसिद्ध ग्रंथ है। इनके अतिरिक्त कुछ अनुवाद ग्रंथ भी मलयालम में रामकाव्य पर प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार मध्यकाल में भारतीय भाषाओं में वहुविध एवं असंख्य राम-काव्यों की रचना हुई। इनके अन्तर्गत आध्यात्मिक एवं काव्यगत दोनों ही प्रकार के दृष्टिकोण प्रस्फुटित होते हैं।

२—हिन्दी राम काव्य और विष्णुदास कृत रामायन-कथा

हिन्दी-साहित्य का आरंभ ग्यारहवीं शताब्दी से माना जाता है। रामायन-कथा के लेखक विष्णुदास का समय १५वीं शताब्दी है। इस बीच की अवधि में हिन्दी में रामकाव्य-संवंधी ग्रन्थों का विशेष रूप से उल्लेखनीय प्रणयन नही हुआ। हिन्दी-रामकाव्य का प्रकाश स्तंभ रामचरित मानस है। रामचरित मानस का सम सामयिक और परवर्ती प्रभाव इतना व्यापक और तीव्र रहा कि लोगों ने इसके अतिरिक्त रामकाव्य की अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियों पर विशेष घ्यान ही नहीं दिया। तुलसी-परवर्ती रचनाओं पर विशेष रूप से रामचरित मानस का प्रभाव है और उनमें महत्त्वपूर्ण नाम हैं—सहजराम कृत 'रघुवंश दीपक', मधुसूदन दास कृत रामाश्वमेध, मोहन दास मिश्र कृत रामाश्वमेध, जानकी प्रसाद कृत राम रसायन, । इन ग्रन्थों का विशेष प्रचलन नहीं हुआ, इसलिए इन्हें वहुत कम लोग जानते हैं। रामचरित मानस की परंपरा इतनी प्रभावशाली हो गई कि इन परवर्ती कवियों ने भी तुलसीदास की शैली और पद्धति अपनायी। इसके अतिरिक्त आश्चर्य की बात यह है कि अधिकांश लोग यह विश्वास करते हैं कि रामचरित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मानस के पूर्ववर्ती कोई महत्त्वपूर्ण रामकाव्य नहीं लिखा गया। इसीलिए प्रस्तुत ग्रन्थ रामायन कथा के प्रकाशन का प्रयत्न किया गया है।

रामायन-कथा के रचयिता का समय सं० १४५० से १५०० वि० तक माना जा सकता है। यह समय पठान-शासकों का समय था और दिल्ली में लोदी वंश का राज्य था। वह युग राजनीतिक और सांस्कृतिक उथल-पुथल का युग था। विदेशी आक्रमणों की परंपरा समाप्त नहीं हुई थी। और पठान शासकों ओर जनता दोनों के बीच बड़ा भेद था। दोनों का एक दूसरे पर विश्वास नहीं था। शक्ति और अधिकार ही जीवन के ध्येय थे। और शासकों का प्रयत्न शक्ति संवर्धन और अधिकार-प्राप्ति में ही सीमित था। शासन-व्यवस्था प्रजा की सुख सुविधा के लिए न होकर शासकों और अधिकारियों की सुविधा के लिए थी। जिसका परिणाम यह था कि सामान्य जनों का विश्वास शासन से हटकर ईश्वर पर केन्द्रित हो गया था। यह इस युग के ईश्वरोन्मुख होने और जनता के बीच धार्मिक भावना के प्रचार, प्रसार का वहुत बड़ा कारण था। इसके परिणाम स्वरूप समाज के अंतर्गत अनेक प्रकार के धार्मिक अनुष्ठानों और उपासना-पद्धतियों का विकास हुआ और उनके भीतर अनेक प्रकार के अंधविश्वास और रूढ़ियाँ भी प्रचलित हुई। ऐसी बातों पर विश्वास बढ़ने लगा जो चमत्कारी और अलौकिक हों। इसीसे इस युग में अधिकांश साहित्य रचना भी धार्मिक और अध्यात्मिक परंपरा पर हुई।

राजनीतिक परिस्थिति की दूसरी विशेषता शासन की अस्थिरता थी। जहाँ कोई शासक दुर्बल हुआ, वहीं दूसरे सबल व्यक्ति ने उसको अपदस्थ करके अधिकार कर लिया और अपने मन के अनुसार कार्य करने लगा। शासक या सम्राट उस समय सर्वाधिकार युक्त था अतएव वह कोई भी कार्य सकता था। शासन और शासक दोनों की अस्थिरता का जन-सामान्य पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इसलिए उस समय के साहित्य में जीवन की क्षण भंगुरता का स्वर विशेष रूप से मुखरित है। लोगों के मन में इस लोक-जीवन के प्रति विशेष आस्था और विश्वास नहीं था, और वे ऐसे कार्य करना चाहते थे जिससे उनका परलोक सुधरे। इसलिए समाज के अधिकांश व्यक्ति किसी-न-किसी को अपना धार्मिक गुरु बनाते थे और उससे मंत्र और दीक्षा लेकर अपने जीवन का उद्धार करना चाहते थे। इस प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप लोगों में सन्यास भावना का विशेष सम्मान जागरित हुआ और मन्दिर, मठों के पुजारी, संत महात्माओं का विशेष रूप से आदर होने लगा। इन साधु सन्यासियों और मन्दिरों का सम्बन्ध धीरे-धीरे धार्मिक सम्प्रदायों से जुड़ गया और अनेक प्रकार से इन सम्प्रदायों का प्रभाव तत्कालीन समाज और साहित्य पर पड़ा। उस समय विशेष रूप से निराकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपासना और साकार उपासना के विभिन्न सम्प्रदाय वने। वैष्णव सम्प्रदायों के अतिरिक्त शाक्त, शैव, गाणपत्य सम्प्रदाय भी विकसित हुए जिनसे संबंधित अनेक प्रकार की समाज निष्ठाओं और साहित्यिक प्रवृत्तियों का विकास हुआ।

रामकाव्य का भी संबंध साम्प्रदायिक परंपराओं से वना और राम भक्ति को लेकर धार्मिक उपासना का विकास हुआ। परन्तु साम्प्रदायिक रामकाव्य का विकास उस युग में नहीं हुआ जिस युग में विष्णुदास का जन्म हुआ। रामकाव्य के प्रसंग में उनके समय के वाल्मीकि रामायण की वैष्णव परंपरा तथा जैन रामकाव्य की परंपरा प्रचलित थी। यहाँ यह कहना आवश्यक है कि हिन्दी रामकाव्य पर जैन परंपरा का कोई विशेष प्रभाव नहीं हुआ। जिन ग्रंथों ने हिन्दी रामकाव्य को प्रभावित किया है, वे हैं–वाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत्, अध्यात्म रामायण तथा रामोपनिषद् साहित्य। इन्हीं का आधार लेकर अधिकांश हिन्दी रामकाव्य का विकास हुआ। साम्प्रदायिक राम काव्य पर अध्यातम रामायण तथा हनुमन्नाटक का प्रभाव विशेष रूप से रहा। साम्प्रदायिक रामकाव्य अधिकांश रामोपासक रसिक सम्प्रदाय के महंतों, उपासकों की रचनाओं में दृष्टि गोचर होता है और उसका विशेष प्रसार सत्रहवीं शताब्दी और उसके उपरान्त हुआ। परन्तु सम्प्रदाय-मुक्त रामकाव्य वाल्मीकि रामायण का आधार लेकर चला।

हिन्दी रामकाव्य परंपरा के अंतर्गत राम चरित का प्रथम उल्लेख पृथ्वीराज रासो में प्राप्त होता है। रासो को यद्यपि कुछ विद्वान् महाराज पृथ्वीराज के समय अर्थात् १२वीं शताब्दी में लिखा नहीं मानते हैं और उसे १५वीं शताब्दी या उसके वाद की रचना मानते हैं। परंतु सिंघी जैन ग्रंथमाला के द्वारा प्रकाशित पुरातन प्रबंध संग्रह के वक्तव्य से यह स्पष्ट है कि चंद ने पृथ्वीराज प्रबंध और जयचंद प्रवंध नामक ग्रंथ लिखे थे, और उनके कुछ छंदों को पृथ्वी-राज तथा जयचंद को सुनाया। प्रबंध १५वीं शताब्दी से पूर्व की रचनाएँ हैं क्योंकि पुरातन प्रबंध संग्रह स्वयं १५वीं शताब्दी की रचना है।। अतः पृथ्वी-राज रासो को १५वीं शती के पूर्व की रचना माननी चाहिए।

पृथ्वीराज रासो के दूसरे प्रस्ताव में दशावतार का वर्णन है। यह दशावतार वर्णन ग्रन्थ के मंगलाचरण के रूप में कहा जा सकता है जिसे कवि ने मुक्ति दिलाने वाले 'हरि रस' में रूप में प्रस्तुत किया है। दशावतार का उल्लेख जयानक कृत संस्कृत काव्य 'पृथ्वीराज विजय' में भी है। पृथ्वीराज रासो के द्वितीय प्रस्ताव में रामावतार का वर्णन ३८ छंदों में किया गया है, जब कि कृष्णावतार का वर्णन २६३ छंदों में और नृसिंह अवतार का वर्णन ५४ छंदों में। अन्य अवतारों की कथा रामावतार से भी संक्षिप्त है। रासो के इस संक्षिप्त वर्णन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में रामकथा के जो प्रसंग आये हैं, वे हैं—परशुराम द्वारा क्षत्रियों का संहार और ब्राह्मणों को पृथ्वीदान, अयोध्या के राजा दशरथ के यहाँ राम, लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न का जन्म, कैकेयी द्वारा भरत को राज्य और राम को बनगमन का वरदान माँगना और वन में राम लक्ष्मण को पंचवटी में जाकर रहना। इन प्रसंगों का वर्णन केवल ४ छन्दों में ही पूरा किया गया है। शेष ३४ छन्दों में राम-रावण युद्ध, रावण वध और सीता के उद्धार का वर्णन किया गया है। वीर रसानुकूल होने से युद्ध का वर्णन इस ग्रन्थ में विस्तार से है। इसके अंतर्गत हनुमान, लक्ष्मण, मेघनाद, कुंभकरण आदि की वीरता का विशद चित्रण किया गया है। लक्ष्मण की वीरता का वर्णन निम्नलिखित पंक्तियों से स्पष्ट होता है, जिसमें यह भाव प्रकट किया गया है कि लक्ष्मण ने आकाश मंडल को वाणों से भर दिया है। जिसके कारण राक्षस भयभीत होकर भाग रहे हैं। पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

धरनि तरनि आकाश। वास रथ शासन रुक्किय।
दसन अंब लगि बान। धरनि बट साषन धुक्किय।
कुकिय कंत बिन कोर। सोर जोरहु चोसट्टिय।
मंत्र जप्प सब भूल। करुन करन अन दिट्टिय।
रथचारि चक्र फिरि चक्कचव। वान वृष्टि लषमन वलिय।
करि कंक संक आसुरनि डर। कहइ वत्त ता दिन कलिय।

चन्द्रबरदायी कृत दशावतार प्रसंग में राम कथा का रूप प्राय: वीर रसात्मक है।

रामकाव्य के प्रसंग में स्वामी रामानंद का व्यक्तित्व बड़ा महत्त्वपूर्ण है। उनका समय १४वीं शताब्दी का मध्यकाल मानना अधिक उपयुक्त है। रामानंद सम्प्रदाय में उनकी जन्म तिथि सं० १३५६ वि० मानी जाती है। स्वामी रामानंद के नाम से संस्कृत और हिन्दी के १७ ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। उनमें ३-४ ग्रन्थ हिन्दी के हैं। परन्तु उनके नाम से सर्वाधिक प्रचलित ग्रन्थ 'राम रक्षा स्तोत्र' है। यह ग्रन्थ राम की स्तुति और राम मंत्र के प्रभाव का वर्णन करता है। कहीं-कहीं यह झाड़-फूंक जैसा तांत्रिक ग्रन्थ मालूम पड़ता है। इसके अतिरिक्त इनके अन्य ग्रन्थ योग चिंतामणि, वेदांत विचार, रामानंद आदेश, राम मंत्र योग, रामाष्टक, ज्ञान लीला आदि हिन्दी ग्रन्थ कहे जाते है। आरती के रूप में हनुमान स्तुति भी रामानंद के नाम पर प्रचलित है। यह सिक्खों के आदि ग्रन्थ और सर्वङ्गी दोनों में मिलती है। परन्तु इनमें से किसी को प्रामाणिक मानना कठिन है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके उपरांत रामकाव्य परम्परा के अंतर्गत विष्णुदास का नाम आता है। विष्णुदास का समय सं० १४५० से १५०० वि० तक मानना चाहिए। ये ग्वालियर के रहने वाले थे। विष्णुदास श्री कर्म व्यास के पुत्र और वैष्णव भक्त थे। इन्ही के पुत्र नारायण दास थे, जिन्होंने छिताई वार्त्ता नामक ऐतिहासिक काव्य की रचना की। विष्णुदास की ४ रचनाएँ मानी जाती हैं, महाभारत कथा, रामायण कथा, रुक्मिणी मंगल, और स्नेह लीला। कुछ लोग स्वर्गारोहण और स्वर्गारोहणपर्व ये दो और ग्रन्थ इनके द्वारा रचित मानते हैं, परन्तु ये दोनों वास्तव में महाभारत कथा के अंश हैं, अलग ग्रन्थ नहीं। इनकी रचनाएँ प्रचलित बोल-चाल की भाषा में हैं जिनसे कवि की अपेक्षा इनका कथाकार का स्वरूप ही विशेष रूप से स्पष्ट होता है। महाभारत कथा महाभारत के आधार पर और रामकथा वाल्मीकि रामायण के आधार पर लिखी गयी है। रामायन कथा की रचना सं० १४९९ में हुई थी। इसमें चौपही, दोहा, छंद तथा श्लोक सम्मिलित हैं। श्लोक कुछ रामायण के हैं और कुछ अन्य। हो सकता है कि कुछ श्लोक कवि विष्णुदास द्वारा भी विरचित हों।

रामायन कथा में राम का चरित तीन काण्डों और अनेक सर्गों में विभक्त है। ये सर्ग वास्तव में विभिन्न प्रसंग हैं। इस कथा में वाल्मीकि रामायण में वर्णित प्रमुख घटनाओं और प्रसंगों को लोक-प्रचलित हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया गया है। कथानक का विकास-क्रम और सर्ग-विभाजन वाल्मीकि रामायण के आधार पर ही कुछ स्वच्छंद रीति से किया गया है। इसमें केवल तीन काण्ड ही-बालकाण्ड, सुन्दरकाण्ड और उत्तरकाण्ड है। बालकाण्ड में प्रारंभ से किष्किधा-काण्ड तक की कथा है। सुंदरकाण्ड में राम राज्याभिषेक तक की कथा तथा उत्तर-काण्ड में राक्षसवंश और राम स्वर्गारोहण की कथा कही गयी है। वह कथा बड़ी रोचक है तथा उत्तम, सरल और सुगम रीति से कही गयी है। आलंकारिक शैली का प्रयोग बहुत कम है। इसकी यह विशेषता है कि इसके छंद बोलचाल की गद्य भाषा के काफ़ी निकट है। हिन्दी साहित्य में राम-कथा को लेकर इतना विस्तृत काव्य विष्णुदास के पूर्व नहीं मिलता। इस दृष्टि से विष्णुदास की रामायन कथा का बहुत बड़ा महत्त्व है। इनके वर्णन मनोग्राही और कथा-प्रवाह अबाध सरल और स्पष्ट हैं।

कुछ लोग काल-क्रम के विचार से रामायन कथा को तुलसी और जायसी के प्रबंध-काव्यों का प्रेरक मानते हैं। परन्तु इसे स्वीकार करना कठिन इसलिए जान पड़ता है क्योंकि तुलसी और जायसी की शैली और दृष्टि कोण—दोनों विष्णुदास की रामायन कथा से भिन्न हैं। रामायन-कथा वास्तव में कथाकाव्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है, जब कि तुलसी और जायसी की रचनाएँ महाकाव्य की गरिमा से मण्डित हैं। इन परवर्ती दोनों रचनाओं में जो कवित्व और वस्तु तथा चरित्र के अन्वेषण की गहरीं दृष्टि है, वह रामायन कथा में नहीं। रामायन कथा का महत्व राम के संपूर्ण चरित्र का लोक-प्रिय सुगम-रीति से वर्णित करना है। यह वर्णन कथा प्रवाह और सीधी लोक-भाषा शैली के कारण स्वयं इतना प्रभावी है कि पाठक और श्रोता कथारस और चरित्र में विभोर हो जाते हैं। इसमें भक्ति भावना भी है, पर वह भक्ति-भावना तुलसी और सूर वाली भक्ति-भावना नहीं। वह जनसामान्य की आस्थावाली भक्ति है।

रामकथा में दार्शनिक दृष्टि कोण का अभाव है। परन्तु बीच-बीच के वर्णनों से समाज , संस्कृति लोकनीति और व्यवहार का बड़ा सुंदर ज्ञान प्राप्त होता है। राम राज्याभिषेक के प्रसंग में अभिषेक का विशद वर्णन है। इस प्रकार इस ग्रन्थ का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्त्व अक्षुण्ण है। सबसे विशिष्ट इस का महत्त्व-भाषा संबंधी है, जो अपने सहज लोक-प्रचलित रूप में विद्यमान है और सम सामयिक भाषा का एक प्रामाणिक स्वरूप प्रस्तुत करती है।

इस प्रकार हिन्दी के प्रथम रामकाव्य और कथाकाव्य के रूप में विष्णुदास कृत रामायन कथा को प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष है। मुझे विश्वास है कि इसका प्रकाशनोंपरांत सम्यक् अध्ययन और अनुशीलन होगा, और उस परंपरा की गरिमा उद्घाटित होगी, जिसकी हिन्दी राम-काव्य-माला में यह पहली मणि के समान सुशोभित है। विष्णुदास की शैली में कथाकाव्य लिखने को आज भी आवश्यकता है।

'रामायन कथा' की पाण्डुलिपि पं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी जी ने तैयार की थी, पर उनके आकस्मिक स्वर्गवास से उसका सम्पादन भली भाँति न हो सका उनका रामायन कथा पर एक लेख मध्यभारती में प्रकाशित हुआ था, उसे ही यहाँ प्रस्तावना के रूप में दिया जा रहा है।

भगीरथ मिश्र
सागर विश्वविद्यालय

मकर संक्रांति,
१५ जनवरी १९७२।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रस्तावना

पं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विष्णुदास और उनकी रामायन-कथा

विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी में मध्यप्रदेश के गोपालगढ़ (ग्वालियर) के निवासी कविवर विष्णुदास जी हो गये हैं, जो हिन्दी-साहित्य, विशेषकर ब्रज-भाषा, के प्रवन्ध-काव्य-प्रणेताओं में अग्रगण्य और प्रशंसनीय हैं। इन्होंने श्री सूरदास और श्री तुलसीदास के एक शताब्दी पूर्व ब्रज-भाषा (गवालियरी) में कृष्ण-काव्य और राम-काव्य सम्बन्धी उच्चकोटि के साहित्य का निर्माण किया है, जो हिन्दी साहित्य के सगुण-भक्ति-कालीन-काव्य की पृष्ठ-भूमि माना जाना चाहिए।

विष्णुदास के संबंध में हिन्दी-साहित्य के प्रथम इतिहास-ग्रंथ मिश्र-बंधु-विनोद में यह संक्षिप्त उल्लेख मिलता है—

"विष्णुदास—यह कवि गोपालगढ़ ग्वालियर में रहते थे, जो कि उस समय पाण्डव वंशी राजा डोंगरसिंह के अधिकार में था। इनका समय सं० १४९२ वि० है। त्रैवार्षिक खोज के अनुसार इनके रचे (१) महाभारत-कथा (२) स्वर्गारोहण और (३) रुक्मिणी-मंगल ग्रन्थ हैं।"

(मिश्र बंधु विनोद प्रथम भा० द्वि० सं० पृष्ठ २२४)

यथार्थ में विष्णुदास की रचनाओं की सूचना प्रथमवार सन् १९०६–८ की खोज-रिपोर्ट में प्रकाशित हुई थी। १९०६ की खोज-रिपोर्ट के निरीक्षक डा० श्यामसुन्दर दास ने विष्णुदास की दो रचनाओं (१) महाभारत-कथा और (२) स्वर्गारोहण की सामान्य-सूचना दी थी। दोनों पुस्तकें दतिया के राजकीय पुस्तकालय में सुरक्षित बतलाई गई थीं। महाभारत-कथा में स्वयं कवि ने रचनाकाल का उल्लेख किया है, जिसके आधार पर रिपोर्ट में उन्हें सन् १४३५ ई० में वर्त्तमान कवि कहा गया है। (सर्च रिपोर्ट १९०६–८ पृष्ठ ९२ नं० २४८)। महाभारत कथा और स्वर्गारोहण की पाण्डु-लिपियों के विवरण से ज्ञात हुआ किये क्रमशः सन् १७६७ और १७७५ ई० की लिखी हुई हैं। महाभारत की पाण्डुलिपि २४ पंक्तियों के ७९ पत्रों की पुस्तक है, जिसमें २५११ श्लोक आते हैं। स्वर्गारोहण में २० पंक्तियों के १५ पत्र हैं, श्लोक सं० ४१८ है (सर्च रिपोर्ट पृष्ठ ३२४-३२६ सं० २४८ ए० और बी०, पृष्ठ २५२)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके पीछे सन् १९१२ ई० की खोज-रिपोर्ट में पुन: विष्णुदास के बारे में सूचना प्रकाशित की गई। इसमें विष्णुदास के रुक्मिणी-मंगल का भी विवरण दिया गया। तदनन्तर सन १९२६-२८ की खोज-रिपोर्ट में विष्णुदास की रचनाओं का नया विवरण प्रकाशित हुआ। इसमें रुक्मिणी-मंगल के साथ विष्णुदास कृत स्नेह-लीला का भी उल्लेख किया गया। इसमें रुक्मिणी-मंगल की विस्तृत सूचना देते हुए लिखा गया कि यह कृष्ण और रुक्मिणी के विवाह का मंगल-काव्य है, जिसमें भक्ति और शृंगार का समन्वय किया गया है। स्नेह-लीला में श्रीकृष्ण-द्वारा उद्धव जी को ब्रज में ज्ञान-योग का संदेश देने भेजा जाना और उनका अनन्य गोपी-प्रेम से अत्यन्त प्रभावित हो, ज्ञान-गर्व भूलकर लौटने और गोपियों की अत्यधिक प्रशंसा करने लगने का सरस वर्णन है। फिर सन् १९२९-३१ की सर्च रिपोर्ट में विष्णुदास की सूचना चतुर्थ बार प्रकाशित की गई; जिसमें महाभारत-कथा, स्वर्गारोहण और स्वर्गारोहण-पर्व नाम की रचनाओं का उल्शेख किया गया है। इस प्रकार खोज-रिपोर्ट में विष्णुदास के विषय में चार बार सूचनाएँ प्रकाशित हो चुकी थीं। हिन्दी-साहित्य के इतिहासकारों ने उस समय से आज तक विष्णुदास की रचनाओं को पढ़ने-पढ़ाने या इतिहास-ग्रन्थों में उनका उल्लेख तक करने की ओर ध्यान नहीं दिया।

कुछ वर्ष पूर्व सन् १९५५ ई० में मध्यदेशीय भाषा और ग्वालियरी के विद्वान् अन्वेषक पं० हरिहर प्रसाद जी द्विवेदी ने प्रसंग-वश पुन: विष्णुदास के विषय में लिखा और प्रथम बार विष्णुदास के विषय में विशेष अध्ययन की ओर ध्यान दिलाया। ब्रज-भाषा के पूर्व नागरी के साहित्यिक परिनिष्ठित रूप का नाम ग्वालियरी था और ग्वालियर में ही उसका निर्माण हुआ था, इस मत की स्थापना करते हुए द्विवेदी जी ने विष्णुदास का उल्लेख प्रसंगवश तीन चार स्थानों पर किया है। उन सबको संकलित कर उन्हीं शब्दों में निम्नलिखित परिचय दिया जाता है—

'सन् १४२४ ई० में डूँगरेन्द्रसिंह ग्वालियर के अधिपति हुए। डूंगरेन्द्रसिंह ने अपने राज्य की सीमाओं को भी अधिक विस्तृत किया। साथ ही साहित्य और कला के क्षेत्र में भी वीरमदेव की परम्परा को उसने आगे बढ़ाया। हम पहले लिख चुके हैं कि संगीत की डागुरवाणी इन्हीं डूँगरेन्द्रसिह के आभीरों से निकट सम्पर्क का प्रसाद है। गोस्वामी विष्णुदास के विष्णुपद तथा रुक्मिणी-मंगल के गेय-पद ध्रुवपद के रूप में प्रवाहित होने लगे थे। गेय-पद-लेखक के अतिरिक्त हिन्दी-प्रबंध-काव्यों के भी विष्णुदास पन्द्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के बहुत बड़े रचयिता हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी में हिन्दी में प्रबन्ध-काव्य-लेखक नाम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को भी नही मिलते। यह एक दुखद घटना है कि यद्यपि विष्णुदास के ग्रन्थों का पता खोज-रिपोर्ट में सन् १९१२ ई० में ही लग गया था, परन्तु इनका उल्लेख हिन्दी के किसी साहित्य-इतिहास में नही मिलता। विष्णुदास ने रुक्मिणी-मंगल के गेय पदों के अतिरिक्त महाभारत-कथा, स्वर्गारोहण-कथा और मकरध्वज-कथा ग्रन्थ लिखे हैं। इनके तीन ग्रन्थ दतिया के राजकीय पुस्तकालय में हैं और दो समग्र-संग्रह ग्वालियर के श्री भालेराव जी के संग्रह में हैं। विष्णुदास ने संसार का सूक्ष्म निरीक्षण किया था और उस समय उस भाषा का निर्माण कर दिया था, जिसमें आगे हिन्दी के अनेक महाकाव्य लिखे गये। (पृष्ठ १३६-१३७) विष्णुदास यह लिखना भूल गये कि यदि उनके काव्यों का स्मरण न रखा गया, तो हिन्दी साहित्य के इतिहास भी विद्रूप हो जायँगे, फिर तुलसी के मानस की प्रेरणा का मूल्य दिखाई देगा, मलिक मुहम्मद जायसी के कलाम में! विष्णुदास का पद-साहित्य उनके रुक्मिणी-मंगल में प्रचुर परिमाण में पाया जाता है। इनके पदों में भाषा तथा भावों का जो रूप मिलता है, वह स्पष्ट घोषित करता है कि उसकी परम्परा कम-से-कम दो सौ वर्ष पहले की है। राग-रागिनियों में बंधे हुए ये पद मध्यप्रदेश की संगीत-परम्परा के पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रथम चरण तक के विकास के सुन्दर उदाहरण हैं। कबीर का रचना-काल विष्णुदास के पश्चात् का ही होना चाहिए। कबीर दास और विष्णुदास की भाषा की तुलना करते समय कुछ तथ्य विशेष रूप से स्मरणीय हैं। उस समय ग्वालियर में जिस संस्कृत प्रधान शालीन और शिष्ट काव्य-भाषा का निर्माण हुआ था, उसे अंगीकार करके भी साम्प्रदायिक परिस्थितियों के कारण कबीर की भाषा डगमगाती रही। इतना अवश्य है कि कबीर की भाषा यह प्रकट करती है कि ग्वालियर में विष्णुदास और उसके पूर्व देशी-भाषा को संस्कृत-परक बनाकर जो शालीन रूप दिया गया था, उसको कबीर के समय में काशी और मगहर तक मान्यता प्राप्त हो चुकी थी।'' (पृष्ठ ८०-८२)

(श्री हरिहर निवास द्विवेदी मध्यदेशीय, भाषा, ग्वालियरी)

इसके पीछे डाक्टर श्री शिवप्रसाद सिंह ने हिन्दू विश्व-विद्यालय की सन् १९५७ ई० की पीएच० डी० उपाधि के लिये 'सूर-पूर्व-ब्रजभाषा' 'नामक जो प्रबंध प्रस्तुत किया, और जो हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी से सन् १९५८ ई० में उक्त विश्व-विद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पं० हजारी-प्रसाद द्विवेदी की भूमिका सहित प्रकाशित किया गया, उसमें प्रसंगवश विष्णु-दास के विषय में विशेष चर्चा की गई और महाभारत कथा, स्वर्गारोहण, स्वर्गारोहण पर्व, रुक्मिणी-मंगल तथा स्नेह लीला के कुछ उद्धरण दिये गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन्होंने अपने इस प्रबंध में विष्णुदास को ब्रज भाषा के संस्थापक प्रधान कवि घोषित करके उनकी रचना के विषय में निर्णय देते हुए लिखा है—

"विष्णुदास ब्रज-भाषा के गौरवास्पद कवि थे। सूरदास के जन्म से अर्द्ध शताब्दी पहले जिन दिनों ब्रज-भाषा में न तो वह शक्ति थी और न वह अर्थवत्ता, जिसका विकास अष्ट-छाप के कवियों की रचनाओं में दिखाई पड़ा, विष्णुदास ने एक ऐसे साहित्य की सृष्टि की, जिसने कृष्ण भक्ति के अत्यन्त मार्मिक और मधुर काव्य की पृष्ठ-भूमि प्रस्तुत की। विष्णुदास ने एक ऐसी भाषा का निर्माण किया, जिसे सत्रहवीं शताब्दी में भारत की सर्वश्रेष्ठ सहित्य-भाषा होने का गौरव मिला। (सूर पूर्व-ब्रज भाषा, पृष्ठ १५१-१५२)"

इन सबके देखने से अब यह स्पष्ट हो जाता है कि विष्णुदास ग्वालियर वासी, जो राजा डूँगरेन्द्रसिंह के शासन-काल में थे, हिन्दी-साहित्य के एक प्रमुख निर्माता श्रेष्ठ कवि हो गये हैं। डूँगरेन्द्रसिंह केवल ब्राह्मण विद्वानों और कवियों के ही आश्रय दाता न थे, जैन-मुनियों का भी उनके दरबार में उतना ही मान था। इनके समय में अपभ्रंश के महाकवि रइधू नामक जैनाचार्य भी थे जिन्होंने पन्द्रहवीं शताब्दी में लगभग तीस अपभ्रंश ग्रन्थों की रचना की है। रइधू के विषय में डा० हरिवंश कोछड़ ने अपने 'अपभ्रंश-साहित्य' नामक ग्रन्थ में लिखा है—

"अपभ्रंश-भाषा में सबसे अधिक रचनाएँ लिखने वाले यही कवि हैं। यह ग्वालियर के निवासी थे और वहीं तोमरवंशी राजा डूँगरेन्द्रसिंह और उनके पुत्र कीर्तिसिंह के राज्य काल में इन्होंने अपने ग्रन्थों का प्रणयन किया। इनके रचे पच्चीस से अधिक ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है, जिनमें से अनेक की हस्तलिखित प्रतियाँ अभी उपलब्ध नहीं हो सकी हैं। रइधू ने अपनी कृतियों में अपने आश्रय दाता और ग्रंथ-रचना की प्रेरणा देने वाले श्रावकों की मंगल-कामना एवं आशीर्वाद-परक अनेक संस्कृत-पद्य रचे। —रइधू के समय में आधुनिक काल की भारतीय आर्य-भाषाएँ अपनी आरंभिक अवस्था में साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण कर चुकी थीं।"

(अपभ्रंश-साहित्य, पृष्ठ २४०-२४३)

रइधू ने अपने तीन ग्रंथ—पार्श्व पुराण, पद्म-चरित और सम्यकत्व-गुण-निधान में अपने आश्रय-दाता डूँगरेन्द्रसिंह और तत्कालीन ग्वालियर का विशद वर्णन किया है। वह लिखता है कि तोमर-वंशी राजा डूँगरेन्द्रसिंह राजनीति में दक्ष शत्रुओं के मान-मर्दन में समर्थ और क्षत्रियोचित तेज से अलंकृत था। वह अन्याय रूपी नागों के विनाश में प्रवीण, पंचांग मंत्र-शास्त्र में निपुण तथा

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

असि रूपी अग्नि से मिथ्यात्व रूपी वंश का दाहक था। उसका यश सब दिशाओं में व्याप्त था। डूँगरेन्द्रसिंह ने कछवाहों से नरवर छीन लिया था। उसकी प्रधान महिषी का नाम चन्दा था, जो अतिशय रूपवती और पतिव्रता थी। उसके पुत्र का नाम कीर्तिसिंह था, जो पिता के समान ही शूर और गुणज्ञ था। डूँगरेन्द्रसिंह को अपने वैदिक सनातन धर्म के साथ-साथ जैन-धर्म पर भी आस्था थी। उसके राज्य काल में ही वे जैन प्रतिमाएँ बनना आरंभ हुई थीं, जो ग्वालियरगढ़ को चारों ओर से घेरे हैं।''

तात्पर्य यह, कि गोपाचल के तोमरवंशी क्षत्रिय-नरेश डूँगरेन्द्रसिंह के शासन-काल में ग्वालियर साहित्य और संगीत का महान केन्द्र हो गया था, जहाँ भारतीयता की सम्पूर्ण रूप से रक्षा हो रही थी। इनके समय में ग्वालियर के तोमर-राज्य की शक्ति और प्रतिष्ठा में अत्यधिक वृद्धि हुई। इसकी धाक दिल्ली के मुस्लिम लोदी, मालवे के खिल्जी और जौनपुर के शर्की भी मानते थे। काश्मीर के न्यायप्रिय स्वतंत्र मुस्लिम सुल्तान जैन-उल्-आब्दीद से उसके मैत्री-संबंध थे। कविवर विष्णुदास इन्हीं डूंगरेन्द्रसिंह के आश्रित राज-कवि थे। उन्होंने 'महाभारत-कथा' की रचना इन्हीं डूँगरेन्द्रसिंह के आग्रह से की थी। इसके विषय में विष्णुदास ने स्ययं ही लिखा है—

''चौदह सै रु बानवै आना। पंडु चरित मैं सुन्यो पुराना ॥
कातिक क्रुस्न भई तिथि आसी। वासर सुक्र सिंघ की रासी ॥

— — —

पंडु बंस तोमर धुर धीरू। डोंगरसिंह राउ बर बीरू ॥
गढ़ गोपाचल बैरिन सालू। हय गय नरपति टोडर मालू ॥
भुजबल भीम न संकै कासू। असि बर आन दिखावै त्रासू ॥
ता सिर सेत छत्र फरहरई। कोऊ समर उभारु न करई ॥
ता गुन बहुत न सकौं बखानी। कीरत सागर पर भुमि जानी ॥
तिहि तंबोल दियो कवि हाथा। पुनि पूँछे डोंगर नर-नाथा ॥
कहि कवि दास हिये धरि चाऊ। कौरो पांडौ कौ सति भाऊ ॥''
(महाभारत कथा—आदि पर्व)

विष्णुदास ने जहाँ श्रेष्ठ प्रबंध-काव्यों से हिन्दी-साहित्य का भाण्डार भरा, वहाँ उनके पुत्र नारायण दास ने भी छिताई-वार्ता की रचना-द्वारा हिन्दी काव्य साहित्य की श्रीवृद्धि की है। विष्णुदास वाली कथा-काव्य की शैली का अनुकरण ही मलिक मुहम्मद जायसी की पद्मावत और तुलसीदास के रामचरितमानस में पाया जाता है। विष्णुदास ने पिछली खोजों के अनुसार (१) महा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत-कथा (२) स्वर्गारोहण (३) स्वर्गारोहण पर्व (४) रुक्मिणी-मंगल और (५) सनेह-लीला की रचना की है। इनमें से प्रथम तीन रचनाएँ प्रायः एक ही हैं। खोज-रिपोर्ट तथा डा० शिवप्रसाद सिंह ने सूर-पूर्व-ब्रज-भाषा में महाभारत कथा का जो उद्धरण दिया है, उसमें उसका नाम कवि ने स्वयं ही स्वर्गारोहण दिया है। महाभारत-कथा में कवि ने लिखा है—

पंडो कथा सुनौ दै दानु। तिनकौ होय प्रयागै थानु ॥
स्वर्गारोहण मन दै सुनैं। नासैं पाप विष्णु कवि भनैं ॥

ये ही पंक्तियाँ 'स्वर्गारोहण' नामक रचना में लिपि-भेद से इस प्रकार दी हैं—

"वित उनमान देहि जो दाना। ताकौ फल गंगा असनाना ॥
स्वर्गारोहण मन दै सुनइ। नासै पाप विष्णु कवि भनइ ॥"

जान पड़ता है कि विष्णुदास ने पहले स्वर्गारोहण की कथा महाभारत-कथा के नाम से संक्षेप में लिखी थी और फिर उसे स्वर्गारोहण के नाम से दूसरी बार लिखी। कवि स्वर्गारोहण में स्वयं ही लिखता है—

"गणपति सुमति देहु आचारा। सुमिरत सिद्धि सो होइ अपारा ॥
भारत भाषौं तोहि पसाई। अरु सारद के लागौं पाई ॥"
अरु जो सहज नाथ बर लहऊँ। स्वर्गारोहण विस्तृत कहऊँ ॥
रात दिवस जो भारत सुनई। नासैं पाप विष्णु कवि भनई ॥"

(१) महाभारत कथा (२) स्वर्गारोहण और (३) स्वर्गारोहण-पर्व तीनों का विषय एक ही है। यहाँ इन रचनाओं के परिचय में भाषा और काव्य-सौष्ठव प्रदर्शित करने वाला गणेश-स्तुति संबंधी एक अंश विष्णुदास की महाभारत-कथा से दिया जाता है।

"प्रनवउं गवरपूत गन नाहू। सिद्धि बुद्धि बर देहु अथाहू ॥
ऊंदर चढ़यौ भवै दिन राती। विष्नुदास सुमिरै गन-पाती ॥
गजमुख एक दंत थुदियान्। बीना सानु करै रस सान् ॥
फरसा निरमल सोहै पानी। प्रनवत होहि मधुर सुर बानी ॥
सिरह सिंदूर कान मदु परियो। ता रस लोभ भ्रमर गुंजरियौ ॥
अहिनिसि द्वै वासुकि मैमंत्। सुमिरत देही बुद्धि तुरंत् ॥
ब्रह्मा सुमिरयौ स्रष्टि करंता। नागराज धर सीस धरंता ॥
हरि सुमिरयौं हिरनाकुस लागी। सुमिरत तासु गई भौ भागी ॥

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुमिरि देवि महिषासुर मारचौ । संकर सुमिरयौ त्रिपुर सँहारचो ॥
सुमिरि सु त्रिभुवन जिनै अभंगा । सुमिरि सिद्धि मुनि लही असंगा ॥
नारायन बलि छल्यौ पताला । सुमिरि देव गणवै थूँदियाला ॥
नाट्यारंभ रच्यौ जगदीसा । सुमिरैं देव कोटि तैंतीसा ॥
हीरा मुकुट नाग उर हारी । घूंघरु चलन करै झनकारी ॥
खरौ मनोहर नाचत सोहै । सुर नर नाग भवनु मन मोहै ॥
विघन हरन जो करै पसाऊ । रोगु कलंकु न छीयै काऊ ॥
सुमिरहि पुत्र कला गुन हीना । मूरख होहि चतुर परवीना ॥
जो नर सुमरहिं रन महँ जंता । ते बैरी दल जितहि अनंता ॥
भारत भाखौं ताहि पसाऊ । पुनि सारद के लागौं पाऊँ ॥
मोहहि सभा सुनत यह ख्याती । कौरव पांडव की उतपाती ।

भक्ति विनायक की करौं, पुनि सारद सिर नाइ ।
सुर रक्षक अक्षर निकर, जिन्ह तैं कथा सिराइ ॥"

(महाभारत-कथा)

रुक्मिणी-मंगल—इसमें श्रीकृष्ण-रुक्मिणी के विवाह का वर्णन वैवाहिक-काल में मांगलिक होने के नाते गाये जाने के उद्देश्य से किया गया है । हिन्दी के मंगल-काव्यों में यह गेय रचना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । भाषा और वर्ण्य विषय की दृष्टि से यह कृति विशेष अच्छी है । इसमें भक्ति के साथ शृंगार का समन्वय पाया जाता है । एक संक्षिप्त उद्धरण यहाँ दृष्टव्य है—

गुन गाऊं गोपाल के चरन कमल चित लाइ ।
मन इच्छा पूरन करौ, जो हरि होहु सहाइ ॥
भीषम नृप की लाड़ली कृष्ण ब्रह्म अवतार ।
जिनकी अस्तुति कहत हौं सुन लीजै नर-नार ॥

तुछ मति मेरी बौराई भाषा काव्य बनाई
रोम-रोम रसना जो पाऊँ महिमा बरनि न जाई ॥
सुन नर मुनिजन ध्यान धरत हैं गति किनहुँ नहिं पाई ।
लीला अपरंपार प्रभू की को करि सकै बड़ाई ॥

बिदा होत घनस्याम जू तिलक करैं कुल-नारि ।
तात मात रुक्मनि मिली अँखियन आँसू ढार ॥

— — —

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोहन महलन करत विलास
कनक मंदिर में केलि करत हैं, और कोउ नहिं पास ।।
रुक्मिनि चरन सिरावै पी के, पूजी मन की आस ।
जो चाहौ सो अंबे पावौं, हरि पति देवकि सास ।।
तुम विनु और न कोऊ मेरौ, धरनि पताल अकास ।
निसि दिन सुमिरन करत तिहारो सब पूरन परकास ।।
घट घट व्यापक अंतरजामी, त्रिभुवन स्वामी सब सुख रासि ।
विष्णुदास रुक्मिनि अपनाई, जनम जनम की दासि ।।

सनेह-लीला—इनमें श्रीकृष्ण का उद्धव को व्रज में विशेषकर विरहिणी व्रज बालाओं को कुशल-संदेश और ज्ञानोंपदेश देने के हेतु प्रेषित करने, और व्रज में जाकर व्रज बालाओं के साथ ज्ञानयोग और प्रेमयोग के संबंध में उत्तर प्रत्युत्तर से उद्धव के ज्ञान-गर्व को भूलकर प्रेम में मग्न हो गोपी-प्रेम की महिमा गाने लगने का सरस वर्णन है। यथार्थ में यह रचना श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध में वर्णित भ्रमरगीत के आधार पर रची गई है। इसमें सरसता और प्रौढ़ता दोनों प्रशंसनीय है। संक्षिप्त उद्धरण यहाँ दृष्टव्य है—

तब ऊधौ आये यहाँ कृष्णचन्द्र के धाम ।
पायँ लागि बन्दन कियौ बोलत लै लैं नाम ।।
ग्वालवाल सब गोपिका व्रज के जीव अनन्य ।
तुमहिं पायं लागन कह्यौ सुनो देव ब्रह्मन्य ।।
नन्द जसोदा हेत की कहिये कहा बनाइ ।
वे जानै, कै तुम भलैं, मोपै कही न जाइ ।।
अस गोपिन के प्रेम की महिमा कछू अनन्त ।
मैं पूंछी षट मास लौं तऊ न पायौ अंत ।।
देह गेह सब छाँड़िकै करत रूप कौ ध्यान ।
बन कौ भजन विचारिये सो बस फीकौ मान ।।
संत भक्त भूतल विषै वे सब व्रज की नारि ।
चरन सरन रहहीं सदा मिथ्या लोग विसार ।।
उनके गुन नित गाइये करि करि उत्तम प्रीति ।
मैं नाहिन देखी कहूँ व्रज-वासिन की रीति ।।
तव हरि ऊधौ सौ कह्यौ तूं जानत सब अंग ।
हौं कवहूँ छाँड़यौ नहीं व्रज-वासिन कौ संग ।।
व्रज तज अनत न जाइहौं मेरैं तो यह टेक ।
भूतल भार उतार हौं धरहौं रूप अनेक ।। (सनेह-लीला)

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कविवर विष्णुदास की उक्त रचनाओं का महत्व भाषा और साहित्य की ऐतिहासिक शृंखला की दृष्टि से अत्यन्त अधिक है। हिन्दी-साहित्य के अध्ययन-शील विवेचक डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल ने विष्णुदास के विषय में यथार्थ ही कहा है कि—

'गोस्वामी विष्णुदास सचमुच ही प्रतिभाशाली कवि ज्ञात होते हैं। उनका काव्य-संग्रह शीघ्र-से-शीघ्र प्रकाशित होना चाहिए। श्री हरिहरनिवास द्विवेदी ने ग्वालियरी भाषा के पृष्ठ १३७-३८ पर महाभारत-कथा से विष्णुदास की कविता का जो नमूना दिया है, उसकी सरल और तरंगित शैली पन्द्रहवीं सदी की उदीयमान हिन्दी भाषा की नवीन शक्ति का परिचय देती है। इस प्रकार का प्रवाह तत्कालीन हिन्दी को नए साँचे में ढाल रहा था। अपभ्रंश काव्यों में जो सक्षम और उल्लासपूर्ण शैली थी उसका समस्त ग्राह्य अंश जैसे विष्णुदास की शैली में आ गया था और इसी से आगे चलकर सूर और तुलसी की भाषा-शैली के प्रवाह का जन्म होने को था।'' (डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, ग्वालियरी भाषा, दो शब्द, पृष्ठ ११)

अद्यावधि कभी, कहीं, किसी ने भी कविवर विष्णुदास विरचित ''रामायन कथा'' का उल्लेख नहीं किया। विष्णुदास ने वाल्मीकि रामायण के आधार पर इस सात काण्डों के प्रबन्ध-काव्य की रचना की है, जिसके प्रत्येक काण्ड में अनेक सर्ग या अध्याय हैं। इसमें १० इंच × ५ इंच आकार के १७० पत्र अर्थात् ३४० पृष्ठ हैं। इसके रचना-काल के विषय में कवि ने स्वयं ही लिखा है :—

चौदह सत निन्यानव लियौ। पूनौं पवित रमायन कियौ।
गुरु वासर रेवती नछत्र। माघ मास कवि कियौ कवित्त॥

इससे यह निर्विवाद है कि विष्णुदास ने रामायन-कथा की रचना वि० सं० १४९९ माघ पूर्णिमा गुरुवार के दिन रेवती नक्षत्र में की।

सागर विश्वविद्यालय के बुंदेल-खंडी उप-विभाग में जो प्रतिलिपि खोज में प्राप्त हुई है, उसकी पुष्पिका के अंत में लिखा है—''संवत् १९२० प्रथम श्रावणे कृष्ण पक्षे तिथौ ४ शनिवासरे ता दिनं समाप्तं। आदि पथरिया जानि जै, जैगन कुरी सुधाम। श्री महाराज कुमार कहि भूपसिंह तिहि नाम॥'' तात्पर्य यह कि सागर के समीप पथरिया नामक स्थान में जयगणकुरी नाम के लिपिक ने सं० १९२० वि० के श्रावण कृष्ण पक्ष की चतुर्थी शनिवार के दिन महाराजकुमार भूपसिंह के हेतु उक्त प्रतिलिपि प्रस्तुत की।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विष्णुदास कृत "रामायन-कथा" वास्तव में एक महाकाव्य है। कथानक, चरित्र-चित्रण, रस-स्थापन, अन्तरंग और वहिरंग प्रकृति के यथार्थ अंकन और भाषा के प्रांजल भावमय प्रवाह के साथ परिनिष्ठित स्वरूप के गठन और संस्थापन, तथा धर्म, समाज और नीति आदि के वर्णन और कथोपकथन आदि सभी दृष्टियों से विष्णुदास की यह रचना प्रौढ़ और प्रशंसनीय है। इस एक ही प्रबंध काव्य की उत्कृष्ट रचना से विष्णुदास ब्रज-भाषा के सर्वप्रथम यथार्थ महाकाव्य प्रणेता महाकवि सिद्ध होते हैं। बंधुवर श्री हरिहर प्रसाद जी द्विवेदी और श्री वासुदेव शरण अग्रवाल ने विष्णुदास की महाभारत कथा की अत्यधिक सराहना करते हुए उन्हें हिन्दी-काव्य-साहित्य के श्रेष्ठ निर्माताओं में अग्रगण्य कहा है। अब इस 'रामायन-कथा' पर से तो यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि कविवर विष्णुदास हिन्दी-प्रबंध-काव्य के प्रणेताओं में सर्वापेक्षा प्रथम माननीय महाकवि और पथ-प्रदर्शक हैं। विष्णुदास, का यह लिखना कि उन पर सरस्वती की पूर्ण कृपा है, यथार्थ जान पड़ता है। वे कहते हैं—

"कमल बदनि सुमधुर रस सारु। कर पुस्तक साजै उर हारु॥
ता पहँ विष्णुदास वर लह्यौ। सरस बुद्धि रामायन कह्यौ॥"

जान पड़ता है कि कवि स्वयं वैष्णव है। इसी से मंगलाचरण में वाणी-वंदना के अनन्तर विष्णु की वंदना में लिखता है—

"स्वामी भुक्ति मुक्ति दातारु। प्रनऊँ रामदेव औतार॥
सहज नाम उत्तम गोविंद। पाप पहारनि करतु निकंद॥"

संक्षिप्त मङ्गलाचरण में वाणी और विष्णु की वंदना करके कवि ने अपने गुरु और अपने विषय में कहा है—

"सुंदर नाथ पास लइ दच्छा। हरि-तप-रत सब पूरत इच्छा॥
ता गुन बरनि सकै कवि कौन। जिंहि थिर राखि सके मन पौन॥
लावन श्रीकरन भयौ ब्यासु। ता सुत विष्णु दास कौ दासु॥
गुरु सज्जन बिनऊं कर जोरि। बरनौं छंद देहु जनि खोरि॥"

इससे यह विदित होता है कि विष्णुदास के गुरु हरि भक्त योगी सुन्दर नाथ जी थे, जिन्हें अन्यत्र सहज नाथ भी कहा गया है। विष्णुदास श्री कर्ण ब्यास के पुत्र थे और अपने आपको वैष्णवों का दासानुदास मानते थे। इन्हीं विष्णुदास के पुत्र कविवर नारायणदास थे, जिन्होंने 'छिताई-वार्त्ता' नामक श्रेष्ठ ऐतिहासिक प्रबंध काव्य की रचना की है और जिसकी सुसम्पादित द्विविध प्रतियाँ डाक्टर माताप्रसाद गुप्त और पं० हरिहर प्रसाद द्विवेदी तथा अगरचन्द नाहटा-द्वारा प्रकाशित की जा चुकी हैं।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामायन-कथा में सात काण्डों का विभाजन सर्गों में किया गया है। इसके अनेक सर्ग बहुत ही छोटे हैं, जिनमें कवि ने समास-शैली का अवलम्बन किया हैं। मुख्य कथा के साथ अवान्तर कथाओं को कवि संक्षेप में कहता चलता है। इसमें कवि ने जिस प्रौढ़ ग्वालियरी परिनिष्ठित साहित्यिक बुंदेलखण्डी या ब्रज भाषा का प्रयोग किया है, उसपर शौरसेनी प्राकृत का प्रभाव शब्दों के रूपों पर है, वैसे हिन्दी व्याकरण का अनुशासन प्रमुख रूप से है, जैसे :—सायर (सागर), दिनयर (दिनकर), रुहरु (रुधिर) बैसारि (बैठारि) और पसाउ (प्रसाद) आदि। जान पड़ता है कि विष्णुदास तत्कालीन हिन्दी की परिनिष्ठित साहित्यिक भाषा को सार्वदेशिक रूप प्रदान करना चाहते थे, इसी से उन्होंने हिन्दी-भाषा के अन्य प्रान्तीय प्रयोगों को भी रखा है, जैसे :—मालवाड़ी में प्रयुक्त सम्बन्ध कारक के प्रत्यय का के की, के स्थान में तना, तने, तनी का प्रयोग :—पुत्रनितनौ, सासुनि तनी आदि। भाषा निर्माता कविवर विष्णुदासे की वाणी में परिनिष्ठित काव्य-भाषा की प्रांजलता के साथ सफाई बहुत है, जैसे :—"सायर नीरु बहुत ऊछरयौ। मुरे सेसमुख, मेरु खर भर्‌यौ।" आदि। यद्यपि महाकाव्य का परिचय संक्षेप में देना अत्यन्त कठिन है; परंतु भिन्न-भिन्न विषय और प्रसंग के कतिपय अवतरणों से साहित्य-मर्मज्ञ विद्वान् उसका सहज ही अनुमान लगाकर मूल्यांकन कर सकेंगे, यह विचारकर कुछ संक्षिप्त उद्धरण देना अनिवार्य प्रतीत होता है।

महाकाव्य में नायक से प्रमुख क्रीड़ास्थल नगर विशेष का वर्णन आवश्यक रूप से दिया जाता है। विष्णुदास श्रीराम की जन्म-भूमि अयोध्या-नगर के वर्णन में लिखते हैं:—

"सरजू तीर अजुध्यापुरी। सों बिसकर्मा आपुनकरी॥
बारह जोजन लसति लंबाई। तितनै फेर फिरी चौंराई॥
ऊंचे मंदिर कोट कगार। कंचन कलस जु सोहत द्वार॥
बहुत बाग, सर, मठ, बावरी। कुंवा निवाननि सोभित पुरी॥
ठां ठां विप्र जु कहत पुरान। करहिं अखारौ वीर सुजान॥
ठां ठाँ नट नाटक पैखनै। जोगी जती सती तहँ घनै॥
पूजा बहु देवनि की होइ। प्रति घर धर्म करैं तियलोइ॥
गजरथ साहन तुरग भंडारु। वढ्यौ राज सुरपति आगारु॥
रघुबंसी नृप दसरथ नामु। बहुत असुर जीते संग्रामु॥"

किष्किन्धा में बालि-वध के अनन्तर सुग्रीव को वानराधिपति बनाकर राज्याभिषेक कराने के पीछे श्रीराम लक्ष्मण जी सहित प्रहर्षण गिरि पर निवास

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के हेतु चले गये, जहाँ रमणीय प्राकृतिक छटा बिखर रही थी और सब प्रकार की सुविधा थी। वहाँ वर्षा के अनन्तर शरद लगने पर वह प्राकृतिक सौन्दर्य और छवि धारण कर मोहक हो गया। विरही श्रीराम को वह प्राकृतिक सुन्दरता अधिकाधिक उद्दीपन-कारिणी हो गई। प्रकृति के स्वाभाविक सौन्दर्य के साथ-साथ उसके विरहीं राम पर प्रभाव डाल उद्दीपनकारी होने तथा राम की विरहावस्था में विभिन्न दशाएं जड़ता, प्रलाप तथा उन्माद आदि का कवित्व से कमनीय समीचीन वर्णन निम्मलिखित अवतरण में दर्शनीय है। विप्रलम्भ श्रृंगार के साथ प्रकृति के मनोरम चित्रण में विष्णुदास कितने प्रशंसनीय हैं, इसे मर्मज्ञ देखें——

अमृत फर तरुवर बन घनैं। विष्णुदास पहुँ जात न गनै ॥
बरनि न जाति तरुनि की जाति। समुझै नहीं तहाँ दिन राति ॥
ताल झिरन जहँ निर्मल नीरु। देखि ठाँउं हरषे रघुबीरु ॥
हंस आदि पंछी बन माँहं। पुरइन कमल कमोदिन छाँहं ॥
चौंरी सिल दीसत ता ठाइं। परम सघन चहुँ दिसि अमराइ ॥
पंछी सवद होतु कल राउ। बनु दीसहि नगरी के भाउ।
देख्यौ पर्वतु झिरन निवानु। पर्वतु ऊपर लागे जानु ॥
देखीं सिला बहुत चौपास। जनु देवनि निर्मयो अवासु ॥
विच विच थूल थंभ आकार। बिच बिच दीसहिं खिरकी वार ॥
वहुतक वरन चित्र परि गये। जनु बिसुकर्मा कर निरमये ॥
मंद सुगंध बहै चहूँ पास। रंज्यौ रामु देखि वन तास ॥
धनुहरु तून गुप्त करि धरयौ। तोरे त्रन घालौ संथरौ ॥
जे पावहिं ते बन फल खाँहि। सिंघ बाघ गज डरु न डराहिं ॥
कबहुंक मेघ उसरि निसि गये। विमल अकास तरायन भये ॥
भरि किरननि बिसतरियौ ससी। देखि रामु मन सीता बसी ॥
मन करभरि उठि बैठौ रामु। ता ससि किरन लग्यो जनु घामु ॥
हियरां भई तिरीछी नारी। धुनै सीस राघव तब भारी ॥
कवहुँक जल झलकत ता नैन। कवहुँक बोलि सकतु नहिं बैन ॥
कवहुँक कोप धनुष कर गहै। चंदहिं करन खंड नव कहै ॥
सीतल ससिहि कहत सब कोइ। सो कत मोहिं अगिनि सम होइ ॥
जहाँ जानकी वदनु अकार। ता लगि मैं छांड़ौं इथि वार ॥
लै उसासु बोलत वलिबंडु। नातरु चंद करौं सत खंडु ॥
इहि बिधि रामु बहुत दुख करई। खिनकु न ताहि सिया बिसरई ॥
कोह मोह मिलियौ इक सार। राघौ मुरछित बारंबार ॥

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कविवर विष्णुदास के महाकाव्य रामायन-कथा में समास-शैली होते हुए भी रसात्मकता यथेष्ट है। सीताजी के समाचार लेकर उनकी भेजी चूड़ामणि को जब हनुमान ने राम को देते हुए, सीता का कहा संदेश सुनाया, उस समय का वर्णन करेते हुए विष्णुदास लिखते हैं--

"इतनौ रामु संदेसौ सुन्यौ। सीता कह्यौ हनू सब भन्यौ ॥
सौ मनि लै पुनि देखी हाथ। हियौं लगाइ रह्यौ रघुनाथ ॥
खन देखै खन लोथै मनी। ता सुख भयौ मिली ज्यों धनी ॥
खन खन राखै हियैं लगाइ। बहुरि न निछुटि जाइ तिहँ ठाँइ ॥
सोग अगिनि मो जरत सरीरु। सीता बचन सुनत सुख नीरु ॥
हनुमत त्यों न हंस उड़ि जाइ। बार बार ता बचन सुनाइ ॥
विस्तरु बीरु कहत हनुमंत। अबहिं न कोऊ सुनहिं कहंत ॥
विष्णु दास मथि ग्रंथ अपारु। काढ़ी कथा सु अमृत सारु ॥

इसके कथोप-कथन भी बड़े ही संयत और समीचीन हैं, जिनमें आचार, नीति और व्यवहार के साथ ही मनोविकारों का यथार्थ चित्रण सहज सुकुमार ढंग से किया गया है। अनेक प्रबल महारथी राक्षसों के युद्ध में मारे जाने पर, रावण ने कुंभकर्ण को कच्ची नींद से जगवाया। उस समय कुंभकर्ण और रावण के बीच जो राजदरबार में वार्त्ता हुई और अंत में कुंभकर्ण राम से संग्राम को गया, इसका उदात्त वर्णन करते हुए विष्णुदास लिखते हैं।

"कुंभ करन रावन पंहँ गयौ। जनु रवि ओभिल पर्वत भयौ ॥
नाइ सीस तब सभा बईठ। रावन मन तूठौ तब दीठ ॥
सेवक भलौ, कुलीनी नारि। बंधु जो होइ आपु उनहारि ॥
पंडित सभा, सपूतो पूत। पाँच देखि सुख होइ बहूत ॥
नाइ सीस बंधव यह कह्यौ। कहा गुसाई आइसु लहयौ ॥
काँची नींद जगायौ मोहिं। कहौ कहां विग्रहनै तोहिं ॥
सागर सोखि चुरू महँ लैहुँ। सुर-पति ब्रह्म बंदि गहि दैहुँ ॥
कहत रिसानौ बारहिं बार। पर्वत मीड़ि करौं अब छार ॥
जब बल कुंभकरन कहि रह्यौ। सुनत बात राजा गहगह्यौ ॥
ता सन बात पेड़ तैं कही। अब राघौ लंक विग्रही ॥
दानव देव न हौं मन डरौं। जैसी नर बंदर डर करौं ॥
तातैं बीर बहुत भरियाउ। सबनि जीति कर लेहु पसाउ ॥
कुंभ करन तब कहत कुमार। मैं साईं बरज्यो बहु बार ॥
करि बिसासु मति छत्रहिं मारि। सीलवंत परिहरि परनारि ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज्यों तप रिषिनि देव है मूल । सेवक सेव करै तिहि तूल ।।
धर्म मूल ज्यों पर उपकार । राजहिं राजनीति व्यौहार ।।
राजनीति राजनि आभरन । राजनीति दुस्तर भय तरन ।।
राजनीति सुख जस भंडारु । मूल गयैं निरफल व्यौहारु ।।

— — —

मतौ कहत मंत्री तोहि डरहीं । स्वामी मन लीन्हैं संचरहीं ।।
जानि विभीषन रामहिं मिल्यौ । सिया ल्याइ स्यौं हथ विसु गिल्यौ ।।
बैद पुरोहित मन्त्री जासु । तीनौं बोलहिं राज सुहासु ।।
काया धरम अरथ की हानि । ता लगि तीनौं करहिं न कानि ।।
नारद पास भेद मैं लह्यौ । कुंभ करन रावन सौं कह्यौ ।।
ये नर कपि देवत औतरे । माया करि तो कहँ तन घरे ।।
तुम नाहीं जानत या भेव । रामचन्द्र नारायन देव ।।
यहई त्रिभुवन तारन तरन । सीता दै ताकौ तिहि सरन ।।
तूं जेठौ अरु त्रिभुवन राइ । मैंड़ टोरि सिख दयौ न जाइ ।।
कह्यौ महोदर सुनहु कुमार । राजनीति के अगम विचार ।।

— — —

ना तैं करी बंधु की सेव । ना तपु करे न घ्यावे देव ।।
सोवत खात तोहिं जुग गयो । कब तैं कुंअर सयानौ भयौ ।।
अव तुम कछू देउ दृढ़ दाउ । ज्यों राखिये लंक कौ राउ ।।
कंभकरन कोप्यौ तिहि बार । अरे महोदर कायर स्यार ।
जूझ न देख्यौ कानन सुन्यौ । बातनि चाहत रामहिं जिन्यौ ।।
उनकहँ गहौं न कर हथियार । बंदर सैन करों करौं संहार ।।
दोऊ तपी विभीषन मित । बांधौं रावन करि निहचिंत ।।
तूठौ राउ बात जब सुनी । मनि उतारि दीनी आपुनी ।।
कवच मुकुट कुंडल आभरन । रथ चढ़ाइ लाग्यौ द्यु तिकरन ।।
हाथ सहस द्वै रथ को फेरू । दीसतु मनौ चलतु गिरि भेरु ।।
आट चक्र बनए सुत धारि । हेम रतन नग बहुत संवारि ।।
अगनित खर जोते मय मंत । पवन वेग तेधरि धावंत ।।"

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार हम देखते हैं कि पन्द्रहवीं शताब्दी विक्रमीय के कविवर विष्णुदास जी ने अपनी प्रशंसनीय काव्य कृति रामायन-कथा को, जो वस्तुतः परिनिष्ठित साहित्यिक हिन्दी भाषा का सर्व प्रथम प्रमाणिक महाकाव्य है, प्रस्तुत करके अपना महत्त्व स्थापित किया है। सागर विद्यालय के हिन्दी विभागान्तर्गत बुंदेली अध्ययन पीठ द्वारा इसे प्रकाशित किया जा रहा है, यह एक संतोष का विषय है।

लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामायन कथा

मूल पाठ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री गनेसाय नमः

अथ रामायन-कथा

चौपही

विष्नुदास बिनवै नरनाह। तोहि प्रसादै बुद्धि अथाह ।।
सुनत हुलास जीव संतोषु। कहत कथा नर पावै मोषु ।। १ ।।
अपुत्रो लभते पुत्रं निर्धनी धनमेवच ।।
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थीलभते गति ।। २ ।।
कमल वदन सुमधुर रससारु। कर पुस्तक साजैं उरहारु ।।
रवनि सीस नेवर झनकार। प्रनऊँ देवी बारंबार ।। ३ ।।
जाको रूप न सकौं बखानि। हंस चढ़ी ता पुस्तक पानि ।।
ता पहँ विष्नुदास बरु लहयौ। सरस बुद्धि रामाइनु कह्यौ ।। ४ ।।
प्रनऊं बालमीकि रिषि व्यास। मरकंडे व वशिष्ठ प्रकाश ।।
विष्नुदास बिनवै तो चरन। पुनि लाग्यौ रामाइनु कहन ।। ५ ।।
बाढ़ै धर्म लच्छ्छि[लछिम]संतान। काटै पाप आपने जान ।।
स्वामी भुक्ति मुक्ति दातारु। प्रनऊँ रामदेव अवतारु ।। ६ ।।
सहज नामु उत्तम गोविंद। पाप पहारनि करत निकंद ।।
सुंदरनाथ पास लई दक्ष्या। हरत परत सब··· ··· ··· ।। ७ ।।
भूत भविष्य मान जो रहै। निसिदिन जा कहँ अवगत रहैं ।।
तैसी समरथ सृष्टि दूसरी। ता सिष विष्नुदास कवि करी ।। ८ ।।
ता गुन बरनि सकै कवि कौन। जिहि थिर राखि सकहि मनु पौन ।।
बचन जो सहज नाथ पहँ लहौं। सरस वचन रामाइनु कहौं ।। ९ ।।
लावन श्री करन भयो व्यासु। ता सुत विष्नुदास कौ दासु ।।
गुरु सज्जन बिनऊं कर जोरि। बरनौ छंद देउ जन खोरि ।। १० ।।
चौदह सत निन्यानव लिधौ। पून्यौं पवित्त रमाइनु कियौ ।।
गुरु वासर रेवती (स्वेती) नछत्रु। माघ मास कवि कयौ कवित्तु ।। ११ ।।
और बखान वहुत को करै। बालमीक तीरथ तपु करै ।।
नारद तनौ वचन विस्तार। बालमीकि रिषि करयौ विचार ।। १२ ।।

बालमीक उवाच

कहि नारद हियरौं धरि भाउ। रामचरित गुनि कथा सुनाउ ।।
इतनौ सुनि नारद गहगह्यौ। रामचरित सब रिषि सों कह्यौ ।। १३ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(पुनि विधि) थान पहुँचे आइ। ताकौं ब्रह्मा कह्यौ सुनाइ ॥
शिव अरु.................. । :..............रमाइनु भयौ ॥ १४ ॥
रामचंद्र प्रभु त्रिभुवन धनी। तासु कथा रिषि नारद भनी ॥
सरजू सरित अजुध्या पुरी। सो बिसकर्मा आपुन करी ॥ १५ ॥
वारह जोजन बसति लँबाई । तितनै फेर फिरी चौराई ॥
उँचे मन्दिर कोट पगार। कंचन कलसु जु सोहित द्वार ॥ १६ ॥
बहुत बाग मठ सर बाउरी। कुवा निवाननि सोभित पुरी ॥
ठाँ ठाँ विप्रु जु कहत पुरान। करहि अखारौ वीर सुजान ॥ १७ ॥
ठाँ ठाँ नट नाटक पेखने। जोगी जती सती तहँ घनै ॥
पूजा बहु देवनि की होइ। प्रति घर धर्म करैं तिय लोइ ॥ १८ ॥
गज रथ साहन तुरग भँडारु। बढ़यौ राज सुरपति आकारु ॥
रघुबंसी तिहि दसरथ नामु। बहुत असुर जीते संग्रामु ॥ १६ ॥
बंस बिहून चित मन धरै। मंत्री सरिस बचन उच्चरै ॥
कैसैं मेरैं गृह सुत होइ । कहौ सुमंत्र धरौ मति गोइ ॥ २० ॥

मंत्री उवाच

बोलि रिषीस्वर जग्यँ कराइ। पुत्र होहि सुनिए अब राइ ॥
मंत्री कहत सुनौ ब्यौहारु। मैं तो भैंटें संत कुमार ॥ २१ ॥

अंतरकथा

अंतर कथा सु मोसौं कही। सुनौ नृपति मेरैं मन रही ॥
पुरी भुंडरी उत्तम देस। लोमपाल तहँ बसै नरेस ॥ २२ ॥
चलै अनीति विप्र नहिँ मानै। परजा दुखी होहि अकुलानै ॥
बहुत दिवस तब परयौ अकालु। सब विप्रनि बूझत भूपाल ॥ २३ ॥
राजनीति बाचहु ब्यौहार। वरषहिँ मेघ सजल जलधार ॥
परजा दुखित भई सब कोइ। जस कीरति नहि॑ ह होइ ॥ २४ ॥
यह मेरैं जिय बहुत सँदेह। देहु सीख ज्यों बरसै मेह ॥
कहै पुरोहित सुनि हो राउ। रिषि स्रिंगी निज नगरी ल्याउ ॥ २५ ॥
ताके आगम बरषहि मेहु। आदर करि तिहिँ कन्या देहु ॥
सुनि तब नृपति अचंभौ भयो। बहुरि पुरोहित बूझन लयौ ॥ २६ ॥

विप्रोवाच

को स्रिंगी रिषि काकौ पुत्र। क्यों आवै पुर कहौ सुमंत्र ॥
रिषि विभांड जब प्रातहि गयौ। चूक्यौ ध्यान खलित तब भयौ ॥ २७ ॥
सो जल ढरि संचरियौ जाइ। हरिनी गर्भ भयौ सुत आइ ॥
जानि पुत्र संभय बहु काल। एक स्रिंगु ता भयौ कपाल ॥ २८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिल्यौ पिताहि करै षट कर्म। रहै विभांड तनै आसर्म ॥
ना तिहि दीठ नगर पुर लोग। षटरस स्वाद न जानतु भोग ॥ २९ ॥
वेदभ्यास तप जप लग्यौ भाई। जपिए मंत्र सु कह्यौ न जाई ॥
कटि मेखला जु गौटा कियौ। आसन जोग हमहिँ गुर दियौ ॥ ३० ॥
धरी मिठाई रिषि के हाथ। ए फल खाहु चलौ जो साथ ॥
तिहिं आसर्म पियहुगे खीर। होइ तुम्हारौ दिव्य सरीर ॥ ३१ ॥
रिषिविभांड देख्यौ आवंत। नमसकालु कै चली तुरंत ॥
स्रिंगी रिषि मन जान्यौ भाउ। लह्यौ अपूरब भाँति लखाउ ॥ ३२ ॥
ताके संग कछू दिन गए। देखि पिता तब बिलखे भए ॥
पुत्र तुम्हारें भयो कुभाउ। देख्यौ कहू दूसरौ चाउ ॥ ३३ ॥
स्रिंगी कहै सुनो सति भाउ। मैं आसर्म न छाँड़्यौ ठाँउ ॥
अति तपसी आये मो गेह। परम सुभग उत्तम तिन देह ॥ ३४ ॥
वे रिषि आठ एक संघात। को रिषि अब मोसहँ कहि तात ॥
एक जटा धारे उर माल। अति कोमल तिन नैन बिसाल ॥ ३५ ॥
मधुरो वानी श्रुति संघात। कौन सु रिषि मोसौं कहि तात ॥
इतनौ सुनि सोच्यौ रिसि गात। डरयौ विभांड सुनी जब बात ॥ ३६ ॥
सुनौ पुत्र वे राखस नारि। उनसौ कबहुँ न कीजे रारि ॥
जिते रिषीसुर इनहि पत्याइ। दुख दिखाइ नरकै लै जाइ ॥ ३७ ॥
ऊतर यौ दीनौ रिषि राइ। स्रिंगी सुनी न बात सुहाइ ॥
चिंता करत गये दिन चार। भेंटी परम कुटी के द्वार ॥ ३८ ॥
बहुरि रिषीसुर आदरु कियौ। सबनि जोग तब आसन दियौ ॥
देखि गोठि भूल्यौ मन माँह। चलहुँ तु गेह तुम्हारे जाँह ॥ ३९ ॥
तब तिन धरी मिठाई हाथ। चल्यौ खाइ रिषि तिनके साथ ॥
नाउ चढ़ाइ उतारे पार। अंगद देस गए पैसार ॥ ४० ॥
बरखे मेघ सघन घन धार। आनंदे जु सकल परिवार ॥
लोमपाल आनंद्यौ राउ। दीन्हौ रिषिहि सिघासन ठाँउ ॥ ४१ ॥
बोलतु राजा विनवतु सेवा। यह अपराध निवारहु देवा ॥
कियौ कपट तुम्हैं आनै गेह। मया तुम्हारी वरख्यौ मेह ॥ ४२ ॥
राजकुँवारि तेहि सांता नाम। रिषि के कर पकराई ताम ॥
भयौ विवाह रहै गृहधर्म। पालौ सदा आपनै धर्म ॥ ४३ ॥
इतनी कथा सुमंत्री भनी। मैं यह सुमति रिषिन पहँ सुनी॥
स्रिंगी रिषि दसरथ लै आउ। होइ बंस जो पूजौ पाँउ ॥ ४४ ॥

इति श्री रामायने बालकांडे स्रिंगी आगमने दशरथ-मंत्री-संवादो नाम सर्ग ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दशरथ मुनि मंत्री के बैन । आपु गये स्त्रिगी रिषि लैन ।।
लोमपाल की करि मनुहारि । लै गयौ अवधपुरी मंझारि ।। १ ।।
जानैं जे पुहुमी के राइ । सहस अठासी रिषि हँकराइ ।।
अस्वमेध दसरथ पुनि ठयौ । स्त्रिगी रिषि मन अचरज भयौ ।। २ ।।
वशिष्ठ, जावाल्लि, गौतम, कश्यप, अपैपर, वामदेव ।
भरद्वाज, अत्रेउ । ए आठउ रिषि आरज भए ।।
आठ रिषी आचारज भए । सब रिषि मिले जग्यँ अरु ठए ।।
वरस द्वै भयो जग्यँ सिरान । हय गय हैवर दीनै दान ।। ३ ।।
आसिषु रिषिनि कह्यौ तिहि थान । चार पुत्र चहुँ वेद प्रमान ।।
ऐसे दसरथ घर अवतार । कीरति तिनकी सायर पार ।। ४ ।।
कछू दिवस तिन अंतर गए । स्त्रिगी बहुरि जग्यँ पुनि ठए ।।
औरै गुर औरं रवि मंत्र । हौम दर्वि को जानतु अंत ।। ५ ।।
ब्रह्मा पास देव सब गए । विनती करहि ते विह्वल भए ।।
रावन राखस भौ अति बरी । तिहि संपति देवनि की हरी ।। ६ ।।
सुरनि सतावै करतु न संक । दुर्गम ठौर रहै गढ़ लंक ।।
जासौ कौन करै भरियाउ । करौ पितामह कछू उपाउ ।। ७ ।।
सव देवनि सौं ब्रह्मा कह्यौ । यह न जाइ सुर असुरन बह्यौ ।।
मैं वरु दीन्हौ करचौ अजोत । अब तुम यह परगास्यो नीत ।। ८ ।।
वरष सहस दस इहि तप कियौ । एक एक सिर पूजा दियौ ।।
तवहि अमर करि थाप्यौ सोइ । कह्यौ मरन नर बंदर होइ ।। ९ ।।
यह सुनि रावन संक न करी । मानुस का करि है मो हरी ।।
अव तुम हरि सौं करौ उपाउ । वे मारै लंकापति राउ ।। १० ।।
तब हरि मंदिर पहुँचे देव । कर जोरे ते विनवहिँ सेव ।।
साँई दसरथ घर अवतरहू । तुम त्रिभुवन बूड़त उध्धरहू ।। ११ ।।
तिनसौं हरि बोले परिमान । राखस वधौं न पावहि जान ।।
चारि वीर प्रिथिवी औतरौं । बहुत काज देवनि के करौं ।। १२ ।।
गए देव करि वचन प्रमान । स्त्रिगी रिषि को जग्यँ सिरान ।।
तब ताकुंड पुरुष नीकरौ । कारे बरन सुसोभित खरौ ।। १३ ।।
रूपे थारी कनय कचोरु । खीर भरयो ऊपर तंमोरु ।।
सो दसरथ कै सौंप्यौ हाथ । करि प्रनाम लीन्यौ नरनाथ ।। १४ ।।
स्त्रिगी कहैं सुनौं हो राउ । तो कहँ देवनि दियौ पसाउ ।।
भोजन करहिं तुम्हारी नारि । हूहैपुँत्र महा भर चारि ।। १५ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुनि राजा गये ग्रेह मँझारि । पाट बँध ते लई हकारि ।।
दीन्हीं कौसल्या कैकई । राजहि ताकी सुधि नहि भई ।। १६ ।।
तहाँ सुमित्रा पहुँचो जाइ । तब तिन दुहुन दया उपजाइ ।।
इक-इक पिंड दुहुनि मिलि कियौ । उपजी मया सुमित्रिहिं दियौ ।। १७ ।।
तीनिहु माँझ गर्भ आधान । कौसिल्या भए राम सुजान ।।
भरत कैकई गरभ उठान । मानहु लोह खानि सौ बान ।। १८ ।।
पीछे गर्भ सुमित्रा धरी । लछिमन संतोषन अवतरी ।।
भरत शत्रुघन लछिमन राम । ए चारौं एकइ विश्राम ।। १९ ।।
चारयौ धर्म पंथ अनुसरैं । बहुत भक्ति राजा की करैं ।।
ब्रह्मा देवनि सौं बीन्यौ । चलहु सुकाज आपनो भयो ।। २० ।।
तुम नरलोक पधारहु पाउ । रामचन्द्र कौ करौ सहाउ ।।
रीछ लँगूर जाइ कपि करहू । सब मिलि याही सुम्रित धरहू ।। २१ ।।
तुम सम सरिस कि है काल री । महाबाहु···(तुम)हौ अति वरी ।।
बलि इंद्र सूरज सुग्रीव । पवन रूप हनिवत कौ जीव ।। २२ ।।
बहुत करौ सुरपति कौ काजु । एक लाख कपि अधिपति राजु ।।
जब अवतार सबनि कौ भयो । विस्वामित्र जग्यँ तब ठयौ ।। २३ ।।
दसरथ सौं हँसि माँग्यौ एहु । राखन जग्यँ राम मो देहु ।।
सुनत बात उठि बाहिर गयौ । अति संदेह राई मन भयौ ।। २४ ।।
क्यों पठऊँ अति बालक राम । कबहु न दीठ करत संग्राम ।।
धनुष पकरि नहिं जानत हाथ । सो क्यों पठऊँ रिषि के साथ ।। २५ ।।
खोहनि एक साजि दल लेहु । आपुन साथ पयानौ देहु ।।
सुनत रिषीसुर कोनौ कोह । छाँड़यौ धर्म कियौ सुत मोह ।। २६ ।।
हौं सुर असुर आपु संघरौं । जग्यँ करत कैसें रिस करौं ।।
कोप्यौ रिषि त्रिभुवन आकंप । सुर नर नाग भई मन संक ।। २७ ।।
तब वसिष्ठ समुझावै राउ ।.र्पि राम क्यों होइ उपाउ ।।
लछिमन राम गहाई बाँह । भो आनंद भयी मन माँह ।। २८ ।।
लै धनुहर ते गोहिन भये । गगा संगम सरऊ गये ।।
तीनि रात बसियौ बन थान । गरज परी रघुपति के कान ।। २९ ।।

रामोवाच

कर जौरैं रिषि सों कहि बात । कहा गर्ज भई सो कहि तात ।।
कहै रिषीसुर सुनहु कुमार । यहि गरजन के सब ब्योहार ।। ३० ।।
जब ब्रह्मा रहतौ कविलास । रच्यौ मानसरवर तिहि पास ।।
ता मह यह सरऊ नीकरी । सो पानी गरजतु अति बरी ।। ३१ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कही बात भुनसारौ भयौ । उठि चलियौ मारग मन दयौ ॥
चलत चलत पहुँचे बन माँह । कोऊ जीव न दीसतु ताँह ॥ ३२ ॥
करि अस्नान चरन रिषि गहे । विद्या विनय अजिन सर लहे ॥
पुनि राघव देख्यौ बन खंडु । बहुत अचंभु करत बलिबंड ॥ ३३ ॥
देखत राम अचंभौ भयौ । तबहि रिषीस्वर बूझन लयौ ॥
नीके वन फल छाया घनी । तहाँ पुरिष नहिं दीसत धनी ॥ ३४ ॥

रिषीस्वर उवाच

कबहुंक इंद्रहिं हत्या भई । बहुत घौंस इहि बन मँह गई ॥
काल रूप कोप्यौ सर लयौ । कछु इहि देस कछू बन दयौ ॥ ३५ ॥
तब बन इन्द्र कह्यौ यह जोगु । हुईहैं दुखी रहैं बन लोगु ॥
अरु इहिं रहहि तारका नारी । बहुत जीव घाले संघारी ॥ ३६ ॥
रिषिनि सतावै दक्ष की धिया । तब सराप राखस तन लिया ॥
अब सो पापिनि बनौ मँह रहै । सुनहु कुमार तपेसुर कहै ॥ ३७ ॥
कै यह मारगु छांड़ौ राम । कै राखसि मारौ संग्राम ॥
जब वह सुनै धनुष टंकार । आवत ताहि न लागहि बार ॥ ३८ ॥
कहै राम जो नारिहिं डरौं । असुरनि सरिस जूझजो करौं ॥
मारग छाँड़ौं नारि डराइ । करिहौ कहाँ तहाँ लै जाइ ॥ ३९ ॥
इतनौ सुनि उपज्यौ हंकारु । करयौ राम धनुहर टंकारु ॥
धाई सुनत बदन बिकरार । चहुँदिसि सिर बगराएँ बार ॥ ४० ॥
नान्है नयन बदन मसियार । दीसति कुटिल काल अनुहार ॥
कान देखियत सूप समान । नासा निमन नैन मसि बान ॥ ४१ ॥
ऊरध जंघ करति अति गाज । सुनतहिं सबद सिंह गज भाज ॥
चमकति जीभ मतहुँ बीजुरी । आवति दुष्ट गर्व की भरी ॥ ४२ ॥
लछमनि ठेलि पिछाड़ै घालि । उर मँह राम हनी सर भालि ॥
खरहरि तबहि परी मुहँ बाइ । तब हिअँ..............रिसाइ ॥ ४३ ॥
अधिक हृदै कौप्यौ बरबीर । तिल तिलकैं काटियौ सरीर ॥
सर ही सर ता पूरयौ गरौ । मानहुं सरनि भरयो माथरौ ॥ ४४ ॥
भो निर्जीव फुरति नहिँ स्वास । जै जै सबद भयौ आकास ॥
कह्यौ इन्द्र हम जान्यौ आजु । करिहैं राम रिषिन के काजु ॥ ४५ ॥
दिव्य बान तिन दीनै बनैं । मंत्र चारि सिखए आपनै ॥
बान पाँच दै गये अकास । सुमिरत ही आवै निज पास ॥ ४६ ॥
चलत चलत पहुँचे तिहि थान । तहाँ बहुत आसन परिमान ॥
भो आनंद जग्यँ की सार । लछिमन राम भये रखवार ॥ ४७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छूटैं मेघ मनौं अतरार। रुहिर वृष्टि बरसैं अंगार ॥
रामचंद्र ऐसी मन धरी। यह है काहू माया करी ॥ ४८ ॥
बाइ बानु राघौ कर लियौ। तिहिँ मारीचि हिए महँ दियौ ॥
मुरछि परयौ साइर मंझारि। मची कोच जोजन दस चारि ॥ ४६ ॥
बहुरौ कोप्यौ सुबाहु मन माँहँ। सैन साजि बहु आयौ ताँहँ ॥
राघौ अग्निबान सों ह्यौ। सैना सहित भस्म होइ गयौ ॥ ५० ॥
ऐसैं जग्यँ भयों परिमान। राम रिषिहिं पहँ पाए बान ॥
वे सब देखत बिसमय करहिँ। सब रिषि मिलि प्रभु अस्तुति करहिं ॥ ५१ ॥
कछू दिवस विरमे तिहि ठाँइ। जनक जग्यँ आरंभ्यौ राइ ॥
लछिमन राम साथ कै लए। मिथिलापुर के मारग गए ॥ ५२ ॥
विस्वामित्र कथा तब कहैं। इहि ठाँ ब्रह्म तपोवन रहै ॥
तब इहि बीच राम सुर धनी। कन्या नृप कुसनाभहि तनी ॥ ५३ ॥
कहत कथा तव गंगहि गए। राम रिषीसुर बूझत भए ॥
तीनि भुवन क्यों भए पवित्र। कहौ कृपा करि विस्वामित्र ॥ ५४ ॥
कहै रिषीसुर सुनौ कुमार। गंगा गौरि तनौ व्योहार ॥
दोऊ हेमांचल की धिया। पारवती परवत तप किया ॥ ५५ ॥
इक चित ध्यान बरिस सौ गयौ। तबहो सुर परसन्नौ भयौ ॥
वाचाबंध कियौ तव सारु। कहौं होइ ईसुर भरतारु ॥ ५६ ॥
हरि संकर बरु दीनौ ताहि। तुमकौं ईसुर सकै विवाहि ॥
इतनौ बस संकर पँह पाई। तब गौरी पितु के गृह आई ॥ ५७ ॥
महादेव तब रिषि पठए। माँगन गौरि पिता पहँ गए ॥
सुनि रिषि बात लई तब मानि। दई गौरि शंकर कहँ जानि ॥ ५८ ॥
पानिग्रहैन ईसुर कौ भयौ। करि विवाह मंदिर लै गयौ ॥
दिव्य सुगंध करे तिन भोग। सुन्दरि कंत कियौ संजोग ॥ ५६ ॥
दिव्य बरन आरोहन भए। देवनि सहित इंद्र घर गए ॥
ईसुर पहँ माँगियौ पसाउ। तुम जनि करौ बंस उपजाउ ॥ ६० ॥
छाँड़ि सुरत देवनि बरु दियौ। वीरजतेज अग्निहि सौंपियौं ॥
अग्नि पास सो जाइ न सह्यौ। तब कछु दिननि गंग उर रह्यौ ॥ ६१ ॥
पारवती मन उपज्यो दापु। तब देवन कहँ दई सरापु ॥
कियौ हमारौ सुरत विधंस। तुम वर नारि होइ मति बस ॥ ६२ ॥
गंगा तेज न सकी संहारि। तब छाँड्यौ परवत मझारि ॥
उपज्यौ सुत लच्छिन संजूत। कीरति कान परै करि पूत ॥ ६३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भक्ति क छाह करै थन पानु । फुरहि तेज जनु दूजौ भानु ।।
सुर आनंदे जब देखियौ । सब मिलि तब सेनापति कियौ ।। ६४ ।।
स्वामि कार्तिय धरियौ नाँउँ । सब मिलि ··· ··· ··· ।।
बहुत कर्म कीन्हैं तिहिँ बार । पर्वत फाटैं करत अखार ।। ६५ ।।
कहे रिषीस्वर सब ब्यौहारु । यों संकर कैं भयौ कुमारु ।।
तब राघौ पूछत कर जोरि । क्यों गंगा आई गिरि फोरि ।। ६६ ।।

रिषिरुवाच

सगर तिहारौ पुरखा भयौ । तिहि हयमेध जग्यँ है ठयौ ।।
साठि सहस्र पुत्र रखवार । है हरि कपिल गयो पातार ।। ६७ ।।
ढूंढ़त पर्वत हींडत डंग । तिन पुनि कहूं न लह्यौ तुरंग ।।
राइ पास सुधि कहियौ जाइ । सुनि पुत्रनि सौ उठ्यौ रिसाइ ।। ६८ ।।
तिन सौं राजा रिस करि भनै । इक इक जोजन धरनी खनै ।।
साठि सहस धर खोदहु जाइ । कह्यौ तुरंगम सुधि लै आइ ।। ६९ ।।
धाए कुँवर बात जब सुनी । जोजन जोजन तिन धर खनी ।।
तब तिन तहाँ तुरंग न लह्यौ । खोदन तात रसातलु कह्यौ ।। ७० ।।
खनत खनत तब पहुँचे जहाँ । हय लै कपिल गए घर जहाँ ।।
ता कहँ नमसकालु तिन कियौ । बँध्यौ तुरंग तहाँ देखियौ ।। ७१ ।।
चोर चोर कहि धाये चरी । अब कहँ जाउ तुरंगम हरी ।।
साठि सहस सनमुख धाइयौ । कपिल कोपि हुंकारौ दियौ ।। ७२ ।।
सुनतहिँ हांक भस्म सब भए । तिन महँ निकसि न एकउ गए ।।
करि औसेरि राउ पर ठए । जेठे के सुत गंगा गए ।। ७३ ।।
ता चलतन रिषि अस्तुति करी । आषिस दियौ मया मन धरी ।।
तब सुधि लैकै पहुंचे तहाँ । पिता सुभस्म परी है जहाँ ।। ७४ ।।
बहुत विषाद कुँवर तब करैं । अस्तुति बहुत कपिल की करैं ।।
माया करि तिव पान्यौ दियौ । चलत कुँवर गरुर (ड़) भेंटियौ ।। ७५ ।।
कहियौ गरुर सुनौ बरबीर । भस्म मिलै गंगा के नीर ।।
अरु सो पिंड उदक सुत करै । सोई सब पुरिखा उद्धरै ।। ७६ ।।
सुनत गरुड़ के बंदे पाँइ । पुनि लै तुरियनु सौंप्यौ राइ ।।
जग्य प्रमान सगर कौ भयौ । गंगा लैन पतालहिँ गयौ ।। ७७ ।।
गंग न लही रह्यौ पचि हारि । बहुरि सगर तजियौ संसार ।।
राजा देव लोक जब गयौ । ताके बंस भगीरथ भयौ ।। ७८ ।।
द्वैवर सुंदरि सगरह तनी । ता प्रति भक्ति न चूकै धनी ।।
लहुरी साठ सहस सुत भए । ते पाताल भस्म ह्वै गए ।। ७९ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक पुत्र ता जेठिहि तनौ। पाछैं राज कियौ तिह घनौ ॥
तीस हजार राज तिहि कियौ। पुनि तिहि राज और सिर दियौ ॥ ८० ॥
मुनि पाछै आतम मनु भए। सहस तीस बरसन भोगए ॥
तिहि धर जीते सातों दीप। लियौ जनम पुनि राइ दिलीप ॥ ८१ ॥

ताकी ख्याति भई नव खण्ड। बहुत आसुर जीते बलबंड ॥
मही नृपति जीते बस करी। इन्द्र सेइ गुरु पूजा करी ॥ ८२ ॥
राजा बहुतक अंतर गए। ताके कुल भागीरथ भए ॥
करत राज सो इंद्र समान। पर ताकें नाहीं संतान ॥ ८३ ॥

ऊभी बाँह कठिन तप करे। ब्रह्म ध्यान मुनि इक चित धरे ॥
आधौ ग्रासु करत आहारु। सीझे बरस सहस दस सारु ॥ ८४ ॥
भयौ प्रसन्न पितामह ताहि। सो बर माँगि जु इच्छा आहि ॥
भौ प्रसन्न तेरे तप भाइ। माँगि पुत्र अब बिलमतु काई ॥ ८५ ॥
तब कर जोरि भगीरथ कहैं। ब्रह्म कमंडल गंगा रहैं ॥
सो दै मोहिँ अबै धर माहीं। मेरे पुरखा स्वर्गहि जाहीं ॥ ८६ ॥

साइँ मेरौ राखौ मानु। आसिष देहु होइ संतानु ॥
बार बार यों बोले राउ। देहु गुसाइँ बचन दृढ़ाउ ॥ ८७ ॥
कह्यौ ब्रह्म दीनी सुरसरी। तू मेरी सेवा बहुकरी ॥
अरु तो बंस ख्याति अति घनी। करु सेवा अब संकर तनी ॥ ८८ ॥
मैं गंगा दीनी करि भाउ। संकर सेवहु करै पसाउ ॥
जो न देव ओड़े अँतराल। भेदि गंग तब जाइ पताल ॥ ८९ ॥

ब्रह्मा पास राइ बरु लियौ। बहुरौ सिव सेवन चितु दियौ ॥
निराहार तप ऊभौ रह्यौ। माँगहु बर संकर यौं कह्यौ ॥ ९० ॥
तब बोल्यौ आनंदित राउ। साइँ गंगा पुहुमी ल्याउ ॥
यह वर माँगौ और न काइ (उ)। पुरिख उधरौं तुमहि पसाइ (उ) ॥ ९१ ॥
करि प्रमान बर संकर दियौ। गिरि हिमवंत बासु तब लियौ ॥
जटा मेलि राखी सरवंग। लियौ प्रवाह धसी तव गंग ॥ ९२ ॥

गिरि ऊपर संकर के सरन। लागौ राइ बहुरि तप करन ॥
हँसियौ देव करौ जयकार। मेली गग जटा तैं धार ॥ ९३ ॥
आगैं राजा पाछैं गंगा। तोरति चली सु गिरि तरु डंगा ॥
पूरब दिसि पाताल पईठि। तहाँ भस्म पुरुखन कौ दीठि ॥ ९४ ॥
मिलि सो भस्म गग जल गई। तब तिन मुकति सगर सुत भई ॥
पिंड उदक तब दीनौ राइ। पुनि निज पुरी बईठौ आइ ॥ ९५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीनि भुवन यह गंगा रहै । काटै पाप विष्नु कवि कहै ॥
धोखौ भयौ जु राम कुमारा । पुनि चढ़ि नाउ पहूंचे पारा ॥ ९६ ॥
गंग उतरि दक्खिन दिसि गए । चलतहि मिथिला पुर संभए ॥
देखि अचंभौ भयौ कुमारा । ता सम नगर नहीं संसारा ॥ ९७ ॥
रिषि ब्यौहार कह्यौ सब तैसौ । देवनि दानव बीत्यौ जैसौ ॥
देखि भारु तब राइ भुवाल । यह नगरी थापी तिहिँ काल ॥ ९८ ॥
मारिचि रिषि सबै तिहिँ कह्यौ । जिहि विधि गर्भ इंद्र छबि बह्यौ ॥
जैसै खंड भयउ उनचास । सुनै सु राम रिसीसुर पास ॥ ९९ ॥
इतनौ कहत पहूँचे तहाँ । सिल ह्वै रही अहिल्या जहाँ ॥
राम चरन को लागी खेह । मुकति अहिल्या गई सदेह ॥ १०० ॥
मिथिला नगर पहूँचे जाइ । अर्ध सिंघासन दीन्हौं राइ ॥
धोखौ करि बूझत तब बैना । मोसहँ कहिए बालक कौना ॥ १०१ ॥
जनकहि सरस रिसीसुर कहै । देखन जग्यँ कुँअर आरुहै ॥
ता देखन ये आए बार । राजा दसरथ तनै कुमार ॥ १०२ ॥
धनुष पिनाक तिहारैं गेह । यहि नृप सुत कहँ देखन देह ॥
राजा जनक कहै सत भाउ । सात्रत धनुषहि तनौ प्रभाउ ॥ १०३ ॥
ईसुर मेरे पुरुखहि दियौ । काहू वाकौ गुन नहिँ छियौ ॥
हर जोतत में पाई सिया । उत्तम लछिन नामु गुनि भिया ॥ १०४ ॥
जो जन धनुषहि सकै चढ़ाइ । ब्याहहि कुँवरि कहतु यौ राइ ॥
इतनौ कहि सेवक परठए । धाए धनुषलैन तब गए ॥ १०५ ॥
पुरुष पचासक सकै उठाइ । जग्यँ साल लै पहुँचे आइ ॥
कौतिकु जहाँ करति सब नारि । ऊभी सीता तिनहिँ मँझारि ॥ १०६ ॥
धरौ देखि धनु तिहि सुंदरी । चिंता करत हिये मन डरी ॥
कहै सखी सह बारंबार । धनुष कठोर कुंवर सुकुमार ॥ १०७ ॥
इनकैं पास तन्यौ नहि जाइ । कहौ पिता सौं धरैं उठाइ ॥
बिनवति सीता अति भय भरी । राजा कठिन पैज यह करी ॥ १०८ ॥
कहति कुँवरि सुनि एरी माई । जो यह कुँवर उलटि घर जाई ॥
करि बिनती तिय दई पठाइ । सखी सकल तहँ सिमटीं जाइ ॥ १०९ ॥
जनकराज कौ आयसु भयौ । तबहीं रामु धनुष कर लयौ ॥
लीन्हौं रामचंद्र जब हाथ । हेला गहि खैंच्यौ रघुनाथ ॥ ११० ॥
कान प्रमान तानि भरि बाँहँ । भो अति सबद टूटिगौ माहँ ॥
तीनि भुवन अति भयो सँदेह । धोखैं परे कहा धुनि एह ॥ १११ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जेते राजा ऊभे पास। सब मुरछे धर फुरति न साँस ॥
राम लक्षमन विस्वामित्त। चौथे जनक न डोल्यौ चित्त ॥ ११२ ॥
कंप्यौ इंद्र हली सब धरनी। बिहरे हय रथ जोते तरनी ॥
सायर नीर बहुत ऊछर्‌यौ। मुरे सेषमुख मेरु रभर्‌यौ ॥ ११३ ॥
छूट्‌यौ ध्यान सक्यौ नहिँ साधि। परसराम की छुटी समाधि ॥
जनक अनंदौ अंग न माई। दसरथ नृप गृह लगुन पठाई ॥ ११४ ॥
भरथ सतोषन लीन्हौं साथ। जनक गेह पहुँचे नर नाथ ॥
अरध सिंघासन विधि कर दियौ। जैसौ जहाँ करन बूझियौ ॥ ११५ ॥
बाजे सबद वेद धुनि भई। सिया बोलि मंडफ महँ गई ॥
सिरकुस माला कोमल रंग। रातौ चीर कस्तूरी रंग ॥ ११६ ॥
उर कंचुकी सिया तब ठई। जनु यह देवि देव निरमई ॥
अंग भाउ नहिँ बरनौं ताहि। विष्नुदास मन संका आहि ॥ ११७ ॥
कवि जन हँसैं पाप बहु होइ। तातैं बरनन करतु न लोइ ॥
इक बालक देवी अवतारु। कैसैं कहि बरनौं सिंगारु ॥ ११८ ॥
जनक विवाहीं कन्या चारि। अति आनंद करी मनुहारि ॥
रामचंद्र सीता सुन्दरी। उरंमिला लछिमन कहँ बरी ॥ ११९ ॥
दोऊ जनकराइ कीं धिया। पानिग्रह इन दोइन किया ॥
और कुसुमधुज तनीं कुमारीं। भईं ति भरथ सँतोषन नारीं ॥ १२० ॥
मंडफ पास भरथ की धनी। श्रुति श्रुवा संतोषन तनी ॥
हय गय रथ बहु रत्न जराइ। पाटबर सोबर्न भराइ ॥ १२१ ॥
अति आभरन रूप की रासि। इक इक कुँवरि जोग सौ दासी (सि) ॥
इंद्र जनक कौ निवतौ करौ। सीता सीस सुमंतक धरौ ॥ १२२ ॥
ता परभाउ सकत को कही। सो मनि सिया इंद्र पहँ लई ॥
जनकराइ तब समदि बरात। बनमों पहुँचे जोजन सात ॥ १२३ ॥
रथ बैठी स्यामा सिर धुनै। कहि वसिष्ठ यों दसरथ भनै ॥
जै जै धुनि अकास तै भई। स्यारि अकेली बाईं गई ॥ १२४ ॥
ए द्वै उत्तम कहै रिषीस। और सगुन मैं मंदे दीस ॥
पूछत सगुन घरीं द्वै गईं। पुनि रथ चढ़ि सब मारग भईं ॥ १२५ ॥
आँगैं जात लोग भरहरचौ। एक पुरिष तिन दिष्टिहिँ पर्‌यौ ॥
धनुष बान कर कंठ कुठार। दीसतु जनु पर्वत आकार ॥ १२६ ॥
आयौ भनत कहाँ हैं राम। कहँ दसरथ नंदन जिहि नाम ॥
मोहिँ दिखाउ जूझ आपुनौ। सुनियत बीर तोहि बल घनौ ॥ १२७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तू सिव धनुष टोरि द्वै कियौ। साँची कहि जो चाहतु जियौ ॥
सुनत वात दसरथ मन डरं। परसराम की अस्तुति करैं ॥ १२८ ॥
छत्री जिते जु इकइस बार। पिता बैर हति बार हजार ॥
सुरपति साखि तवहिं हम दियौ। पृथी राजु सब विप्रनि दियौ ॥ १२९ ॥

राजोवाच

छाँड़ि गुसाईं बारौ राम। तुमसौं करि न सकै संग्राम ॥
अरु तुम छाँड़े सर अभ्यास। अतिहि कोप मति करौ उदास ॥ १३० ॥
रहौ तपोवन तुम रिस त्यागी। राजा कहत सुनौ रिषि रागी ॥
बोलत परसराम रिस भर्यौ। मैं सुनि सबद ध्यान परिहर्यौ ॥ १३१ ॥
जिन हरधनु तोर्यौ कर तानि। तातैं रिस मैं जीमहँ आनि ॥
कहै राम सुनि दसरथ राउ। मोपहँ सुनि सब धनुष प्रभाउ ॥ १३२ ॥
ए विसकर्मा आपुहि करे। अति बिसाल बहु रतननि जरे ॥
असुरनि बीत्यौ है रन रंग। तब हरि कौं अरप्यौ सारंग ॥ १३३ ॥
जूझ तिपुर दैयत सौं भयौ। तब पिनाक संकर कहँ दयौ ॥
सोव पिनाक भंग इहिं कियौ। छाँड़हुं नहीं नेम मैं लियौ ॥ १३४ ॥
यह सारंग संकर मुहिं दियौ। याहि हतत कछु दोष न हियौ ॥
सो सारग गह्यौ फिरि पानि। रामु मारि मैंटौं तुव कानि ॥ १३५ ॥
तब बोले रघुनंदन रामु। तुम सौं मोहिं नहीं संग्रामु ॥
तेरं कंध जनेऊ दीस। विप्रहि कौं न बूझिए रीस ॥ १३६ ॥
यहर बात सुनि करी न कानि। खैंच्यौ वानु लाइ धनु तानि ॥
तासौं राम निवीरज कियौ। देखत परसराम हरि लियौ ॥ १३७ ॥
जिहि बल परसराम जुग जित्यौ। सोलु राम निज वाननि जित्यौ ॥
इहि काटौ राघौ कौ ग्यान। कैसैं निरफल होत संधानु ॥ १३८ ॥
दसरथ देखि भयौ सुख घनौ। देख्यौ साहस पुत्रनि तनौ ॥
तब भृगुनंदन अस्तुति करी। गयौ थान फिरि गिरिवर पुरी ॥ १३९ ॥
पुनि तिहि करयौ सबै आचार। सूरजबंस जिसे ब्यवहार ॥
चारौं कुंवर रहैं सुख भोग। आनदैं नगरी कौ लोग ॥ १४० ॥
सीलवंत ता सीता नारि। सासुनि तनीं करति मनुहारि ॥
सब रनिवास गनैं ता सिया। करहिं हेत मानौं निज धिया ॥ १४१ ॥
उपजी बुद्धि तबै भूपाल। समधे मरथ जहाँ ममसाल ॥
तिनके साथ सँतोषन दियौ। राम लक्षिमन घर राखियौ ॥ १४२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गयौ कैंकई मंदिर राउ। तासौं रानी मागि परसाउ ॥

श्लोक—ममाज्ञा कुरुते पुत्रं ते मातु गृह गम्यतां,
विद्या अभ्यासितोनित्यं जत्र देवोस्ति पुंगवः ॥ १४३ ॥

दोऊ विद्या करत अभ्यास। राम लक्षिमन राखे पास ॥
सेवा बहुत पिता की करई। आइसु मैटि पाँव नहिं धरई ॥ १४४ ॥
ज्यौं छाया त्यों लछिमन साथ। परजा पालै ज्यों सुत तात ॥
इहि ब्योहार बहुत दिन गए। राजा बोलि पुरोहित लए ॥ १४५ ॥
नित अस्नान देव व्रत करै। राम नीति मारग ब्योपरै ॥
अवहीं मंत्र देहु तुम एक। चाहौं करयौ राम अभिषेक ॥ १४६ ॥
जेते पुहुमो बरतें राउ। सब आदर कैं निर्वति पठाउ ॥
अरु जल अड़सठ तीरथ तनौ। नगरो चित्र करावहु घनौ ॥ १४७ ॥
देखहु गनित चक्र धरि खरी। उत्तम लग्न होइ सुभ घरी ॥
गनहु देव ग्रह दक्षिन बाम। तब सिंघासन बैठहि राम ॥ १४८ ॥
यहर मंत्र परधानौ सुन्यौ। जै जैं सबद नृपति मतु गुन्यौ ॥
सबई लोग करत जे आस। अब सुनि बचन भए ति हुलास ॥ १४९ ॥
मंत्र मानि मंत्री घर गए। देस देस धावन परठए ॥
सिकले नरपति नगरी माह। भरि मेले वन तरुवर छाँहँ ॥ १५० ॥
सेत छत्र तबहीं बिस्तरं। सो वन दंड सो दृढ़ करि धरै ॥
ए गज गाह ऊजरे खरे। धुजा पताखनि ए रचि धरे ॥ १५१ ॥
ऊँचे कनक जो मोतिन जरे। अति अति भाँति विधाता करे ॥
तोरन पौरि बँधाए जानि। तिन छवि बिजुली दमकति मानि ॥ १५२ ॥
ऊँचे मडप रचि सुतिहार। जा देखत मन लहत न पार ॥
[मं] माच बँधाए पौरिन जोग। तिन चढ़ि कौतुकु देखहिं लोग ॥ १५३ ॥
नारिकेल पुंगोफल आनि। अरु तमोर सब मुखह समानि ॥
भरचौ कलस रिषि थाप्यो ताँह। नए अम्ब पल्लव तिन माँह ॥ १५४ ॥
अरु जो कछू जहाँ चाहियो। पद्धति देखि अचारज लियो ॥
गुड़ी ऊछरी नगर मझारि। घर घर मंगल गावहिं नारि ॥ १५५ ।
तवल निसान सबद उच्चार। चहूँ पास मैमंत जुझार ॥
रत्न अमोलक जत्ननि जरचौ। चुनी लाल सौं सूतनि करचौ ॥ १५६ ॥
ते पटाढ पट जीन पलानि। उनमत तेजी राखे आनि ॥
आचारज तव नृप सौं कह्यो। सुनि करि राउ तबहि गहगह्यौ ॥ १५७ ॥
अति आनंद्यौ अंगन माइ। रामचंद्र तब लए बुलाइ ॥
देखत राम लिये उर लाई। मंत्री पास बईठे आई ॥ १५८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहै पिता सिख सुनहु कुमार। दीन्हौं तोहि देस कौ भार ॥
हौं प्रभात देहौं तोहि राजु। तुम संजम प्रतिपालहु आजु ॥ १५९ ॥
जाइ दान विप्रनि कहँ देहु। जनि भोजन दूँवार करेहु ॥
भूमि सयन कुस की साथरी। सीता सहित चाहिए करी ॥ १६० ॥
अरु संकल्प गउन कौ करहु। अरु मन बचन कोपु परिहरहु ॥
कहै राम आइसु परिमान। पुनि पहुंचे आपनै मिलान ॥ १६१ ॥
पुनि राजा पूछत द्विज जैसी। तुम गनि लगन कहौ धौं कैसी ॥
कहत विप्र तुम सुनहु भुवार। आठैं पुष्य और गुरुवार ॥ १६२ ॥
वेध शुक्र शनि मंगल तनौ। या लग्नहि औगुनि अति घनौ ॥
सगुन हमारौ अैसी कहै। बैठत राज रामु बन लहै ॥ १६३ ॥
जो बैठहि तौ छाँडहि ठाँउ। प्रान परिहरै दसरथ राउ ॥
ऐसौ बचन जोतिषी कहौ। सिद्धि होत असिद्ध मत लहौ ॥ १६४ ॥
सब अपजोग जोग नहि एक। अब नहि रामै करौऽभिषेक ॥
जो हम बात सुहाती कहैं। इकु गुन जाइ अपजसौ लहैं ॥ १६५ ॥
राजा कहै बृद्ध हौं भयौ। तातैं राज राम कौ दयौ ॥
भई साज आए सब राइ। कहौ विप्र क्यों मैट न जाइ ॥ १६६ ॥
ज्यौं ज्यौं भरथ गए परदेश। करौ तिलक यौं कहै नरेस ॥
वह है सदा राम कौ दास। राज लोभ कौ नहीं बिसासु ॥ १६७ ॥
उठि वसिष्ट तुम रोचन लेहु। आपुन जाइ उनहिं ब्रत देउ ॥
भूमि सयन आइयौ कराइ। मति भूलौ मो मन पतिआइ ॥ १६८ ॥
त्यौं ज्यौं राम पहुँचे तहाँ। मातु देव पूजति है जहाँ ॥
ता पहँ बैठयौ लछुमन लह्यौ। सब ब्यौहार मातु सौं कह्यौ ॥ १६९ ॥
सुनत जीव सुख उपजौ माइ। मानहुँ रंक परी निधि पाइ ॥
पंडित सुनौ विष्णु कवि भनै। सो मूरख जो अगुनित गनै ॥ १७० ॥
मनहु तिलक लछिमन सिर होइ। तैसौ हरषतु दीसत सोइ ॥
कहै राम आनंदित दीठ। राजा तुम ही हम पति ईठ ॥ १७१ ॥
इतनी राम करी मनुहरि। आगैं राघौ पाछैं नारि ॥
जब पहुंचे आपनै अवास। तब बसिष्ठ आयौ ता पास ॥ १७२ ॥
कर जोरैं बिनवत अति घनौ। आइसु देहु देव ब्रत तनौ ॥
तुमहि सरीखौ प्रोहित जासु। कहत राम नित मंगल तासु ॥ १७३ ॥
तब विधि करत रिषी सुर तैसी। ता ब्रत लेत बूझिए जैसी ॥
हेम वस्त्र अरु अन्न समान। भौ संकल्प अगनित गोदान ॥ १७४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राघौ भूमि सयन जब भए। उठि वसिष्ठ राजा पँह गए ॥
दसरथ सरिस कहै रिषि सोइ। बहु आनंद नगर महँ होइ ॥ १७५ ॥
बालक तरुन बृद्ध अरु नारि। लोग समात न नगर मँझारि ॥
भरो देव पुर पट्टन तनौ। देखन कौतुक रामनि तनौ ॥ १७६ ॥

इतनी सुनि जब प्रोहित पास। गए नृपति भीतरे अवास ॥
जहँ बैंठी रानी कैंकई। दासि चलि तहँ मिथुला गई ॥ १७७ ॥
तब तिहि रानी लई बुलाइ। तुम कैसी सोवति मुख बाइ ॥
राजा दुष्ट कर्म यह कियौ। यह सब राज राम कहँ दियौ ॥ १७८ ॥

बुधि करि भरथहि दियौ पठाइ। तुमसौं ऊतरु करि बौराइ ॥
यह मैं सुनी रिषिन पहँ बात। रामहिं तिलक होत है प्रात ॥ १७९ ॥
तिलक होत रामनि कौ सुन्यौं। धनि यह दिवस कैंकई भन्यौं ॥
हार उतारि अमोलक लियौ। दासी जोगि बधाई दियौ ॥ १८० ॥
कहै कैंकई बारंबार। राम भरथ मो एकइ सार ॥
इन महँ रामहिं बाहरि कोइ। मानहुँ राज भरथ कौं होई ॥ १८१ ॥

रामचंद्र की अस्तुति करै। याके गुनि जपि हियरा धरै ॥
घटि बढ़ि चिंतन मन में धरैं। इक चित सेवा मेरी करैं ॥ १८२ ॥
मैं निजु राजा गुन्यौ विवेक। रामु जोग दीनौं अभिषेक ॥
जाकौ पुत्र होइ गुनवंत। ताहि राज की कैसी चिंत ॥ १८३ ॥
इतनौ सुनि दासी परजरी। तेरी बुद्धि विधाता हरी ॥
उ [रु] क्षह करै सोग के ठाइ। होइ सयानी भूलहि काइ ॥ १८४ ॥

राज लागि नित विग्रह होइ। सुर असुरन रन बीततु लोइ ॥
पुत्र पिता कौं चितवै द्रोह। गरुवौ देवि राज कौ मोह ॥ १८५ ॥
पेट पैठि उन लीनौ राज। बहुत तिहारो भयौ अकाज ॥
स्वामिनि धर्म लागि सिख देइ। कौसिल्या आधीन न होइ ॥ १८६ ॥
तेरे पुत्र जोग बन देइ। ऊभौ सेवक कर्म करेहि ॥
सिखवति करुवौ लागत तोहि। तब स्वागिनि संभरिहै मोहि ॥ १८७ ॥

इतनौ सुनि रानी चेतियौ। चाहत काज आपुनौ कियौ ॥
वार वार यह बिनती करै। हिरदें हेत भरथ कौ करै ॥ १८८ ॥
हूठि बुद्धि तिवई की कही। कहत सयानै लोगनि लहीं ॥
दासी बौराई कैंकई। ताकी बुद्धि और ह्वै गई ॥ १८९ ॥

अबहीं बुद्धि मोहि समुझाइ। कहा राइ सौं बिनऊँ जाइ ॥
राजा बचन हमारौ धरैं। क्यों यह राज राम कौ फिरैं ॥ १९० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कबहूं लात राम सो हई। तब तैं दासी कुबरी भई ॥
वहि दुख मानि हियैं दुख धरै। ता लगि बैर राम सौं करै ॥ १९१ ॥
बूझत मतौ अनंद करेइ। रानी जोग सीख सो देइ ॥
हार डोर कंकन परि हरौ। परिहरि पलंग करौ संथरौ ॥ १९२ ॥
मैं राजाहि जनाऊँ सार। जो आवाहि जु तुम्हारैं द्वार ॥
तुम मति पुरुष कानि चित करहू। नरु माँगति मति संका धरऊ ॥ १९३ ॥
दैयत देव जूझ जब भयौ। इन्द्र सहाइ राउ तब गयौ ॥
जूझत दसरथ भए प्रहार। तब तुम करी नृपति की सार ॥ १९४ ॥
बहुत दिवस निसि जागत गए। तुमकौं राउ प्रसनै भए ॥
द्वै बर दैन तबै तिन कहे। बाचा करी उधारै रहे ॥ १९५ ॥
अब बे बर माँगौं संभ्हारि। भरथ राज करि राम निकारि ॥
गुन सम्हारि यह हियैं गनंत। पुरुष कानि मति भूलहि अंत ॥ १९६ ॥
दुवौ तरिवना लिए उतारि। इतनी बात सुनी जब नारि ॥
दीन्हैं कुबिजा दासी जोग। आपुन करन आरंभ्यौ सोग ॥ १९७ ॥
रानी रूठी दासी कही। आयौ राउ जबै सुधि लही ॥
उठि रानी ऊतरु दें मोहि। अबहि माँगि जो चाहत तोहि ॥ १९८ ॥
विनवै बोल पांच दस सहे। द्वं वर दैन मोहिं तुम कहे ॥
वाचा हिएँ आपु प्रतिपारि। आजु देहु यौं बोलति नारि ॥ १९९ ॥
बोलत राजा करत प्रमान। इन बर रूठति कौन सयान ॥
बारहि बार कहति हठ लागि। अब दीजे बर नृपति सभागि ॥ २०० ॥
तब राजा कहियौ मैं देउ। जो वर मागहि सों अब लेउ ॥
तब सुनि तिय बर माँग्यौ एह। भरथ राज रामहि बन देहु ॥ २०१ ॥
स्वामी यह बाचा प्रतिपारि। जेठौ चौदह बरष निकारि ॥
इतनी सुनत राउ लरखरयौ। ता छिन मुरछि धरा पर परयौ ॥ २०२ ॥
घरी एक तिहि चेत न लह्यौ। बहुरि उतरु रानी सौं कह्यौ ॥
रानी मेरौ बचन करेह। यह न दैउ औरै बरु लेह ॥ २०३ ॥
अरु पुनि देउ भरथ कहँ राजु। वन जनि राम पठावै आजु ॥ २०४ ॥

इति श्री रामायने बालकांडे रामराज्य विदूषतं नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्यौं चलि सकै पयादौ राम । सीत वात अरु व्यापै घाम ॥
अरु जो आँखिन ओझल होइ । जात प्रान मो राखतु कोइ ॥ १ ॥
तूँ भुजंगि वाचा मोहि डसी । काकी सीख कुमति मन वसी ॥
कबहूं तोहि न ऊतरु दियौ । काकी बुद्धि बंस छै कियौ ॥ २ ॥
बोली रानी राउ सम्हारि । मति हारै वाचा प्रतिपारि ॥
अपजस होइ बहुत तुम जोग । निंदा करहि सयानौ लोग ॥ ३ ॥
जा मैं मंत्र भरथ कह कियौ । ताकै क्रोध धर्म वन दियौ ॥
यह सराप दसरथ तब कहै । ताके कोप पुत्र बन लहै ॥ ४ ॥
तो सौं का कहिये मनु जान । धृग धगु री कैकई अग्यान ॥
राति दिवस जो सेवा करै । कछु कुबुद्धि नहिँ हियरा धरै ॥ ५ ॥
जबही बचन सुनैगी एह । तब बन जाइ न करै सदेह ॥
यह बन जाइ रहै हठ लागि । कहै राउ भयौ अभागि ॥ ६ ॥
राम रूप मेरौ दुख हरौ । वाचा रिन मेरौ उद्धरौ ॥
रूदन करत भुनसारौ भयौ । उठि मत्री राजा पहँ गयौ ॥ ७ ॥
तिलक करौ उठि रामहि जोग । ऊभौ द्वार महाजन लोग ॥
वहुतै गीत सवद उच्चरैं । सुनतहि राउ अंधौ मुख परैं ॥ ८ ॥
मंत्री मरम न जानत एह । उत्तर लैहौ न भौ संदेह ॥
कह्यौ कैकई आई निंद । रामनि तनौ उछाह अनंद ॥ ९ ॥
सौंज करत जागे सब रैनि । सूते अबहि कहै ससिवैनि ॥
देखि कुचित मंत्री बाहुरयौ । आँगैं दृष्टि पुरोहित परयौ ॥ १० ॥
विप्रनि साथ लिए हकराइ । मंत्री रिषि सौं बात कहाइ ॥
भीतर जाइ जगावहु राउ । होतु पौरि तुम्हरी कह राउ ॥ ११ ॥
अब सुभ लगन मुहूरत एक । रामहि जोगु करौ अभिषेक ॥
रिषि आयसु लै महलै गए । राउ पास चलि ठाढ़े भए ॥ १२ ॥
सत्ति बचन सुनि बोल्यौ राउ । राम कुँवर मो पहँ लै आउ ॥
गीत नाद बरजहु जाइ । धरनि लोग दीजौ बहुराइ ॥ १३ ॥
दुख के बचन जु लाग्यौ कहन । ल्यावहु राम वेगि इहिँठान ॥
सुनि मंत्री रामहि लै गयौ । निमसकालु करि डाढ़ौ भयौ ॥ १४ ॥
राउन बोलै अति दुख गहै । रानी बचन कुँवर सौं कहै ॥
राजा द्वैवर दीनैं मोहि । भरथ राज तुम कहँ वन होहि ॥ १५ ॥
चौदह वरष बचन मैं लह्यौ । रामहि सरिस कैकई कह्यौ ॥
रानिहि ऊतरू देत कुमार । भरथहि बोलि करौ तुम सार ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मो देखत जो आवै सोइ । हौं बन चलत बहुत सुख होइ ॥
तुम तौ चलौ कहै कैकई । मोसौं राजा वाचा दई ॥ १७ ॥
अबहि पिता की वाचा पारि । भोजन करिहौं तुमहिं निकारि ॥
चलिगौ राम जहाँ रनिवास । ऊभौ भयौ कौशल्या पास ॥ १८ ॥
कहै बात जहँ जैसी भई । मुरछि धरनि कौसल्या गई ॥
जब चेती तब लई उसास । कहाँ दई तैं टौरी आस ॥ १९ ॥
जल बरसत बरसे जु अंगार । का करि का कीनौ करतार ॥
सीत लगत विष परस्यौ अंग । सुख तैं भयौ दुरगति सौं संग ॥ २० ॥
सदा मोह करती कैकई । यह बुधि भाग हमारैं भई ॥
कहै राम सुन जननी बात । मोकौं आइसु दीनौं तात ॥ २१ ॥
अब तुम मां कहँ आयसु देउ । बन महँ जाउ नगर तजि भेउ ॥
कीजौ सेवा तुम नृप तनी । हमकौ मया करौ तुम धनीं ॥ २२ ॥
धन्य धन्य कौसल्या माइ । मरैं जन्म तो उर लैउँ आइ ॥
अरु तिवई कौ संजम एह । पतिव्रत सब प्रति पाल करेह ॥ २३ ॥
तब सुनि करि कौसल्या कहै । सुनि दिवस जो तुम बिनु रहै ॥
तुम सौ पुत्र जो बोझिल होइ । माता जीवति क्यों करि सोइ ॥ २४ ॥
चलौं पुत्र सँग छाँड़ि भतार । कहै राम अजुगुत व्योहार ॥
जौ तो जननि धरम पर भाउ । गुरु देवता तुम्हारौ राउ ॥ २५ ॥
आइसु लै चलियौ समुझाइ । बहुत बात संतोषौ माइ ॥
बार बार सौ देइ असीस । राखहिं तोहि कोटि तेतीस ॥ २६ ॥
नमसकालु जननी कहँ कियौ । लछिमन कुँवर साथ करि लियौ ॥
गए राम आपुनै अवास । देखि सिया दासीं चहुँ पास ॥ २७ ॥
तब सिय लागी अचरजु करन । दीसतु नहीं राज आभरन ॥
मुकुट न सीस न प्रोहित साथ । यह कारन मोसौं कहि नाथ ॥ २८ ॥
कहो बात सीता सौं जैसी । करी प्रमान कैकई जैसी ॥
सुनि जानकि बिलखी ह्वै रही । विप्र बोलि लछमन सौं कही ॥ २९ ॥
अति निहि करी विप्र मनुहारि । सब आभूषन दिये उतारि ॥
देत न राम न कछूवै कहै । काठ कपर बाकल चितु लहै ॥ ३० ॥
देखत राम परयौ संदेह । सुंदरि राखी रहत न एह ॥
नारिहि गवन न कहि परदेस । मन मँह सोचत कहत संदेस ॥ ३१ ॥
तुम कीजौ राजा की सार । सबै सासु जानहु इकसार ॥
तुम संजम प्रतिपालहु धनी । भलो सार कीजौ आपनी ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भरथहि आगैं मेरी बात । तुम मति कछू कहौ कुसरात ॥
सुंदरि जाहि पास धन होइ । पर कीरति सहि सकत न कोइ ॥ ३३ ॥
सीता रामचंद्र सौं कहै । तुम बिन को वह जो घर रहै ॥
छिन तुम बिन जो जीवहि जोइ । सो तिवई कौ धरमु न होइ ॥ ३४ ॥
भरथ पास को बिनती करै । कैसैं अन्न वस्त्र बिनु सरै ॥
देखौ साँई हियै बिचारि । सोहति किसी पुरुष बिनु नारि ॥ ३५ ॥
रवि बिन दिवस चंद बिन रैनि । तैसी पति बिहीन मृग नैनि ॥
हौं पुनि साथ तुम्हारे जाउ । घन पाटन वन वन खड गाँउ ॥ ३६ ॥
सुन जानकी कहैं यह राम । मेघ सीत जल व्यापै धाम ॥
अरु डर सिंघ बाघ कौ छनौ । कहत राम घर महँ सुख छनौ ॥ ३७ ॥
भूख प्यास अति कष्ट सरीर । लहै ति वन पुनि तातौ नीर ॥
भूमि सयन उठि लागत छार । घरही रहौ सिया तिथि वार ॥ ३८ ॥
इतनौ सुनत सिया परजरी । झूठ कहत अति तुम मत धरी ॥
सिंध बाघ मन संकतु हियैं । कहा करौं तुम बिनु सुख जियैं ॥ ३९ ॥
जनक अभागौ सीता कहैं । तुम सौं मूढ जँवाई लहैं ॥
तीनि भुवन जा संक कराइ । सो कत बन जीवनहि डराइ ॥ ४० ॥
राघौ कहैं साथ तौ चलौ । मात पिता आइसु दै भलौ ॥
उनकी मैंड़ टोरि जो जाहि । नारि विचारि देखि मन माँहि ॥ ४१ ॥
अब जु कहौ तौ लाजौं राइ । जो हौं कहौं पिता सौं जाइ ॥
अग्नि साखि दै सौंपी कंत । को बूझै तुम गोहिन अंत ॥ ४२ ॥
ऊतरु कछू न दीनौ राम । लछिमन कोपु चढ़यौ सुनिताम ॥
तुम्हैं कहा बन सौं है काजु । दसरथ मारि देहुँ तुम राजु ॥ ४३ ॥
इक बूढ़ौ तिवई बस रहइ । ताहि गनै को लछिमनु कहइ ॥
सैन बुलाऊँ देखौ आजु । राम न छाड़ौ पायौ राजु ॥ ४४ ॥
साईं तौ सभे बली न कोइ । तुमहि चलत बन जुगत न होइ ॥
चहूं देस जो नृपति सुनंत । ते हँसिहैं तुम राजु तजंत ॥ ४५ ॥
अति है सास उसासन तहाँ । मनौ सर्प रुध्यौ बिल महाँ ॥
कठिन बचन जब बोले नाम । यह सुनि तब ऊतरु दिय राम ॥ ४६ ॥
यह दसरथ कौ दोष न होइ । दई सहावै सहिए सोइ ॥
सुनत कोप उपज्यौ बलिबंड । दैयहि मारि करौ नव खंड ॥ ४७ ॥
काहर आस दई की करै । सुपुरुष निजबल तारै तरै ॥
कहै रामु तूं कोप निवारि । पिता बचन चलियौ धरि हारि ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहिलै एक तपी पुर भयौ। सुनि तब बचन पिता कौ लयौ ॥
ऊभी मातु ताहि सुत मारि। सुनत बात गयौ खडग प्रहारि ॥ ४६ ॥
अजुगत जुगत पिता जो कहै। सो सुत मान लेइ गति लहै ॥
लक्ष्मन लगतु अलक्षन आजु। तातैं बन अमृत विष राजु ॥ ५० ॥
अब मति बंधु कोप मन धरहि। इकचित सेव पिता की करहि ॥
जौ लगि आवै भरथ कुमारु। तौ लगि तोहिँ देस कौ भारु ॥ ५१ ॥
यह सुनि लछमन उतरु कहै। तुमहिँ चलत अब को घर रहै ॥
जहँ जहँ देह तहाँ तहँ छाँहँ। त्यों तुम साथ फिरौं बन माँहँ ॥ ५२ ॥
सुनि लछमन जौ तूं न रहाइ। तौ अपने अंतःपुर जाइ ॥
जननि भेंटि सुंदरि समुझाइ। पुनि अवधि लै मिलिए आइ ॥ ५३ ॥
कहन सँदेसौ निज तिय पास। चलिगौ कुँवर आपु आवास ॥
सो उछाह करि कहति वहूत। समुझावै दसरथ कौ पूत ॥ ५४ ॥
राम सेव हम चाहत करी। तुम क्यों चलन कहति सुंदरी ॥
समुझि कहति नहिँ हिएँ बिचारि। पुनि लछिमन समुझावति नारि ॥ ५५ ॥
नीकौ देव भयौ तुम काज। राम चलन अनुसरियौ राज ॥
सुंदरि बचन जु अैसे कहे। सुनि संदेस लछिमन गहगहे ॥ ५६ ॥
तोनौ जनै एक ठाँ भए। प्रात होत राजा पहँ गए ॥
भेंटे राजा कंठ लगाइ। सब रानी मिलियौ समुहाइ ॥ ५७ ॥
तिनकैं हियैं भयौ दुख घनौ। सुनियौ गमन जु रामहि तनौ ॥
कहै राम नृप आयसु लहौं। चौदह बरस जाइ बन रहौं ॥ ५८ ॥
तुम निज नारि जोग बरु दियौ। सो प्रमान मैं चाहतु कियौ ॥
गहभरि राइ सुनि बच्छ। आजु रैनि मोपहँ रहि रच्छ ॥ ५६ ॥
इतनौ होइ बहुत सुख मोहिँ। पुनि परभात समदि हौं तोहि ॥
कहै राम मैं सब परिहरयौ। प्रीतम जननि भेंटि दुख करयौ ॥ ६० ॥
कहा एक निसि बिलमैं काम। चलन देहु अब भाखत राम ॥
मंत्री सरिस कहै नर नाथ। लै भंडारु सैन बहू साथ ॥ ६१ ॥
तुम जु राम कैं गुहनैं होहु। और अभारु कहा कहौं तोहु ॥
यह बात सुनि करि कैकई। अति रिस करि तब ठाढ़ी भई ॥ ६२ ॥
वार वार निरभासति नारि। राजा कहा बात मति हारि ॥
सब भंडार राम सँग देहु। राज भरथ का करिहै एहु ॥ ६३ ॥
इतनौ बचन जु भयौ अकाजु। अहा भरथ हौ करिहैं राजु ॥
कहियौ राम करयौ उपकार। तीन बात मों नहि व्यौहार ॥ ६४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बाकल औ बैसाखी भाँति। तीजी कंध मूंज की पाँति ।।
सो मोहि माता दीजहि आनि। राखैं कोस देस रजधानि ।। ६५ ।।
इतनौं सुनत गहगही भई। बाकल लै आई कैकई ।।
अरपे राम लछिमन जोग। ए पहिरौ देखहिँ सब लोग ।। ६६ ।।
कहै वशिष्ठ सुनौं कैकई। सेवत शत्रु राम कहँ भई ।।
कह अपराध तिहारौ कियौ। नारि सहित बनवासौ दियौ ।। ६७ ।।
धिगु तो बुद्धि करै कह राजु। जा लगि राम उदास्यौ आजु ।।
सीता माया करि अवतार। रामचंद्र त्रिभुवन अवतार ।। ६८ ।।
तू पापिनि जानति नहिँ ताहि। राज लोभ तो कह बहु आहि ।।
इतनी सुनि सो रही लजाई। राजा कह तू मतैं भुलाइ ।। ६९ ।।
साजु पटोरे गहनैं लेहु। चौदह बरस जोग सिय देहु ।।
जैसौ नृप कौ आयसु भयौ। सो सब सौंज मंत्री लै गयौ ।। ७० ।।
करि जन चीर सिया पहिराइ। सासु भेंटि रथ बैठी जाइ ।। ७१ ।।

4314

हा हा च क्रियते लोको रोदनं च चकार सः
दैवोपि दापये दुःखं तस्मात् सुखं करोति कः ।।

चले रामु धनु विप्रनि दियौ। बहुत जुगति मारग मन कियौ ।।
आगैं विप्र जु ऊभौ दीस। भयौ अधीन सुदेई असीस ।। ७२ ।।
अब हौं पाछैं ह्वै रहौं। सर्वसु दीन्हौं राघौ लहौं ।।
हाथ उदक दीनौं समुदाइ। रामै विस्मै भयौ मन आइ ।। ७३ ।।
मित्र बहोरें सब रिषि मिले। तब अथ चढ़ि करि मारग चले ।।
कहतन सुनत जाइ नहिँ बात। धर तन रथ फेरयौ रघुनाथ ।। ७४ ।।
थोरी दूर खोज तिन कियौ। पुनि बहुरौ बन मारग लियौ ।।
उमह्यौ लोगन गरऊ जरचौ। रामचंद्र कैं गुहिनैं परचौ ।। ७५ ।।
चलियौ साथ उमहि सब लोग। तब बुधि उपजी रामनिजोग ।।
गोसुल देस झंख जह गलो। तातर सूते राघव बली ।। ७६ ।।
सिंघ बाघ वादर सुभ ठाउ। भील मवासु जहाँ है राउ ।।
राम कानि तिहि आदरु कियौ। राजदेस सब चाहतु दियौ ।। ७७ ।।
तिन मनुहारि रोम की करी। लेइ दौरि राजा की फरी ।।
तब करि साट राउ घर गयौ। उऔ सूर भुनसारौ भयौ ।। ७८ ।।
समदे राजा मंत्री जाइ। कहै बात राघौ समुझाइ ।।
जो क्यौ गगन सुनौ तुम तनौ। दुख कैकई करै तुम घनौ ।। ७९ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामोवाच

अब जो नैननि देखै तोहि । प्रात जात को राखन जोहि ।।
कहियो देव जोग परनामु । तुम पसाउ बन पहुँचे रामु ।। ८० ।।
कहत सँदेस जु बारंबार । कीजौ बहुत भरत की सार ।।
दसरथ चरन बंदि हो जाइ । करि प्रनाम लीजौ समुझाइ ।। ८१ ।।
तुम जनि मया हियैं बिसराइ । रहियौ सदा हेत करि राइ ।।
इतनौ राम सँदेसौ दियौ । बर कौ दूध लछिन दुहि लियौ ।। ८२ ।।
तब तिन जटा करीं तिन सीस । रूप धरैं द्वै गिरिजा ईस ।।
मंत्री समुझि चले घर मोरि । पहूंचे नगर तनौ तव खोरि ।। ८३ ।।
नमसकाल करि बारंबार । तीनौं भए नाउ(व)चढ़ि पार ।।
उतरि सिया बिनवति कर जोरि । जो हम घर आइहैं वहोरि ।। ८४ ।।
तोहि प्रतिग्यां गंगा माइ । एक लक्ष हौं देहौं गाइ ।।
इतनौ कहि तब मारग भए । दिन अथवाइ सरोवर गए ।। ८५ ।।
कियौ मिलान राम ता पारि । लछिमन ल्याए कंद उखारि ।।
तन तिन तीनिहुं करयौ अहारु । ऊभौ पहरैं रह्यौ कुमारु ।। ८६ ।।
उठत प्रात पुनि मारग लाग । पहुंचे तीरथ जाइ प्रयाग ।।
भरद्वाज तिन भेंटौ जाइ । आसन आर्घ दियौ रिषि राइ ।। ८७ ।।
बहुतै करी सिया की सार । बूझी बात सकल ब्यौहार ।।
चौदह बरष तपी हम भए । आइसु तात अबै परठए ।। ८८ ।।
रहैं जहाँ पूछन रिषि राइ । सो बनु अब तुम देहु बताइ ।।
कहै विप्र अब धारौ पाँउ । चित्रकोट तुम कौं सुभ ठाउँ ।। ८९ ।।
चले कुंवर तब गंग अन्हाइ । मारग दिखरायौ रिषि राइ ।।
आपनु दोई तिरहिं कुमारु । ऊपर कपरा धरि हथियारु ।। ९० ।।
अरु तिन सीता लई चढ़ाइ । अैसैं पार पहुँचे जाइ ।।
छाड़े अति वन बाग निवास । अरु कोकिल तहँ बचन विलास ।। ९१ ।।
आंगैं राम पाछैं लछिमना । सीता माँझ देखि तच्छिना ।।
गिर तर मालति बहु लहै । करि आसर्म राम तहँ रहै ।। ९२ ।।
भोजन हौमु करैं म्रग मारि । अैसैं बिचरत बनहिं मझांरि ।। ९३ ।।

इति श्री रामायने बालकांडे राम बनवास वर्णन नाम सर्ग : ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मंत्री पहुंचे दसरथ पास। राजा बैठे जहाँ अवास ॥
दुख करि बूझन लागे बात। लछिमन राम तनी कुसलात ॥ १ ॥
क्यौं पाँ चलैं क्यौं भोजन करैं। कैसें बनहू माझ ब्योपरैं ॥
तुम पुनि पलटे कहँ पहुंचाइ। कहि कहि नृप बूझत अकुलाइ ॥ २ ॥
कहि मंत्री गंगा के तीर। कठिन दुखख बिच रहू बरबीर ॥
पुनि जागे भुनसारौ भयौ। बर कौ दूध लच्छिमन लयौ ॥ ३ ॥
तासौं बांधे जटा कुमार। मोहि समदि वे उतरे पार ॥
सक्तिहि बहुरयौ लहौं न जान। दीनी देव तुम्हारी आन ॥ ४ ॥
तुमकौं तीनिहुं बिनई सेवा। भरथ अभारु कह्यौ है देवा ॥
कहौ संदेसौ बारंबार। तुम कीजौ बिप्रनि की सार ॥ ५ ॥
लछिमन तुम सौं कह्यो संदेस। जैसे बिकलन भए नरेस ॥
बिनु अपराध नारिकी बुद्धि। परिहरि राम लहहि क्यों सिद्धि ॥ ६ ॥
पां पां चलहिँ कंद खनि खाहिं। इक बन छाड़ि एक बन जाहिँ ॥
पलिका भूमि सुपेती घासु। तरु मंदिर गिरि गुफा अवासु ॥ ७ ॥
सुनि ब्यौहारु राउल खरयौ। एक महूरत धरती परयौ ॥
अति दुख भूल्यौ चेतु न जास। पल ही पल संभरियौ राम ॥ ८ ॥
एक धरी मुरछौं द्व बार। गई मूरि गिरि लही न सार ॥
रानी सबै पास घिरि रहीं। नैन नीर झिरना दुख गहीं ॥ ९ ॥
मंत्री सौं कौसल्या भनै। जो यह बात कैंकई सुनै ॥
ता हियरा सुख उपजै घनौ। सुफल जन्म लेखैं आपनौ ॥ १० ॥
कहौ न जाइ बहुत दुख भयौ। मत्री सुमति घरै उठि गयौ ॥
दुख कौसिल्या अति गहभरी। कीजै कहा दई अति बरी ॥ ११ ॥
बाचा हीन तुम भए बुढ़ंत। बोलति रानी सुनि हो कंत ॥
सोई देव मूल परिहरयौ। सर्वसु जीति त्रिभुवन उधरयौ ॥ १२ ॥
एकहि अंग जग्यँ सौ करे। सत्त धरे तेऊ भुइ धरे ॥
तब तैं सत्त तपनि दृढ़ गह्यौ। पहर बचन राजा सौं कहयौ ॥ १३ ॥
सांई सुनौ सत्त के भेद। सत्तहि उपजे चारों वेद ॥
पानी अग्नि भयौ संसार। यह सब सत्व तनौ ब्यौहार ॥ १४ ॥
सत बिनु पुरुष न कोई लहै। एसौ बचन कौसिल्या कहै ॥
बाचा सत्य प्रीति अरु धर्म। यह ई दृढ़ जो उत्तम कर्म ॥ १५ ॥
इन बिनु पुरुष जानिए ऐसा। बिना फूल फल तरुवर जैसौ ॥
भरथ कुँवर यह भूंजै राज। सो क्यों आवै राम कै काज ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैसी नारि देव लघु तनी। तैसी भई कौसिल्या भनी ॥

श्लोक—सत्तेच बहुते राज्यं। सत्तेच वहते रवि।
सत्तेच बहते मेघ। सत्यंच बहते मही॥ १७ ॥

इतनौ सुनि तव बरजि रहाइ। अब संसौ मो परियौ आइ॥
सींची अग्नि न बरजी गई। यह बिस बेलि कैकई भई॥ १८ ॥
अैसी बात राज जब कही। रानी सुनत लाज करि रही॥
दांत जी भलैं बिनई सेवा। यह पराध मो बगसहु देवा॥ १९ ॥
निठुर बात मैं जैसी कही। हौं दुख भूली जानौ नहीं॥
तिरछौ राम हियैं ह्वै रह्यौ। जोई भयौ सोई मैं कह्यौ॥ २० ॥
पहर बात सुनि बोलि न कोइ। दुख की नींद गयौ नृप सोइ॥
रानी बहुत रही ता पास। और गईं आपुनैं अवास॥ २१ ॥
सूतौ राइ अर्ध मिसि गई। जागैं सुरति बहुत तिन भई॥
षटदिन राम बिनु भए नरेस। भरथ चतुरगुन ते परदेस॥ २२ ॥
कौसिल्या रानी तहँ रहै। दसरथ राइ बात तब कहैं॥
आम काटि राखियौ बबूर। सोफल लह्यौ दुख्ख कौ मूल॥ २३ ॥
बारैं राज पिता मैं दीन्हौं। बरजत रोस करन मैं लीन्हौ॥
मांस हीन मोहिं खिनकु न सरै। नित उठि वर्नहि अहेरैं फिरै॥ २४ ॥
बरसा काल अँध्यारी रैनि। उनये मेघ रहे घर गैनि॥
ढूकि रह्यौ सरवर के घाट। चाहौं गज गैंडा की बाट॥ २५ ॥
आयौ तहाँ अंध कौ पूत। पानी भरन जु आनि पहूंच॥
सवद करत मैं उरमें हयौ। हरि हरिकरत धरनि गिरि गयौ॥ २६ ॥
पैरि नदी हौं आयौ पास। अजहू कंठ कछू है स्वाँस॥
मो सौं कहै मया वह भयौ। जानि नीर गज भोरैं हयौ॥ २७ ॥
जग्यँदत्त तब कह्यौ संदेस। अब यह काढ़ौ बान नरेस॥
अरु भरि नीर कमंडल लेहु। अँधी अंध जोग तुम देहु॥
बेगि जानि बचन तुम्हारो सुनै। दैं हैं श्राप जग्यँदत्त भनै॥ २८ ॥
अरु जनि बचन तुम्हारो सुनै। दैहै श्राप जग्यंदत्त भनै॥
वेगि जाहु जनि बिरमहु राइ। बहुत जतन तित नीर पिवाइ॥ २९ ॥
मानि बचन तिन सनमुख गयौ। अरु भरि नीर कमंडल लयौ॥
धारि आगैं ऊभौ ह्वै रहियौ। अंधी अंध बचन तब कहियौ॥ ३० ॥
वार बार करि बोलै पूतु। बचन न देइ कवनतैं दूतु॥
याकौ सबद न सुत अनुहारि। जग्यंदत्त यह आयौ मारि॥ ३१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं डरपत बोल्यौ सति भाउ। गज कैं भोरैं कीन्हौं धाउ॥
कह्यौ संदेसौ काढ़त बान। तुम सम्भारि तिन गए परान॥ ३२ ॥
इतनौ सुनि ते मुरछि जु गए। रुदन करत सो विह्वल भए॥
ऊभौ हाथनि मोकी धाह। अरे बच्छ तैं करें अनाह॥ ३३ ॥
अंधी अंध रुदन तब भयौ। तूं मेरौ सुत धोखैं हयौ॥
जो सति भाउ न कहतौ आइ। तौ सतखंड देह ह्वै जाइ॥ ३४ ॥
कावरि कंध धरौ नरनाह। पुत्र पास मोकहँ लै जाह॥
दैहि प्रान ताकैं गर लागि। तुम घर जाहु सबनि दै आगि॥ ३५ ॥
कावरि कंधि लई मैं कंध। भैंटौ सुत तिन अंधी-अंध॥
बन मौं छाँड़ि चल्यौ अब मोहि। काहे पुत्र स्वर्ग तैं होहि॥ ३६ ॥

हा हा पुत्रं धुत्रं कृत्वा रोदनं च चकार सः।
त्व पुत्रं दीयते प्रानं घटं प्रानं रहेति किं। ॥३७॥

जग्यंदँत्त अंतर बोलियौ। दिव्य सरीर और तिहिं कियौ॥
यहि दोष नहिं लागै काइ। गज कै भौरैं कीन्हौं धाई॥ ३८ ॥
दसरथ राइ दोष जो देहु। पूरब जनम तनौ रिन एहु॥ ३९ ॥

पूर्वस्य क्षीयते पापं पापेन लिप्यते।
आयुर्बल भव छिन्नं नृप दोषं करोति किं॥ ४० ॥

ऐसौ कहत गये सुरलौक। माता पिता करत ता सोक॥
तब मो सरिस अंध यह कह्यौ। जब अति दुख्ख जाहिं सह्यौ॥
ज्यौं हम प्रान चले या जोग। त्यों तुम प्रान जाहि सुत सोग॥ ४१ ॥
कहि यौं श्राप गए ता प्रान। हौ किरिया करि पहुंच्यौ थान॥
रिषि वाचा झूठी क्यौं परै। बार बार दशरथ उच्चरै॥ ४२ ॥

इति श्री रामायने बालकांडे दसरथ जग्यंदत्त प्रहर नं अंध श्राप कथनं नाम सर्गः॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कही कथा नृप सरवन तनी । बैठी पास सुनी सब धनी ।।
राम राम राम्बैं कहि लयौ । गए आन धरनी गिरि गयौ ।। १ ।।
मंत्री गए जगावन राउ । देखैं टारि भयौ कहराउ ।।
कौसिल्या वह मंदिर गई । लट तोरैं रोवति कैकई ।। २ ।।
रुदन करत भुनसारौ भयौ । मंत्री तबहि सौंज कहि गयौ ।।
सरसौं तेल भरे जलहरे । तिहि मझार लै दसरथ धरे ।। ३ ।।
ताकौ जतन पुरोहित कियौ । भरथ जोग धावन सम दियौ ।।
दिवस आठ ता अंतर गए । रथ चढ़ि वीर सु नगरहि गए ।। ४ ।।
पूछत नगर गए ता घनै । देखे मंदिर भरथह तनै ।।
तबहीं भरथ रिषिन सौं कहचौं । मंदौ सगुन आजु हौं लहचौं ।। ५ ।।
दसरथ तेल बाउरी अन्हाइ । ऊंट चढ़्यौ दच्छिन दिसि जाइ ।।
रातौ वस्त्र कसूंभी माल । रातौ चंदन दियौ लिलार ।। ६ ।।
कारी नारि बाँहँ गहि लये । मंत्री रहे अकेले गये ।।
कहै रिषीसुर मतौ निदान । कैसो सुपन तुम्हारे जान ।। ७ ।।
सपनौ देव त्रिफल होइ जाइ । दान जाप जप होम कराइ ।।
बुरौ करै नीकें फल चार । कहत विप्र सो सुनौ कुमार ।। ८ ।।
भेटौ सेवक बूझत सार । सब पुर तनै कुसल ब्यौहार ।।
तब चतुरनि बिनई बुधि सेवा । अैसी राइ भई मति देवा ।। ९ ।।
उत्तम परा करे पचास । तुमकौं दैन कहे नृप तास ।।
चलहु कुँवर मति लावहु बार । मंत्री कहत सु बारंबार ।। १० ।।
हय गय मेष करे बहु भोरे । अरु आभूषन रतननि जोरे ।।
दासी दस संख्या को जानैं । गहि धनुहर तब चढ़ै विमानैं ।। ११ ।।
मामा राजा यह मत भयौ । जोधा जीत सु समदन गयौ ।
बहुरचौ जोजन चौ पहुँचाइ । नदी पास ते उतरे आइ ।। १२ ।।
सत जल तीरथ जमुना न्हाइ । दिन पचअैं पुर पहुँचे जाइ ।।
मन बिलखानौ राजकुमारु । नंद सगुन भौ नगर पसारु ।। १३ ।।
राति नगर मौं लागे जान । दीसत लोग सबै बिलखान ।।
कोऊ हँसत न गावत सुनै । तब पहुँचे ग्रह कैकइ तनै ।। १४ ।।
जननी सिघासन लै धरौ । देखत कुँवर सोच मन भरौ ।।
कहि माता यह कारन काइ । तुम सिंघासन ल्याईं धाइ ।। १५ ।।
कछुवन बूझी तुम कुसरा(ला)त । कहि जननी निज मन की बात ।।
बूझतु कुँवर करतु बिसमाउ । कहि माता किहि मंदिर राउ ।। १६ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्यौं परिहरौ तुम्हारौ ग्रेह। धोखौ अबैं भयौ मन एह॥
नीचे बदन कहै सतिभाउ। पुत्र देवपुर पहुँच्यौ राउ॥ १७ ॥
इतनौ सुनत भरथ मुरछियौ। चेत्यौ तब, कारन बूझियौ॥
कौने रोग ब्याधि किहि बान। कहि माता क्यों गए परान॥ १८ ॥
ना दुख ब्याधि न दुर्बल भयौ। पुत्र सम्हारि हंस उड़ गयौ॥
इतनौ सुनत अचंभौ भयौ। कहि माता को सुत दुख भयौ॥ १९ ॥
राम लछिमन द्वै बन गए। तब तैं राजा विह्वल भए॥
तिन पाछैं षटदिन भरि राउ। जीवन ज्योति न दुख भरियाउ॥ २० ॥
दीनौ तुमहि देस आभारु। मेरे द्वै बर करिय उधारु॥
यह सुनि भरथ भयौ संताप। तोहि कुबुद्धि न लाग्यौ पाप॥ २१ ॥
सूरज बंस कुलच्छन दियौ। द्रोह जु राम कुँवर कौ कियौ॥
चारौं पुत्र तोहि इक सार। करति राम कह हेतु अपार॥ २२ ॥
कहै सतोषन परिहस भौन। इसी कुबुद्धि तोहि किहि दीन॥
साँची बात कहै कैकई। मंथरा मोहिँ बुद्धि यह दई॥ २३ ॥
राजा बचन न मेटहि मोहि। दीन्हौं राज भार सब तोहि॥
भरथहि राजु कहति कैकेई। सुनि कै दाँत जीभ तिहि लई॥ २४ ॥
कहौं मोहिं यह नाहीं काज। राम निकारि लहौं जो राज॥
चौदह बरस भरथ यौं कहै। हौं बन जाउँ राम घर रहै॥ २५ ॥
बचन पिता कौ आऊँ पारि। नातर पाप होत मो गारि॥
इतनौ कहत भरथ रिस गई। देखत संतोषन रिस भई॥ २६ ॥
कुबिजा लात मुस्टिका हई। गहि असिवर तब मारन लई॥
धाइ भरथ गहियौ तिहि हाथ। परिहरि अवध तिया है नाथ॥ २७ ॥
नाक कान ना छीनहु दोइ। इहि रघुवंस कलंक करेइ॥
भरथ कानि परिहरी कुमार। मुहडौ फारि घालियौ छार॥ २८ ॥
मंत्री साथ पुरोहित लए। कौसिल्या के मंदिर गए॥
दोऊ कुँवर आवत जानि। ऊभी भई भरथ की कानि॥ २९ ॥
कंठ लागि भेंटौ दुख कियौ। लै उसासु रोदनु करि दियौ॥
बिनवैं रानी गए बन राम। अब करि राज निकंटक धाम॥ ३० ॥
भरथ भार मेरौ है तोहि। राज लोभ मति भूलैं मोहि॥
हौं पुनि जाउँ मातु यौं कहै। बिनु रामहिं मो हिरदौ डहै॥ ३१ ॥
अैसौ बचन भरथ जब सुन्यौ। भौ मसि बरन सीस तब धुन्यौ॥
माता तुमहिं सीस कर धरौं। जो हौं लोभ राज कौ करौं॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाचा टरौं पिता मो बीच। राम राउ हम तीन्यौं नीच ॥
कौसिल्या बोलै अकुलानि। राम देवता तेरे जानि ॥ ३३ ॥
करतीं हेत सदा कैंकई। पर यह होनहार सो भई ॥
लहही सुगति लेत जो नाम। राजु करै को परिहरि राम ॥ ३४ ॥
सुनि वसिष्ठ अति अस्तुति करी। भरथ उठहु कंथा कह धरी ॥
सकल महाजन लै करि साथ। सरऊ (यू) तीर गए लै नाथ ॥ ३५ ॥
बहु संताप तैं रुदनु कराइ। तब वसिष्ठ बोले अकुलाइ ॥
मूल बिना राजा है भयौ। वह तौ मीच बस्य बल भयौ ॥ ३६ ॥
पाछैं रुदन करत परिवार। भौत पूतनौ बहु संसार ॥
अति दुख भरौं कोप तव भयौ। परिज[य] न श्रापौ नरकहि गयौ ॥ ३७ ॥
त्यौं दसरथ मति देइ सराप। छाँड़चौ देव रुदन संताप ॥
छाड़ौ पाप पिता कौ सोग। लै हँकारि सब परिय[ज]न लोग ॥ ३८ ॥
पुनि मंत्री सौं लागौ कहन। हौं वन चलौं सैन सामुहन ॥
समदे वोड़ि अवर सुतिहार। सब बन बेहड़ घाट सवार ॥ ३९ ॥
हय गय गुरे साजि मयमंत। कहैं भरथ वन चलौं तुरंत ॥
मंत्री कह आयसु परिमान। एक लच्च पखरे किक्यान ॥ ४० ॥
साठि हजारि बाजि बहु जुरे। गज मयमंत सहस दस गुरे ॥
पाइक गनत न आवै सार। मारग रुध्यौ चलत दल भार ॥ ४१ ॥
बंधौ साथ सतोषन लियौ। तीन्यौं जननि पयानौ कियौ ॥
दल बल सहित गंग उतरैं। बहुत सार गुह राजा करैं ॥ ४२ ॥
रतन अमोलिक रथहनि भरैं। भरथ कुंवर के आगैं धरैं ॥
भील राव तब बूझत ताहि। मति लूं रामहि मारन जाहि ॥ ४३ ॥
तो यहँ दल परिगहु अति धनै। तूं सति भाउ कहै आपुनौ ॥
तासौं भरथ खेत दिवु करैं। को मन द्रोह राम कौं धरैं ॥ ४४ ॥
चौदह बरस बीति हैं जाम। हौं बन रहौं समदि घर राम ॥
जै जै सबद राइ गुह कियौ। जोजन पाँच भरथ समदियौ ॥ ४५ ॥
सो पहुच्यौ मारग दिखराइ। रिषि आसर्म पहुंचे जाइ ॥
भारद्वाज अरघ तिहिं दियौ। अतिथि मानि आदरु बहु कियौ ॥ ४६ ॥
जैसी भाँति करी जिवनार। कौ तब बरनि सकै ता सार ॥
चित्रकोट तिन राघौ कह्यौ। सुनि सुधि भरथ रथह आरुह्यौ ॥ ४७ ॥
पहुंचे दल बल बनह पईठ। तबहिं राम मृग भागत दीठ ॥
ता बन बसत राम की नारि। काग नरबनि गौ अंग बिदारि ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जानि इंद्र सर छांड़ौं राम । फोरयौ नैंन दाहिनो ताम ॥
तीनि भुवन फिरि सो अकुलान । तहँ तहँ आवत देख्यौ बान ॥ ४६ ॥
जान्यौं काग मरन आपनौ । ताकौं तबहि राम सर हनौ ॥
राखि राखि बोलै अकुलान । न्रिफल न जाहि राम कौ बान ॥ ५० ॥
इंद्र पुत्र वह कौआ भयौ । राखि राम तब सरन सु गयौ ॥
राम बान क्यौं भूठौं जान । फोरयौ काग दाहिनौ नैन ॥ ५१ ॥
नैन हीन वह कौवा भयौ । राघौ सरिस सिया बीनयौ ॥
जो तुम साईं करौ पसाउ । यह पर्बत मो सब दिखराउ ॥ ५२ ॥
इतनौ सुनि बिहँसे मन मांह । उठे सु राम खिनक मह तांह ॥
चित्रकोट सीतहि दिखराइ । तब पुनि तहाँ बईठे आइ ॥ ५३ ॥
सुनी महस लछिमन सो कह्यो । सो देखन तरुवर आरुह्यौ ॥
देखं सैन मरमु तब लहै । सजौ सजौ राघौ सौं कहै ॥ ५४ ॥
साजि सैन जोधा अति बरी । आयौ भरथ पाप मति धरी ॥
लछिमन बचन सुनत हँसि राम । यह न होइ रघुकुल कौ काम ॥ ५५ ॥
मो जीवत करि सकतु न राजु । आयौ मोहिं लियावन काजु ॥
लछिमन तबहि जु कहत कुमार । राज लोभ गरुवौ संसार ॥ ५६ ॥
बहुत कष्ट करि पालैं तात । सो सुत कोपि करै पितु घात ॥
धन जोवन दोई इक ठाँई । ताकौं देव बिसासतु काई ॥ ५७ ॥
तुम वह जान नियर सब कह्यौ । वह तुमकौं मारन समुहयौ ॥
राम न मन मौं विकलपु धरे । रथ तैं तबहिं भरथ ऊतरे ॥ ५८ ॥
चलियौ परिय[ज]न दूरि रहाइ । तब एहि रहयौ राम के पाई ॥
दोउ भैंटे कंठ लगाइ । कहौ कुशल हैं दसरथ राई ॥ ५६ ॥
ऊतरु देइ न बिलखौ भयौ । दसरथ नृप दच्छिन पग दयौ ॥
तात तात कहि मोकी धाह । पूछत तबहि भरथ गहि बाँह ॥ ६० ॥
पिंडहि टेरि बेल तब लयौ । गंगोदक दस पिंडा दयौ ॥
मंत्री कौसिल्या कैकई । तीजी जहाँ सुमित्रा गई ॥ ६१ ॥
विनती भरथ करी जोरि । अबहि देव घर चलहु बहोरि ॥
सूनौ राज प्रजा दुख ठयौ । दसरथ सुर्ग राम बन गयौ ॥ ६२ ॥
होइ अलोक देस महँ गारि । बैठि राज परजा प्रतिपारि ॥
कहत राम बंधव सुनि बात । मोकह आइसु दीनौं तात ॥ ६३ ॥
आपुन मोहिं कैकई माइ । दीनैं बाकल देखत राइ ॥
पहिरत मोहिं देखि कैकई । दूनी भाँति चाउ अति भई ॥ ६४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाचा हारैं मोकह पापु। अरु कैंकई होइ संतापु ॥
सुनत बात औंधे मुख भई। बहुत लाज उपजी कैंकई ॥ ६५ ॥
बहुरौ भरथ जु ऊतरु दयौ। बहुत कोप जननी पै लयौ ॥
तब सिख दई विप्र जाबालि। रामचंद्र तूँ परजा पालि ॥ ६६ ॥
पटतरु देव सुनौ दुहु तनौ। बन तैं राजधर्म अति घनौ ॥
कहै रिषीसुर कथा बहूत। ना कोउ पिता ना कोऊ पूत ॥ ६७ ॥
जननि तात अरु माता बंधु। यह संजोग करम संबंधु ॥
दोई धर्म तिहारे भए। बरसनि वदे बहुत दिन गए ॥ ६८ ॥
वन कौ कष्ट बहुत तुम सहयौ। अब तुम करहु भरथ कौ कहयौ ॥
सुनत राम ऐसी मन धरैं। सब कोइ धन की आसा करैं ॥ ६९ ॥
डरपत रिषि बोले अकुलाइ। हम न करैं बन कैसे भाइ ॥
कछुव कहहुं तुम्हरे हित जानि। मति तुम देव करौ परमान ॥ ७० ॥
बस विख्यात पुरोहित कहै। जैसैं राज तिहारौ रहै ॥
नाहीं कछु तुमहिं यह खोरि। चलहु नगर घर राज बहोरि ॥ ७१ ॥
राम न चलन कहत हठि रहचौ। तुम घर जाहु भरथ सौं कहचौ ॥
सिरी राम कैं धरनैं परौं। कुस संथरी प्रान तजि मरौं ॥ ७२ ॥
सुनत बात ता संसौ भयौ। राम उठाइ भरथ गहि लयौ ॥
कौन सयान तुम्हारौ एहु। हमहिं अलोक बंधु मति देहु ॥ ७३ ॥
धरनु न होइ हमारे बंस। सुनि अब बीर बात निरसंस ॥
चौदह बरस सबै हौं भरौं। पाछैं राजु अजुध्या करौं ॥ ७४ ॥
बंदे भरथ राम के पांइ। कछु चीन्हौं मो दीजे भाइ ॥
सो लै चिन्ह सिघासन धरौं। हौं आगैं ह्वै सेवा करौं ॥ ७५ ॥
इतनी सुनि सोवन पाँउरी। अरपी रतन अमोलिक जरी ॥
नमसकाल करि बारंबार। सिंघासन तब थपीं कुमार ॥ ७६ ॥
भेंटि राम तिहि आइसु लियौ। तब पुनि भरथ पयानौ कियौ ॥
अंतर कछुवक भए मिलान। सब दल सहित गए निज थान ॥ ७७ ॥
जबहिं गए नगरी पैसार। कहैं रिषिनि सौं बारंबार ॥
राम बिना यह दसरथ पुरी। मन महं भरथ जानि परिहरि ॥ ७८ ॥
जौ गुरु वचन तुम्हारौ लहौं। नंदी ग्राम ग्रेह करि रहौं ॥
रहैं महाजन नगर मझारी। अरु राजा दसरथ की नारी ॥ ७९ ॥
इतनौ सुनि रिषि आइसु दियौ। नंदी ग्राम भरथ ग्रह कियौ ॥
उत्तम रतन अमोलक जरी। सिंघासन थापी पांउरी ॥ ८० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर सेत छत्र फरहरै । तरुनी चौंर वाउ ता करै ।।
दिन प्रति भरथ कुँवर सिर नाई । तब सो सभा सु बइठतु आई ।। ८१ ।।
खोदि भूमि घाली संथरी । बकला पहिर जटासिर धरी ।।
राम नाम जप हियरां धरै । इहि बिधि भरथ कुंवर ब्यापरै ।। ८२ ।।

इति श्री रामायने बालकांडे दसरथ स्वर्ग भरथ प्रजा प्रतिपालनं नाम सर्गः ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंतरकथा

पहुंचे राम आप आसर्म। अरु तिन्ह कहे कल वन धर्म ॥
रिषि सीता भीतरह पठाई। रिषिनी तबहि उठीं अकुलाई ॥ १ ॥
भेंटी सीता कंठ लगाइ। बिछुरी धिया मिली जनु माइ ॥
तिवई धर्म कहौं बैठारि। सेवैं पुरुष सु उत्तम नारि ॥ २ ॥
सब ब्यौहार जानकी कह्यौ। राजु होत जैसैं बन लह्यौं ॥
श्रवन सुनत अैसैं गहभरी। सीता की अस्तुति बहु करी ॥ ३ ॥
दीन्हैं दिव्य वस्त्र आभर्न। कही भक्ति राधौ की कर्न ॥
आप लिवाइ रहूंची तहाँ। लछिमन राम अत्रि रिषि जहाँ ॥ ४ ॥
तिनकौं रिषि अब आइसु कहैं। राखत राम बहुत बस रहैं ॥
सुनत बचत आनन्दे हियैं। चलतन नमसकाल तिन कियैं ॥ ५ ॥
दंडक वन के मारग गए। चलत चलत ता बन मह गए ॥
हाथ त्रिसूल असुर अति बरी। ताही सौं सीता भय भरी ॥ ६ ॥
उपै असुर अकासै गयौ। सोचत राम मनहहिँ दुख ठयौ ॥
सुनि लछिमन जो सीता गई। अब पूरौ पायौ कैकई ॥ ७ ॥
तब सो लछिमन कुँवर कुपान। राखस हिएँ हए द्वै बान ॥
मेलि त्रिसूल असुर रिस लागि। ता अति तेज लह्यौ जनु आगि ॥ ८ ॥
आवत देखि राम सर हयौ। टूटि त्रिसूल टूक द्वै भयौ ॥
दूजौ राखस हयौ रिसाइ। द्वै निर्जीव परचौ अरराइ ॥ ९ ॥
लगत बान तिहि अस्तुति कही। राम प्रसाद आजु गति लही ॥
जानी तुम हौ देवी सिया। सुमरन काज हरी जन धिया ॥ १० ॥
मो कहँ श्राप कुबेरह दियौ। जीव जोनि मैं सब बस कियौ ॥
नाम विराध पाप मति धरी। तुम प्रसाद गति पाई हरी ॥ ११ ॥
गए प्रान ता राम कहंत। लछिमन किरिया करी गडंत ॥
चले वीर छाँड़ी वह डंग। आगैं भैंटे रिषि सारंग ॥ १२ ॥
हौं तेरे दरसन लगि रह्यौ। रिषि सारंग राम सौं कह्यौ ॥
आयौ इंद्र लिवावन मोहि। अंतरीखि दिखराऊँ तोहि ॥ १३ ॥
तबहि राम देख्यौं सुरराउ। रिषि तब भैंटि पधारे पाँउ ॥
चलत असीस कही सारंग। जीतहु राम असुर रन रंग ॥ १४ ॥
अग्नि साधि रिषि स्वर्गहिँ गए। देखत राम अचंभे भए ॥
आपु अवर वन जाइ पईठ। रिषि आसर्म तासु बन दीठ ॥ १५ ॥
देखि हरषि तब बोलै राम। चौदह वर्ष वितीतहं जाम ॥
देव लैन आयौ घर नाथ। तीनौ सुर्ग चलौ मो साथ ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहैं राम सांईं सुनि बात। बनकौ आइसु दीनौं तात ॥
देव लोक क्यों आवन जाइ। सब लाजैं रघुवंसी राइ ॥ १७ ॥
तव सुनि रिषि कीन्ही जैं कारु। धन्य धन्य रामा अवतारु ॥
पितु आदेस राजु परिहरचौ। तेरे सत्त त्रिभुवन उद्धरयौ ॥ १८ ॥
इतनी सुनि राघौ परठए। आपुन रिषि पुनि स्वर्गहिँ गए ॥
पहुंचे राम दंड बन जहाँ। बहुत रिषीस्वर पहुँचे तहाँ ॥ १९ ॥
तव ते बिनवैं बारंबार। राखस इहि बन वहुत कुमार ॥
वे नित हमहिँ सतावत रहैं। प्रात अस्नान जग्यँ कौ लहैं ॥ २० ॥
करौं निकंटक बोलै राम। राखस कुल मारौ संग्राम ॥
मातु लजौं जो जीवत जाई। एक वान तारौं असु सांईं ॥ २१ ॥
इतनी पैज राम जब करी। टूटी तब रिषि की सुन्दरी ॥
विनती सोता लागत पांइ। जनि राखसनि विरोधै सांइ ॥ २२ ॥
बिनु पराध मति मारहु कोइ। एक पाप बहु अपजस होइ ॥
यह सुदेस तुमकौं बहु दीजै। जल बसि मगर बिरोध न कीजै ॥ २३ ॥
राम सिया सों लागे कहन। विप्र गाइ सरनागत गहन ॥
जौ हम तीनि न करहिँ सहाउ। तौ पितु लाजौं दसरथ राउ ॥ २४ ॥
अैसी कहि समुझाई नारि। रहिहैं इहि बन सुखद संचारि ॥
रिषि आश्रम सो उत्तम ठांउ। दंडकारन्य जु बनकौ नांउ ॥ २५ ॥
फिरैं अहेरैं बन फल खाँहिँ। प्रात न्हानु नित होम कराहिँ ॥
लछिमन राम रहत इहि रीति। तिहिं बन गईं बरस नौ बीति ॥ २६ ॥
रिषिनि पास सुनि सब ब्यौहारु। चले अगिस्तिहि करन जुहारु ॥
दक्षिन दिसि के मारग भए। इक वन छोड़ि अवर वन गए ॥ २७ ॥
आइसु सुनत कियौ विश्राम। कहैं कथा लछिमन सौं राम ॥

अंतरकथा रामोवाच

वातापी आतापी भाई। इहि बन खंड रहे दोउ आई ॥ २८ ॥
भैया रूप कपटता तनैं। मारि रिषीस्वर खाए घनैं ॥
मेष रूप आतापी करै। ताहि मारि वातापी धरै ॥ २९ ॥
तिनकौं आमिष भोजन देंइ। फारे पेट प्रान पुनि लेंइ ॥
पाछे बहुरि सजीवर होइ। उनकौ मरम न जानतु कोइ ॥ ३० ॥
तिन बन बसत बहुत दिन गए। अगनित रिषि तिन अैसैं हए ॥
रिषि अगस्ति तिहि बन आइयौ। औरनि भोरैं आदरु कियौ ॥ ३१ ॥
मारि मेष तिन भोजु कराइ। इल्हन बंधव कहि जु बुलाइ ॥
बहुत बार तिहि बंधव करै। अजहुँ न पेट फारि नीसरै ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तब तिहि बोलत दुपहरु भयौ । कहत रिषासुर जमपुर गयौ ॥
इल्हन सुनत कोपि धाइयौ । तब अगस्ति मुनि हूंका दियौ ॥ ३३ ॥
सुनत हूंक दैयतु खरभरचौ । जरि बरि भस्मभूत उर धरचौ ॥
यौं ब्यौहारु राम सब कहै । तब तैं इहि बन सब कोइ रहै ॥ ३४ ॥
लछिमन सुनत अचंभौ भयौ । जो यह थान रिषिन कह दयौ ॥
आवत राम रिषीसुर दीस । अर्घासन लैं उठे रिषीस ॥ ३५ ॥
पुनि वह भैंटौ कंठ लगाइ । धनि यह दिवस मिले तुम आइ ॥
रामु देखि रिषि हरषे गात । बूझी सबै पाछिली बात ॥ ३६ ॥
सुनि ब्यौहार मरमु सब लियौं । ब्रह्मकवचु राघव कह दियौ ॥
दीन्हैं धनुष बान अरु[तू]नीर । असिवर पाइ अनंदे बीर ॥ ३७ ॥
राम इंद्रसर सुमिरौ जहाँ । मारि निवास आइ हैं तहाँ ॥
राम जोरि कर बिनवतु सेवा । कहाँ रहौं बुधि दीजे देवा ॥ ३८ ॥
तुम वहु दिवस रहे बनवास । जहाँ फूल फल अरु पनवास ॥
करी मया बोले रिषि राइ । पंचवटी बन उत्तम ठाँइ ॥ ३९ ॥
तहँ बन बहुत होत फल फूल । लहियत बन सु नगर समतूल ॥
जब विंध्याचल वढ़ौ अपार । देवनि मोहिं दियौ आभार ॥ ४० ॥
तब तैं या बन आसन ठयौ । माँगि बचन पर्वत पहँ लयौ ॥
जो अब जाऊँ इन्द्र के पास । तो विंध्याचल जाइ अकास ॥ ४१ ॥
ता लगि राम रहौं इहिं ठाँइ । और न दूजौ कारत काँइ ॥
पिता वचन जो तुम बन लह्यौ । कारन सुतौ सु सब रिषि कह्यौ ॥ ४२ ॥
सुनि रिषि बात नाइयौ सीस । मारग मनु कीन्हौं जगदीस ॥
तब सर पार पहुंच्यौ जाइ । परचौ दृष्टि इक पंक्षी आइ ॥ ४३ ॥
देखि राम तिहिं साध्यौ बान । तब पंछी बोलत अकुलान ॥
सुनत राम ता पह ब्यौहार । तैसैं ब्रह्म रच्यौ संसार ॥ ४४ ॥
दसरथ मित्र हमारौ देव । चाहतु करन रावरी सेव ॥
तब आनंदौ अंग न भाइ । पंचवटी बन सकल दिखाइ ॥ ४५ ॥
सीधौ मंदिर राघौ लह्यौ । चारि बरस ता आसन रह्यौ ॥
कबहूँ देव श्राद्ध दिनु भयौ । करन स्नान गोदावरि गयौ ॥ ४६ ॥
न्हाइ राम नित तहं बनु रहै । सुख मंह बीति बहुत दिन लहैं ॥
आइ नारि बदन बिकरार । चहुँ दिसि सिर बगराएँ बार ॥ ४७ ॥
छोटी नाक पेट चाकरौ । बिकट दंत अरु लाँबौ गरौ ॥
सूप समान ताहि दुहु कान । घूंघर धुनि कंपै असमान ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिनवन लागी रामनि पास । आजु मोहिं मति करौ उदास ॥
नारि सरूप तुम्हारे गेह । मो बिवाहि घरवासौ देह ॥ ४९ ॥
हौं राखसि सुपनेखा नाम । रावन बहिनि विवाहौ राम ॥
तुमकौं कपट न हियरा धरौं । नित नित रूप मनोहर करौं ॥ ५० ॥
तीन्यौं सुनि राखसी बैन । मन महँ हँसे चलाए नैन ॥
श्री रघुनाथ सुनावैं ताहि । लछिमनु क्वाँरौ व्याहौ ताहि ॥ ५१ ॥
लछिमनु सुनि ऊतरु दिय तासु । हौं नित रहौं राम कौ दासु ॥
दासी होइ तोहि सी नारि । सुपनेखा मन देखि बिचारि ॥ ५२ ॥
उहि मन जानि भनी यह हँसी । सो ही कोपि गइ राखसी ॥
बांहँ पंसारी सीता तनौ । देखत लछिमन कुंवरि कृपानौ ॥ ५३ ॥
खडग उचाइ सु झोटा गहौ । राखि राखि तब राघौ कहौ ॥
इक घर आई अरु यह नारि । हमहिं पाप जो घालहिं मारि ॥ ५४ ॥
तब छांड़ी राघव की संका । काटे कान चोटि गहि नंका ॥
दूरि देस छांड़ी मुकराइ । खर दूषन पहँ पहुंची जाइ ॥ ५५ ॥
चौदह सहस ते राखस वरी । बल बोले रिस मन मौं करी ॥
उठि सुपनेखा आगै भई । लछिमन राम पास लै गई ॥ ५६ ॥
राघो धनुहर लियौ चढ़ाइ । दई हांक जब असुरनि आइ ॥
सनमुख छांड़े चौदह बान । काटे सीस न पाए जान ॥ ५७ ॥
राखस बचे गए ते भागि । जे उबरे ते कहत सभागि ॥
वे दोइ तपसी सकहु न मारि । कत भए पुरुष भई किन नारि ॥ ५८ ॥
वह अति बली न मारयौ जाइ । तातैं खर तुम चलहु भगाइ ॥
कें लै खडग जाहु तुम साजि । लीजौ घेरि जाहि नहिं भाजि ॥ ५९ ॥
सुनत बात मन कोप्यौ ताम । जीवत बाधौं लछिमनु राम ॥
दूषन तीसर आइसु भयौ । चौदह सहस पयानौ दयौ ॥ ६० ॥
है है सबद भयौ आकास । हिरन माल धावैं चौपास ॥
रुधिर वृष्टि सिर ऊपर करी । दक्षिन स्यारि तबहिं फिकरी ॥ ६१ ॥
रथ तर हरि तीतुर सुर करैं । खर रथ तुरी दाहिनों मुरैं ॥
मन मैं राखस करै न संक । आगैं नारि चली बिनु नंक ॥ ६२ ॥
सो रिषि अरु सुर कौतुक करैं । पुनि संदेह बहुध मन धरैं ॥
राखस बहुत अकेलौ राम । कैसैं करि सकि है संग्राम ॥ ६३ ॥
लछिमनु राम बईठे जहाँ । काग लोटनी दीसति तहाँ ॥
राघौ फरकी दक्षिन बाँहँ । देखि सगुन संक्यौ मन मांह ॥ ६४ ॥
तब लछिमन सौं कह्यौ बुलाई । सीता राखि गुफा महं जाई ॥
आवहु छांड़ि तो मेरी आन । कलह न मिटै सगुन मैं जान ॥ ६५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सौंह दई लछिमन पर ठए। सिया लिवाइ गुफा महं गए ॥
पहिरयौ कवचु धनुष लै राम। राखस सैन पहुँच्यौ ताम ॥ ६६ ॥
राखस सैन सबै मन डरहिं। राघौ सनमुख पाइ न परहिं ॥
हाथ उठाई धनुष तिहि लियौ। हांक्यो रथ खर आगैं कियौ ॥ ६७ ॥
गनती करिकौ संख्या जान। जितनै राखस मेलहि बान ॥
पहर एक तिनकौ भयौ जूझ। अंधकाल दिसि बिदिसि न सूझ ॥ ६८ ॥
कोपि राम खर कौ सिर हयौ। परचौ धरनि बिनु जीवहिं भयौ ॥
दूषन धायौ तव संग्राम। अति सर वज्र हयौ तिहिं राम ॥ ६९ ॥
तीन बान पुनि राघौ हयौ। कछु न बिथा भई हँसि गयौ ॥
मोहि घाव लागत ता तूल। पुरिषहि नारि हंसत ता फूल ॥ ७० ॥
कोपि राम तोनौ सर लए। इक इक सर रिपु सारथि हए ॥
पाहि पाहि धायौ सामुहैं। पुनि राघव सर धनु नहिं जुहैं ॥ ७१ ॥
मारतु नही अगहुडौ आइ। लै त्रिसूल मेल्यौ निकुताइ ॥
आवत देखि तीनि सर हयौ। स्यौं त्रिसूल धरतीं गिरि गयौं ॥ ७२ ॥
परत देखि खर अधिक रिसान। अगिनित रामहिं छांड़तु बान ॥
रामहिं कवच अगस्ति जु दीयौ। राखस सर तिहिं तिल तिल कियौ ॥ ७३ ॥
अरु गुन धनुहर कीन्हौं भंग। राघौ लियौ अवर सारंग ॥
रथ धुज काटि सारथि सिरु हयौ। असुर रिसाइ राम उर हयौ ॥ ७४ ॥
इन काटीं राखस की बांह। बिनुहीं भुजत फिरत रन मांह ॥
तीसर कोप्यौ सुनि संग्राम। आयौ जहँ ठाढ़े रन राम ॥ ७५ ॥
ते रिसि मूल संत जो भये। मानहु पवन फूल फल हये ॥
संन्या निपतित देखत तोहिं। एकु पहार भयौ नहिं मोहिं ॥ ७६ ॥
इतनौ सुनि खर राखस कहैं। आपु सराहत सुजस न लहैं ॥
तो सारैं बिनु संध्या होइ। तौ मो पौरुष कहै न कोइ ॥ ७७ ॥
करी पैज तब गरज अपार। अधफर सर तैं निकसी झार ॥
आगैं ताहि सु तरवर परचौ। सैल सामुहौ भस्म होइ गिरचौ ॥ ७८ ॥
आवत देखि राम बलिबंड। सो सर करयौ इकौ सतखंड ॥
धाइ निसाछर पुनि तरु लियौ। रघुपति खंड खंड सो कियौ ॥ ७९ ॥
सहस बान राखस तनु हयौ। धरनि न परयौ अगहुडौ गयौ ॥
द्वै पग सामुह धरि रघुनाथ। कोपि ब्रह्म सर लीन्हौं हाथ ॥ ८० ॥
छांडयौ दंड जो सुरपति दयौ। लागत भस्म सो राखस भयौ ॥
देव करत सब जय जयकार। सबै असीसत बारंबार ॥ ८१ ॥
पुनि आसर्म पहुँचे जाइ। लछिमन सिया पहुँचे आइ ॥
अंकमाल भरि भैंटे राम। धन्य सबल जीत्यौ संग्राम ॥ ८२ ॥

इति श्री रामायने बालकांडे खर दूषण त्रिसरा बध वर्णनं नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुपनेखा रावन पहँ गई। रोवै लोटै बिलखी भई॥
बूझत कोपि राउ मन धरी। कौन नाक कान बिनु करी॥ १ ॥
यह है धीय बिश्रवा तनी। बहिनि हमारी रावन भनी॥
कहि बिटम्बि जम रुठौ ताहि। तीन भुवन मौं मारौ चाहि॥ २ ॥
कहति राखसी सियपति राम। तासौं असुर जुरे संग्राम॥
तिहि खर दूषन त्रिसिरा हए। चौदह सहस असुर छै(छ्य)लए॥ ३ ॥
सो अति बरी(ली)न मानत संक। काटे कान कैस गहि नंक॥
तो कह रावन त्रनवर गनै। बार बार सुपनेखा भनै॥ ४ ॥
सुनत अचंभौ कर्‌यो बहुत। को वह राम कवन की पूत!॥
ताकैं सेना कितिक प्रमान। अरु कैसो ता धनुहर बान॥ ५ ॥
तब सुनि रावन बहिनी कहै। चौदह सहस एक सर वहै॥
दसरथ पितु कौसिल्या माइ। पितु आदेस रह्यौ बन आइ॥ ६ ॥
लछिमन नाम दूसरौ भाइ। पंचवटी बन बसत सो राइ॥
लछिमन बंधु तासु लघु लहै। तिहि बिटंबि सुपनेखा कहै॥ ७ ॥
साथ राम कें सीता नारि। ताके रुपहिं को अनुहारि॥
वेगि जाहि लै. आवहि ताहि। तेरे ग्रह में एक न आहि॥ ८ ॥
सुनत बात रावन घर गयौ। खर रथ जोति आतुरौ भयौ॥
नर की छांह समुद्र कै तीर। तिहि ठां रथ राख्यौ बरबीर॥ ९ ॥
देखि अचंभौ करत भुवार। जोजन परिमिति ताकी डार॥
गोर एक टूटी अरराइ। रावन देखि रह्यौ ठहराइ॥ १० ॥
पूछतु तब बिलखानौ भयौ। ब्रह्मपुत्र तिन श्राप न लयौ॥
एक प्रतेष हरीं सो लयौ। एक विवाह करन तप ठयौ॥ ११ ॥
पिता श्राप तिन कह तब भनी। तिनकी कथा सु रावन सुनी॥
सुनि रथ हांकिय पहुंचे तहाँ। तप बल मारिचि बैठौ तहाँ॥ १२ ॥
बिनवत ताहि निसाचर नाथ। सीता हरन चलौ मो साथ॥
कहतु रिषोसुर राघौ बरी [ली]। तो पहं सीता जाइ न हरी॥ १३ ॥
अब तू मेरौ कह्यौ कराइ। फेरि घरै लंकेसुर जाइ॥
सुनत बात सो उठौ रिसाइ। अब तो कहं डारौं मरवाइ॥ १४ ॥
जिहि जिनि[ति]तीन लोक बस किए। ताकी समसरि मानुस दिए॥
सुनि रावन हौं गयौ मख द्वार। तब रघुपतिबर[ल]पाई सार॥ १५ ॥
ताकौं कछू न सक्यौ सिराइ। हौं उबरयौ साथी नु जुझाई॥
तू सीता हरि सकै न आजु। हरहि तौ जाइ समूचौ राजु॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ता बच सुनत चढ़ौ हंकार। मारौं तोहि जु अबहिं गंवार॥
मन ही मन सोचै मारीचु। दुहूं पवारैं आइ मीचु॥ १७॥
यह मारै तो नरकै जाउं। मारै राम तौ सुर्गति लहाउं॥

श्लोक—रामेपि जदि मार्तव्यं मृत व्यंरावनोदपि।
उभयोदपि च मां मृत्युः बरं रामे न रावनः॥ १८॥

रावन सौं परिमानौ कह्यौ। तब तिहि साथ मारिचिहिं लह्यौ॥
हांके खर सारथी रिसाइ। पंचवटी बन पहुंचे जाइ॥ १९॥
रूपे चित्र कनक के अंग। रतन जटित तिहि सौने शृङ्ग॥
तासु नयन जनु दियला बरैं। चरत हिरन सीता दिठि परें॥ २०॥
कियौ मारिचौ मृग कौ रूप। सीता लोभी देखि सरूप॥
कह्यौ राम सौं मारौ एहु। तुचा आनि मो बैठक देहु॥ २१॥
देखत राम अपूरब भेस। लछिमन जोग कह्यौ संदेस॥
माथें कर दै सपथ कराइ। सिया छांड़ि मति बाहिर जाइ॥ २२॥
मास हाड़ लगि मारहिं राइ। यह निधि हिरन छांड़ि क्यौं जाइ॥
ब्रह्मा मेरे कारन कियौ। सोहि तुचा बैंठन कौं सियौ॥ २३॥
इतनौ कहि कर धनु गुन कियौ। देखि हिरन अदृष्ट तनु लियौ॥
चाहत राम फिरे पछिताइ। तब पुनि दृष्टि परयौ वह आइ॥ २४॥
खिन नियरौ खिन दृष्ट पराइ। चाहत फिरत राम पछिताइ॥
बहुरौ दृष्टि परयौ सो आइ। देखि राम मन हरष कराइ॥ २५॥
तापर हिरनु न मारयौ जाइ। बहु विधि छल करि गयौ पराइ॥
अैसी विधि जोजन चौ गयौ। रामचंद्र मन अचिरजु भयौ॥ २६॥

श्लोक—न भवंति पूर्वो न मयापि दृष्टवा, हेमं कुरंगन कदा चिदाख्यं।
तथापि मिथ्या कुरुतेन राघवे विनाश काले विपरीत बुद्धिः॥ २७॥

कोप्यौ राम ब्रह्म सर हयौ। परत रूप राखस के भयौ॥ २८॥
बोले राम सरिस रिषि बानी। सुनियौ जोजन पंच प्रमानी॥
हा लक्ष्मन हा सीता करै। सुनत राम विकलप मन धरै॥ २९॥
छांडयौ हिरन तबहिं अकुलाइ। सीता कुसल पाइहौं जाइ॥
वह धुनि परी सिया के कान। जान्यौ राम परयौ अवसान॥ ३०॥
ता लगि लछिमन बधु संमरयौ। दैयत घाइ जूझि रन परयौ॥
समदै सिया कुंवर नहिं जाइ। दुष्ट बचन तिन कहे रिसाइ॥ ३१॥
तौ यह बात सुहानी तोहिं। लछिमन मनहं लुभान्यौ मोहिं॥
लछिमन कहै सुनौ सिय माइ। तैं जु कह्यौ सो कहन न जाइ॥ ३२॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जित्यौ न जाइ राम हैं बली । अबहि दई तेरी मति छली ॥
राघौ मोहिं गयौ है राखि । तुम बन देव तुम्हारी साखि ॥ ३३ ॥
सावधान तुम रहहु परान । यह कहि लीन्हौ धनुहर बान ॥
लछिमन चल्यौ सिया सिरु नाइ । रावन तबहिं पहुँच्यौ आइ ॥ ३४ ॥
डौंरु हाथ जटा सिर धरैं । तपसी रूप भस्म अंग भरैं ॥
तपी जानि तिहि आदर कियौ । पाउनि जोग सीस भुइं छियौ ॥ ३५ ॥
कोमल बचन बहुत तिन भने । अतिथि आजु मेरैं पाहुनैं ॥
रावन कहै कौन की नारि । रहति अकेली बनहं मझारि ॥ ३६ ॥
कोऊ आइ न दूजौ तोहि । यह धोखौ कारन कहि मोहि ॥
जबहि पिता के हती कुमारि । तब ते कहे सबै ब्यौहार ॥ ३७ ॥
राज होत जैसैं बन लह्यौ । रावन सौं सीता यौं कह्यौ ॥
विकलपु सीता बूझै ताहि । सांची कहहि कवन तू आहि ॥ ३८ ॥
काया दिव्य तपी के साज । सत्य कहहि आयौ किहि काज ॥
लाग्यौ कहन बात आपनी । हौं रावन लंका कौ धनी ॥ ३९ ॥
जोतूं सुंदरि पूछति मोहिं । आयौ सिया लिवावन तोहि ॥
चौदह सहस नारि तजि दिया । ऊपर पाट बंधाऊं सिया ॥ ४० ॥
इतनौ सुनि परिजरियौ नारि । पापी जीभ जरे तो भारि ॥
राम सिंध तू जिसौ मजारु । भइ कुमति नहिं जीवन हारु ॥ ४१ ॥
नाग गरुड़ क्यों करे समान । कहँ जुगनू कहँ तेज जु भानु ॥
पुरुष कौन राघौ सरि लहै । रावन सौं सीता इह कहै ॥ ४२ ॥
इतनी सुनि रावन रिस भरचौ । ता खिन तपी रूप परिहरचौ ॥
दस सिर बीस भुजा बिकरार । गहे धाइ सीता के बार ॥ ४३ ॥
मानौ मीच हाथ गहि लई । तेसी वा कहँ सीता भई ॥
हा हा करति प्रान बस ईठ । लइ डारि रथ काहु न दीठ ॥ ४४ ॥
गिरि तरुवर सौं कह्यौ संदेस । तुम कहियौ रघुनाथ नरेस ॥
बल करि पापी लट पाकरी । सीता रावन राखस हरी ॥ ४५ ॥
अंतरीछ रथ हाक्यौ राउ । आगैं भेंटचौ पंछि जटाउ ॥
धर्म तुम्हारौ होइ न एहु । जो सीता चोरी हरि लेहु ॥ ४६ ॥

श्लोक—अंचित दुःख स्वद दोष सेवितं, विश्रीय रामं प्रतिपाक्षिनं खले ।
पक्षीकुले जन्म महं जटायु, मित्रो मया दासरार्थ व श्रीति ॥ ४७ ॥

अगहुड दीन्हौं रावनु जाइ । जब रिस लागी पंछि जटाइ ॥
सारथि मारि धुजा गयौ मोरि । खड खंड रथ डारचौ तोरि ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब तूं छांड़ि राम की नारि। नातर पापी घालहुं मारि ॥
गर्ज करति अति ठोकत कंधु। हौं जटाउ दसरथ कौ बंधु ॥ ४९ ॥
पंख बाउ गौ छत्र उड़ाइ। दूरि मुकुट लै डारचौ जाइ ॥
निज नख जैसे कीन्हें हाल। पीठि न उबरी साजी खाल ॥ ५० ॥
तब रावन कोपंतनु भयो। पंखी राउ तीनि सर ह्यौ ॥
वेदन भई न मूरछि परचौ। हिएं संचि रावनु करमरचौ ॥ ५१ ॥
उपन्यौ कांख चापि ले सिया। करति पुकार जनक की धिया ॥
हा हा तात जटाइ जटाइ। तो देखत मुहिं लीनैं जाइ ॥ ५२ ॥
इतनौ सुनत वेगि तिहि कियौ। बेठयौं कंध चोंच सिर दियौ ॥
तिन लंकेसुर त्रनवर गन्यौ। इकु इकु सीस बार सौ हन्यौ ॥ ५३ ॥
ताहि सुनावत बारबार। दस सिर कीन्हैं विकट प्रहार ॥
वहुत दिवस तैं ताही ईस। इकु इकु पूजे इकु इकु सीस ॥ ५४ ॥
कोप्यौ सुनत लंक कौ राउ। बल सौं मुठिका हन्यौं जटाउ ॥
मूरछि धरतीं खरहरि परचौ। अति रिसाइ वाहुरि पाकरचौ ॥ ५५ ॥
फेरि बार द्वे धरतीं हन्यौ। मरचौ न पंखि प्रहार न गन्यौ ॥
अचिरजु भौ लंका के राइ। चंद्रहंस लीन्हौं अति चाइ ॥ ५६ ॥
चौंच पांख ता काटे पांउ। सिया अङ्क भरि रही जटाउ ॥
लै सुंदरि उपन्यौ वह राउ। "बाधा टार चलौ अगाऊ" ॥
उपयौ राखस सुंदरि गही। ब्रह्मा बात सुरनि सौं कही ॥ ५७ ॥
देखौ सिया हरनु भयौ आजु। सीरघ भए तुम्हारे काजु ॥
या कारन हू है सग्रामु। स्यौं परिवार निपातहि रामु ॥ ५८ ॥
अंतरीछ रथ हांक्यौ बरी। रावनु मेघु सिया बीजुरी ॥
जात देखि रावन की छांह। म्रिग बंदर धावहिं बन मांह ॥ ५९ ॥
सीता अति दुख लागी करन। डारे हार टोरि आभरन ॥
सोहतु हार परचौ धर तिसौ। गिरि प्रवाह गंगोदक जिसौ ॥ ६० ॥
तब सीता रावन सौं कहियौ। सैंहथ काल मूढ़ संग्रहियौ ॥
लछिमन राम गये सौ करहीं। राखस वीजु न धरनी रहहीं। ६१ ॥
इहि विधि रोवति बनहि पईठि। परे पांच बंदर तिहिं दीठि ॥
पियरे बर्न पटोरे फारि। चली सिया तिन ऊपर डारि ॥ ६२ ॥
डारे कंकन हार उतारि। खोजु चलहि इमि बोलहि नारि ॥
राघौ चलत पहुँचे आइ। तब ए खोजहि देइ बताइ ॥ ६३ ॥
लै सीतहिं राखस घर गयौ। रावन हिए वहुत सुख भयौ ॥
बोलि राखसीं कह्यौ हंकारि। रावन आयौ सींह दुवार ॥ ६४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राखस आठ लए हँकराइ। आपुन रावन बात कहाइ ॥
तपी राम जो वन महँ रहै। तहाँ जाहु लंकेसुर कहै ॥ ६५ ॥
ते वन पहुँचे आइसु लयौ। रावन हिएं कछू भै भयौ ॥
आपुन आयौ सीता पास। लै जु बताए कनक आवास ॥ ६६ ॥
धरु दिखाइ रावन यौं कह्यौ। सीता बहुत दुख्ख तूं सह्यौ ॥
बन खँड बसैं जु छंडैं राजु। तोहि कहा है सुंदरि काजु ॥ ६७ ॥
मोहि मानि तूं होइ निसंक। सौंप्यौं तोहि राज गढ़ लंक ॥
ऊपर पाट तोहि बैसारि। तेरी दासि करौं सब नारि ॥ ६८ ॥
जो मैं कटि पूजियौ ईस। तेरे वचन धरौं तिन सीस ॥
कोटि कोटि राखस कौ राइ। अब मोहि कत अपमान कराइ ॥ ६९ ॥
तृन अंतर दै बोली सिया। छुएं चलन तैं जुगतु न किया ॥
ए निर्माइल तेरे सीस। मूरख ईसुर दिए चंडीस ॥ ७० ॥
सीता जो जीवै पुनि पुनि मरै। राघौ टोरि दसौं भुंइ धरै ॥
मूरख तासौं कीन्हौं बैर। ना तू राखस लंका नैरु ॥ ७१ ॥
मन महं रावन उठ्यौ रिसाइ। आनो दस राखसीं बुलाइ ॥
आस राम की छाड़ै एह। तब वह आवै मेरे गेह ॥ ७२ ॥
लै पहुँची उपसोग बन मांह। बैठारो सीसे की छांह ॥
रोवति देवि सहै अति दूख। साधै नींद प्यास अरु भूख ॥ ७३ ॥
सुरपति आगैं ब्रह्मा कहियौ। सीता लंकां अति दुख सहियौ ॥
उठि उठि इंद्र न लावहु बार। करहु जाइ सीता की सार ॥ ७४ ॥
सुनि सुरराज पयानौ कियौ। काल नींद कौं आइसु दियौ ॥
तिहि वे दसौं राखसीं गहीं। जागैं नहीं नींद अति लहीं ॥ ७५ ॥
आपुन तहाँ देव आइयौ। नमसकालु सीता कह कियौ ॥
जनि रोवै कर जोरैं कह्यौ। रावन सबल राम पै बह्यौ ॥ ७६ ॥
सीता विकलप बूझी ताहि। साँची कहहि कौन तूं आहि ॥
जो सतिभाउ कहत हौ बात। तौ निज रूप दिखावहु तात ॥ ७७ ॥
मन पतियानौ रूप दिखाइ। आगम सर्ग कह्यौ सुरराइ ॥
भूख प्यास बहु सहै सरीरु। कहि अँचवायौ अंमृत नीरु ॥ ७८ ॥
देवन सहित इंद्र घर गयौ। अंमृत नीरु पियैं सुख भयौ ॥
थोरो सौ काढ़यौ कहि नाम। यह उपगरियौ लछिमन राम ॥ ७९ ॥

इति श्री रामायने बालकांडे सीताहरने इंद्र वृत्तांत कथनं नाम सर्ग: ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अैसैं सीता लंका रहै। राखस त्रास हियै दुख सहै ॥
मारि हिरन राधौ घर चलियौ। आगूं आवत लछिमन मिलियौ ॥ १ ॥
मूरख बुरौ कर्म कत कीन्हौं। सिया छांड़ि सूनैं ग्रह दीन्हौं ॥
लछिमन कछू उपद्रव जोहि। निज मन जानि राखियौ तोहि ॥ २ ॥
इतनौ कहि चलियौ पछिताइ। बिनसत सगुन पहूंचे आइ ॥
लछिमन बचन राम सौं कहे। सबै सुनाए रामनि गहे ॥ ३ ॥
सूनी मढ़ी राम जब दीस। दोऊ हाथ हये निज सीस ॥
आनि अधिक दुख मो कहं भयौ। सीतहिं खाइ निसाचर गयौ ॥ ४ ॥
खन मुरछै खन चेतै बीर। खन निज नैनन मोचै नीर ॥
पुनि गिरिवर तरु बूझतु सोइ। सीतहिं कहूं बतावहु मोइ ॥ ५ ॥
सिय सिय करत सुखि गौ गरौ। छांड़ी लाज भयौ बावरौ ॥
तिनुका पग लागत लरखरै। ठाँ ठाँ चलत राम गिरि परै ॥ ६ ॥
तब तब लछिमन लेइ उठाइ। बहुत बचन धीरचौ रिसाइ ॥
आपद परै पुरुष जु न सहै। सो अति कायर लछिमन कहै ॥ ७ ॥
तुम जुग करन विधांसन जोगु। तुमहिं करन बूझिए न सोगु ॥
सुर्ग पताल सिया क्यों जाइ। अैसैं राम लियौ समुझाइ ॥ ८ ॥
खोजत तहाँ गये बलिबंडा। परचौ छत्रु इक सोवन डंडा ॥
खर सारथि धनुहर तहँ परचौ। देख्यौ मुकुट रतन बहु जरचौ ॥ ९ ॥
कछुवक चीनु सिया कौ लहचौ। धनुष चढ़ाइ राम यौं कह्यौ ॥
लछिमन अग्नि बात गुन देहुँ। खिनक माझ त्रिभुवन खैं(छय)लैंहुँ ॥ १० ॥
कर जोरे लछिमना कुमारु। है यह देव नीच व्यौहारु ॥
बार बार लछिमन यौं कहै। सीता क्यों बैरी घरु रहै ॥ ११ ॥
चोर मारि ता लेउ छुड़ाइ। सुर्ग पताल न मोपहँ जाइ ॥
समुझौ बात सकेल्यो बानु। आगैं बहुरि कियौ प्रस्थानु ॥ १२ ॥
कोसकु छाँड़ि गये तिहि ठाँउ। जिहि ठाँ देख्यो परचौं जटाउ ॥
राघौ लान्हौं बान रिसाइ। यहई बैठचौ सीतहिं खाइ ॥ १३ ॥
गुरा गुरा करि काटौं याहि। हम जिय हार रहे बन चाहि ॥
रामु जानि बोलियौ जटाउ। राखि नाथ मति घालहि घाउ ॥ १४ ॥
तूं जो मारै तौ गुन मोहि। पाछै अति पछितावौ तोहिं ॥
सुनि राघौ तूं चाहतु जाहि। रावन राखस लै गयौ ताहि ॥ १५ ॥
बहुत जूझ तिहि मोसौं कियौ। सीतहिं लै नो बल सब लियौ ॥
कहै राम समुझावहु तात। बिस्तरि कहि रावन की बात ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाम सुनत मो विस्मय भयौ । वह जानकी आजु लै गयौ ॥
सबै कहानी रावन तनी । तबहिं जटाइ राम सौं भनी ॥ १७ ॥
सुनि रघुनाथ कोप मन कियौ । दसरथ जोग संदेसौ दियौ ॥
तुम निज स्वर्ग मिलहुगे जाइ । जनि सिय हरन सुनावहु राइ ॥ १८ ॥
सुनि सो ताप बहुत मन धरै । और हमारी निंदा करै ॥
पैज सुनावहि बारंबार । रावन मारौं स्यों परिवार ॥ १९ ॥
सीसु नवावै खरै लजाइ । सब कुसरात कहोगे जाइ ॥
इसे संदेस कहे रघुनाथ । पंछि सरीर छुयो निज हाथ ॥ २० ॥
देखि वीर मन विस्मय भयौ । राम्बै राम कहत जिव गयौ ॥
उतरु फिरियौं राघौ कियौ । उदक अंजुली भरि तिहि दियौ ॥ २१ ॥
बारंबार संभरियौ ताहि । यह अति दुख भो सीता चाहि ॥
राम असीस देइ करि भाउ । बसौ अमरपुर पंछि जटाउ ॥ २२ ॥
उदक पिंड मेरे कर लह्यौ । भक्तिवंत देवनि मिलि कह्यौ ॥
दिन अथवत गोमती अन्हाइ । फिरि आसर्म पहूंचे आइ ॥ २३ ॥
रुदन करत निसि गई विहाइ । पश्चिम दिसि चाले समुहाइ ॥ २४ ॥

इति श्री रामायने बालकांडे सीता हरन जटाइ स्वर्ग गमनो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बांइ भृजा फुरी लछिमना । गन संतोष न उपजित छिना ॥
थोरी दूरि अगहुडे गए । बन महँ सबद भयानक भए ॥ १ ॥
सुने सबद राघौ दुख भए । धनुष चढ़ाइ दुहू जन लए ॥
भए भाथरे बेधे पीठि । आगे असुर परचौ तिन डीठि ॥ २ ॥
जोजन एक एक ता बांहं । पाउ न गोड़ उदर ता मांह ॥
हाड़ न गूद मांस की पिंडु । नाम कवंध महा बल बंडु ॥ ३ ॥
खैंचि राम लछिमन तिहि लिए । असुर नगीचति ठाढ़े किए ॥
बोलन लग्यौ धुनि गंभीर । कहहु कौन तुम छत्री बीर ॥ ४ ॥
सुनि ब्यौहारु राम सब कह्यौ । तब वह असुर खान सामुह्यो ॥
जानि बात कोपे मन मांह । दुहुनि छेदियौ इक इक बाँहँ ॥ ५ ॥
दैयतु कहै सुनै तह रामु । कहै कबंधु बंधु मो नामु ॥
थूल सिरा रिषि मैं जु सताए । अैसैं रूप बिरावत पाए ॥ ६ ॥
तब रिषि कह्यौ मोहि आधारु । प्रथिवी होइ राम अवतारु ॥
तोहि मारि जो किरिया करै । तब सराप तेरौ उद्धरै ॥ ७ ॥
पुनि मैं जाइ बहुत तप कियौ । भए प्रसन्न ब्रह्म वर दियौ ॥
वहुत घौस तैं जितै न कोइ । सेस इंद्र जो बैरी होइ ॥ ८ ॥
इतनौ बरु लै स्त्रर्गहि गयौ । तवहिं जूझ सुरपति सौं भयौ ॥
देव सैनु मैं भुज बल जित्यौ । तिहि रिस लगे पेट महं हत्यौ ॥ ९ ॥
तब तैं सीसु सुमेर महँ गयौ । हाड़ गोड़ बिनु अैसैं भयौ ॥
तब वरु दीन्हौं इन्द्र मयान । करी बांह जोजन परिमान ॥ १० ॥
जोजन भीतर पावै आइ । सो मो पास न जीवत जाइ ॥
और कवंधु नाम मो भयौ । तुम प्रसाद चाहौं गति गयौ ॥ ११ ॥
मेरी किरिया करि सैं हाथ । पंपासर जैयहु रघुनाथ ॥
तहं तुमकौं मिली है कपिराज । वह सब करै तुम्हारौ काज ॥ १२ ॥
इतनौ सुनि तिन किरिया करी । निकसि और तिहि कायाधरी ॥
कंठ दिव्य कुसुमन की माल । रथ बैठ्यौ चाल्यौ ततकाल ॥ १३ ॥
आगैं सबरी दरसन होइ । तुम पसाउ पावै गति सोइ ॥
तुम मिलिहौ सुग्रीवहिं जाइ । वह अर पैगौ सिया मिलाइ ॥ १४ ॥
इतनौ कहि सो स्वर्गहिं गयौ । जै जै कार अकासहिं भयौ ॥
साजि लिए तिन धनुहर बान । पंपासरवर लागे जान ॥ १५ ॥
जोजन एक तवै चलि गए । सबरी सौं तहं दरसन भए ॥
ता कहं राम दृष्टि गति भइ । अग्नि साधि वह स्वर्गहिं गई ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाइ पहूंचे पंपा तीर। देखैं रघुनंदन बर वीर॥
फिरि चारयौं दिसि रहे सिहाइ। वाहौ कथा न बरनी जाइ॥ १७॥
खिनु बिलंबि ऐसी मन धरी। सरु चाहत सीता सुधि करी॥
देखत तरुवर चले अनूप। वे पहुंचे गिरिवर रिषि भूप॥ १८॥
बंदर चारि राइ सुग्रीव। देखत तिन ल भागे जीव॥
राम देखि तिन अति भै भयौ। यौ जान्यौ अब रुठचौ दयौ॥ १९॥
सुनौ राउ बोलै हनुमंत। धर्मु न देखत ही भाजंतु॥
जो मुहिं एकहि आइसु दीजै। उनकौ मर्मु बुद्धि करि लीजै॥ २०॥
बायु पूत तब आइसु पायौ। मर्मु लैन राघव पहं आयौ॥
तुम ए मो कारन धनु लए। मारन बालि राइ परठए॥ २१॥
जो यह करचौ कपरिया भेस। पूंछत कौन तुम्हारौ देस॥
कहा नाम काहे वन चहौ। काके पुत्र भया करि कहौ॥ २२॥
रामु भयानौ ता सुनि बात। दशरथ नाम हमारे तात॥
लछिमन राम नाम तप भेस। बन महं रहहिं पिता आदेस॥ २३॥
अैसैं वरस तेरहीं भई। राम नारि रावन हर लई॥
अवहिं कबंध कह्यौ संदेसु। करहु मित्र सुग्रीव कपेसु॥ २४॥
रुद्र रुप कीन्हीं हनु वंतु। उपजाइ तिहि अग्नि तुरंत॥
सो तिन दुहूनि अतर धरी। मित्र धर्म की वाचा करी॥ २५॥
तव सुग्रीव राम सौं कह्यौ। कछु आभूषन मैं ही लह्यौ॥
देखौ तिनहिं पिछानहु कोइ। मति वह सीता माता होइ॥ २६॥
आनि दिखायौ देख्यौ चीर। रुंधे नयन दुहनि के नीर॥
आपुन राम रहे उर लाइ। ताहि देखि दुःख भौ कपिराइ॥ २७॥
देख्यौ राम करत संतापु। तब तारा संम्हरियौ आपु॥
जोरें बैठे बोलत सोइ। राम दुःखी हमहीं तें होइ॥ २७॥
कह्यौ कपीस राम संभारि। जेठौ भैया राजा बालि॥
मोह्यौ पाप बुद्धिता भई। तारा नारि छीनि तिहि लई॥ २९॥
यह सुग्रीव राम सौं कह्यौ। इतनौ सुनि राघौ दुख लह्यौ॥
करी पैंज दसरथ की आन। बालि न मारौ एकहि बान॥ ३०॥
तब सुग्रीव कह्यौ ब्यौहार। यह बंदरु अति बली जुझार॥
अैसैं बालि जात क्यौ बह्यौ। सब कारन कपि राजा कह्यौ॥ ३१॥
दुंदुभि नाम असुर बल भयौ। तीन लोक जीतत जसु लयौ॥
नाहि ता हिमवंत कह्यौ व्यौहारू। तो कह बंदर बालि जुझार॥ ३२॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतनौ सुन दैयत रिस भरचौ। आपुन रूप महषि कौ करचौ ॥
याही बन मैं आइ पईठ। जान्यौ असुर बालि तब दीठ ॥ ३३ ॥
जानि ताहि ता सनमुख गए। सिला उखारि सामुहैं भए ॥
छांड़ सिला बालि अति रीस। भौ निर्जीव लगी जब सीस ॥ ३४ ॥
ताकु रंकु परियो इहि थान। अति ऊंचौ सो सिला समान ॥
औरु न कोऊ सकतु जुटारि। हेला ताहि उठावतु बालि ॥ ३५ ॥
दै दाहिनी सबै विहि धरनी। अरु घर घाली मेरी घरनी ॥
हेरे पर्वत सिला उखारि। पहर कुकरतौ सरौ संभारि ॥ ३६ ॥
सात ताल तरुवर ए दीस। एक बान भेदै कपि ईस ॥
इतनौ कर्म करै सो राम। सो बालिहिं जीतै संग्राम ॥ ३७ ॥
पुरुष एक सर घालन कहै। दूजी बार बालि सो बहै ॥
नाहिन राम तिहारौ ठांउ। महाबली बंदर कौ राउ ॥ ३८ ॥
सुनि हंकार रामु मन भयौ। धनुष उठाइ हाथ सर लयौ ॥
ज्यों ज्यों गुन निपजै आपुनौ। कहि पाछिली बात सो सुनौ ॥ ३९ ॥
बंधु विरोधु भयौ किहि काज। बालि राइ क्यों बैठौ राज ॥
कैसैं छीनि लई तो धनी। सबै बात हौं चाहत सुनी ॥ ४० ॥
बालक छाँड़ि पिता मरि गयौ। सहज राज जेठे कौ भयौ ॥
सेवा करौं न छाँड़ौं पासु। अैसैं सेवा करहिन दासु ॥ ४१ ॥
राजु करत दिन गए बहुत। कियौ बैरु दुंदुभि कौ पूत ॥
महाबली मायावी नामु। आवै राति करन संग्रामु ॥ ४२ ॥
हमहूं मिलि करि आव(यु)ध लए। वह भाग्यौ हम गोहन गए ॥
खन नीरौ खन होइ अदीठु। कछू जूझ करि गुफा पईठु ॥ ४३ ॥
द्वार राख दीन्हौं आभास। तूं जनि मो बिनु छांडहि बास ॥
आपुन बालि भीतरै गयौ। तासौं जूझ बरस दिन भयौ ॥ ४४ ॥
मरचौ जानि मैं करी न सार। दीनी सिला गुफा कैं बार ॥
इसौ मंत्र मंत्री मिलि कियौ। आनि छत्र मेरैं सिर दियौ ॥ ४५ ॥
तारा रानी मैं भयौ राउ। मंत्री सेव करैं सति भाउ ॥
राज भूल मैं करी न सार। दीनी सिला गुफा कैं बार ॥ ४६ ॥
राज करत मो मासकु भयौ। तब राजा मायावी हयौ ॥
मारि लात सिलवार उघारे। धरहुँ अकेलौ पहुँच्यौ बालि ॥ ४७ ॥
मौ देखत राजा परिजरचौ। सब कुटुम्ब मेरौ पाकरचौ ॥
तारा लै धाली घर बास। हौं लै जीव गयौ बनवास ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हौं तो छांड्यौ बैर पईठ। राज लोभ तूँ भूल्यौ ढीठ॥
बारंबार कहै तब बालि। हौं पुनि घाल्यौ देस निकारि॥ ४९ ॥
जब दुन्दुभि है धरती परचौ। ताकी देह रुहिरु नीकरचौ॥
बूँद एक दो पहुँची तहाँ। रिषि मातंगु बईठे जहाँ॥ ५० ॥
ताहि देखि मन उपज्यौ दापु। तब तिहि अैसौ दियौ सरापु॥
जब नृप पांउ जुवन मह धरे। तब अनमारचौ बालि जु मरे॥ ५१ ॥
तिहि सराप वानरपति डरचौ। हौ दुरिदेव तहाँ उबरचौ॥
यह करंकुवा राखस तनौ। टारै याहि नाहि बल घनौ॥ ५२ ॥
इतनौ सुनि हंसियौ रघुनाथ। असुर कुरंकु छुवौं क्यों हाथ॥
बांयैं[अैं]चरन माझधरि तुल्यौ। गहि डारचौ दस जोजन परचौ॥ ५३ ॥
देखि अचंभु करै सुग्रींउ। राघौ अधिक कर्म यह कींउ॥
कै वह बहुत द्यौस कौ भयौ। सूखि साखि हरुयौ ह्वै गयौ॥ ५४ ॥
अजौं न राउ भरोसौ करै। तो पहँ देव बालि तव मरैं॥
सातौं तरवर एकहि बान। भेदि सकै जो मेरैं जान॥ ५५ ॥
तब सुनि रामु बान परठचौ। सातौं भेदि रसातल गयौ॥
उठि सुग्रीव भयौ अगवान। लागे नगर बालि के जान॥ ५६ ॥
तारा तबहीं ता सुधि लही। सबै बात राजा सों कही॥
सुनत बालि तब ऊतरु दियौ। मैं न पराध राम कौ कियौ॥ ५७ ॥
उन है पाप धर्म की लाज। कत जूझि हैं पराए काज॥
जो जूझैं तो अति हित मोहि। सुन्दरि जूझ दिखाऊँ तोहि॥ ५८ ॥
मेरैं देखत ही संग्राम। धनुष कहा गहि जानहि राम॥
बरस सात सौं तिहि वनवास। कियौ बहुत तप चित्त उदास॥ ५९ ॥
घौस सात जो अंतर जाइ। भोजन सातइ ग्रास कराइ॥
नाम सप्त गिरि सिंधु जु भयौ। अति तप जीवत स्वर्गहि गयौ॥ ६० ॥
ताके आसन पहुँचे जाइ। बहुरि चल्यौ गल गर्ज कराइ॥
एक्कै सगुन न नीकौ भयो। अर्थ दोषु नहिं जानत गयो॥ ६१ ॥
विनसे सगुन भए को गनै। गाजत वार गए ता तनै॥
तो ज्यौं राज करी गलदार। पहुँच्यौ बालि नगर के द्वार॥ ६२ ॥
बहुत जूझ दुहु भैयन भयौ। जीत्यौ बालि बहुरि घर गयौ॥
वन मह भागि गयौ सुग्रीव। बाच्यौ कर्मनि उबरचौ जीव॥ ६३ ॥
कहै बहुरि मोकौ न पत्याइ। जो रन बालि सामुहे जाइ॥
भई लाज यों बोले राम। देख्यौ नहीं करत संग्राम॥ ६४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोऊ बंधव एक समान । कहि का जोग करौं संधान ।।
बहुरि बीर रन जूझहु जाई । बहुत बात ता कहँ समुझाई ।। ६५ ।।
कंठ माल घाली सहदानु । बहुरि सामुहैं कियौ पयानु ।।
पहुँचे थान सप्त गिरि तनै । तब ब्यौहार राम सौं भनैं ।। ६६ ।।

ता आसर्म कियौ परनामु । पुनि खिखिंधि नगरी गयौ राम ।।
ऊभे भए नगर के बार । तब सुग्रीव करी गलदार ।। ६७ ।।
सुनि तारा समुझावै ताहि । कंत आजु मति जूझन जाहि ।।
साँईं बारह मास मझारि । एक द्यौस लरि जातौ हारि ।। ६८ ।।
दूजे द्यौस जु आयौ नाथ । हौं जानौ राघव हैं साथ ।।
त्रिभुवन मांझ और को बली । तुम सौं कंत सकै को लरी ।। ६९ ।।

रामचंद्र है पुरुष पुरान । करहु संधि ज्यों उबरै प्रान ।।
इतनौ सुनि वाढचौ अहंकारु । राघौ बनु देख्यौ इथिहारु ।। ७० ।।
ऐसौ सुनि धनुहर कर लयौ । सिंह दुवारैं जूझन गयौ ।।
दुहूं बंधु अति लरहिं अपार । दोऊ मुरछे बारंबार ।। ७१ ।।

राजा कोपि मुष्टिका हयौ । तब सुग्रीउ धरनि धुकि गयौ ।।
धरी एक उठि बाहिर लरचौ । राधौ तबहिं बान संभरचौ ।। ७२ ।।
बालि राइ कौ बेध्यौ हियौ । तब तिहि कोपि वचन बोलियौ ।।
राम लजायौ दसरथ राइ । बीच पैठि तुम धाल्यौ धाइ ।। ७३ ।।
तेरौ कहा कियौ अपराधु । ऐसौ करम करत नहि साधु ।।
अब मेरौ मन ऐसौ भयौ । जनु मैमंत हरिन पै गयौ ।। ७४ ।।

हाथी रामु न अंतरु होइ । बोलै बालि सुनै सब कोइ ।।
धर्म न अंकुस जोवन वंतु । तजि कुल बंधन वनह भवंतु ।। ७५ ।।
वाचा विचलतु आठौ जाम । कहै बालि हाथी त्यौं राम ।।
कछू लाज करि बोलहि देव । पाप धर्म जो जानहिं भेव ।। ७६ ।।
देखत मूरख हिंए बिचारि । क्यों हरि लै लहुरे की नारि ।।
हम जानत नरवैकै धर्म । भ्रिगया सदा हमारौ कर्म ।। ७७ ।।

खेलन कारन मारे वाहि । सावज भ्रिग कौ पातकु काहि ।।
बहुरचौ बोल्यौ बालि सुजानि । सीता रामहिं देतौ आनि ।। ७८ ।।
यहै एक पछितायौ रहचौ । तैं किन मोसौं प्रथमहिं कहचौ ।।
राइ अभारे बारंबार । अब कीजहु अंगद की सार ।। ७९।।
करिहै काजु तिहारी छाँह । इतनौ कहि पकराई बाँह ।।
पुनि सिख दीनी अंगद जोग । सुकरि बच्छ जिहिं हसैं न लोग ।। ८० ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेवा करि सुग्रीवहि तनी। अरु समुझाउ जतनि आपनी ॥
तिहि संतोषी होहु कुमार। पर भोजन परहरि परदार ॥ ८१ ॥
इन संतोष न कबहूँ कीज। भनत करत तप दान न छीज ॥
जो असमानहिं विग्रह करै। महानदी जो हेला तरै ॥ ८२ ॥
न करि महा जनु सरिसु गयासु। न करि पूत परजा सौं हासु ॥
पर धन पर त्रिय परघर वासु। तिनकौ होइ अकाल विनासु ॥ ८३ ॥
ज्यौं हौं त्यौं सुग्रीवहिं जानि। कीजहु पूत गुरुन की कानि ॥
पुत्र बिहून राजु सब सूनु। पुत्र विहून पुरुष अति दीनु ॥ ८४ ॥
पुत्र बिहून नर्क क्यौं तिरैं। क्यौं पुरिखा सुत बिनु उद्धरैं ॥
मेरे बचन पुत्र मन धरइ। राधौ स्वामित चितु दै करइ ॥ ८५ ॥
लै आइसु करि सिया गएसु। पिता बैरु तजि कहै कपेस ॥
इतनी सिख अंगद सौं कही। जीवनिमाल राइ कर गही ॥ ८६ ॥
कहै राम सौं आपुन लेहु। कै लछिमन सुग्रीवहु देहु ॥
सुरपति दीनी जीवनि माला। हरती कंठ बालि भोवाल ॥ ८७ ॥
ज्यौं ज्यौं माथैं बाँधतु सोइ। त्यौं त्यौं मीच न आवहि लोइ ॥
जान्यौं भेद छोरि तब लई। पुनि सैं हथ सुग्रीवहि दई ॥ ८८ ॥
तब राजा भैंटयौ भरिगात। बहुरि कही अंगद की वात ॥
यह बालकु जो औगुन करै। तितनौ बड़ौ न हियरा धरै ॥ ८९ ॥
यह सुग्रीव बाह दै मोहि। अंगद कहै सु सहनै तोहि ॥
तब परिमान करै सुग्रीव। वाचा सुनत विलंब्यौ जीउ ॥ ९० ॥
परस्यौ गात आपुनै हाथ। स्वर्ग होहु कहियौ रघुनाथ ॥
यह सुनि कर नृप लोइन फिरै। उसटे बसन दसन बाहिरे ॥ ९१ ॥
भई बिथा राजा अकुलान। भए सु मुकुत बालि के प्रान ॥ ९२ ॥

श्लोक

ततस्तु तारा व्यसनार्णवप्लुता। हतस्य भर्त्तुर्वदनं निरीक्षितं।
निवेश भूमौ परिरभ्य वालिनं। महाद्रुमं छिन्नमिवाश्रिता लता ॥

इति श्री रामायने बालकांडे किष्किन्धा गमने वालि वध वाक्यं नाम सर्गः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तारा रोवति लट सिर तोरि। मुहँ देख्यौ माथौ गहि छोरि ॥
छन चेतै छन मूरछि रहै। दुख के बचन बालि सौं कहै ॥ १ ॥
मो बिनु षिनकु न रहते साँइ। ऊतरु देत न कारन काँइ ॥
मेरौ देव विदूषत हियौ। का ऽ पराध मैं तेरौ कियौ ॥ २ ॥
सूरहिं कन्या देहि न कोइ। ता मैं जो विधवा सु न होइ ॥
सुख सोवहि कायर की नारि। हारनु जितनु विरोगु निवारि ॥ ३ ॥
सूरकंत अब मो मति हरी। गहिर सोग-सागर महँ परी ॥
हियौ जरतु ज्यौं पाहन लोह। बिसरतु नहीं कंत कौ छोह ॥ ४ ॥
जे नख दान सुरत के संग। सहि न सकतु अति कोमल अंग ॥
राघौ तीक्षन बान प्रहार। कैसैं तुम सहि सके भतार ॥ ५ ॥
बहुत भाँति रोवति बिललाइ। तबहिं नील राखी समुझाइ ॥
पुनि आपुन उठि गहे परान। काढ़े अंग विधे जे बान ॥ ६ ॥
उपज्यौ सबदु भुवन अकुलानु। काढ़ि नील जब लीन्हैं बानु ॥
रुहि[धि]र प्रवाह तैं दीसत तैंसे। गेरू पर्वत झिरत सु जैसे ॥ ७ ॥
अंगदु तबहि सिखावति माइ। लागहु पुत्र पिता के पाँइ ॥
बार बार समुझावति सोइ। पुनि यह भैंट दुल्लभी होइ ॥ ८ ॥
इतनौ सुनि अंगद गह भरे। पिता चरन माथे पर धरे ॥
आँसू नयन परैं असरार। बहुरि बोलियौ तार विचार ॥ ९ ॥
अंगदु गहतु देव तुम पांइ। दै असीस गहि हाथ उठाइ ॥
जैसैं प्रथमहिं करत सनेहु। तैसैं ऊतरू अब किन देहु ॥ १० ॥
अंगद एक पुत्र घर नाहु। मोहिं सौंप सुर पुर तब जाहु ॥
आपुन देव स्वर्ग सामुहैं। हम दोई काके होइ रहैं ॥ ११ ॥

श्लोक

यदा किंचित् संप्रधर्षाक्रृतंमयैष, तद दीर्घ वाहो तवं मेक पुत्रम् ।
क्षमस्वतन्में हरिवंश नाथ, नमामि मूर्द्ध तव पाद पंकजम् ॥

इति श्री रामायने बालकाण्डे तारा प्रलापो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रोवति बालि राइ की धनी । पवन पूत हनुमंतह सुनी ॥
पां लागै अरु जोरै हाथ । हमहूँ स्वामिनि भए अनाथ ॥ १ ॥
जे अंगद सुग्रीवहिं पास । ते कपि करहिं तिहारी आस ॥
आइसु लियैं तिहारी रहैं । परिहरि सोग पवनसुत कहैं ॥ २ ॥
अब सुग्रीव राज तब करै । रानी मानु तिहारौ धरै ॥
जोइ प्रीति मन करते बालि । यह सब तुमहिं पुजैहै कालि ॥ ३ ॥
अंगदु पूत जासु कै होइ । ताहि अनाथ सकतु कहि कोइ ॥
अब माया कौ परि हरि सोगु । मनुहारै जन परिज [य] न लोग ॥ ४ ॥
तारा कहति सुनौ हनुमंत । अंगद से सुत हौंइ अनंत ॥
भक्ति करहि अगनित परिवारू । बिछुरै कंत सून संसारू ॥ ५ ॥
बिनु गुन धनु सरवर बिनु हंसु । त्यों अब पुत्र बिहूनौ बंसु ॥
दिनकर बिनु दिन ससि बिन रैनि । कंत बिहीन तिसी मृगनैनि ॥ ६ ॥
सुनि हनुमंत राम की नारि । आनहु गे गृह रावन मारि ॥
इन मेरी अब खंडी आस । सिया न रहै राम के पास ॥ ७ ॥
प्रथम वियोग होइ बहु काल । पुनि सीता जैहै पाताल ॥
जा स्वारथ लगि बोलिहि बह्यौ । सु जनि लहै सुख तारा कह्यौ ॥ ८ ॥
इकु रोवति अरु निंदहिं आपु । अरु सीता कह देति सरापु ॥
जब निरभासै बारंबार । तब राखी सुग्रीव निवारि ॥ ९ ॥
बंधु लागि तेहि अति दुख कियौ । राघव समुझावन तब लियौ ॥
भूजै कर्म जु जैसो करै । मूरख मन कत विकलप धरै ॥ १० ॥
आँसू नयननि जेते परहिं । तेते तिहि पुरुषै उपचरहिं ॥
ता लगि सोगु हिएँ मन धरिए । पंडित किरिया नृप की करिए ॥ ११ ॥
राघव वचन जु अैसे कहहीं । बाढ़ै सोगु मृतकु घर रहहीं ॥
कपि नायक के जूथ बुलाइ । राजहिं प्रेत पुरीं पहुँचाइ ॥ १२ ॥
जे सहि सकहिँ नृपति कौ भार । तिनहि बोलिलै कहै कुमार ॥
चंदन काठ तेल घृत लेहु । अंगद पितहिं पिंड जल देहु ॥ १३ ॥
इतनै सुनि लछिमन के बैन । बंदर पठए चंदन लैन ॥
लियौ बालि पालकीं चढ़ाइ । पंपा सरवर पहुंचे जाइ ॥ १४ ॥
जेती सुंदरि रहिं रनिवास । ते सब आई नृप के पास ॥
कंत कंत करि रोवन लागीं । मानहुँ सोक समुद मौं पागीं ॥ १५ ॥
चंदन अगरनि किरिया करी । सोंधौ लेपि तेल घृत भरी ॥
ऊपर ताहि उलारचौ बालि । पुनि अंगद मुख दीनौ जारि ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धाह घालि दीनी अंजुरिये । अंगद आदि जिते कपि वरिये ।।
एकहि साथ सकल कपि भए । चलि सुग्रीव राम पहँ गए ।। १७ ।।
नायौ सीसु कहत कर जोरि । हनुमत बिनती करत बहोरि ।।
तुम पसाइ बंदरु कुल राजु । यह सुग्रीवहि दीजे आजु ।। १८ ।।
आपुन पुर मह धारहु पाँउ । थापि सुग्रीव कपिन कौ राउ ।।
लै चंदनु अभिषेकहु आपु । बंदर कुलकौ मिटै संतापु ।। १९ ।।
हनू वचन सुनि ऊतरु कियौ । मो कहँ दसरथ आइसु दियौ ।।
चौदह बरस बितीतहि ताम । पैठत नहीं नगर पुर ग्राम ।। २० ।।
सावन मास मेघ अति घनौ । अब तुम वसौ नगर आपुनौ ।।
विधि अभिषेक करावहु आजु । राजनीत प्रतिपालहु राजु ।। २१ ।।
जुगलराज पद अंगद कियो । बंधव मित्र जोगु धनु दियौ ।।
हेम कलस तीरथ जल डारि । तिन मंत्रिन अभिषेक विचारि ।। २२ ।।
इतनो सुनि तिहि नायो सीस । नगरी गयो कपिन को ईस ।।
फिर चहुँ दिसि परियण धीरयो । आपुनि राइ अवासहि गयो ।। २३ ।।
कनक सिंघासन रतननि जर्‌यो । विसकर्मा रचि यो सो धर्‌यो ।।
तिहि बैंठारि छत्रु सिरु दियो । बंदरपन सु आपु कर लियो ।। २४ ।।
सेत चँवर लीन्हें जन लाख । जहँ तहँ ऊँचे बँधे पताख ।।
चहुँ दिसि ढोरहिं वाउ अपार । आनंद्यौ बंदर परि वार ।। २५ ।।
जुगलराज पद अंगद कियौ । तछिम छत्रु सिंघासन दियौ ।।
तिहि दिन नगरी सोहति अैसी । अमरावती इंद्र की जैसी ।। २६ ।।

श्लोक

निवेद्य रामाय नृपं महात्मने,
तयोभिषेकं कपि वाहिनीपतिं ।
अव्याहतं तं प्रतिलभ्यतंसभा,
शाखा सुराज्यं त्रिदशाधिपो यथा ।

।। इति श्री रामायने बालकाण्डे किष्किधा पर्वणि संस्कारे सुग्रीवअभिषेको नाम सर्गः ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भौ अभिषेक सुन्यौ रघुनाथ। गौ पर्वत लछिमन लिएँ साथ ।।
सिंघ बाघ गज मृग सार्दूल। दीसहिं बनचर तिहिवन पूर ।। १ ।।
अमृत फर तरवर बन घनै। विष्नुदास पहँ जात न गनै ।।
बरनि न जाइ तरुनि की जाति। समुझै नहीं तहाँ दिन राति ।। २ ।।
ताल झिरन तहँ निर्मल नीर। देखि ठाँउ हरषौंवर वीर ।।
हंस आदि पंछी वन माँह। पुरइनि कमल कमोदनि छाँह ।। ३ ।।
चौरीं सिल दीसति तिहि ठाँइ। परम सघन चहूँ दिसि अमराइ ।।
पंछी सवदु होत कलराउ। बनु दीसहि नगरी के भाउ ।। ४ ।।
देख्यौ पर्वतु झिरन निवानु। पर्वत ऊपर लागे जानु ।।
देखीं सिला बहुत चौपास। जनु देवनि निर्मयो अवासु ।। ५ ।।
बिच बिच थूल थंभ आकार। बिच बिच दीसहिं खिरकी बार ।।
चहुंघाँ दीसहिं तिसे समान। मनौ ढरी कंचन के बान ।। ६ ।।
बहुतक बरन चित्र परिगए। जनु बिसकर्मा कर निर्मए ।।
मंद सुगंध बहै चहुँ पास। रंज्यौ राम देखि बन तासु ।। ७ ।।
धनुहरु तूनगुप्त करि धरचौ। तोरे त्रन घालौ संथरौ ।।
जे पावहिं ते बन फल खाहि। सिंघ बाघ गज डर न डराहिं ।। ८ ।।
कबहुक मेघ उसरि निसि गए। विमल अकास तरायन भए ।।
भरि किरननि विस्तरियो ससी। देखि राम मन सीता बसी ।। ९ ।।
मन करमरि उठि बैठचौ राम। ता ससि किरनि लग्यौ जनु घाम ।।
हियराँ भई तिरीछी नारी। धुनै सीस राघव तब भारी ।। १० ।।
कबहुँक जल झलकतु ता नैन। कबहुँक वोलि सकतु नहिं बैन ।।
कबहुँक कोपि धनुष कर गहै। चंदहि करन खंड नव कहै ।। ११ ।।
दिनयर तातौ करतु सहाउ। लछिमन सुतो डहै तो न्याउ ।।
सीतल ससिहि कहत सब कोइ। सो कत मोहिं अगिनि सम होइ ।। १२ ।।
जहाँ जानकी वदन अकार। ता लगि मैं छांड़ौं इथिवार ।।
लै उसास बोलतु वलिबंड। नातर चंद करौं सत खंड ।। १३ ।।
इहि विधि राम बहुत दुख करई। खिनकु न ताहि सिया विसरई ।।
कोह मोह मिलियौ इक सार। राघौ मुरछित बारंबार ।। १४ ।।
अधिक चिंत लछिमन मन धरई। तब कर जोरैं बिनती करई ।।
चतुर वचन संवोधे बीर। तुम सौ पुरुष न होइ अधीर ।। १५ ।।
सहस भुजा बल राघौ तोहि। आपति परैं न कायर होहि ।।
अब सांई उद्यम धरि हिएँ। छीजत पुरुष सोक के किएँ ।। १६ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गिरिवर सहित जीति नवखंड । तूं पौरुष समरथ बलवंड ॥
अब सोचत रावन कैं काज । सांई तोहि न आवत लाज ॥ १७ ॥
स्यौं परिवार निसाचर मारि । लंक विधंसि मिलावहु छारि ॥
बंदि मोखु देवनि कौं देहु । इतनौ करि त्रिभुवन जस लेहु ॥ १८ ॥
अैसे वचन कहे लछिमना । तज्यौ सोग राघव ततछिना ॥
बोलत तब धनुहर कर गह्यौ । स्यौं परिवार रावनहि बह्यौ ॥ १९ ॥
सीता सोग तेज बल गयौ । उतसव हीन वीर हौं भयौ ॥
अरु अंतर है बरसा कालु । पौरुष भयौ हमारौ बालु ॥ २० ॥
सुनि लछिमन उठि जोरे हाथ । सांचे वचन कहे रघुनाथ ॥
जैसैं जल छायौ संसारू । त्यौं तुम तेज दुर्‌यौ इथिबारु ॥ २१ ॥
अव दृढ़ धीरंतनु गहि रामु । वरषा काल अतीतैं जामु ॥
धनुष बान जुगववहु सरीर । दुसह काल नित बरसै नीर ॥ २२ ॥

श्लोक

भजस्व शांतिं प्रतिपाल्यतां शरत्,
क्षमस्व मासांश्चतुरोमया सह ।
वसाचलेऽस्मिन् मृगराज सेविते,
विहाय शोकं भुजगोयथा विषं ॥

॥ इति श्री रामायने बालकाण्डे राम लक्ष्मन (प्रस्रवण) वनगमनं नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बसहिं ति मालिवंत गिरि पीठि । उठे मेघ चौहुंधाँ दीठि ॥
बहुत बरन छाए आकास । कहै राम लै दीह उसास ॥ १ ॥
आठ मास रवि गर्भहिं धरे । अब सो रसु पुहुमी बिस्तरे ॥
मधुरें बरषहि अगनित धार । नवौ उदक पूरचौं संसार ॥ २ ॥
अति भय काल जोर घन भए । अब सीतल जल अवनी ठए ॥
छाँड़ै धरनि न बाई साँस[बाफ]। जनु सीता संताप उदास ॥ ३ ॥
करहे फरे जु तरुवर फूल । तिन सिर नीरु परै समतूल ॥
दीन्हों छत्र राउ सुग्रीव । जनु अभिषेक सुमंत्रिनि कीव ॥ ४ ॥
जब वह पापी रथ बै ठारि । लै गयौ अंतरिक्ष मैं नारि ॥
रावन के कर सोहति अैसी । चमकति बीज मेघ महँ जैसी ॥ ५ ॥
दिनभरु छाया मेघ समग्गु । लछिमन तैसो दीसन लग्गु ॥
किरननि उदौ तेज रवि हीन । तैसौ हौं सीता बिन दीन ॥ ६ ॥
धर जानै उद्यम म्रिग काम । गुफा बदन जनु उदित स्याम ॥
गिरि सोहतु तैसैं आकार । ब्रह्म बचन जनु बेद उचार ॥ ७ ॥
रिपुहिं विग्रहन चले नरेस । अरु पंथी जन गए विदेस ॥
अवहि वियोग जात नहिं सहियौ । दुसह वचन लछिमन सौं कहियौ ॥ ८ ॥
गौ पावस गरजहिं मयमंत । कूदहि हिरनमाल धावंत ॥
होतु सबद कोकिल कौ तहां । जनु नाटक दीसे तुव महां ॥ ९ ॥
गर्भ कालु जनु दीसतु घाँम । मेघ नीर तजिगौ विश्राम ॥
जब जब सिखर मोर धुन करई । तब तब गजमद छकि चिक्करई ॥ १० ॥
रिपु जिनि नारि दियो तिहिं राजु । तैसौ सुखी रहै वह आजु ॥
तितनौ दुख मो राघव कहै । दैव सहावै सोई सहै ॥ ११ ॥
रावन रिपु राखस कौ राउ । साइर बीच लंक गढ़ ठांउ ॥
करै न बंदरु मित्र सहाइ । कहि लछिमन अब कीजे काइ ॥ १२ ॥
हौं अति दुखी सुखी सुग्रीउ । इसौ जानि मैं मित्र न कीउ ॥
यह सुख आपुन ही ब्यौपरै । मेरी सुख-चिन्ता परिहरै ॥ १३ ॥
मैं सुग्रीवहिं कियौ सहाउ । सो मद गर्व बिसरि गौ भाउ ॥
जो वह मोकहँ करहि सहाइ । तौ अब बधौं लंक कौ राइ ॥ १४ ॥
इतनौ सुनि कीनौ जयकारु । आनंद्यौ लछिमना कुमःरु ॥
बरषा बीति सरद रितु होइ । रावनु जात न राखै कोइ ॥ १५ ॥

श्लोक

जथा क्रमं देव तवं पुरो हितं, समं जहि राघव तुं प्रलापं ।
बभूव हंतं रिपु राक्षसं कुलं, सीता सुखं तव गृहे वसंती ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिहिं ठां राम बहुत दिन रहे । मित्र वचन लछिमन सौं कहे ।।
यह सुग्रीव न आयौ काजु । मूल्यौ मूढ़ बालिकै राजु ।। १६ ।।
बहुतै बचन कहे तव राम । लछिमन ऊतरु दियौ जु ताम ।।
इतनी बात राम पहं भई । बहुरूं कथा किष्किधा गई ।। १७ ।।
राज भोग भूल्यौ कपि राउ । मंत्रि न कोउ जनावत भाउ ।।
राम सनेह बिसारचौ चित्त । जानि गए परदेस कुमित्त ।। १८ ।।
वायु पुत्र मन चिंता गुनई । सहसा राउ न बिनती सुनी सुनई ।।
भो डर मो कहं करतु जु रीस । आजु सीख दैहौं कपि ईस ।। १९ ।।
कर करि संपुट बोलतु हरी । सांई राम चित परि हरी ।।
राम मित्र कौ करहु सहाइ । अब होइ बिलम न कौई ठांइ ।। २० ।।
चारि मास चौ जुग वरु गए । बरषा राम दुखी वन भए ।।
हियरां सालति बासर रैनि । रावन हरि जुलई पिकबैनि ।। २१ ।।
अब तुम बेगि सैन करि साजु । आपुन चलहु राम के काजु ।।
मनसा वाचा सेव कराहु । सांई मित्र धर्म करि नाहु ।। २२ ।।
ऐसे वचन कहे हनुमंत । सुनि हँकराए नील तुरंत ।।
नमस्कारु सांई कहँ कियौ । तब नृप ताहि संदेसौ दियौ ।। २३ ।।
नील वीर सेनापति जाहि । चौ समुद्र बिच धरनी चाहि ।।
ते कपि रीछ सबैलै आहु । बार बार संदेसै राउ ।। २४ ।।
आइसु लै चलियौ परिगही । पंच द्यौस तिहि परिमिति लही ।।
पून्यौं दिन पाछैं जो रहै । हरौं प्रान कपिराजा कहै ।। २५ ।।
बार बार संदेसौ दियौ । नायौ सीस पयानौ कियौ ।।
लिये यूथपति बोलि सम्हारि । चौहूं दिसा पठाए चारि ।। २६ ।।

श्लोक

हरिप्रधानं बहु बिक्रमं परं, गतं चदुर्देस भुवि प्रभूति ।
सुग्रीवमाज्ञा हततं स जीवनं, हतंति मुक्ता सवानरा पतिं ।।

।। इति श्री रामायने बालकाण्डे सुग्रीव सेनापति संदेसो नाम सर्गः ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब सुनि नील पधारचौ पांउ । तब वह गुफाँ पईठौ राउ ॥
सिय संम्हरि दुख जाइन सहचौ । तबहिं राम लछिमन सौं कहचौ ॥ १ ॥
नारि सुमिरि तब लेतु उसास । गए मेघ निर्मल आकास ॥
प्रगटहि देखि निरंतर ससी । रघुपति हियैं जानकी बसी ॥ २ ॥
कोइल गुंजहि मोर धुनि दच्छिन पवन वहंतु ॥
चंद्र किरनि तंबोल रसु ए बिरही न सोहंतु ॥ ३ ॥
पंडुबरन स्यारी के खेत । सरवर कमलन दीसतु सेत ॥
वहुत काल सोहत तिन रंग । जनु तरुनी मुकुताहल मंग ॥ ४ ॥
निसि भरि सुनियतु सारस नाद । चकवा अरु कुरचनि के साद ॥
चंपक जई कुसुम कौ बास । लछिमन सुतौ सहायक तासु ॥ ५ ॥
अंवर सो पंडुर इक सारि । गर्भ भारजनु सोहति नारि ॥
पंथी मारग लागे जान । नरपति कटकनि किए पयान ॥ ६ ॥
नाग बोलि पुंगी वनसारु । काथु कस्तुरी बास अपार ॥
कंकोली लाइची लवंग । ए रस भागवंत के संग ॥ ७ ॥
भोजनु रुचित प्रभोगनि भाउ । जो कीजैं तौ दूनौ चाउ ॥
धनि सुसरद रितु मंदिर रहै । दुक्ख वियापै राघव कहै ॥ ८ ॥
है वियोग दुख जाके गात । निसि जागै सोवै परभात ॥
तवहि नींद क्यौं परवस लहै । लछिमन सिया बहुत दुख सहै ॥ ९ ॥
बोलत बोल आपनै काज । अरु सुग्रीव सु भूल्यौ राज ॥
यहर बंधु उद्दिम कौ ठांउ । आपु षिषिंध पधारौ पाँउ ॥ १० ॥
लछिमन कहौ संदेसौ एह । बंदर जातिहिं किसौ सनेह ॥
ता बिनु राइ न पावै सोभ । तू भूल्यौ सुंदरि के लोभ ॥ ११ ॥
मित्रहि सरिस लोभ मन धरै । हीनौ देखि गर्व जो करै ॥
जो नित कपट करै मन माहिं । मरे न कौवा कूकर खांहि ॥ १२ ॥
वाचा बोलि झूँठ जो करै । पर उपकार न हियरां धरै ॥
घात घालि जो करहि बिसासु । तिन मित्रन कौ नर्कहिं बासु ॥ १३ ॥
जा लगि तेरौ कियौ सहाउ । मैं मारचौ बंदर कौ राउ ॥
जा कारन तोहि दीन्हौं राजु । मूरख कत भूल्यौ सो काजु ॥ १४ ॥
जाकौ अबहीं लहचौ परानु । ताहि बिसासतु कौन सयानु ॥
जो अब तूँ नहिं करत सहाउ । तौ कीजे राखन कौ दाउ ॥ १५ ॥
कंचन रयन जरचौ जु अभंगु । कनक ज्योति जान्यौ सारंगु ॥
बीज बेग अति ऊषम जाहि । मूरख देख्यौ चाहत ताहि ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घोर भयानक गुन टंकार। जाहि सुनत कंपै संसार।।
होहि सबद निरघात समान। चाहत सुन्यौ आपुनै कान।। १७ ।।
केक पंखि पोषित तन त्रान। जिनहि बेग है गरुड़ समान।।
सूंघि सान तीछन जिन धार। चाहतु तिनके सहन प्रहार।। १८ ।।
अब जिहि मारग बालिजु गयौ। सो वह पंथ सकोच न भयौ।।
यह सुन आयौ जीवत आइ। तूं मति बाट बंधु की जाइ।। १९ ।।
तो देखत एक्कै सर लयो। तो छत बालि राइ मैं ह्यो।।
अबहिँ अधिक रिस लागत मोहि। ताके पंथ पठाऊँ तोहि।। २० ।।

श्लोक

सो पूर्वजं तं त्वया विसेषितं, लाल प्रमानं प्रसभं छदेनं।
चक्रं कृते प्रनति मुग्रवेगं, हरी स्वरं मानव देवनाथं।।

।। इति सर वार्ता निवेदन नाम सर्गः ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

इतनै वचन सुनत लछिमना । लीन्हौं धनुष कोपि ता छिना ।।
बाँधि तून रामहिं सिर नाई । नगर खिखिंध्य चल्यौ समुहाई ।। १ ।।
बहुतक बात कहीं करि कोह । चल्यौ सिंधु जनु लागैं छोह ।।
देख्यौ चलत रिसानै जाम । तब लछिमन समुझायौ राम ।। २ ।।
मेरी पैज न घालै हारि । कह्यौ वचन जब मारचौ बालि ।।
दीनों राज बांह मैं गह्यौ । बासौं मित्र आपुनौ कह्यौ ।। ३ ।।
अबहि वीर ते बचन सम्हारि । अति रिस लगं न घालहि मारि ।।
दुष्ट वचन मति बंधु कहाइ । दूत कर्म राजा पहँ जाइ ।। ४ ।।
कहि सुमित्र आइसु परिमान । चल्यौ जुहारि न हियें सुहान ।।
देखत रूख अठारह भार । नगर खिखिंध्या गयौ कुमार ।। ५ ।।
आवत देख्यौ लछिमन बली । बंदरु सैन उठचौ अलमली ।।
सिला रूख आयुध कर गहे । चारचौं पास कोट चढ़ि रहे ।। ६ ।।
सुनि कह राउ सु अंगद गचौ । ताहि देखि कोपंतनु भयौ ।।
रिसकरि बोल्यौ बारंबार । धावहु धावहु लेहु हथ्यार ।। ७ ।।
धाए कपि पर्वत आकार । करहि भयानकु गरजहिं बार ।।
अधिक नाम को गनत न जान । एकन बल गज कोरि समान ।। ८ ।।
तारा सहित राउ है जहाँ । बंदर कहन पहूँचे तहाँ ।।
तिन विनयौ भयभीत पुकार । सुनइ न राइ रहे पचिहारि ।। ९ ।।
घरी एक तिन अंतरु गयौ । नगर बहुत कोलाहलु भयौ ।।
परचौ सबद राजा कै कान । कहराये बंदर परधान ।। १० ।।
बिनतु सुषेन नींल नल भग । अंगद हनू गुफा महँ गए ।।
बूझत बात कपिन कौ राउ । नगर मांझ कैसौ कहराउ ।। ११ ।।
बुद्धिवंत सूर गुरनि समान । मंत्रीं वायुपूत परधान ।।
इक अपबली संभवन हार । बिनवत हनू विनय गुन सार ।। १२ ।।
मित्र राम रघुवंसी बरी । ताकी नारि निसाचर हरी ।।
ता लगि देव मित्र तुम किये । मारयौ बालि राजपद दिये ।। १३ ।।
तिन महँ एक धनुष लै हाथ । आयौ तोहिं मिलन कपि माथ ।।
अबहि देव उपगरु सम्हारि । लछिमन भैंटौ दै अँकवारि ।। १४ ।।
हनुमत वचन सुनत सुग्रीउ । तब फिर कछुअ न ऊतरु दीउ ।।
अंगद धाइ चरन गहि रहयौ । करहु सुदेव पवनसुत कहयौ ।। १५ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्लोक

संदृश्यतामप्रतिषिध्य तं च, यथा क्षमं मन्यसि तत्कुरुष्व ।
क्रुधानि गच्छंति लक्ष्मणो असौ, ससेषसां विस्मयतेच सर्वे ।।

इति किंष्किधा लक्ष्मण प्ररेशो नाम सर्गः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

सुन्यौ मंत्र जो हनुमत कह्यौ । आधु मुहूरत सोचत रह्यौ ॥
बैठ सुनहिं मह। कपिवीरु । बोलहि भाषा अति गंभीरु ॥ १ ॥
कहै राउ हौ जानतु एहु । मोसह राघव करत सनेहु ॥
लछिमन आयौ धनुष चढ़ाइ । इतनौ अनख सह्यौ क्यौं जाइ ॥ २ ॥
सूर धर्म गति बोलै राउ । करते सौं कीजै भरियाउ ॥
मांग्यौ जूझ जु छत्री सहै । ता सब कोई कायरु कहै ॥ ३ ॥
पुनि विचारि ऐसी मन धरै । मो सन राम न विग्रह करै ॥
यह कपि राउ सबनि सौं कह्यौ । वहुरूं वचन पवन सुत लह्यौ ॥ ४ ॥
भयौ मया यौं जोरे हाथ । राम संक परिहरि कपिनाथ ॥

श्लोक

न राम रामन्मनसा समन्वया करिष्यसा त्वं मनसा विपोहितं ।
मनोदिते जंतु स मानुषं बलं सा राघवं तेज बलं समंधसः ॥

॥ इति सुग्रीव वानर मंत्र विधानो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कीन्हैं राइ मंत्र परिमान। मंत्री हौंन गए अगवान ॥
मधुरैं बोलहि लागहि पांइ। चलिएँ देव बुलाए राइ ॥ १ ॥
गुफा ब्यौरं जब लछिमन गयौ। अति अचिरज ताकैं मन भयौ ॥
कंचन खंभ [म्हि]रत्न बहु जरे। जनु सैं हथ बिसुकर्मा करे ॥ २ ॥
द्वार पाट चौहटे पगार। मंदिर गनत न जानत सार ॥
ऊँचे दंड धुजा फरहरै। कंचन कलस जोति अति करैं ॥ ३ ॥
वारि गहै देखत मन भूल। वागनि बहुत देखि फल फूल ॥
कुआ ताल भिरना बहु बाई। तिन देखत मन रहत लुभाइ ॥ ४ ॥
देखि चरित्र पहूँचे तहाँ। वानर पति नृप बैठौ जहाँ ॥
पहिरन रूप सवै इकसारि। बैठीं अगिनित तरुनी नारि ॥ ५ ॥
जोवन रूप गर्व जिन हिएं। कनयर दंड छत्र सिर दिएं ॥
सोहति अति कीन्हैं सिंगारु। जनु कामिनि रति कैं आकारु ॥ ६ ॥
रतन जटित सिंघासन तहाँ। तारा है बाँएँ भुज जहाँ ॥
रानी[रुक्मा]रूम दाहिनै अंग। गंग गौरि जनु ईसुर संग ॥ ७ ॥
चंदन अगरु होइ बहु बास। अरु सुन्दरि अंग बैठीं पास ॥
लछिमन देखि राम संभरियौ। मानौ अग्निकुंड घृत परियौ ॥ ८ ॥
भौंह सकोचत राते नैन। रूधि कंठ नहिं आवतु बैन ॥
अधर आपनै चांपैं दंत। उपज्यौ कोप राइ देखंत ॥ ९ ॥
लेतु उसास भई रिस घनी। जनि कुब्यौरं महं रूध्यौं फनी ॥
गाढ़े करि चापैं धनुबानु। देखि चिन्ह राजा अकुलानु ॥ १० ॥
उठ्यौ सामुहें जारैं हाथ। उहिं विधि रानी दोऊ साथ ॥
आदर बचन बहुत नृप कहे। घरिकु लगाइ कंठ उर रहे ॥ ११ ॥
तब तारा भेंटति उरलाइ। बिछुरचौ पुत्र मिलति ज्यौं माइ ॥
बूझति बात गहगही भई। तब कछु रिस लछिमन की गई ॥ १२ ॥
तारा रोम विशेषतु जिसी। राइ अकास नारि द्वै ससी ॥
सब तरुनी तारागन भई। गुफा अकास रच्यौ जनु दई ॥ १३ ॥
वीन बंसि धुनि वेद उचार। नाचतिं चतुर सुरनि आकार ॥
मोती हार रूरहिं तिन हिएं। मनौ संभु जप माला लिएं ॥ १४ ॥
स्रौन तरिवना सोतिन कर्न। जनु सूरज के चक्र सुवर्न ॥
तिन महँ सेत चुनी मनिजरहि। अग्नि संत जनु स्वाहा जरहिं ॥ १५ ॥
आदर देखैं हियौ सिहाइ। राम सँभारि बीर बिलखाइ ॥
कुंवर घरी द्वै ऐसो भयौ। फूलत कमल सीत जनु हयौ ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्लोक

स पद्मपत्रप्रतिमान नेत्रं महार्कावि देवसमप्रभावं ।
उपोपविष्टं क्रिमि राग गर्भें वरानने सूर्यसुतं प्रदर्शनं ।।

।। इति श्रीरामायणे बालकांडे लछिमन र्षिषिध्या प्रवेसो सुग्रीव दर्शनोनाम सर्गः ।।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा लछिमन बिलख्यौ जानि । वहुत रतन तिहिं सौंपे आनि ।।
कंचन अर्घु आप कर गहियौ । देखि रिसानौ लछिमन लहियौ ।। १ ।।
कह्यौ वीर सुनि बानर राइ । तो दरसन परसन फलु जाई ।।
तूं कृतघ्न कामी मति अंधु । तो गुरु मित्र न सूझत वंधु ।। २ ।।
भूल्यौ राम तनौ उपगारु । को राखै ता करत प्रहारु ।।
जो तू राम चरन अनुसरहि । पुनि राघौ कौ आइसु करहि ।। ३ ।।
जवहि राम संदेसौ लेइ । तव सुग्रीउ लेउ जो देय ।।
इतनौ सुनि तव बोलतु राइ । हौं सेवक वह मेरौ साँइ ।। ४ ।।
जेते काज राम के लिएँ । लछिमन मोहिं सिद्ध सब किएँ ।।
वहुरू सुनि लछिमन परिजरचौ । मूरख मानि राम कौ करचौ ।। ५ ।।
तूं कपटी कपि जाति सहाउ । राघौ हिएँ सदा सति भाउ ।।
सुंदरि हिएँ बसै दिन राति । चपल बुद्धि वानर की जाति ।। ६ ।।
राम चरन अनुसरत न आजु । मूढ़ गँवावत प्रान सु राजु ।।
तो सारिखे जोग उपगार । करत सु पायौ अजस अपार ।। ७ ।।
मित्र पुत्र जो धर्मु न होइ । कीरति दुवौ लहत नहिं सोइ ।।
गिरिवर विरछ मूक जे भए । तैसे वचन राम तोहिं भए ।। ८ ।।
अग्नि साखि दै पकरी वाँहँ । ता लगि रिसमारैं मन माँहँ ।।
राम बान अति तीछन धार । छूटहिं सवद दर्प अनिवार ।। ९ ।।
तिनके सहि उर सौंहैं घाइ । भैंटि वालि जम के घर जाइ ।।
चलतु जु राम सँदेसे कहे । सुनि सुग्रीव सु मो मन रहे ।। १० ।।
वेगि न मिलहि फेरि वह ठाट । पठऊं तोहि वालि की बाट ।।

श्लोक

न स संकुचितो पंथा येन वालि नृपो गतः ।
सोयं गच्छति सुग्रीवः न वालि पथमं भजे ।।

कुंवर वचन सुनि रह्यो सँभारि । द्वै कर जोरैं बिनवति नारि ।। ११ ।।
दुष्ट वचन जनि वोलहु देव । कपि राजा कव चूके सेव ।।
तूं वुधिवंत सील संजूत । वड़े राइ दसरथ कौ पूत ।। १२ ।।
रानी कहति परेखौ मोहिं । अैसौ कहन न आवतु तोहि ।।
हौं जानति रामनि कौ भाउ । जैसौ लछिमन तैसौ राउ ।। १३ ।।
तूं बंधौ जेठौ नृप जानि । सभा माँझ कत टोरत कानि ।।
आपद सहिएँ कुल की लाज । व्याधि परि जीवन कैं काज ।। १४ ।।
जिय लगि सहिए आयुध घाइ । करुवौ बोल सह्यौ क्यों जाइ ।।
गयौ राजु बहुरचौ बहु काल । तारा रोम सु सुंदर बाल ।। १५ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राम पसाउ सकल सुख लह्यौ। भोग भूलि भ्रम राजा रह्यौ ॥
प्रथमहिं याहि बालि दुख दियौ। राम पसाउ राजु अब लियौ ॥ १६ ॥
यहै दोष दीजै कपि राइ। नारि कटाच्छ तपीतपु जाइ ॥
बिस्वामित्र बहुत तप कियौ। भोरैं नारि घृताची लियौ ॥ १७ ॥
लछिमन सुनि तारा यों कह्यौ। तौ तिय लागि बरसु दिन रह्यौ ॥
औरनि बहुत दोष को देइ। कर जोरति अरु विनय करेइ ॥ १८ ॥
इतनौ दोष हमारे हेत। उद्दिम काल न जान्यौ तेत ॥
जो उपकार राम तैं होइ। तितौ औरु करि सकतु न कोइ ॥ १९ ॥
पुत्र कलत्र देत धन प्रानु। उरिन होत क्यौं नर अग्यानु ॥
औरु कौन करि सकतु सहाइ। राघव आपुहि त्रिभुवन राइ ॥ २० ॥
ताकौ कहा कपिन तैं सरै। जीव सिराउ सु सेवा करै ॥
लंक प्रजारि लंकपति मारि। रामहिं मिलै सिया सुभ नारि ॥ २१ ॥
इतनौ करिहैं देखत तोहि। तब लछिमन सम्हरिए मोहि ॥
रावन बली सकत को मारि। राखसु सहस रहहिं रखवारि ॥ २२ ॥
हेला ताहि कौन विग्रहै। सायर पार लंक गिरि रहै ॥
ता लगि राइ नील परठयौ। सब हँकराइ कपिन दल लयौ ॥ २३ ॥
त्यौं त्यौं रिपु दल जिततु न कोइ। ज्यों ज्यों सेनु सहाइ न होइ ॥
औगुन बहुत एक गुन करै। उत्तम सत औगुन परिहरै ॥ २४ ॥
नीचहि वह न एकु बिसराइ। सौ गुन उत्तम हिय न धराइ ॥
हियरां कोपु करै जब नीच। तातैं तात होति है मीच ॥ २५ ॥
राई रहै गाई कैं सीस। तौ लगि होइ उत्तमहिं रीस ॥
लछिमन वीर मया मन धरहु। सेवकु जानि कोपु परिहरहु ॥ २६ ॥
अब नृप बिनवतु जोरैं हात। आजु रहौ चलिहैं उठि प्रात ॥

श्लोक

प्रमथ्य वै नो कृत राज सागतं, नमस्तलं स्यामथवा मही गतम्।
प्रियं तव भ्रातरन न्यरूपिनी, ग्रहान मिष्यं ति कपेंद्र जानकी ॥
अजहूं कछुक कोपु मन मांह। उठि सुग्रीव गही ता बांह ॥ २७ ॥
मधुर बात संबोधहि बली। चाहतु रिस लछिमन की हरी ॥
बोलत कपिपति सुनहु कुमार। को करि सकै रामु उपगारु ॥ २८ ॥
जाहि पसाउ राज सुख लहियो। उरिन होहि यह राजा कहियो ॥
इतनी अब निजु करिहौं सेव। जिहि वर बंदि किये सब देव ॥ २९ ॥
सो रावन स्यौं कुटुम सँघारि। रामहिं मिलऊँ सीता नारि ॥
सप्त ताल घरु अरु गिरि वारु। एकु प्रहार भेदि गो सारु ॥ ३० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैंजु पचार्यौ राम निसंकु । पांधरि डार्यौ असुर कुरंकु ॥
ताहि बालि दुख सहतौ टारि । जब बलुकैं गहतौ अंकवारु ॥ ३१ ॥
राघौ हेला डारत दीस । परचौ सुजाइ कोस चालीस ॥
जाके धनुष सुनत टंकार । पर्वत हलत डरत संसार ॥ ३२ ॥
लछिमन सरिस कहौ कपि राउ । को करि सकत जु तासु सहाउ ॥
प्रीति भूलि हौं चूकी सेव । यह अपराध छमहु अब देव ॥ ३३ ॥
जिन लावन्य रिषिन मन भंग । को न छक्यौ सुंदरि कैं संग ॥
इतनै बचन सुनत बर बीर । भाग्यौ लछिमन कोपु सरीर ॥ ३४ ॥
बोलत बचन करत मनुहारि । तूं बाला रति रामु न हारि ॥
अबहि संताप सबै दुख गयौ । अबहि राम रावनु जनु हयौ ॥ ३५ ॥
सुर छुड़ाइ पृथिमी जसु लियौ । जो सहाउ सुग्रीवहिं कियौ ॥
कठिन बचन मैं रिस कर कहे । तुम ते राइ चाहिएँ सहे ॥ ३६ ॥
हौं समद्यौं हो राम निवारि । पर मैं कोपु न सक्यो सम्हारि ॥
मो सँग करहु पयानौ राइ । रामु नारि दुख अति अकुलाइ ॥ ३७ ॥
कपि दल सकल लेहु समुहाइ । कहै सुमित्र न बिलमहु राइ ॥ ३८ ॥

श्लोक

महात्मनस्तस्य हि शोक व्यक्तं
निशम्य वाक्यं तव वाक्य कोविदं ।
ततो मया त्वां कुपितेन राघवं
विचित्र मुंचंति निरंसिषासितं ॥

॥ इति श्री रामायणे सुग्रीव लक्ष्मण वाक् प्रबोधो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा कहत जु कुंवर सुनंत। तब आगैं देख्यौ हनुमंत॥
मन आनंदित आइसु कहै। बंदरु एकु न पुहुमी रहै॥ १॥
मैं पहिलैं पठए जन चारि। और पठैं जो करहिं न बारि॥
उदयाचल अस्ताचल वीच। रहैं जु कपि सुबुलावैं मीच॥ २॥
जे हिमवंत विंध्य कइलास। अलका बसहिं कुबेरहि पास॥
उत्तर गिरिवर रहहिं अनंत। वेगि बुलाउ वीर हनुमंत॥ ३॥
दस दिन माँझ न आवहि जोइ। बंदर सूली द्याऊँ सोइ॥
मोहि राम दरसन सौं काज। कहि कपि सूर पठावो आज॥ ४॥
वायुपूत जब आइसु लियौ। दसहूँ दिसि बंदर सम दियौ॥
देखत उपय अकासह गए। ते गिरि सरि साइर थल भए॥ ५॥
मनसिल लाजि जहाँ हरताल। सवा लाख पर्वत की माल॥
नैपाली जयवीर घुटंत। सुनि आइसु कपि वीर चलंत॥ ६॥
जालंधर खोखर कस्मीर। गिरि कैलास सिंधु सर तीर॥
कोटि वीर अस्ताचल कंत। चले सुनत आइसु हनुमंत॥ ७॥
मान सरोवर बस तजे धीर। गिरि अंवर जु महावर बीर॥
जबहिं दूत पहँ आइसु लह्यौ। अगिनित कोरि सैन सामुह्यौ॥ ८॥
ता दस सहस जूथपति साज। चले सु आइ सुलै कपिराज॥
बसैं मेरु गिरि सतबलि नाम। हरषि चले देखन कहँ राम॥ ९॥
बंदर जूथ न जांहिं गनंत। केसरि नाम पिता हनुमंत॥
दिनयरु चलत लोपियो रैनु। तारा रानी पिता सुषेनु॥ १०॥
जनु अंजन पर्वत दीसंत। रीछ सकल चलियौ जामवंत॥
चले लंगूर संयन वहु लाख। तिहिं दल माझ जु चल्यौ गवाख॥ ११॥
तिहि दलबल को संख्या कहै। सुनत कथा नरु अंत न लहै॥
वालमीक वहु कहियौ बैन। दल मरजाद सकै कहि कौन॥ १२॥

श्लोक

एते च अन्यो वहवोहरियूथपः
सिरोभिर्वानरोमादयः सुग्रीवो गृहभिवादय॥

विष्णुदास कवि विनवत सेवा। गुनियन मोहि हँसहु जनि देवा॥
को पुरान कहि सकै विसेकू। भाख्यौ कारन कथा सु एकू॥ १३॥
जिनहैं मास दसह संतोषू। होइ न भूख प्यास तन मोषू॥
जो फल अगम देस उदभए। आप आपनी गैं लै गए॥ १४॥
सैनु निवेरैंया बिनती करी। ते फल फूल भैंट लै धरी॥
फूल्यौ गात कियौ आनंद। सप्त दीप जनु पून्यौ चंद॥ १५॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्लोक

स दूत वाक्ये रनकूल वादिभिः प्रर्हषिचेता हरि वाहिनी पतिं ।
ननंद रामी प्रियकारनेद्यते यथोदये चंद्रमसः शरत्यपतिः ।।

देखे सयन चहूँ दिसि घनै । तव मंत्री बूझै आपुनै ।।
छांड़ि कोप जो करै सनेहु । क्यौ राघव मिलिए सिख देहु ।। १६ ।।
छांड़ि सैनु लकिमनहि लिवाइ । आपुन तुम कर जोरैं राइ ।।
राम चरन वंदौं नय सीस । मया करै परिहरि मन रीस ।। १७ ।।
कहै हनूमत चतुर सुजान । कीजे सब दल सहित पयान ।।
तुम लछिमन सह आगैं जाहु । पाइनि परि विनवौकपि नाहु ।। १८ ।।
संका मनहं धरौ जनि राइ । राम न तो कह द्रोह कराइ ।।
उत्तम के मन कोप न रहै । करिहै मया हनू यों कहै ।। १९ ।।
बैरी ह्वै ताकै ता सरन । नीच न करै तासु कौ मरन ।।
मित्र भगत उत्तम घर जाइ । कहहु राम क्यौं कोपु कराइ ।। २० ।।
सुनत मंत्र राजा गहगह्यौ । बंदर बोलि हनू सौं कह्यौ ।।
बिसुकर्मा रचियौ मन जानि । सो पालकी लखन की आनि ।। २१ ।।
कनय रयन रतनन बहु जरी । सोर बनाइ इंद्र कहं धरी ।।
तिहि पालकी लखन बैठारि । अंतेवर सब समदीं नारि ।। २२ ।।
सेतु छत्र माथैं फरहरैं । जानहु चंद किरन बिस्तरैं ।।
ढारहिं चौंर दंड सोवर्न । अति निर्मल ते धौरे बर्न ।। २३ ।।
पंच सब्द मधुरी धुनि भई । उठी रैनु आकासहिं गई ।।
अरु अपुर्बु छायौ संसार । भयौ पयानौ धुंधाकाल ।। २४ ।।
चलत कपिन छिन एक न भयौ । राजा मालिवंत गिरि गयौ ।।
जान्यौ नीरौ राम मिलाउ । भए पयादे लछिमन राउ ।। २५ ।।
कर जोरैं लछिमन सुग्रीउ । सुमिरन राम नाम कौ कीउ ।।
कपिदल वरज्यौ मंत्रिन साथ । उपजीं मया देखि रघुनाथ ।। २६ ।।
कौसल्यानंदन यौं कहै । राउ जु भूलि नगर सुख रहै ।।
लोभनि, राजनीति परिहरैं । कहि सुग्रीव नर्क क्यों तिरैं ।। २७ ।।
यह है परम धरम भूपाल । जैसौ काजु कीजे जिहि काल ।।
सो पुनि गुरु आइसु लै करै । इकु जस होइ नर्क पुनि तरौ ।। २८ ।।
बार बार यों बोलैं रामु । राजा सदा न भूलै कामु ।।
जाकी आस करै सब कोइ । सो सुग्रीव विकल कत होइ ।। २९ ।।
राजा कृपन होइ मतिहीन । छत्री ह्वै रण भाखत दीन ।।
विप्र न जीव दया मन धरै । ए तीनौ महं एकु न तरै ।। ३० ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तूं कामी पापी मति अंधु । उद्दिम समय न मानै बंधु ॥
तूं सुख रहहि जु मोहिं संतापु । मारत तोहिं होइ नहिं पाप ॥ ३१ ॥
साई दुख सेवक सुख रहै । मंत्रीं भेद सत्रु सौं कहै ॥
रमैं जु गुरु जेटे की नारि । पापु न लागत सैंहथ मारि ॥ ३२ ॥
अव जु रिसैये कारन कहौं । मित्र जु वर आयौ सामुहौं ॥
वंदर वेगि समदि वलवंड । सीता चाहहिं धर नव खंड ॥ ३३ ॥
रावन वसतु जु सायर पार । पहिलैं करहु तहाँ की सार ॥
वार वार राघौ यौं कहै । निज सीता लंका महँ रहै ॥ ३४ ॥
कहतु राम राजा अवधारि । जे सेना वर्नत संसार ॥
ते सव कपि हकराए घनै । आए कछू और आउनै ॥ ३५ ॥
तिन वानर सव सेना जुरे । रावन वहै स्वर्ग जो दुरे ॥
सात दीप सीता की सार । लेत न हूहै सांई सार ॥ ३६ ॥
इक इक दिस पठऊं जन कोरि । लै सुधि सांझ वहोरि ॥
उदया अस्त बीच जव जाहिं । अैसे वहुत कोरि दल माहिं ॥ ३७ ॥
माया रूपी वली बहूत । बीस कोरि देवनि के पूत ॥
जिनकौ वेगु न वर्नन जाइ । पर्वत मान थूल अति चाइ ॥ ३८ ॥
जो सीता लंका महँ होइ । पहिलैंहि सुधि लै आवै सोइ ॥
आइसु वेगि दैंउ तत छिना । ना सायरु लंका दच्छिना ॥ ३९ ॥

श्लोक

ततः समुद्रो गमनोक्ष वीर्यवान्, हरि प्रवीरं विनिवेश कीर्तिनं ।
वभूव हर्षाद्विसुधाधिपात्वया, प्रवुध्य नीलोत्पल तुल्य दर्शनं ॥

॥ इति श्री रामायणे सुग्रीवराम दर्शनं नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

अैसी बात कही कपिराइ। उठि राघौ भैंट्यौ गर लाइ ।।
आसन थापि बहुत थुति करी। तो पसाइ मिलिहै सुंदरी ।। १ ।।
वाकहं जम रूठ्यौ इथिबार। लै सीता गयो सायर पार ।।
जोर सहाइ करै कपि ईस। बान अनेक खुरौ दस सीस ।। २ ।।
ऊतरु दैन न पावतु राइ। दस दिसि तैं कपि पहुँचे आइ ।।
गई रैनु आकास उड़ाइ। सूर तेज तब घाल्यौ छाइ ।। ३ ।।
एकु निमिष नहिं लागी बार। रहे बेढि पर्वत आकार ।।
जोजन बीस न तितनौ ठाँउ। जिहि ठां ठाढैं धरिए पाँउ ।। ४ ।।
आयुध तिनहिं आहिं नख दंत। धू धू काल करै मयमंत ।।
देहिं हांक फेरहिं लंगूर। हाथनि तरुवर लएँ समूर ।। ५ ।।
सतवलितात गवाखु सुखेनु। चलत सेनु तिहि उछरत रैनु ।।
नील वीर संपति केसरी। दुविदु सुबेल कुमुद गजहरी ।। ६ ।।
अंगद सरभ धूम जामवंत। दुविदु मयंद चल्यौ हनुमंत ।।
नल अरु नील जु संपति बली। तिनकी सेना अधिक जु चली ।। ७ ।।
चारि कोट जूथ पति जु सहाइ। इंद्र जितैं तिन बरनौ काइ ।।
बदर एक रिषभ जो कह्यौ। ता संग सेन बहुत सामुह्यौ ।। ८ ।।
जिते कहौं जूथनि के राइ। तिहिं दल गनती गनन न जाइ ।।
बहुत सहस जूथनि के नाथ। वंदर कोरि कोरि तिन साथ ।। ९ ।।
रहे बैठि सुग्रीवहि पास। जनु मेघनि छाए आकास ।।
देखत सेनु अधिक सुख भयौ। रामनि पास निवेदन गयौ ।। १० ।।

श्लोक

जथा सरितानि पर्वतानि द्विधानि गुहासुरयो सुचार्वा नरेंद्रः ।
निवेशिता पर्वत स टंककल्पो वानौकसा च महद्बलभ्रमः ।।

इति श्री रामायने बानरगमने रामदरसनो नाम सर्गः

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

आनंद्यौ राजा तत छिना । आइसु लियौ राम लछिमना ॥
करैं गर्ज अरु ठोकत कंधु । पूरब बंदर चल्यौ गयंदु ॥ १ ॥
बंदर साथ साजु ता लेइ । तब सुग्रीव संदेसौ देइ ॥
रावन सहित सिया की सार । बेगि कहहु जनि लावहु बार ॥ २ ॥
गिरि कंदर जल झिरननि वान । ए सब देखहु पाइ परान ॥
मासु द्यौस मर्जादा कहै । मारौं अधिक द्यौस जो रहै ॥ ३ ॥
वर्नि कहै देसनि के भाइ । तुम इन देसनि चाहौ जाइ ॥
पूरब समद्यौ सैन बहूतु । लिए बुलाइ धनंतर पूतु ॥ ४ ॥
दच्छिन दिसि अंगद संग जाइ । तो सम और बली नहिं भाइ ॥
गंध मादु उलका मुख नीलु । बरनि न सकतु तिनहिं गुन सील ॥ ५ ॥
जामवंत रीछन कौ राउ । अंगद सहित पधारो पाउ ॥
करि कुटुंब सब अपनौ साजु । चलहु साथ अंगद जुवराजु ॥ ६ ॥

॥ इति पूर्व दिग्वानरो प्रस्थानो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

औरै साजि लेहु कपि बली । चाहहु सीता कौने हरी ॥
रेवा तपति गोदावरि तरी । संभ्रमतौ गिरितैं नीकरी ॥ १ ॥
दुर्गा वैतरनी गंभीर । कृष्णा ताकौ कारौ नीर ॥
मिली महेन्द्रा सागर जहाँ । पायौ नाम महेस्वर तहाँ ॥ २ ॥
सीता लीजहु तिहि ठाँ चाहि । रावनु कहाँ लै गयौ ताहि ॥
मालिवंत कोकन गुजरात । सोहठ लोग बूझियहु बात ॥ ३ ॥
तहाँ जाहु सीता कारनैं । क्यौल नगर क्यौला वन घनै ॥
खिरी छुहारी अमृत तूल । बहू केबरौ चंप के फूल ॥ ४ ॥
तहाँ जनक तनया की सुद्धि । लीजहु वीर आपुनी बुद्धि ॥
श्रीखंडनु मंडित चौपास । मलयाचल लाग्यौ आकास ॥ ५ ॥
निर्मल जल कालिंद्री बहै । तहाँ देखियहु राजा कहै ॥
जोजन एक तनी चौराई । सौ जोजन देखियौ उँचाई ॥ ६ ॥
भोगावती लिख्यौ आकासु । तहाँ सर्प बासुकि कौ बास ॥
आगैं पर्वत बहुत असंखि । चाहत तिनहिं जाहु जो नंखि ॥ ७ ॥
सूरज उवै न अथवै तहाँ । धूं धूं काल लोक है जहाँ ॥
जम मंदिर प्रथिमी कौ अंतु । तिहि ठां प्रानी कोउ न जंतु ॥ ८ ॥
वह अति घोर भयानक ठांउ । सकहु न जाइ कहत यौं राइ ॥
जीवत मुई सिया की सार । कहियहु बेगि न्र लावहु बार ॥ ९ ॥
तीस द्यौस बाहिर जो रहैं । हरौं प्रान कपिराजा कहै ॥
मास द्यौस भीतर सुधि कहै । मोहिं समान भोगु सुख लहै ॥ १० ॥
वन घन रामचन्द्र की धनी । चाहहु बीर बुद्धि आपनी ॥

श्लोक

अति बली बल माश्रित्य, हस्तवाहि स्मृतिस्तु साहस विभ्रमोपकल्पो ।
पवन सुत जथाभिगम्यते जनक सुता हनुमंतस्तथा कुरुश्च ॥

इति रामायने दक्षिनदिसा प्रस्थानो नाम सर्गः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

सुनि संदेस चलन मन कियौ। बहुरौ राजा आइसु दियौ ॥
पर्वत विवर डंग आकास। जहां कहत सिय रावन पास ॥ १ ॥
मायावी कुंजर कपि धीर। जनु गिरिवर आकासु सरीर ॥
तुम सुर असुर न मानहु संका। छल बल देखि आइयौ लंका ॥ २ ॥
रावन जहाँ वसतु अति बली। उहि पापी छल सीता हरी ॥
तहाँ वीर पावहु गे सीय। रामहिं जपत जनक की धीय ॥ ३ ॥
राउ अभारे बारंबार। तो सम चतुर नहीं संसार ॥
जल थल गिरिवर लीजहु चाहि। पवन पूत अंगद संग जाहि ॥ ४ ॥
इतनी सुनी राइ की बात। फूलि हनू भयौ दूनै गात ॥
नायौ सीस चरन ता कहे। दीसत बीर सबै गहगहे ॥ ५ ॥
कहै हनू जो सीता लहौं। तासौं कहा संदेसौ कहौं ॥
हों न पिछानौ वह न पत्याइ। कछू चिन्ह मोहिं अर्पहु राइ ॥ ६ ॥
सुनत राम सुख भयौ बहूत। इसौ सुचेत चाहिए दूत ॥
इकु धीरौ अरु बोलन हारु। या तैं दुख भाजहि जु विचारु ॥ ७ ॥
इतनौ सोच लई मूंदरी। कंचन सुद्ध रत्न बहु जरी ॥
सूत लिख्यौ रघुनंदन नाम। पवन पूत कहँ अरपी राम ॥ ८ ॥
मुंदरी देखि उठौ आनंदि। चलियौ बीर चरन सिर वंदि ॥
तैसी सब सेना गहगही। मानहु सीता आजुहिं लही ॥ ९ ॥

श्लोक

मानिनी हरिप्रवीतुर शासनं तया, कपि वृत्तांत बुधै कर्ण श्रुते।
वभूतदा गतंबु दीर्घो ऽस्ति विशुद्ध मंडलं ॥

अंगद भेंटि पयानौ कियौ। ससुर बुलाइ राइ तब लियौ ॥
जूथ नाथ ता तारा धिया। पच्छिम दिसि को आइसु दिया ॥ १० ॥
तुम जेठे अरु चतुर सुषेन। कैसै जाति तुमहिं सिख दैन ॥
पश्चिम पर्वत बहुत असंखि। तुम बिनु औरु न जै है नंखि ॥ ११ ॥
रामहिं सरिस पैज मैं करी। तिल तिल तुम चाहौ सुंदरी ॥
जीवत मुई बतावहु कोइ। कीरति बहुत तुम्हारी होइ ॥ १२ ॥
देस कहौं जो बरनि न जाइ। रवि अंथवनु करतु ता ठांइ ॥
कंचन पाहन तरुवर छाँह। बहुत जतन करि जैए ताँह ॥ १३ ॥
रावनु डरपि दिसंतरु गयौ। यह मेरे मन विकलप भयौ ॥
मास द्यौस सुधि कहियहु आइ। और अधिक दिन घरी न जाइ ॥ १४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो क्यौं दिवस जाँइ इकतीस। मारौं ताहि कहै कपि ईस ॥
आवहु बेगि तौ दारिद हरौं। तुमकौं आपु समानहिं करौं ॥ १५ ॥

श्लोक

ततो सुषेनं प्रमुख लवंगम हरींद्र वाक्यं श्रुणुते मनोदित।
प्रणम्य सर्वे हरि वाहिनी पतिं दिशं प्रपद्य वरुनोभिपालितं ॥

पश्छिम चल्यौ सुषेन जुहारि। राजा सतवलि लियौ हँकारि ॥
कोटि अनेक सुभट लै जाहि। तूं सीता उत्तर दिसि चाहि ॥ १६ ॥
अगम पंथ नित परै तुसार। पर्वत बरनत लहौं न पार ॥
द्यौस रैनि तरु लागहि गैनु। समुझि न परतु तहाँ दिन रैनु ॥ १७ ॥
जब चढ़ि जाहु वीर कैलास। अलका पुरी बसति तिहिं पास ॥
तहाँ कुबेर जच्छ कौ धनी। वह सुधि कहि है सीता तनी ॥ १८ ॥
सरवर एक मानसर तहाँ। सरऊ नदी निकरि ता महाँ ॥
बहुत जतन करि जैयहु नंखि। पंथ अकास चलत ज्यौं पंखि ॥ १९ ॥
आगै सूर तपै जिहि खंड। बेगि नाकि जैयहु बलिदंड ॥
दुसह किरन सहि सकै न कोइ। खिनकु जु रहै जाइ जरि सोइ ॥ २० ॥
पुनि आगै जनि करौ उभार। राउ संदेसै बारंबार ॥
उत्तर अंत कहन नहिं जाइ। सोधि मेरु लौं कहियौ आइ ॥ २१ ॥
तीस द्यौस मिति कही सुनाइ। अधिक एक दिन रहन न जाइ ॥
रहै सु मेंटै मेरी आन। कहै राउ ता हरौं परान ॥ २२ ॥
इती सीख जब दीनीं राइ। सतवलि उत्तर चलि समुहाइ ॥
सीसु नाइ आइसु परमान। सूनि यह बात कियौ प्रस्थान ॥ २३ ॥

श्लोक

इत्येवमुक्त्वा हरि पुंगवास्ते रामं स सुग्रीवमनंत वीर्य्यम्।
शिरोभिरुंध्वा सहिता प्रणम्य जग्मुद्दिसंतौं अवनाभिगुप्तं ॥

॥ इति श्री रामायने वानर प्रस्थानो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

बंदर साजि चहूं दिसि गये । तिनके साथ बहुत दल भए ॥
कहत संदेस सुन्यो तो पास । बूझै राघव मधुरी भास ॥ १ ॥
यह संसय उपज्यौ मो जीउ । सांची बात कहौ सुग्रीउ ॥
रहहि खिखिध्या नगर बईठु । तूं नव खंड धरनि कव दीठु ॥ २ ॥
तब सुग्रीव राम सौं कहै । राजा बालि खिखिध्या रहै ॥
दंुदुभि नाम असुर बन बह्यौ । ताकै पुत्र बैर आरुह्यौ ॥ ३ ॥
महाबली मायावी नाम । आवै राति करन संग्राम ॥
निसि अधरात एक ही बार । करतु गाज आयौ सो द्वार ॥ ४ ॥
बालि राउ तब हाँक्यौ जाइ । खिनकु जूझ करि चल्यौ पराइ ॥
भांग्यौ असुर ब्यौर महं गयौ । हौं राजा कैं गोहिन भयौ ॥ ५ ॥
मो कह द्वार राखि गो माहं । बारह मास जूझ भौ तांह ॥
मुयो जानि हौं नगर पईठ । सिरह छत्र दै राज बईठ ॥ ६ ॥
तारा रूम सहित रनिवास । अैसें राजु करचौ दस मास ॥
राजा आयौ दैयतु मारि । देखत कोप न सक्यो सहारि ॥ ७ ॥
हौं भाग्यौ जब मारन लयौ । तब पहिलैं पूरब दिसि गयौ ॥
अति रिस राइ गयौ गुहिन्याइ । समुद तीर हौं हांक्यौं जाइ ॥ ८ ॥
छोड़ि रूप भौ औरहि भेस । पुनि भाग्यौ दच्छिन कै देस ॥
दीनौ गिरि सायरु दाहिनौं । दुरत फिरचौ बन कंद रघनौ ॥ ९ ॥
पश्चिम उत्तर बननि अपार । देखीं गुफा सिखिर नद धार ॥
तहां न गोहिन छांडचौ बरी । तबहिं बुद्धि मैं निज मन धरी ॥ १० ॥
देखि बिचारि थानु मातंग । तब सांई ताक्यौ ता संग ॥
ताकैं आसन रह्यौ लुकाइ । तिहिं बन बालि न सकतौ जाइ ॥ ११ ॥
कबहूं रिषिहि भयौ हो दापु । तबहिं बालि कहं कह्यौ सरापु ॥
जब या बन महं दैहै पांउ । तबहीं मरै कपिन कौ राउ ॥ १२ ॥
ता सराप डर बन परिहरचौ । हौं दुरि तबै तहाँ उबरचौ ॥
जिहि ठां तुम सौं दरसन भयौ । तिहि ठां रहत मोहिं जुग गयौं ॥ १३ ॥
सांईं मैंर देखी सब धरा । बन धन गिरि सरिता तरुवरा ॥
तिलु तिलु मैं धर देखी तिसी । नर देखत है आरसी जिसी ॥ १४ ॥
बंदर धर जे पठए राइ । सो चाहत बन पहुंचे जाइ ॥ १५ ॥

श्लोक

एवं दृष्ट्वा मया राजन्प्रतत्यच्छमुप लक्षितं ।
पृथ्वी मण्डलं कृतत्स्नं दृष्ट्वा नरेन्द्र पण्डलं ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जा कहँ जा दिसि आइसु भयौ । चाहन सिया तहाँ सो गयौ ॥
तिन ढूंढ़े वन सरित निवान । पर्वत चाहै पाइ परान ॥ १६ ॥
पूरी अवधि जो राजा कही । पर तिन कहूँ न सीता लही ॥
पर्वत घन वन देखि सुषैन । बहुरि थान गए ऊतरु दैन ॥ १७ ॥
भेंटि राउ तिन बिनई सेवा । हम जानकी न पाई देवा ॥
तीनौ बिनवहिं बारंबार । हम निसि द्यौस फिरे संसार ॥ १८ ॥
देखी नहीं गए दिसि अंत । मिति पूरी बहुरे जु तुरंत ॥
तिनके बचन सुनै जब राइ । बिलखौ भयौ न बोलत काइ ॥ १६ ॥
मन महँ सोचतु लेत उसास । कछुक मोहि अंगद की आस ॥
जानि मंत्र राघौ सौं कह्यौ । अंगद कुंवर हनू स्यौं रह्यौ ॥ २० ॥
अैसी देव हमारी बुद्धि । वे ल्यावहि सीता की सुद्धि ॥
जामवंत कपि बंदर तार । ढूंढ़े वन घन देस अपार ॥ २१ ॥
फिरत फिरत सब पहुँचे तहाँ । सावज पंखिन दीसतु जहाँ ॥
ना तरवरनि पात फल फूल । जनु वसंत आगम तिहि तूल ॥ २२ ॥
सरित सरोवर पुरइनि वाहिरे । सूखे सबै न पानी भरे ॥
देखि अचंभु भयौ मन माहँ । फिरतु कंदु रिषि भैंट्यौ ताहि ॥ २३ ॥

श्लोक

उदार सत्वाभिजिषो हनूमान समैथिली दृश्यति वानरेन्द्रः ।
दिशभ्य यामेवगता च सीता सामास्थितोवायुसुतो महात्मा ॥

चौपही

ता कर जोरें बालि कुमार । बूझतु देख तनौ ब्यौहार ॥
उपजी मया कहै रिषि राइ । अमृत फर फरते इहिं ठाँइ ॥ २४ ॥
सावज पंखी सरितनि खरे । रहते सदा सरोवर भरे ॥
एक पुत्र मेरैं घर भयौ । कबहूँ बन महँ खेलन गयौ ॥ २५ ॥
भेंट्यौ सिंघ न आवन लह्यौ । तब हौं डरयौ रिषीस्वर कह्यौ ॥
रूँध्यौ पुत्र बरस दस तनौ । देखि मोहिं दुख उपज्यौ घनौ ॥ २६ ॥
अति रिस भरैं सराप्यौ सोइ । जिनि बन रूख फूल फल होइ ॥
तब तैं जलु न होइ इहि थान । रूखहिं फूल न दीसहि पान ॥ २७ ॥
अैसौ या वन कौ परभाउ । तुम जिनि रहहु कहै रिषि राउ ॥
सुनी कथा औरहि बन गए । सिया न पावहिं बिलखे भए ॥ २८ ॥
अंगदु गयौ अपुन पै जहाँ । दैयतु एक उठ्यौ गजि तहाँ ॥
अति ऊँचौ पर्वत आकार । सौंहौं उठ्यौ करत गलदार ॥ २६ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भागे कपि देखत भय भयौ । अंगद कोपि अगहुँडौ भयौ ॥
मन महँ जान्यौ रावन राउ । माथैं कियौ मुठी का घाउ ॥ ३० ॥
बहुत रुहिर मुह निकस्यौ तासु । भौ निर्जीव फुरति नहिं स्वासु ॥
देख्यौ असुर सबल धर परचौ । जै जैकार सबद उच्चर्यौ ॥ ३१ ॥
जब हारे देखत सब हरी । कुंवर जोरि कर विनती करी ॥
तुम ढूँढ़े बन पाठन देस । चाहे पर्वत गुफा असेस ॥ ३२ ॥
राति द्यौस मन संक न कियौ । तहाँ न कहूँ देखियौ सियौ ॥
विषम बिसाल राउ सुग्रीउ । रीते जात मारि है जीउ ॥ ३३ ॥
आइसु हम न कियौ परमान । मारै राउ न करिहै कान ॥
अब तुम अहंकार मन धरहु । सब मिलि बाहुरि उद्दिम करहु ॥ ३४ ॥
हारैं तुमहिं भयौ दुख घनौ । तातैं सुख लहिहौ चौगुनौ ॥
इतनी बात कुंवर की सुनी । गंध मर्द जूथनि कौ धनी ॥ ३५ ॥
अंगद तनी बहुत थुति करी । बहुरौ सबै प्रचारे हरी ॥
एकहिं एक मिलौ जनि संग । चाहौ विंध्याचल की डंग ॥ ३६ ॥
अबकी बार लहौ जो सोइ । कीरति घनी तुम्हारी होइ ॥
गंध मर्द कौ बचन सुनंत । उद्दिम प्रथम कियौ हनुमंत ॥ ३७ ॥
एकति एकहिं मारग भए । बंदर फैलि विंध्य गिरि गए ॥
विंध्याचल पर्वत की माल । चाहहिं बन बूझहिं बन पाल ॥ ३८ ॥
तिलु तिलु कै ढूंढ़ी बन जाइ । सिया न दीठि रहे बिसधाइ ॥

श्लोक

श्रममभिगतवानं ततो गिरि वानरं भिवांछित्या गुहावि ।
जनक नृप सुता वअर्भासमाना हस्तिपास स्तनमिम्ष प्रनुत् ॥

॥ इति अंगद नादाप वधो पुनर्वचनो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इकु हारे अरु भए निरास । भूख वियापी लागी प्यास ॥
हाथ पांइ अरु वाचा रही । तबहिं बात हनुमत सौं कही ॥ १ ॥
चकवा हंस सबद बहु भए । जलचर पंछि तहाँ उड़ि गए ॥
तिनके अंग सजल सब भरे । देखत मोहि ब्यौर नीसरे ॥ २ ॥
कुवा ताल झिरना कै वाइ । कहा आहि जानन नहिं जाइ ॥
आरसु छाँड़ौ सब मिलि चाही । निजु पान्यौं मिलिहै बिरमाही ॥ ३ ॥
वायुपूत कहि आंगैं भयौ । सबनि लिवाइ गुफा महँ गयौ ॥
अति अंधियार न सूझत ताँह । उपरा ऊपर लागे बाँह ॥ ४ ॥
पैठ्यौ ब्यौर कपिन कौ साथु । सूजत नहीं आपुनौ हाथु ॥
सब मिलि आगैं पाछैं भए । जोजन एक आँध्यारैं गए ॥ ५ ॥
भूख प्यास अधिकं दुख भरे । मुरछि अचेत भए बावरे ॥
ऊपर ऊपर धीरक दैंहिं । छिनु छिनु नाम राम कौ लैंहिं ॥ ६ ॥
जब कपि जूथ कोस चौ गयौ । तिहि ठाँ बहुत उज्यारौ भयौ ॥
कनक रतन बहुतै आवास । कंचन कमल फूल बहु बास ॥ ७ ॥
नगर गाँव देखत जुरवान । है विवास पान्यौ तिहि थान ॥
कौन कथा कौ करै पसारु । दीसैं भवन सवै इकसार ॥ ८ ॥
तहाँ एक देखी तापसी । अंजिनि पूत बुद्धि मन बसी ॥
विनय करै अरु बूझतु ताहि । कहियहु थानु कौन कौ आहि ॥ ९ ॥
तेज तिहारौ अग्नि समान । कितियक काल बिते इहि थान ॥
करै बहुत थिति बारंबार । कहहु मया कै सब ब्यौहार ॥ १० ॥

श्लोक

ततोह दृष्ट्वा कपि सैन्यनाथ कृतांजलिं सोमभिगम्य सिद्धिम् ।
प्रयातु कांतं भुवनं विलंबनं रत्नानि चैमानि विलंव जस्य ॥

हनिवत वचन सुनत सो हसी । उपजी मया कहै तापसी ॥ ११ ॥
महाँ बली मय दैयतु भयौ । तिहिं यह वीर देस निर्मयौ ॥
पवन न बहै उवै नहिं ससी । सकत न कोउ नर बंदर बसी ॥ १२ ॥
सूरजु तपै न बरषै मेह । भुवन रच्यौ मय दैयत एह ॥
मेरु सुवर्न तनीं हौं धिया । राखी देह बहुत जप किया ॥ १३ ॥
स्वयं प्रभा मो कहिए नाम । राम भजन बिन और न काम ॥
बकला पहिरि जु वन फल खाँहुँ । बनफर तुचा चीर पहिराउँ ॥ १४ ॥
हेमा नाम सखी सुंदरी । सो संगीत कला गुन भरी ॥
तिहि अति नेह मोहिं वरु दियौ । तासु पसाइ बहुत तप कियौ ॥ १५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब तो सरिस कहौं सत भाउ । ब्यौरु अँध्यारौ दुर्गम ठाँउ ॥
कौन काज तुम आगम कियौ । धोखै बहुत परचौ मोहियौ ॥ १६ ॥
तासौं कथा कहै हनुमंत । भूख प्यास लगि वनहँ भ्रवंत ॥
पान्यौ पियहिं न बन फल खाँहिं । सब कपि अचरज देखि डराहिं ॥ १७ ॥
यह सुनि करुना उपजी ताहि । पियहु उदक बन फल अब खाहि ॥
बेगि हमारे बन महँ जाहु । भावहिं जिते तितौ फल खाहु ॥ १८ ॥
इतनौ सुनि तिन्ह पान्यौ पियौ । खाए फल संतोषौ हियौ ॥
तिनकौ भूख प्यास दुख गयौ । बहुरि सबनि तेतौ बल भयौ ॥ १९ ॥
बंदरु कहहिं बहुत गुन कियौ । सब परिवार मुए तैं जियौ ॥
करहिं बीनती बारंबार । तुम कहँ कहा करौ उपगार ॥ २० ॥
तपसिन कहै रहौ इहि देस । खाहु अमृत फल बंदर भेस ॥
काहू डर जनि हियरां धरौ । इच्छा राजु इहाँ तुम करौ ॥ २१ ॥
आसा करि जु करहिं उपगार । तीरथ जात करहिं व्यापार ॥
ऊसर खेती करै जु कोइ । सरवर निबहै लाभु न होइ ॥ २२ ॥
बोलहिं हिएँ सबै अकुलाइ । हमहिं गुसाइनि रहन न जाइ ॥
तिन सब कथा राम की कही । अजहूँ चाहत सिया न लही ॥ २३ ॥
राजा सिय कौ आइसु दयौ । स्वामिनि अवधि सु बासर गयौ ॥
अब तूं मन आपुनै बिचारि । आनि उलंघैं घालहि मारि ॥ २४ ॥
अब तूं हम कहँ ब्यौर दिखाउ । बिनसै काजु गयौ भरियाउ ॥
चिंता सब बूड़त उर धरहू । जौर पसाउ गुसाइनि करहू ॥ २५ ॥
हँसी तापसी बचनु कहाइ । इहिं ठाँ आइ न जीवतु जाइ ॥
जो तुम कह्यौ हमारौ करहु । तो खिन माहिं ब्यौर नीसरहु ॥ २६ ॥
मूँदहु नयन न लावहु बार । सब बंदरु निकसौ इकु सार ॥
जो तापसी कह्यौ सोइ कियौ । सब बंदरनि नयन मीचियौ ॥ २७ ॥
आध मुहूरत भयौ न ताहि । जो देखौ तौ बाहिर आहि ॥
तपसिन कहै सुनौ बरबीर । यह भय दैवत पूरबौ नीर ॥ २८ ॥
यह बन बिंध्याचल गिरि एह । थान जाहु मो मिटै सदेह ॥
सब बंदर ता लागे पाइ । दै आसिष वा पहुँची ठांइ ॥ २९ ॥
गरज्यौ लहर नीर ऊछरयौ । दच्छिन सागर तिन दिठि परयौ ॥ ३० ॥

श्लोक

बिलात्तु तस्मात्तपसा स्वयंप्रभा, [illegible] ।
स्थूलंहि सर्वं हरियासमास्थितं, [illegible] ॥

इति रामायने स्वयंप्रभा अतिथि बिलनिष्कासनो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

सोचहि बंदर ठाढ़े भए। अवधि कछू अधिकै दिन गये ॥
रीते जात देखि सुग्रीव। वह करि कोप हरैगौ जीव ॥ १ ॥
अंगद घरह कहतु नहिं जान। हौं अनसनु लै तजौं परान ॥
निज घर जात राउ विग्रहै। देखत कौन मित्र दुख सहै ॥ २ ॥
वहुत ताप जननी मन धरै। मेरे साथ प्रान परिहरै ॥
अरु सब लोग सुजन पछिताइ। कहा भलौ घर देखौं जाइ ॥ ३ ॥
जब वह घाल्यौ देस निकारि। बहुत बार रन जीत्यौ बालि ॥
ताकौ बैंर हिएं वह धरै। इहि मिस राजा निग्रह करै ॥ ४ ॥
इतनै सुनि अंगद के बैना। सब बंदर रोए भरि नैना ॥
इहि वन रहहु कहै कपितारु। और बुद्धि परिहरौ पसारु ॥ ५ ॥
इकु अमृत फल सीतल नीर। गाढ़ौ दुर्ग समुद के तीर ॥
कोपै राम राउ लछिमना। तुमहिं न भै उपजै इहि वना ॥ ६ ॥

श्लोक

इदं हितं अंगद दुर्गमं वनं, प्रभूत भक्षक भोज्य पांथ।
नसूर्यमिदु पवनं न सत्क्तं, सुग्रीव रामो सहितं तथा कपि ॥

चौपही

तासु वचन सुनि हनुमत बली। कहहु तुम्हैं बुधि कौनै हरी ॥
अैसी बुरी बात मन धरहु। राम सरिस तुम विग्रह करहु ॥ ७ ॥
अंगद बली पिता उनहारि। और न कोउ जीतै संसार ॥
मंत्र न चूकहु कुंवर निवान। दुसह राम लछिमन के बान ॥ ८ ॥
एकु वज्र सुरपति कैं रहई। ता प्रहार सुर असुर न सहई ॥
तीछन राज सुलछमन तनी। वज्र समान रहै कर बनी ॥ ९ ॥
ते परवत भेदहिं असमान। घन वन तरवर सूखहि पान ॥
जो ता पुरुष न ताकहु सरन। हु है अजस कुगति कौ मरन ॥ १० ॥
तारा प्रान वसत सुग्रीव। कुँवर वसत तारा कैं जीव ॥
देखत ताहि तुम्हैं को वहै। जैयै घर हनुमत यों कहै ॥ ११ ॥
छांड्यौ पुत्र कलत्र पर घरवारु। अंगद सहित फिरे संसार ॥
भूख प्यास तनु साध्यौ धाम। तिनकौ बुरौ करै क्यों राम ॥ १२ ॥
मो आगैं दै बिनती करहि। अरु सुग्रीव चरन अनुसरहि ॥
कहै हनू तौ मो कहँ लाज। तोहि न थापै अपने राज ॥ १३ ॥

श्लोक

प्रियं कामश्चते मातुः तदर्थं तस्य जीवनम्।
तस्य पार्श्वो हि गंतव्योतस्मादंगदगभ्यताम् ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐसौ बचनु जु हनुमत कह्यौ। ऊतरु देत न अंगद सह्यौ ॥
ऐसैं ना तैं ज्यावहि मोहि। हनुमत लाज न दीजहि तोहि ॥ १४ ॥
इकु राजा अरु जेठौ भाइ। आपुन सैंयहथु कीन्हौं घाइ ॥
अरु लै रह्यौ बालि की धनी। कोपति आइ बात ता तनी ॥ १५ ॥
कपिपति मारि कियौ तिहि काजु। दीन्हौं सब बंदरु कौ राजु ॥
सुगुन बिसारयौ राघव तनौ। ता आगैं को पापी गनौ ॥ १६ ॥
लछिमन आएं उद्दिम कियौ। धर्मु पापु करि तोष्यौ हियौ ॥
हरतु परतु डर नाहीं जाहि। हनुमत कहि क्यौ बिससौं ताहि ॥ १७ ॥
मो कहं मरन जुगतु है वीर। कुस संथरी समुद कै तीर ॥
तुम घर कहहु संदेसौ जाइ। समुझाइयौ मरै जनि माइ ॥ १८ ॥
कहियौ कछू भगति करि बात। जब तारा पूंछै कुसलात ॥
सुनै प्रान छांडै यौं कहै। हमहिं पाप लागै निग्रहै ॥ १९ ॥
अंगद वचन सुनत दुख भयौ। सबनि उसास रुदनु कै लयौ ॥
अरु सुग्रीवहु निंदा करहिं। बालि राइ गुन हियरां धरहिं ॥ २० ॥
दच्छिन अंगद कुस साथरी। परस्यौ नीर मरन मति करी ॥
सुमिरौ देव धर्म आपनौ। बालि राइ जसु बोल्यौ घनौं ॥ २१ ॥

श्लोक

सविषाद्भिर्वहुभि र्नविभ्रते, व्रतोभिषंग प्रतिमौंधनौकसौ।
वभूव सेनादि तिनियरो नगे, भ्रशं न तद्भि ज्वलनैर्यथोस्तग ॥

॥ इति रामायने प्रायोपवेशो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कपि बैठै परवत तरहरी। कारनु करहि ते बंदर बरी॥
अति बलबंड गीध की जाति। तिनके बचन सुनै संपाति॥ १॥
पंखि जटायु सहोदर जासु। बहुतै चाउ बेग बल तासु॥
बंदर देखि बहुत सुख भयौ। ए मोकहं लै आयौ दयौ॥ २॥
जब तैं बैठ्यौ परवतु आइ। तब तैं मैं खायौ न अघाइ॥
इन महं एकुन पावइ जान। अबहि अघाइ होइ मो खान॥ ३॥
इतनौ सोचि पंछि छिनु रह्यौ। अंगद बचन हनू सौं कह्यौ॥
हम कहँ कपट विधाता कियौ। मीच रूप अवतारी सियौ॥ ४॥
कहाँ अवध कहँ दसरथ राउ। कहाँ कैकई करौ उपाउ॥
तिहि भरतार पास बर लयौ। सीता सहित रामु वन दयौ॥ ५॥
लछिमन उठि लाग्यौ ता साथ। तजे प्रान दसरथ नर नाथ॥
रामु अवासु रह्यौ तिहि थान। भयौ बैर राखसी समान॥ ६॥
तिहिं खरदूषन त्रिसिरा मारि। रावनु कपट हरी ता नारि॥
ता लगि बहुत कियौ भरियाउ। बन महं जूझयौ पंच्छ जटाउ॥ ७॥
राघौ मित्र कियौ सुग्रीउ। मारयौ वालि राजु तिहिं दीउ॥
ता आइसु सब चाही मही। पर तिन कहूँ न सीता लही॥ ८॥
देखहु बीर दई कौ करनु। इहि ठाँ भयौ सबनि कौ मरनु॥
ऊपर पर बोलहिं सब हरी। सीता मीच आनि औतरी॥ ९॥
अैसे बचन सुनै संपाति। ग्रिद्ध चतुर पंछी की जाति॥
मरन जटायु बंधु कौ सुन्यौ। जल भरि नैन कह्यौ सिर धुन्यौ॥ १०॥
बहुत करै दसरथ कौ सोगु। साल्यौ सीता रामु वियोग॥
मूरिछ धरी एक गिरि गयौ। बाहुरि अंगद बूझ न लग्यौ॥ ११॥
को तुम बीर कहो सति भाउ। मित्र हमारौ दसरथ राउ॥
मेरौ जेठौ बंधु जटाउ। कौनै ताकौं घाल्यौ घाउ॥ १२॥
सूरज मेरीं जारीं पंखि। चलि न सकौं पै सूझतु अंखि॥
थोरौ बचन दूरितैं सुन्यौं। बल अहार मो कहँ चौगुनौ॥ १३॥
अब मो भयौ बहुत संदेह। वीर कहहु सब कारन एह॥
क्यौं सीता बन महं हरि लई। बंधु जटायु मीच क्यौं भई॥ १४॥
सुनत बचन कपि रहे डराइ। अब यह सबहिनि धालै खाइ॥
सांचहि हमहिं दयौ[दैव]भयौकूर। इच्छतु लाभ गँवायौ मूरु॥ १५॥
डरपत देखे कह्यौ कुमार। क्यौं सीता की पावहिं सार॥
कै निजु हमैं खाइगौ एहु। दुहूँ पवारैं गयौ संदेहु॥ १६॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतनौ कहि सब दल धीरयौ । आपुन कुंवर अगहुँडौ भयौ ॥
तासौं सबै कहानी कही । अब हम चाहत सिया न लही ॥ १७ ॥
एक गुफा महँ भोरैं गए । चाहत तहाँ बहुत दिन भए ॥
बीती अवधि जु दीनी राइ । ताके डर घर सकतु न जाइ ॥ १८ ॥
सब बंदरु मिलि आसनु ठयौ । चाहहिं प्रान त्याग हम कियौ ॥
तुम्हहिं देखि सुख उपज्यौ गात । अब का करहिं देहु बुधितात ॥ १९ ॥

श्लोक

क्रोधो हितास्मिन्सुग्रीवो राघवे सह लक्ष्मण ।
गतानामपि सर्वेषां यत्तत्तेनास्ति जीवितम् ॥

॥ इति रामायणे संपाति अंगद दर्शनो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चोपही

करुना वचन सुनै संपाति । कहै हमारी पंछी जाति ॥
जोवन रूप गर्व जो भयौ । लै जटायु उदयाचल गयौ ॥ १ ॥
देख्यौ तहाँ उवंतौ भानु । चंपक कुसुम सुबर्न समान ॥
ताकी किरन अग्नि उनहारि । तासौं है हम गये हकारि ॥ २ ॥
अैसे अहंकार मन धरचौ । सूरज चाहि अधिक बलु करचौ ॥
धावत धावत दुपहरु भचौ । तब जटाउ बल हीनौ भचौ ॥ ३ ॥
अधिक तप्यौ रवि सहन न जाइ । मैं देख्यौ कलमलत जटाइ ॥
एक पंख ता ऊपर कियौ । अैसें बंधु राखि मैं लियौ ॥ ४ ॥
दिनयर किरनि पंखि जरि गई । राम पसाइ बहुरि अब भई ॥
हौं रवि तेज हरचौ गिरि परचौ । जब बल सूर हमारौ हरचौ ॥ ५ ॥
साँची बात आज तो कहौं । तब तैं या पर्वत पै रहौं ॥
वह जटाउ मो जेठौ बंधु । ता लगि दई कियौ हौं अंधु ॥ ६ ॥
इतनी बात कही खग नाथ । उठि अंगद तिहि जोरे हाथ ॥
मैं जान्यौ तुम बंधु जटाइ । अब तुम सीतहिं कहौ बताइ ॥ ७ ॥
रावन मूढ ताहि लै गयौ । ता लगि राम बहुत दुख भयौ ॥
तुम पसाउ कारज सिधि होइ । जीवति मुई बतावहु सोइ ॥ ८ ॥
पंछी राइ कहै संपाति । सूझत बहुत गीध की जाति ॥
सीता बैठी लंका माँहँ । राम जपति सीसे की छाँह ॥ ९ ॥
पहिरैं बीर पटोरौ चीर । रूंधे नयन झिरैं अति नीर ॥
बहुत राखसीं राखै पासु । अति कंपै रावनु कौ त्रास ॥ १० ॥
तब पुनि मो देखत लै गयौ । देखत मोहि बहुत दुख भयौ ॥
लछिमन राम राम बिललाति । अंतरीछ मैं देखी जाति ॥ ११ ॥
रावन कैं कर सोहति तैसी । चमकति बीज मेघ महँ जैसी ॥
मन न धरी काहू की संका । देखत मोहिं लै गयौ लंका ॥ १२ ॥
लंघहु सागर करहुं पसाउ । देहि सीख पंछिन कौ राउ ॥
सीता देवि देखि घर जाहु । होइ पुहुमि जस मान लहाहु ॥ १३ ॥

श्लोक

उपयो दर्शितं किंचित् लंघनार्थ महोदधि ।
अभिगम्या च वैदेही सिध्यर्थ च निवर्तते ॥

इति श्री रामायने बालकांडे संपाति दर्शनो अंगद वाक्यं सीता उपदेश वार्ता कथनं नाम सर्गः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चोपही

सुनै बचन संपाति जे कहे। अंगद आदि सबै गहगहे।।
बिसरहिं नहीं ति धोखौ कियौ। बहुरौ अंगद बूझन लियौ।। १ ।।
कैसें सीता देखी जाति। तुम रावनु जान्यौ किहि भांति।।
सब मिलि बिनवहि पंछी राइ। कारनु कहौ तौ मन पतियाइ।। २ ।।
जबहिं सरीर हमारौ जरचौ। पर्वत सिखर आइ तब परचौ।।
मुरछि रह्यौ बोलै संपाति। जात न जानौ दिन अरु राति।। ३ ।।
दिन सातएँ नयन ऊघरे। वेदन करहि पखोरे जरे।।
सही न पीरि पंख की जाइ। अह निसि मो बिलुलंतहिं जाइ।। ४ ।।
प्रानी सबै सकै सहि दुक्ख। सहिय न जाइ प्यास अरु भूक्ख।।
बहुत द्यौस भोजन बिन भयौ। फिर सुपरस मो पहँ आइयौ।। ५ ।।
देख्यौ सुपरस उपज्यौ भाउ। पिता हमारौ पंछी राउ।।
अब मो या तीरथ संसार। जो भोजन पुरऊं दूवार।। ६ ।।
यह कहि मेरी सेवा करै। पुत्र अहेरें बन मो फिरै।।
आमिषु आनि देइ आहारु। अैसै सदा करहि प्रतिपारु।। ७ ।।
एकु द्यौस आमिष बिनु गयौ। भूखैं मोहिं बहुत दुख भयौ।।
मैं निरभास्यौ बारंबार। आइ पिता तीरथ संसार।। ८ ।।
तू मेरी चिंता परिहरी। प्यास भूख मो व्यापी खरी।।
अति संताप भयौ मो गात। कहाँ रह्यौ कहि सांची बात।। ९ ।।
ऊतरु देत ताहि डर भयौ। हौं सांई विंध्याचल गयौ।।
आमिष मिल्यौ न भइ अबार। इत उत धाचौ बारंबार।। १० ।।
गयौ दूर विंध्याचल नंखि। देख्यौ रोष महाभर पंखि।।
तातैं ताहि हिमंचल वासु। बहुत पुरुष बैठे ता पासु।। ११ ।।
देखि मोहिं ठाढ़ौ होइ रह्यौ। खैबै कारन चाहत गह्यौ।।
बाट न छांडै वाचि न जांउ। तब मैं कह्यौ तुम्हारौ नांउ।। १२ ।।
पिता हमारौ बूढ़ौ भयौ। आमिष मिल्यौ न हौं घर गयौ।।
इहि बन आजु बस्यौ हौं राति। क्यौं भूखौ जीवै संपाति।। १३ ।।
इतनौ सुनत मया मन धरी। तिहि मनुहारि हमारी करी।।
सुनत सुबात पुरिष नीकरचौ। महाकाय मायावी बल्यौ।। १४ ।।
खेचर गति चलियौ अधरात। मानौं मेघ घटा घहरात।।
तरुनि नारि उत्तम आभरन। छूटे केस चीर पाँ गरन।। १५ ।।
राम राम लछिमन लछिमनै। अैसे बचन सुबोलति घनै।।
तब मैं तासु पुरुष बूझियौ। ता पहँ सबै मरमु सुनि लियौ।। १६ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह सीता राघव की नारि। लै गयौ रावनु समुद उतारि॥
इती देव मो सकति न आहि। लैंउ छुड़ाइ जूझकरि ताहि॥ १७ ॥
अैसैं मोहिं द्यौस आथचौ। पर्वत माँझ अंध्यारौ भयौ॥
गीध जाति कौ यहै सुभाउ। राति न पंथहिं दीजहि पाँउ॥ १८ ॥
इतनी बात सुनत रिस गई। अैसैं मोहिं सिया सुधि भई॥
पंख न बिनु पंछी की जाति। कहा करै बोलै संपाति॥ १९ ॥
लछिमन राम बान अनियार। कर्क पंखि तिन तीछन धार॥
तिनकौ बेग कौन रन सहै। खिनकु माँझ सो त्रिभुवन बहै॥ २० ॥
मोहिं लै जाहु समुद के तीर। दैहुँ वंधु अंजलि भरि नीर॥
कीजै पिंड उदक ब्यौहारू। इहै जनम सनमंधु संसारु॥ २१ ॥
इतनौ सुनि लै पहुँचे जाइ। तिन जल दीन्हौं सायरु न्हाइ॥
गुन सुमिरे ति जटाइहि तनैं। हिएं बिचारि पंख मए घनै॥ २२ ॥
चंचल मति बंदरु की जाति। तिनसौं वहुरि कहै संपाति॥
तुम कपि मानु अटल करि बुद्धि। जो जानौ सीता की सुद्धि॥ २३ ॥
रिषि तप बली रहै आसर्म। तप उपवास करै दृढ़ धर्म॥
होतु अतीत अनागत कहै। पर्वत विंध्य गुफा महं रहै॥ २४ ॥
नाम निसाकर कोमल हिएं। तहाँ जटायु गयौ मोहिं लिएं॥
तब तिहि कारन बूझी मोहिं। अति दूबरौ कहा दुख तोहिं॥ २५ ॥
इतनौ सुनि मैं तासौं कह्यौ। सूरज किरन मोहि तनु दह्यौ॥
तिहि सब कथा सुनी मत लाइ। ज्यौं गिरि सिखर परचौ हौं जाइ॥ २६ ॥
करमनि सागर माहिं न परचौ। ना सिल चोट जीउ नीकरचौ॥
पर्वत गिरत न गए पिरान। कहहु वीर जीवहि किहिं बान॥ २७ ॥
पंख हीन पौरुष बल गयौ। जीवन अबहिं दुहेलौ भयौ॥
कहि सांई सरनागत तोति। किह बिधि मुएं होइ गति मोहि॥ २८ ॥
सुनत निसाकर तब भयौ ध्यान। जब होइ गयौ मुहूरत आन॥
तबहिं बिहँसि बोलै सो बयन। बहुरि होइं पंख बल नयन॥ २९ ॥
सूरज बंस तनी सब ख्याति। कपि न पास सुनिहै संपाति॥
उठे पंख सुनि सीता हरन। अरु जटायु दसरथ कौ मरन॥ ३० ॥
तबहिं निसाकर कौं सिर नाइ। इहि ठां गौ बैठारि जटाइ॥
मो कहँ कहहु राम की बात। उलहहिं पंख होइँ सुख गात॥ ३१ ॥
अंगद कही कहानी तिसी। राम जनम तैं बीती जिसी॥
ज्यौं ज्यौं सुनिहिं हिएं धरि भाउ। त्यों त्यौं भयौ पंख उपजाउ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिन देखत संपूरन भए। उड़ि संपाति उपर हुँड गए॥
कह्यौ संदेसौ मधुरी भास। हौं घर जैहौं गिरि कैलास॥ ३३॥
सब वंदरु मिलि कह्यौ करेहु। बेगि सुद्धि सीता की लेहु॥
पंखि प्रचारै वारंबार। जाइ सकौ तौ जैयौ पार॥ ३४॥

श्लोक

ततस्तु सर्वेंपिच मासु पुंगवं प्रहर्षतं तां तयो महाबल।
समान विज्ञात बलेन सत्यं जगाम तं गृद्ध निवेदितं गिरौ॥

॥ इति श्री रामायणे संपाति संदेशो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुनि संदेसं समझ्यौ संपाति । सब आनंदे बंदर जाति ।।
करि गलदार पहूँचे तहाँ । दच्छिन सायर गिरिवर जहाँ ।। १ ।।
देख्यौ समुद भयौ बिसमाउ । करहिं पार जैबैं कौ भाउ ।।
जनु दीसतु दूजौ आकासु । मन हारे सब लैंहि उसासु ।। २ ।।
डरपत जानै अंगद कहै । अैसैं पुरुष सिद्ध क्यौं लहै ।।
वालिपूत यौं कहै सुजानि । सोचत होति तेज की हानि ।। ३ ।।
को करिहै रघुपति कौ काजु । बूड़त हमहिं उछारौ आजु ।।
को सुग्रीव हिएं सुख देइ । समुद नाकि सीता सुधि लेइ ।। ४ ।।
ताकौ जस बोलै संसार । को सौ जोजन लंघन हार ।।
कीरति अटल होइ ता धरनी । आवै देखि राम की बरनी ।। ५ ।।
जाहि सकति जैबे की होइ । अब मो आगैं कहियौ सोइ ।।
पाछैं कहत पुरुष कौं लाज । उद्दिम करौ राम कैं काज ।। ६ ।।
गजु बोलै दस जोजन जाउं । बीस गवाखु सरभु जिहि नाँउ ।।
गंधमर्द जोजन पच्चीस । सत्तर दुविंदु सफरी ईस ।। ७ ।।
मयंदु साठि नल जोजन असी । रिषभ बुद्धि आधे परबसी ।।
कोई जाइ सकतु नहिं पार । तबहिं अजा बूझियौ कुमार ।। ८ ।।
कहहि अजा जब तरुनौ आहि । तब की साखि बताऊं काहि ।।
उदयाचल तैं बांधि उफार । अस्ताचल गौ सूर अकार ।। ९ ।।
पुनि कैलासहिं लागौ जान । तब हम बारे हते अजान ।।
जिहि ठां देवनि सायर मह्यौ । तिहि ठां बल मेरौ उन लह्यौ ।। १० ।।
ता बल तैं हौं बूढ़ौ भयौ । दृष्टि बचन बल पौरुष गयौ ।।
एक बात सुनु बालि कुमार । पृथ्वी फिरयौ अनेको बार ।। ११ ।।
खरौ लजाउं अजा बीनवै । सायरु ना कौं जोजन नवै ।।
इतनौ पौरुष कहा सिराइ । को अैसौ सौ जोजन जाइ ।। १२ ।।
अंगद कुंवर कहै सिर नाइ । सकौं वीर सौ जोजन जाइ ।।
आवतु कौन भरोसौ करौं । सागर में गिरबे कौं डरौं ।। १३ ।।
तब जामवंत सराहतु ताहि । बीर बार दस आवहि जाहि ।।
यह न होइ उत्तम ब्यौहार । पाछैं सूनौ बंदर दार ।। १४ ।।
सीस बिहीनी जैसी देह । जैसी नारि पुरुष बिनु गेह ।।
थंभ विहीन धौरहर जैसौ । दल परिजन नायक बिनु तैसौ ।। १५ ।।
तूं स्वामी सेना कौ धनी । पूजी पैंज राखहि आपनी ।।
यह बिचार जानतु सब कोइ । मूल गँवावै क्यौं फल होइ ।। १६ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेवक छत सांई दुख सहइ । सो सेवक अपकीरति लहइ ॥
जैसौ पुरुष नारि कौ भाउ । तिसौ न्याउ प्रतिपालै राउ ॥ १७ ॥
इतनी बात कही जामंत । अंगद खिनकु भयौ सोचंत ॥
बिलखौ हो बोलै जुवराज । अवनिजु अजा बिगरियौ काज ॥ १८ ॥
मोहिं न समदद्‌ु और न जाइ । बिन उद्दिम क्यौं काज सिराइ ॥
अत्र सुग्रीव खरौ हौं डरौं । घरहि न जाउं अनसु लै मरौं ॥ १९ ॥
कहै अजा मन कुंवर न झंखि । बंदरु एकु सकै सर नंखि ॥
ताहि रिषीसुर दियौ सरापु । बल आपुनौ न जानत आपु ॥ २० ॥

श्लोक

ततो प्रतापं द्रवदं चाष्टमक्रियत्यष्ट त्यमुखे परिघट ।
संदेसया मास महांत भागं हरि प्रविष्टो हनुमंतमेव ॥

॥ इति श्री रामायणे अंगद जामवंत सर्वे कपि बलमंत्र प्रछनो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंगद सब कारन सुनि लियौ। पवन-पूत कहं आइसु दियौ ॥
चढ़ि गिरि सिखर करी गलदार। पुनि बल बोलै बारंबार ॥ १ ॥
राम धनुष तैं छूटहिं बान। ताकौ तेज तितौ परिमान ॥
तेते मान जाइगौ लंक। राखस असुर करहिंगे संक ॥ २ ॥
चाहतु चाहतु लंक मझारि। जब न लहौ राघव की नारि ॥
स्यौं मंदिर लंका उचकाइ। तुम आगैं लै धरिहौं आइ ॥ ३ ॥
अैसे वचन बहुत तिन कहे। सुनत बात अंगद गहगहे ॥
उपयौ हनू लंक गिरि गयौ। जै जै सब्द अकासहि भयौ ॥ ४ ॥
जैसे कर्म किए बलिदंड। ते सब कहौं आगिले खंड ॥
बाल चरित परिमानौ जिसौ। विष्णुदास कवि भाख्यौ तिसौ ॥ ५ ॥
लोभ बीज मानुस कौ बयौ। दुर्वच बाढ़ि पाप तरु भयौ ॥
ताहि कुकर्म भए भल फूल। जिहि विष स्वादु लह्यौ विषमूल ॥ ६ ॥
प्रथम लोभ दूजैं अविवेकु। द्वै तरुवर दीसैं फल एकु ॥
दुष्ट सबद नौका ता पाप। ता गुन हरत परत संताप ॥ ७ ॥
राम ते द्वै अच्छरनि कुठार। सिरी कहत अति तीछन धार ॥
जे अवलंब जीभ कौं धरैं। मूल छेदि कैं पातकु हरैं ॥ ८ ॥
पूरब जनम करम के भाइ। तीरथ दान न सक्यौ सिराइ ॥
भौसागर कौं जैहै तिरी। विष्णु दास कवि अस्तुति करी ॥ ९ ॥
धन बिनु धर्म होत नहिं भोग। भ्यास बाहिरैं होत न जोग ॥
तीनि मांझ जब एक न लह्यौ। विष्नुदास रामायनु कह्यौ ॥ १० ॥
जाहि सुनत नर पातकु नरै। पुरुष पाप ग्रह पास न परै ॥
जाके गुन अनेक संसार। जपहु राम चित बारंबार ॥ ११ ॥

श्लोक

कश्चित्यं बालमीकं यस्य रामायनी कथा,
चंद्रिकामिवचिह्नं तिचकोरा इव साधक।
मंगलं भगवान् विष्णु मंगलं गरुडध्वजः,
मंगलं पुंडरीकाक्षं मंगलायतनोहरि ॥

॥ इति श्री रामायने बालकांडे हनुमत गमने नाम खंड। बालकांड समाप्त ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बालमीकि रिषि कह्यो पुरान । बाढ़ै कथा जु करौं बखान ॥
बाल चरित थोरो मन रह्यो । हनू गये सु बहुत करि कह्यौ ॥ १ ॥
बाढ़ै आयु लक्ष्मि संतान । हनू गने सु सुनै धरि ध्यान ॥
रिपु दारिद जुर नासै रोग । होइ न बांधव नारि वियोग ॥ २ ॥
लही सुधि अंगद गह गह्यौ । मधुरैं जामवंत सों कह्यौ ॥
हम सौं कहौ अजा बुधि एहु । मेरैं हिअैं भयौ संदेहु ॥ ३ ॥
बोलै जामवंत तिहि ठांइ । मन बिसमाउ करौ तुम काँइ ॥
यह जु एक बंदर हनुमंत । याकैं पौरुष नाहीं अंत ॥ ४ ॥
तीनि बार एकहि दिन जाइ । लै आवै लंका उचकाइ ॥
एक्कै सब राखस दल बहै । यह सो हनू अजा यौं कहै ॥ ५ ॥
अंगद अचरजु भयौ बहोरि । जामवंत पूछत कर जोर ॥
सांई पौरुष कह्यौ बहूत । को यह बली कौन कौ पूत ॥ ६ ॥
तासौं हँसि बोलै जामंतु । पवन पुत्र कहियैं हनुमंत ॥
सबै कथा तिहि कारन कह्यौ । जैसें बर देवनि पहँ लह्यौ ॥ ७ ॥
हनुमत जन्म अंजिनि उर भयौ । तत्छिन उपै अकासहि गयौ ॥
इहि हनुमंत गिल्यौ जब भानु । तब सुरलोक परचौ अवसानु ॥ ८ ॥
है है सबद अकासहिं भयौ । सुरपति बज्र पवन सुत ह्यौ ॥
छूट्यौ दिनकर हनुमत परचौ । निकसत प्रान पिता सम्हरचौ ॥ ९ ॥
तत खिन आयौ पवन तुरंत । देख्यौ तहाँ मरचौ हनुमंत ॥
पुत्र सोग मन भुखै बाउ । कौने बच्छ कियौ तुहिं घाउ ॥ १० ॥
एक पुत्र नहिं सक्यौ सँभारि । तीनि भुवन घालौं संघारि ॥
इतनौ सोच पवन थिर भयौ । नारद कहत ब्रह्म पहँ गयौ ॥ ११ ॥
तब तिहि कही पिता सों बात । स्सृष्टि विनास होतु है तात ॥
त्रिभुवन राखौ करौ उपाउ । पुत्रह सोग रिसानौ बाउ ॥ १२ ॥
ता कारन जुग बिनसन लाग । दानव देव दच्छ नर नाग ॥
सब कारन नारद जब कह्यौ । सुनि तब ब्रह्म हंस आरुह्यौ ॥ १३ ॥
इंद्र आदि सब गोहिन भए । सब मिलि तबहि पवन पै गये ॥
हरि हर ब्रह्म अवर सुरनाथ । आइ पवन पहँ जोरे हाथ ॥ १४ ॥
कहै ब्रह्म पूरब तप साखि । पुत्र जिवाऊँ त्रिभुवन राखि ॥
इतनौ सुनि तब बोलै बाउ । सांई जमकौ यहै सुभाउ ॥ १५ ॥
पाछैं मोहिं जु घालै मारि । पुत्र सोग क्यौं सकौ सहारि ॥
सुनि तब चित्र गुपित्र कहंत । हमतें मीचु नहीं हनुमंत ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मा आशिष कह्यौ अमीचु। प्रलै काल मौं नाहीं मीचु॥
सब देवनि मिलि कही असीस। ना भेदहि आयुध छत्तीस॥ १७॥
अग्नि नीर ता बिथा न होइ। रन भू जीति सकै नहिं कोइ॥
बाचा बंध बाउ सौं कियौ। हनू मुए तैं बहुरौ जियौ॥ १८॥
अब यह रिषि सराफ कौ भाइ। बल आपनौ न जानत काइ॥
अब तुम या कहं आयसु देहु। सीता सुधि लै आवै एहु॥ १९॥
सुर्ग पताल कहै गो सार। आवत जात न लागै बार॥
अंगद सुनी अजा की बात। हनू हँकारचौ हरष्यौ गात॥ २०॥
तासौं विनवै बारंबार। तुम बिन और न जैहै पार॥
कैहौं कहा राम सौं जाइ। कैसैं सकिहौं मुहँ दिखराइ॥ २१॥
क्यौं सीता की पावहिं सार। तुम तैं जस पाऊँ इथिबार॥

श्लोक

उत्तिष्ठ हरिशार्दूल लंघयस्य महार्णवेः।
वायु सोपिगतिर्नैर्चे हनूमंत गतिस्तव॥

इतनी सुनि अंगद की बात। फूलि हनू भयौ दूनैं गात॥ २२॥
वचन तुम्हारे उद्यम करौं। राम चरन बल सागर तरौं॥
तरवर डार सरौं हम किया। सागर पार जनक की धिया॥ २३॥
हूं का दीनौ अनुचित काम। यह बल मोहि बसै हिय राम॥
इतनौ सुनि अंगद सिर नाइ। परसे जामवंत के पाँइ॥ २४॥
बंदर भेंटि सुचल्यौ तुरंत। पर्वत सिखर गयौ हनुमंत॥
बादि सरीर करी गलदार। दुसह नाद पूरचौ संसार॥ २५॥
देखत कपिन अचंभौ भयौ। उपयौ हनू अकासहँ गयौ॥
तब तैसै दीसै हनुमंत। मनौ अकास गरुड़ है जंतु॥ २६॥
जनु कुसु पर्वत लागी पंख। गयौ हनू सौ जोजन नंखि॥
तहाँ एक राखसि विक्राल। पवन पूत भैंटी अतराल॥ २७॥
गिरिवर तभी करी मनुहार। हनुमत पहुँच्यौ पैली पार॥
बनु देखे पर्वत सर बीच। कोऊ उत्तम कोऊ नीच॥ २८॥
तरुवर बर्नि न जानतु सार। दीसहि सबै अठारह भार॥ २९॥

दोहरा

लंक पहूंच्यौ पवनसुत, कुसुमनि वेढचो सीस।
आनंद्यौ विहँस्यौ हँस्यौ, नैन लंक पुरि दीस॥ ३०॥

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहुँच्यौ अति घन तरुवर छाँहँ। रयनि दिवस समुझियैं न ताँहँ ॥
देखि महाकपि अचिरजु भयौ। छाँडतु छाँडतु लंकहिं गयौ ॥ ३१ ॥
कोलाहल सुनियौ वलवीर। जनु घनु गाजत भादँव नीर ॥
रतन जोति दीसहि चौपास। मनहु बीजु चमकति आकास ॥ ३२ ॥
जोजन तीस तासु चकराई। सौ जोजन देखिये ऊँचाई ॥
तिहि ठां बिसकर्मा निर्मई। नामु लंक इक सोवरन मई ॥ ३३ ॥
लामी साठ कोस की धाप। जोजन तीन चाकरी मापि ॥
पुरी बसति इतनै परमान। स्वर्ण कुआ वावरी निवान ॥ ३४ ॥
इक सोवर्न सीस कौ कोट। कनै पगारति घर घर वोट ॥
सुवरन मंदिर अगनित लाख। चहुं दिसि दिसिहिं ध्वजा पताख ॥ ३५ ॥
उच्च पौरि ता धौरे गेह। दीसहिं मनौ सरद के मेह ॥
सुबरन तोरन बंदन वार। जनु चमकति बीजूरी अकार ॥ ३६ ॥
तरवर वर्न चित्रु लेखियौ। वहुत वर्न हय गय पेखियौ ॥
ऊँचीं छतुरीं लागीं गयनि। सूझत नहीं तहाँ दिन रयनि ॥ ३७ ॥
सवा लाख मंदिर परधान। लोगनि की को संख्या जान ॥
सब मंदिर दीसहिं सत खनै। घर ही घर पेयल पेखनै ॥ ३८ ॥
काहल ताल पखावज वीन। रहहिं ते पंच सबद मिलि लीन ॥
किंकिनि सादु होइ झुनकार। जनु बोलहि रावन जैकार ॥ ३९ ॥
गिरिवर ऊपर सोहति पुरी। नाह उछंग जनुक सुंदरी ॥
हनू वीर मन विसमय भयौ। उद्दिम नृफल हमारौ गयौ ॥ ४० ॥
अगम दुर्ग राखस अति वली। चहूं पास मैगल रथ तुरी ॥
नगर माझ पैठन नहिं जाइ। मन महँ हनू बहुत पछताइ ॥ ४१ ॥
जोवत मरी सिया की सार। जो न जाइ कहिहौं इथिवार ॥
लौ हौं कत अंगद पै जाउँ। अव निजु सागर झंपि मराउँ ॥ ४२ ॥
कै अव सोधु सिया कौ करौं। कै हौं अग्नि झंपि लै मरौं ॥
इतनौ सोचि उफरि तहं गयौ। माझ चौहटें ठाढ़ौ भयौ ॥ ४३ ॥
हीडंतु डोलै नगर मझारि। गावति सुनी मधुर धुनि नारि ॥
ठां ठां सुनियहु बेद पुरान। ठां ठां पिंगल करहि बखानु ॥ ४४ ॥
ठां ठां आयुध करि अभ्यास। हनू लंक देखी चहुँ पास ॥
इक इक अंखि बहुत तिन बंक। एकनि लंब कान अति नंक ॥ ४५ ॥
एकनि मुहँ वाएं बिगराल। एकनि कंठ मुंड की माल ॥
एक जूथ पर्वत आकार। खिनकु न कर छोडहि हथियार ॥ ४६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिवस रैनि तिन एक समान। सद भद सदा करै मद पान ॥
सकुचित लहुरौ कियौ सरीर। घर घर डोलत हनुमत वीर ॥ ४७ ॥
सोवति सुंदरि लेत जगाइ। झोटा गहि देखत निकुताइ ॥
एक मुहूरत लग्यौ न ताहि। सब नगरी तिय देखी चाहि ॥ ४८ ॥
पुनि तिहि कहूँ न देखी सियौ। वायुपूत मन चिंतन कियौ ॥
न मैं प्रथम देखी वह नारि। जानत नहीं कौन उनहारि ॥ ४९ ॥
राखहिं कौन रहहि किहि ठाँइ। सोचहि वीर करौं अब काँइ ॥
उठयौ पवनसुत बुद्धि बिचारि। दीन हीन राघौ की नारि ॥ ५० ॥
मैलौं चीर अंग अति छामु। सुनिहौं जंपति रामै रामु ॥
अैसे रूप देखि हौं जाइ। कहै हनू सिर नाऊँ ताहि ॥ ५१ ॥
लंका फिरि देखी चहु पास। पैठौ रावन तनै अवास ॥
खंभ गनत क्यौं पावै अंत। घरियक भूलि रह्यौ हनुमंत ॥ ५२ ॥
ठां ठां रतननि दिया प्रकास। अगरु अपूर होति बहुवास ॥
चौदह सहस तासु वर नारि। तिनकौ रूप न सकहि विचारि ॥ ५३ ॥
त्रिभुवन जित्यौ निसाचर बली। देव नाग नर कन्यां हरी ॥
सुरत भूजि सोवहि बल भयौ। सोवत राइ हनू तहं गयौ ॥ ५४ ॥
रतन जोति बेध्यौ बरवीर। घरी एक संम्हरयौ सरीर ॥
सेत छत्र ता सिर फरहरैं। मानहु चंद्र किरन विस्तरैं ॥ ५५ ॥
तरुनी चौंर झकोरहिं बाउ। पौढयौ तहाँ लंक कौ राउ ॥
तरुनी बहुत पलोटहिं धनी। नर कन्या जच्छिनि नागिनी ॥ ५६ ॥
कुसुम माल छायौ चहुँ पास। होहि जच्छ कर्दम अतिवास ॥
नारि निवेढयौ दीसतु तहाँ। जनु पर्वत दीसतु वन महाँ ॥ ५७ ॥
राते चंदन लेप्यौं अंग। कृष्ण चीर स्यौं मनौ भुजंग ॥
ऊपर पर आलिंगन कियैं। सोहैं बहुत वीर कर लियैं ॥ ५८ ॥
गिरे वीर प्रगटे आभरन। लाग्यौ हनू परीच्छा करन ॥
कुसुम विमानहि बैठ्यौ हरी। पालिक बैठी मंदोदरी ॥ ५९ ॥
देखि वीर मन विकलप किया। यह निज जनक राइ की धिया ॥
सुख सोवत देखी बर नारी। हनू बहुत दुख करै बिचारी ॥ ६० ॥
देखत वीर भयौ अति तेज। राघौ भुइ यह पालिक सेज ॥
हनुमत दीरघ लेइ उसास। जनि कछु सुंदरि करै बिसास ॥ ६१ ॥
अति सुकुमार न वर्नन जाइ। देखत वीर रह्यौ झभकाइ ॥
जब जानी रावन की नारि। तब उठि चल्यौ पूछ भुइँ मारि ॥ ६२ ॥

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिलतिल नगरी हींडतु फिरै। सिया न पावै चिंता करै॥
देखी नहीं फिर्‌यौ सब राति। कै झूठ्‌यौं बोल्यौ संपाति॥ ६३ ॥
कै सिय निछुटि समुद महँ परी। कै वह मरी निसाचर डरी॥
कै वह रावन घाली खाइ। कै उहि प्रान तजे विललाइ॥ ६४ ॥
जो हौं अब विनु देखैं जाँउ। रामहिं ऊतरु कहा कराउँ॥
अरु मो बंदर बली हसंत। कहा सु करि आए हनुमंत॥ ६५ ॥
मोसौं कहि हैं तरक पचारि। तुम निज रामहिं मिलई नारि॥
कहा सु ऊतरु दैहौं ताहि। मरनु भलौ या जीवन चाहि॥ ६६ ॥
जीवति मुई सिया की सार। जौं न जाइ कहिहौं तिथि बार॥
तो हौं कत अंगद पहँ जाउँ। पैठित सायर झंपि कराउँ॥ ६७ ॥
तब पुनि हनुमत सोच्यौ भाउ। मारौं आजु लंक कौ राउ॥
सठ लै जाउँ तासु की धनीं। देखि लेहि राघव आपनी॥ ६८ ॥
इतनौ सोचत हनू वइट्‌ठ। पौं फाटत असोक वन दिट्ठ॥
छिनकु बिलंब्यौं बंधिउफार। फिरि बन देख्यौ लंक दुवार॥ ६९ ॥
बैठौ चढ़ि सीसे के पास। सिया न पाई भयौ निरास॥
तव उमग्यौ कुमुदिनि ग्रह राउ। जागे पंछि भयौ कहराउ॥ ७० ॥
तिलु तिलु चाहत चौथे जाम। सीता देखी जपतहि राम॥
वहुत सोच तब लई पछानि। प्रगटि न सकत निसाचर कानि॥ ७१ ॥
बुद्धि विचारत हनुमत वीर। आपुन लहुरौ कियौ सरीर॥
सब दिन बैठि विवार्‌यौ तहाँ। सीसे तर सीता है जहाँ॥ ७२ ॥
औंधै वदन गयौ आनंदु। मानहु राहु गिल्यौ है चंदु॥
मैले कपड़ा आँसू भीन। दीसति सीता अति गति दीन॥ ७३ ॥
जिहि तरवर तर सीता आहि। बहुत राखसी बेढ़ैं ताहि॥
तिन महं सकति न देखन जाइ। ता लगि हनुमत रह्यौं लुकाइ॥ ७४ ॥
जो मारौं तो बिनसै काज। सीता मोहिं सरापति आज॥
जब निसि खेलन जैहैं नारि। सब करिहौं सीता मनुहारि॥ ७५ ॥
बैठौ सोचि सघन तरु डार। देखि राखसीं ऊंच लिलार॥
लामैं ओंठ कान नख दंत। भ्रू लौं केस रुरै झूलंत॥ ७६ ॥
लामी नाक कान बाहिरी। दीसहिं विकट बावनी तिरी॥
बहुतक कारी कपिली भई। मानौ मेघ घटा ऊनई॥ ७७ ॥
एकनि बल सिंघनि उनहारि। नाना रूप राखसी नारि॥
जिन देखत नर उधसहि अंग। ते सब रहहिं सिया कै संग॥ ७८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिन महं तैंसी दीसति धनी। जनिकु सिंह बेढी हस्तिनी ॥
सीता दीसति तिसे समान। जनु हरिनी बेढी बहु स्वान ॥ ७९ ॥
छीनै अंग मैल बहु जरी। दीसति सोग समुद महँ परी ॥
वनह अकेली अरु सतु सरन। राम नाम ताकै आभरन ॥ ८० ॥
जाके अंग भए आभरन। रखवारे ताके निजु करन ॥
सो सीता हनुमत देखियौ। उद्दिम जनम सुफल लेखियौ ॥ ८१ ॥
पहरु एक ता बैठें भयौ। सीता पहँ लंकेसुर गयौ ॥
महलदार बैठै चहुँ पास। देखि सिया मन लेति उसास ॥ ८२ ॥
ग्रीव नवाई रावन जानि। हिएँ डरी मति टोरहि कानि ॥
चार्यौं पास सँवार्यौं चीरु। जतननि ढाँक्यौ सकल सरीरु ॥ ८३ ॥
ता कपोल घूँटनि सौं जुरे। बाँहं जंघ दोऊ कुच दुरे ॥
आँसू हियैं परत मनियार। जनु टूटहिं मोतिन की मार ॥ ८४ ॥
बैनी दंड मैल जरि रह्यौ। ता मुख चंद्र राहु जनु ग्रह्यौ ॥
मलिन अंग सोहति सुंदरी। कनक पत्र पंकज जनुभरी ॥ ८५ ॥
ना कर कंकन कुंडल हार। नांहिन नेवर पग झुनकार ॥
रावन सीता देखी अैसी। वन महँ वेलि फूल बिनु जैसी ॥ ८६ ॥
सब आभरन सिंगार विहीन। कंत वियोग दई दुख दीन ॥
जिसैं मेघ महँ पैठहि मेह। तिसैं देह मौं ढंकति देह ॥ ८७ ॥
तप उपवास सोग कै ध्यान। लहै न कबहूँ भोजन पान ॥
तैंसी देखी रघुपति धनी। हंस बिना जैसी हंसिनी ॥ ८८ ॥
सुनि सीता रावनु यौं कहै। जोबन चंचल थिरु ना रहै ॥
करि लंका बैठी तू भोग। छाँडि राम तपसी कौ सोग ॥ ८९ ॥
हम राखस तू देखि बिचारि। मानुस खाहिं रमहिं पर नारि ॥
हमहिं अयुक्त न एक्कौ कर्म। यह निजु बंस हमारौ धर्म ॥ ९० ॥
राखस खायौ चाहत तौंहिं। सीता बधन न आवत मोंहिं ॥
दीनौ तोहि जीव को दानु। पुनि जो धरहु हमारौ मानु ॥ ९१ ॥
सीता तो सम रूप न नारि। देखि आपुनै हियै विचारि ॥
तो देखत काकौ मन रहै। ब्रह्मा भूलै रावन कहै ॥ ९२ ॥
कनक गेह पौढ़हु सुख सेज। जहाँ होत रतनन मय तेज ॥
अगर कपूर दीप बहु बासु। तिहिं सोवहु सतखनै अवासु ॥ ९३ ॥
नारि सरूप हमारैं घनी। नर कन्या जछिनी नागिनी ॥
मधुर बचन जो मानहि मोहि। ऊपर पाट बँधाऊँ तोहि ॥ ९४ ॥

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवौं खंड पुहुमी जिति लैंउ। तो लगि जनकराइ कौं दैंउ ॥
त्रिभुवन माँझ न ऐसौ कोइ। जा सहँ जूझ दंड द्वै होइ ॥ ९५ ॥
में जिति बंदि दिए सब देव। दैयत नाग कराई सेव ॥
जे भरि परे हमारी डीठि। रन जिति तिन्हिं दिवाई पीठि ॥ ९६ ॥
अब मैं तो लगि आगम कियौ। लंका राज सबै तोहि दियौ ॥
जे अंतेवर मेरे धनीं। ते सब दासी सीतहि तनी ॥ ९७ ॥
मठ भुइँ सोवहि तपसी राम। ताहि कहा सुंदरि सौं काम ॥
कछू न सुधि जानिएं ताहि। सोऊ मर्‌यौ कि जीवत आहि ॥ ९८ ॥
धन बिनु भोग किसौ करि होइ। धन बिनु सुखहि न पावै कोइ ॥
ता धन हीन राम की नारि। सीता बूझौं बारंबारि ॥ ९९ ॥
कठिन वचन सुनि कंपी नारि। उपज्यी कोप न सकी सहारि ॥
निरखै पासु उसासै सास। जनु हथिनी सिंघिनि की त्रास ॥ १०० ॥
तृन अंतर दै बोलति बैन। ताहि न देखि तरहुडे नैन ॥
हौं तो दुल्लभ सीता कहै। जैसैं पापी सिधि ना लहै ॥ १०१ ॥
मेरी चिंत न हियरां धरै। तूँ कुटुंब की चिंता करै ॥
हौं राघौ समरथ की नारि। मन करि हरतु परतु जनि हारि ॥ १०२ ॥
धन पुर लोभ दिखावत मोहि। लाज निसाचर लगत न तोहि ॥
ज्यौं उपज्यौ त्यौं ही खै जाइ। गरवहि कहा लंक के राइ ॥ १०३ ॥
लछिमन राम धनुष कर गहैं। सो निज सूर जो सममुख सहैं ॥
तिनके वान परहिं जलधार। लंका वहति न लागहि बार ॥ १०४ ॥
जंबुक जूथ सिंह बस होइ। उन मह वाहि निवारै कोइ ॥
राखस मेघ पटल वह बाउ। रन सामुहैं धरै को पाँउ ॥ १०५ ॥
चौदह सहस निसाचर हए। राघव अंग प्रहार न भए ॥
खर दूषन त्रिसिरा हति वान। अव को लरिहै तिनहिं समान ॥ १०६ ॥
इतनौ कहि सो लेति उसास। रावन बहुत दिखावत त्रास ॥
तिवई अवध कहै सबु कोइ। ताकैं मारत सिद्धि न होइ ॥ १०७ ॥
कामी पुरुष निवारै कोइ। ता सहं ताहि सनेह न होइ ॥
हाथी उमडैं लेइ न जाइ। जा ताके ता मारतु धाइ ॥ १०८ ॥
सीता हियैं बिचारत भाउ। त्यौं बन हस्ती त्यौं पुर राउ ॥
सो नियरौं परिहरौं जु ताहि। लेहि महंघौ दुक्ख बिसाहि ॥ १०९ ॥
तासु बचन सुनि सीता डरी। सुर अक्षर मन चिंता करी ॥
रखवारिनि सीता धीरई। बोली बहुत अधिक रिस भई ॥ ११० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संम्हरि बोलि निसाचर वैन । तो तन दृष्टि निवारिहि नैन ।।
दसरथ पुत्र राम की नारि । मूरख अजगुत जुगति विचारि ।। १११ ।।
जो तू पापी हो अति वली । तौ पाछैं कत चोरीं हरी ।।
नकि न सक्यौ राघौ धनु धार । मन चित सोच न करहि गँवाँर ।। ११२ ।।
देवनि चितयौ तेरौ मरन । ता लगि भयो हमारौ हरन ।।
तोहि रिस लागै भलौ कहंत । लंक दिननि मैं देख्यौ जंत ।। ११३ ।।
सीता बचन सुनत रावना । हंकराई राखसि ता खिना ।।
कोपि संदेसौ तिन सौं कह्यौ । पुनि आपुन मंदिर सामुह्यौ ।। ११४ ।।
कर जोरैं तिन आइसु दियौ । छल बल क्यों हू आनौ सियौ ।।
दैहौं कपरा घनौ पसाउ । यौं कहि चल्यौ रलंक कौ राउ ।। ११५ ।।
तिरी एक भैंटी अतराल । धन्या नाम मालिनी बाल ।।
परिहरि राउ सिया कौ संग । चलहि सेज मोसौं करि संग ।। ११६ ।।
जोवन काज रमहिं पर नारि । ते नर जसु सुख घालहिं हारि ।।
वह बिचारि तू राच्यौ ताहि । राइ छांडि तू परिहरि वाहि ।। ११७ ।।
रावन हँसि चलियौ मुसुकाइ । मंदिर माँझ पहूँच्यौ जाइ ।।
सुर कन्या जच्छिनि नागिनी । चहुं दिसि वेढि रहीं सब धनी ।। ११८ ।।
कंपति सीता लेति उसास । राखसि बहुत दिखावहिं त्रास ।।
कठिन रूप करि आयुध गहहीं । त्रास दिखावहिं मारन कहहीं ।। ११९ ।।
एक जटा सीता सौं भन्यौ । यह रावन जिहि त्रिभुवन जित्यौ ।।
ब्रह्म बंस विश्रव रिषि जाउ । मानहुं सिया लंक कौ राउ ।। १२० ।।
जिहि जम बांध्यौ सुर नर जच्छ । और जीव चौरासी लच्छ ।।
जानै जम जीत्यौ संग्राम । ताहि मानि तूं परिहरि राम ।। १२१ ।।
तरुवर तर जिनकी संथरी । राम तनी तिन सुनि सुंदरी ।।
बकला पहिरनु बनफल खानु । ताहि जु इच्छति कौन सयानु ।। १२२ ।।
कंपी सिया बचन जब सुनै । गुन सुमिरत रघुनंदन तनै ।।
पापिनी जीभ सरब गरि जाइ । निंदहि राम जु त्रिभुवन राइ ।। १२३ ।।

श्लोक

कामेच्चा दीर्घमा सर्वे न करिष्यामि वो वच ।
दीनो बार राज्यहीनो वा समें भर्त्ता स मे गुरू ।।

चौपही

दीन हीन जो धन बिनु होइ । मूढ़ न रामहिं पूजतु कोइ ।।
झूठैं मोहिं दिखावति संक । देखत तुमहिं विधांसै लंक ।। १२४ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सीता बचन सुनत सब नारि। चौंहूं तन उठियौ किलकारि ।।
जीभ पसारहिं मुहँ बिकराल। कट कटंति तिन दसन कराल ।। १२५ ।।
सीसे तरवर हनू बईठ। दुरैं सिया तिहि त्रासति दीठ ।।
जिते बचन सीता सौं कहे। तिते हनू सब बैठैं सहे ।। १२६ ।।
सीता सौं बोलै हय मुखी। रावन मानि होहि तू सुखी ।।
तिवई कौ दुख तिवई लहै। जोबन अथिर राखसी कहै ।। १२७ ।।
अपनैं स्वारथ सब कोइ कहै। कबहुंक बोलैं कवहुंक सहै ।।
इक सीतहिं दुख बड़ अरु कोह। कछू राम दरसन कौ मोह ।। १२८ ।।
पन्नग बेलि पवन जनु हई। सीता कंपति ठाढ़ी भई ।।
हा राघव हा हा लछिमना। तुम बिनु मैं दुख देखति घना ।। १२९ ।।
यह राखस हौं राजकुमारि। पापी करन कहतु घर नारि ।।
बंस बिचारत नाहिं आपुनौ। ताके बचन मोहिं दुख घनौ ।। १३० ।।
कवहुँक कौसल्या कैकई। सासु सुमित्रा मिलि हैं दई ।।
या पापी राखस कै त्रास। मोहिं गई जीवन की आस ।। १३१ ।।
कौन पाप मैं कीन्हौं माइ। जो इहिं बेस उपगरचौ आइ ।।
त्रिभुवन नाथ कंत जौ लहौं। सो क्यौ आइ दुष्ट दुख सहौं ।। १३२ ।।
ध्रिगु रे ध्रिगु मानुस कौ जन्म। ध्रिगु जु बंस जिहि होत अकर्म्म ।।
ध्रिगु जीवन जो परबस रहै। दुक्ख बियापै सीता कहै ।। १३३ ।।
जो सुख जीवन प्रभु बिनु होइ। तो वह दुख बड़ जानब सोइ ।।
राम हीन जीवन बिनु सरै। ता लगि रुदन जानकी करै ।। १३४ ।।
बहुरौं हियैं बिचारति बुद्धि। यौं क्यौं राम लहैंगे सुद्धि ।।
लंक नैरि रावन परिवार। अग्नि बान दहि कीजै छार ।। १३५ ।।
नाहिन सुद्धि लई वर वीर। को आवै सागर के तीर ।।
जानत मरम पंखि कौ राउ। सो मो देखत परचौ जटाउ ।। १३६ ।।
कै उहिं रावन छलकरि बह्यौ। तो विलंगि रघुनायक रह्यौ ।।
दुहूँ पवारैं भयौ अकाज। मो कहँ मरन जुगत है आज ।। १३७ ।।
ऐसैहि रोवति सीता दीठि। सब राखसि मिलि कोप पईठि ।।
मार मार कै उठी रिसाइ। अब या सब मिलि घालहु खाइ ।। १३८ ।।
इतनौ सुनि त्रिजटा परिजरी। अव बिधि बुद्धि तिहारी हरी ।।
राखसि पूत आपनै खाहिं। सीता तन को सकिहै चाहि ।। १३९ ।।
धर्म मूल मैं देखी सिया। धर्म पताक जनक की धिया ।।
दसरथ पुत्र राम की नारि। तुम पापिनि क्यौं सकिहौ मारि ।। १४० ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आजु रयनि मैं सुपनौ लह्यौ । सो तुम सुनो त्रिजटा यौं कह्यौ ॥
सब मिलि करहु सिया की सार । लंका जाति न लागइ बार ॥ १४१ ॥
इतनौ सुनि गहि रहियौ पांउ । कहि स्वामिनि सुपनै को भाउ ॥
क्यौं देख्यौ रावन क्यौं राम । कब भयौ सपनौ चौथे जाम ॥ १४२ ॥
त्रिजटा तबहिं कहत समुझाइ । सुपनै राम विलंबे आइ ॥
चढ़्यौ सेत मैगल मैमंत । अंजुरि भरि भरि रुहिरु पिवंत ॥ १४३ ॥
हाथी दंत रतन बहु जरे । जनु बिसकर्मा आपुन करै ॥
तिहि पालकी आरुही सिया । रामहिं मिली जनक की धिया ॥ १४४ ॥
सेत वस्त्र सेतहि उरहारु । स्वेतै चंदन लेप लिलार ॥
राम सिया लछिमन अ समान । तब पुनि बैठे पुष्पक यान ॥ १४५ ॥
मैं सपनै रावन के सीस । खैंचे खैंचे डोलत दीस ॥
कृष्ण नारि ता रातौ चीर । तिहि वंध्यौ लंकेस्वर बीर ॥ १४६ ॥
दच्छिन दिसि लै गई कढोरि । बीस भुजा डारीं सब टोरि ॥
अधफर बाट गई मुकराइ । मंदोदरि ल्याई गहि जाइ ॥ १४७ ॥
कारे वस्त्र पहिर लंकेस । अंग भस्म तपसी के भेस ॥
ऊँट चढ़्यौ पुत्रनि गहि बाहँ । पुनि पैठ्यौ कंदव दह माहँ ॥ १४८ ॥
कुंभ करन सब परिजन संग । देख्यौ कीच लगायैं अंग ॥
धौरे गृह ऊपर ता छाँहँ । मंत्री चार विभषण बाहँ ॥ १४९ ॥
बिहँसतु सिंघासनहि बईठ । यह सुपनौ भुनसारैं दीठ ॥
या सपनै कौ यहै प्रभाउ । राखस लंक न रावन राउ ॥ १५० ॥
इहि पुर राज विभीषन करै । यह निज धर्म पंथ अनुसरै ॥
इतनौ सुन्यौ जु त्रिजटा पास । भई जानकिहिं जी की आस ॥ १५१ ॥
द्वै ऊ भीतर वर की डार । जनु भूलहि कुसुमनि की माल ॥
सोचति सीता मुरछति जाइ । राम राम लछिमन बिलुलाइ ॥ १५२ ॥
आन जनम के तप मन धरे । नारि जनम की निंदा करे ॥
हौं पापिनी गई कत तहाँ । सुबरन मिरग चरत हो जहाँ ॥ १५३ ॥
कत मैं रामचंद्र सौं कह्यौ । उतनै लगि इतनौ दुख सह्यौ ॥
इतनौ सोचति मनहिं मझारि । बाँयौं नैन फुरयौ ता नारि ॥ १५४ ॥
कुच कंपतु हियरां सुख भयौ । सीतहिं सौगु बिसरि सब गयौ ॥
तब ता मन महं भयौ उछाहु । जनकु नैन भरि देख्यौ नाहु ॥ १५५ ॥
तब उठि ऊभौ भयौ तुरंत । मन ही मन सोचत हनुमंत ॥
जो सनमुख होइ बिनऊं सिया । देहि सराप जनक की धिया ॥ १५६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अरु राखसी करै कहराउ। सुनै बात लंकापति राउ॥
जब रावन यह सुद्धि लहंत। उपजै जूझ कहै हनुमंत॥ १५७ ॥
हौं जु अकेलौ राखस कोरि। जूझत तिनहिं सकत को मोरि॥
कै मारै कै जीवत गहै। होइ अकाजु पवन सुत कहै॥ १५८ ॥
मोहिं डर नाहिन है आपुनौ। बिनसतु कारजु राघव तनौ॥
जो मन महं देखौ यह भाइ। मो बिनु और न आवहि जाइ॥ १५९ ॥
सो जोजन सायरु बिस्तार। बंदरु कौन उलंघनहारु॥
होइ बिलंब तो सीता मरै। ता बिनु राम बहुत दुख करै॥ १६० ॥
ना दुख मरै परिहरै जीव। रामहिं मरत मरै सुग्रीव॥
मोहिं मरत सब बिनसै काज। क्यौं सीता समथाऊँ आज॥ १६१ ॥
बिनु संदेस कहैं क्यौं जाउँ। बूझै राम तो कहा कहाउँ॥
सोचत हनू बिचारत भाउ। यह है मूल मंत्र कौ ठाउ॥ १६२ ॥
साहस कछू जो कीजे कर्म। इकु दुख होइ न लहिये धर्म॥
सोचै कारज होइ बहूत। ता लगि कीजे पंडित दूत॥ १६३ ॥
ऊँची धुनि बोलै हनुमंत। राघव दसरथ सुत जु कहंत॥
खन महँ गए पिता आदेस! द्वै बांधव तपसी के भेस॥ १६४ ॥
तिन बन महँ खरदूषन हयौ। चौदह सहस असुर खै लयौ॥
तब सुधि पाई रावन बली। उहि रिस नारि राम की हरी॥ १६५ ॥
सीता नाम जनक की धिया। समुद्र पार पापी हरलिया॥
सत्त सील संजम सु विचार। करन पठायो ताकी सार॥ १६६ ॥
यहर वचन सुनि चमकी नारि। इत उत जोवति वनहि मझारि॥
पुनि ऊपर चाहियो तुरंत। सीता दृष्टि परचौ हनुमंत॥ १६७ ॥
देखत ताहि अदृष्ट होइ रह्यौ। यह सपनो यह सीता कह्यौ॥
पुनि तिहि दृष्टि परचौ नहिं सोइ। सीता हिएँ बहुत सुख होइ॥ १६८ ॥
सुपनै हून सिया मुख लह्यौ। कूरौ दयौ जानकी कह्यौ॥
होइ कुसर दसरथ नृप नंदन। देइ असीस विलख मुख वंदन॥ १६९ ॥
जननी सास और मो तात। सीता कहति हौंहिं कुसरात॥
हौं दुख भरी सकति नहिं सोइ। सपनौ नृफल हमारौ होइ॥ १७० ॥
चौथे पहर जु देख्यौ आइ। कहैं सयानैं नृफल न जाइ॥
तब पुनि सीता विनवै सेवा। कौ तूं अविगति बोल्यौ देवा॥ १७१ ॥
अब पुनि बोल सुनावहु मोहिं। नातरु ताप हमारौ तोहि॥
इतनौ बचन सुनत हनुमंत। कर जोरैं आइयौ तुरंत॥ १७२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नमसकाल सीता कहँ कियौ । पछहौं सरि मधुरौ बोलियौ ॥
को तूं देवि कहौ सति भाउ । ठाढ़ी रोवति कौन उपाउ ॥ १७३ ॥
माता नातैं पूछत तोहिं । पुत्र जानि ऊतरु दै मोहिं ॥
की नर कन्या की जच्छिनी । दानौ धिय अप्सरि नागिनी ॥ १७४ ॥
कै तू रिषि देवनि की धिया । कै तू राम बिछोही सिया ॥
राम नाम सुनि भयौ हुलास । बाहुरि ऊतरु देइ न तासु ॥ १७५ ॥
हौं सीता राघव की नारी । राखस त्रान न सकौं सहारी ॥
सब कारन हनुमत सौं कह्यौ । आसा लगैं बहुत दुख सह्यौ ॥ १७६ ॥
कूरी बुद्धि जु मो मन धरी । तजौं प्रान जंपै सुंदरी ॥
सुनि सुनि सिया पवनसुत कहै । तो विनु राम बिलंबतु रहै ॥ १७७ ॥
बन्दर गए दसौं दिसि पूरि । हीड़े वन पर्वत गिरि दूरि ॥
नींद भूख तन साधी प्यास । मारग फिरहिं तुम्हारी आस ॥ १७८ ॥
सीता चाहि भई यह बुद्धि । जैसैं तपी बसत मन सिद्धि ॥
मेरे भाग पहुँच्यौ आइ । मैं तुम देखी नैंननि माइ ॥ १७९ ॥
अब हुइहै राघव संजोग । राखस संक परिहरौ सोग ॥
कुसल राम बंधव लछिमनौ । तुम बिन हींड़े तरुवर घनौ ॥ १८० ॥
भोंजन करहिं न सोवहिं राति । निसि दिन जननि तुम्हारी ताति ॥
बात कहत सो अगुहूँड भयौ । मन महँ सीतहिं विकलपु भयौ ॥ १८१ ॥
अबहिं सराप दैउँ ता रोस । यह रावन आयौ करि भेस ॥
कहै सिया तूं रावन होहि । बहुरि सतावन आयौ मोहिं ॥ १८२ ॥
बहुत संक तेरी मन धरौं । अबहीं जीभ खंडि निज मरौं ॥
डरप्यौ हनू कहै अकुलाइ । सीता सुनि रामनि के भाउ ॥ १८३ ॥
जैसी मूरति जैसे रहैं । तैसौ एकु एकु कै कहौं ॥
लछिमन राम राउ सुग्रीव । तीनि सरीर एक है जीव ॥ १८४ ॥
माता नाम कहौं आपनौ । हौं सेवक सुग्रीवहि तनौं ॥
नौ खंड भूमि कपिन कौ राउ । इंद्र समान जाहि भरियाउ ॥ १८५ ॥
पवन पिता देव निबर दियौ । अजर अमर सब देवनि कियौ ॥
राम काज तुम देखन सिया । राउ सुग्रीव मो आइसु दिया ॥ १८६ ॥
हम सौं कथा कही संपाति । ता लगि लंका ढूँढ़ी राति ॥
देख्यौ रावन मंदोदरी । घर घर को देखीं सुंदरी ॥ १८७ ॥
वन पर्वत जल झिरनि निचान । ते सब ढूँढ़े पाँइ पिरान ॥
भ्रवँत भ्रवँत जब आइ पईठ । तब असोग वन मों तो दीठ ॥ १८८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुमहिं देखि दुरि रहियौ माइ। सहसा ही क्यौं भैंटचौ जाइ ॥
परहरि विकलप जननि तुरंत। रामदास जानौं हनुमंत ॥ १८६ ॥
रही वचन सुनि सीता ध्यान। ऊतरु कियौ न हनू समान ॥
ताके बचन बहुत सुख भयौ। बोली नहीं महूरत गयौ ॥ १६० ॥
जब निहिं कछू न ऊतरु दियौं। वायु पुत्र मन धोखौ कियौ ॥
जान्यौ अजहूं मन न पत्याइ। हनुमत मुदरी अरपी धाइ ॥ १६१ ॥
राम नाम सुम लिख्यौ सुनार। सीता बाँचति बारंबार ॥
आँमू जल छाए ता नैन। सूधी बात न आवत बैन ॥ १६२ ॥
जलहल नयन दीठिता हुई। सूझति नहीं ताहि मुंदरी ॥
तव कलमलत मुहूरत गयौ। तब पुनि तिहिं दूनौ दुख भयौ ॥ १६३ ॥
देखी बहुरि लई उरलाइ। मानहु राम मिले अब आइ ॥
तव छाँड़े आनंद उसास। बहुरि भई जीवन की आस ॥ १६४ ॥
लछिमन राम जीव जो होइ। लंका जात न राखहि कोइ ॥
यह पापी राखस दस सीस। आजु काल्ह धरनी परि दीस ॥ १६५ ॥
खिनु खिनु मुँदरी खिनु हनुमंत। सीता सुख उपज्यौ देखंत ॥
जोरैं हाथ नवायैं सीस। उपजी मया हनू जब दींस ॥ १६६ ॥
धनि धनि पवन पूत वर वीर। धनि जननी जिहि पोख्यौ छीरु ॥
सौ जोजन सागर नाकियौ। हियैं न डर रावन कौ कियौ ॥ १६७ ॥
अब कहि बच्छ बात सति भाइ। राम समर्थ बिलंब्यौ काँइ ॥
उद्दिम तजि जु मनावै दयौ। कहै सिया सो जीवत मुयौ ॥ १६८ ॥

श्लोक

यस्तु नाराधते किञ्चित, नरो धर्म परायणः ।
क्षिप्रं भवति निंप्राप्त, पर धर्मस्तु परायणः ॥

मेरे सोग राम तनु हीन। उद्दिम तजि मुख माखत दीन ॥
यह हनुमंत संदेसौ तोहि। मन मति राम बिसारै मोहिं ॥ १६६ ॥
सुनि जननी हनुमति यों कहै। राघौ सीता जंपतु रहै ॥
सीता हियैं न अंतरु धरै। भोजन द्यौस पांचयें करै ॥ २०० ॥
रस गोरस व्यंजन परिहरी। भूमि सयन कुस की संथरी ॥
माछी मच्छर लागहिं जासु। वेदन सहै न बरजै तासु ॥ २०१ ॥
बहुत बात को कहै बढाइ। जब हौं सार कहौं गौ जाइ ॥
ताखिन सागरु घालै पाटि। लंक प्रजारै दस सिर काटि ॥ २०२ ॥

श्लोक

सादेव नित्यं बहु चिंतितं वनं, त्मेव सीता त्वभिजामनाय ।
धृतं परे राजसुरे महातमा, तपो बलं भायक्रतं प्रयत्नमं ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बीर वचन सुनि ऊतरू दिया। बहुरौ परिहसि बोली सिया ॥
बारह माझ गये दस मास। पाई अवधि जु रावन पास ॥ २०३ ॥
अब हौं ताहि रयनि दिन डरौं। कहौ तो जीभ दंत लै मरौं ॥
हरतु परतु डरु धरै न चित्त। दुष्ट वचन उठि भाखै नित्त ॥ २०४ ॥
एक विभीषन तनी कुमारी। वह मो नितहिं करै मनुहारी ॥
सीलवंत ता नंदा नाम। मौ सहँ कहहि मिलहिंगे राम ॥ २०५ ॥
नित उठि बात विभीषन कहै। ताके कहैं न वरज्यौ रहै ॥
वचनु न मानै सो मयमंतु। सीता कहै सुनौ हनुमंत ॥ २०६ ॥
सुनत वचन हनुमत गहभरै। तब बिनती सीता सौं करै ॥
पीठ हमारी वैठहु माइ। आजु राम तुम मिलऊँ जाइ ॥ २०७ ॥
इतनौ सुनत अचंभौ भयौ। बहुरौं हनुमत बूझन लयौ ॥
बोलत वच्छ[वतस]वचन लवराइ। हीन गात क्यौं सकिहै भाइ ॥ २०८ ॥
तब हँसि हनू सिया सौं कहै। तूं माता मो मरम न लहै ॥
स्यौं मंदिर स्यौं कोट प्रगार। लंक उठाइ धरौ लै पार ॥ २०९ ॥
इतनौ कहि तिहि कीनौ रूप। मानहु पर्वत मेर अनूप ॥
मुहँ रातौ पियरौ जु सरीर। सीता देख्यौ हनुमत वीर ॥ २१० ॥
विकट दंत नख तीक्ष्ण कराल। चहुँ दिसि सिर मुकराएँ बाल ॥
ऊँच दृष्टि कर देखि न जाइ। सीता पुनि कहियो समुझाइ ॥ २११ ॥
धन्य राम जिन परखि सुबुद्धि। इसे दूत बिन होइ न सिद्धि ॥
समय विचारे तारे तिरै। बैरी संक न मन मैं धरै ॥ २१२ ॥
रूप तिहारौ गयौ अकास। सह्यौ न जाइ वीर मो पास ॥
सागर महँ गिरिबेहि डराउं। हियरा फाटि बीच मरि जाउँ ॥ २१३ ॥
जब हौं परों समुद्र महँ जांइ। मगर मच्छ मो घालहिं खाइ ॥
ऊतरू कहा करौं तुम तहाँ। अरु हौं रामहि देखौं कहाँ ॥ २१४ ॥
तुमहि चलत वे पावहि सार। सब राखस मिलि करहिं पुकार ॥
सागर अंतर रोकै तोहि। क्यौं जूझै क्यौं राखै मोहिं ॥ २१५ ॥
तो पहँ वच्छ न कछू हथ्यार। असिवर फरिस करै वे मार ॥
वार बार सीता यौं भनै। सूरौ एक कोरि क्यौं जनै ॥ २१६ ॥
न हौं न तूं नहिं लछिमन राम। होत विनास जानियें काम ॥
तातैं तुम कहँ होत उपाउ। सो लालच जीवन वहि जाउ ॥ २१७ ॥
हौं सींता गति पतिव्रत करौं। क्यौं पर पुरुष पीठि संचरौं ॥
छुवत पाप कहि हनुमत जाहि। कहहु पीठि क्यौं चढ़िये ताहि ॥ २१८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रावन बल करि गही अनाथ। सो दिनु नाहीं मेरैं हाथ ॥
परवस नारि कहै सब कोइ। दरसैं परसैं पाप न होइ ॥ २१९ ॥
अब तुम बच्छ न लावहु बार। लछिमन राम जनावहु सार ॥
रावन सिया रहै मन कियैं। दूं महँ एक न बिसरी हियैं ॥ २२० ॥
कहियौ हनू संदेसौ एक। राम तुम्हारौ कौन विवेक ॥
अजहूं रावन कंठ परान। बेंचि जु खाए धनुहर बार ॥ २२१ ॥
अजौं बसैं इक सुवरन लंक। की तुम हिएँ रावन की संक ॥
पाछैं देव हँसत सब लोग। रावनु जीवै राम विवोगु ॥ २२२ ॥
मुहिं संताप थोरौ आपुनौ। अपजस तुमहिं होत है घनौ ॥
लोग कहत को सकै निवारि। दू महं एक न राखी नारि ॥ २२३ ॥

चित्रकूट

एक कथा तुम कहियौ और। जब तुम राम हुते चीतौर ॥
भूमि सयन सोवत तुम संग। कागु विदारचौ मेरौ अंग ॥ २२४ ॥
रुहि धिर देखि को पंतर भये। तबहीं कोपि बान कर लए ॥
भागि ब्रह्म के सरन पईठ। तहां बान तिहि आवत दीठ ॥ २२५ ॥
त्रिभवन फिरचौ काग अकुलान। तहँ तहँ आवत देख्यौ बान ॥
जान्यौ होत आपुनौ मरन। ताकौ तबहिं राम कौ सरन ॥ २२६ ॥
इंद्रपूत वह कौवा भयौ। लख्यौ राम जब सौं हैं गयौ ॥
राखि राखि बोलत अकुलान। नृफल न जाइ राम कौ बान ॥ २२७ ॥
सरनागत मारत कौ पाप। सह्यौ न जाइ उपजियौ दाप ॥
तासौं राम कहत ये बैन। फोरचौ तबहिं दाहिनैं नैन ॥ २२८ ॥
हेरत नैन न निरखै दोई। एक दृष्टि करि चितवै सोई ॥
पंछी मेरौ छूऔ सरीर। ता कहँ तुम संधान्यौ तीर ॥ २२९ ॥
जिहिं हठि हरी तुम्हारी नारि। इतौ कोप क्यौं सकौ सहारि ॥
सूरौ समर समर्थहि जिनै। हीनहिं छाँड़ै सीता मनै ॥ २३० ॥
हियैं बिचारि देखि रघुराइ। ग्याँन गनैते पौरुष जाइ ॥
तुम निज मारहु लंका धनी। अरु नगरी जारौ ताननी ॥ २३१ ॥
जब कब लैहौ मोहिं मिलाइ। जोबन खीनु दिनहिं दिन जाइ ॥

दोहरा

सरु बंधौ रावनु बहौ। निश्चै सिया मिलाइ ॥
नव जोवन घन बीजत्यों। वाला खिनु-खिनु जाइ ॥ २३२ ॥

चौपही

कहियौ हनू सबै संदेस। जैसी रीति रहौं जिहि भेस ॥ २३३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब तुम तहां पहुंचौ जाइ। मेरी थौ गहियौ हरि पाइ ।।
सुनत बात मुरछैगो नाह। तब तुम जनि संदेस कहाहु ।। २३४ ।।
तब तब तुम उन लेउ उठाइ। इतनौ बचन कहौ समुझाइ ।।
सुनि हनुमत सीता के बैन। रुँध्यौं कंठ झिरै जल नैन ।। २३५ ।।
हरयैं बोल्यौ कारन एहु। राम पत्याइ सु चीन्हौं देहु ।।
सोचै सीता बिलखी मई। कहा चिन्ह हौं अरपों[आफौ]दई ।। २३६ ।।
नाहिन कछू अंग आभरन। मैलो एक चीर मसि बरन ।।
आधौ फारि दैंउ जो ताहि। पापु लगै उघरै अँग जाहि ।। २३७ ।।
घरी एक ता सोचत गई। तबहिं सुरति सीता कहँ भई ।।
मनि निर्मोल जनक जो दई। बैनी महँ तैं सीता लई ।। २३८ ।।
धरी ह्राथ हनुमंतहिं तने। बहुरि संदेस कहे आपनै ।।
मनि पाँयैं आनंद्यौ वीर। बिकलपु गौ जानकिहिं सरीर ।। २३९ ।।
बंदरु सैन सकैको आइ। एक वीर तैं कहा सिराइ ।।
पवन गरुड़ तीजौ हनुमंत। औंर कौन सागर नाखंत ।। २४० ।।
अगम अपार न बांध्यौ जाइ। मोहिं राम क्यौ मिलिहैं आइ ।।
तब फिरि कहै पवन कौ पूत। जननी मैं उन तैं न सपूत ।। २४१ ।।
हौं समद्यौ उन नान्हौं जानि। सब सुहरनि की कीनीं कानि ।।
मो तैं घाट न एकौ आहि। कहन सँदेसौ पठवैं ताहि ।। २४२ ।।
जिते रहहिं राजा के पास। तिनकी उनहिं जूझ की आस ।।
जों न पतीजे तो सुनि बैन। दिन दस माहिं देखिहै नैन ।। २४३ ।।
लछिमन राम लंक के बार। मेघ रूप बरसैं सर धार ।।
पौरुष सुनहु वीर हनुमंत। ज्यौं राखस मारे भय मंत ।। २४४ ।।

श्लोक

नास्मिन् चिरं स्यासि देवि देसौ, रक्षेगते रघुपते कार्मुको ।
चारेद्रौजेते चिरादगमनं, प्रपस्य विमास ''कलिभित्र ।।

बाग बिधंसि नगर सब दह्यौ। अखै कुंवर जिहिं हेला बह्यौ ।।
माथौ नाइ सिया समुझाइ। दै दाहिनी सु बंदे पाँइ ।। २४५ ।।
सीता पूछै बारंबार। भोजन फल सो करे अहार ।।
दीन्हैं फल सो भोजन करे। मीठे जानि अवर चित धरे ।। २४६ ।।
विनती करैं दुहूंकर जोरि। भुँइ के परे जु खैहौं टोरि ।।
तक सो सीता आइसु दियौ। दृष्टि समान अमर सो कियौ ।। २४७ ।।
आइसु दियो चल्यौ हनुमंत। हरष्यौ पवन पूत मयमंत ।।
बारी महँ जब ओझिल गयौ। सीतहिं तबहिं नवौ दुख भयौ ।। २४८ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सोचै हनुमत कहा कराउं । बिनु रावन देखैं क्यों जाउँ ।।
आयौ गयौ न जानतु कोइ । क्यों ताकौं जसु कीरति होइ ।। २४९ ।।
किहि बिधि लंका परै पुकार । कैसैं राखस लैहि हथ्यार ।।
कैसैं मारि निसाचर जाउँ । दान जूझ बिनु होत न नाँउँ ।। २५० ।।
दीजे कहा जु धन नहिं होइ । बिनु कीरति ध्रिग जीवन सोइ ।।
पवन पुत्र मन कियौ बिचार । मो कहँ मरग जुगत संसार ।। २५१ ।।

श्लोक

घट विद्यातपुरछिद्रं कुर्यादुभय स्वार्थ ।
येद केन प्रकोरण न क्रितं पुरं विसेत ।।

हियै बिचारि उठयौ हनुनंत । जनु सँकर्‌यौ छूटयौ मयमंत ।।
बाढ़ि सरीर करी गलदार । बन रखवारे भगे अपार ।। २५२ ।।
हनू विधंस्यौ रावन बाग । टोरत रूख घरीकु न लाग ।।
फोरे कुवा सरोवर बाइ । तब पुनि मठ चढ़ि बैठयौ जाइ ।। २५३ ।।
देख्यौ तहाँ जु रहती नारि । तब तिन बूझी सिया हँकारि ।।
कहि यह को आयौ किहि काज । बाग विधंसि करै अति गाज ।। २५४ ।।
तब बोलै राघव की नारि । जोहै सो तुम लेहु विचारि ।।
कियौं सु औंरहु करिहै कर्म । तो तुम अवहीं भगिहैं भर्म ।। २५५ ।।
सुनी बात बंदर को भाउ । राखसि गई कहन जहँ राउ ।।
बिनती करै सु जोरैं हाथ । बाग बिधंसौ त्रिभुवन नाथ ।। २५६ ।।
बंदर एक गयौं परभात । कंही कछू सीता सौं बात ।।
नमस्कालु करि बनहिं पईठ । सब तरुवर तिहि तोरे ढीठ ।। २५७ ।।

छंद

आम नीम कदंव जामुनि हरर चार करील ।
नाँरगी दाख वहेड़ चिंचिनि बेल बेत जँभीर ।।
गुरदौंनि महुआ करह तैंदू आलिलोद मजीठ ।
निसु रावन एक बंदर सत्र उपारे ढीठ ।। २५८ ।।
मेढ़ी सुपारी खिरनि मँहदी पापरौ पदमाख ।
नागकेसरि पिंडखर्जुरि वेलु अति घन साख ।।
मैनहर तैंदू धाइ सेहुड बहुत तरुवर बैन ।
निमिष महं तिहि ढीठ बंदर तोरि कीन्हौं खेत ।। २५९ ।।
रोरी सिहार्री हंसि केकी खारिकौ सुख रासु ।
देवदारु अपार चंदन नागवेर्ढाहे जासु ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आँवरे केरि अकाथ वीजौं आम ऊमरि लारि ।
तोरि डारे मूढ बंदर जरैं लई उखारि ॥ २६० ॥
खूभौं निवारी जाइ जूही सिंदुरी कचनार ।
बेल बकइनि औ अगस्तिय केतकी सैंहारु ॥
त्यौंरिया पाडर औंर कनयर केत सेत कनैर ।
होइ रावन देव पूजा जानि कीन्हौं चौंर ॥ २६१ ॥

नूथौं कुरोल अकोलु पतरज खरहरंत जतेय ।
ढ़ारयौं गन्यारि जसौंघ असिया सब उपार्यौं बंग ॥
यौत्यौं हिंगोडु जु नागकेसरि रायसेनि पतंग ।
एक वीर प्रचंड रावन सब उखारयौं दंग ॥ २६२ ॥

धौंसर लुलीली चखैंडी कटहर फूल सेनी आक ।
सालै कसौंदी आगरू धूसरल सेमरि लाख ॥
पीलू वकाइनि रकत चंदन सघन पेड़ खजूरि ।
हमहिं देखत एक बंदर सकल डारे चूरि ॥ २६३ ॥
सातौ वसैदिह खंर कोहां महासार अपार ।
कुरौं फरेंदु वरन अररु बहुत फल किरवार ॥
सागौंन खिरनी अरँड जिगिनी बौंरसिरि सुरखान ।
हयमुखी कहिय प्रचंड रावन तोरि करि मैंदान ॥ २६४ ॥

सघन करौंदा नेर्गाड विरौं । डारक बना इरच पर जुरौं ॥
छातौं न्यातर वन गूगरी । बैठो टोरि सु बानर बली ॥ २६५ ॥
फरे बिजौंरे इरनी फूल । सुपक कटाई अमृत तूल ॥
लहसौंरा सुसलौंनौं घना । डार न उबरी एक्कै बना ॥ २६६ ॥
तमोरिया लिखि सौरौं घनौं । पीठौनी तरुवर को गनौं ॥
सब तोरे राखसि यौं कहयौं । कैसी सौंकै पीपरु रहयौं ॥ २६७ ॥
सीता बैठी ताकी छाँह । वह सीसौं उवर्यौ वन माँह ॥
जहाँ कहूँ पीपर की डार । सब बन डारयौं जरैं उपार ॥ २६८ ॥
फोरि कुवा बावरी निवान । सावज पंखि पाये जान ॥
मठ देवल घाले ढहराइ । एक रहयौं जिहिं बैठयौं जाइ ॥ २६९ ॥
उहि कीनौं उतपात बहूत । राम कुबेर इंद्र कौं पूत ॥
हमहिं बहुत बंदर की संका । कै जूझौं कै छाँड़ो लंका ॥ २७० ॥
इतनै बचन सुनत राखसी । रावन हियैं बहुत रिस बसी ॥
असी सहस किंकर कौं जोरु । तिन कहं सैंहथ दियौ तमोरु ॥ २७१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोहरा

कर धनुहर असिवर फरिस, कुंत सूल सुकुमार।
लंका मह खलभल भयौं, किंकर लगे पुकार ॥ २७२ ॥

छंद

साजैं हथ्यारैं मिलि पुकारैं, नगर भौ कहराउ।
दिसि विदिसि पार्टी औंर घाटीं, सहर अति भरियाउ ॥ २७३ ॥
तह छार उड़ियौ सूरु लुकयौ उपजि धुं धुंकार।
अंतरीखह इंद्र देखत करत जैति उचार ॥ २७४ ॥
किंकर सयन पहूंच्यौ तहाँ। हनूवीर मठ बैठौ जहाँ ॥
देखन वीर चहूंघां लियौं। फूल्यौ वीर चौगुनौ हियौ ॥ २७५ ॥
जिन पर जिते हते हथ्यार। छाँड़े सवनि एक ही वार ॥
सेल सकति तिनकौ तन हयो। दीसतु नही हनू गड़ि गयौं ॥ २७६ ॥
एक्कौ रोम भयौ नहिं भंगु। वायु पूत पहिरयौ बज्रंगु ॥
आगर एक लोह अति जरी। फटकत हाथ पवन सुत करी ॥ २७७ ॥
लै हनुमंत करी गलदार। आगर फेरी वारंबार ॥
वीर तिसौ तब सोहन लाग। गरुड़ चोंच जनु गहियो नाग ॥ २७८ ॥
किंकर सहसकु मारि गिराइ। तब फिरि मठ चढ़ि बैठयौ जाइ ॥
घरी एक सोच्यौ हनुवंत। असी सहस पुनि हनै तुरंत ॥ २७९ ॥
वायुपूत सन मुख जे लरे। मनौ पतंग दिया महँ परे ॥
जे उबरे ते भगे सम्हारि। लंका महँ तिन करी पुकार ॥ २८० ॥

इति श्री रामायने किंकर वधो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बंदर कपट रूप हरि भयौ । राखस कुल कहँ रूठयौ दयौ ॥
रावन सौं विनवै जु बहूत । कै यह देव मीचु कौ पूत ॥ १ ॥
सुनत बचन रावन परज र्‌यौ । जनु बै सोंदर मह धृत परयौ ॥
जम्बु मालि कौं आयसु दियौ । तिहि सिर नाइ पयानौ कियौ ॥ २ ॥
जम्बु मालि प्रहस्त कौ पूत । ता सँग दल बल चल्यौ बहूत ॥
सुनि संदेस प्रहस्तह तनौ । दैं दाहिनौ पिता आपुनौ ॥ ३ ॥
इंद्र धनुष सम धनुहर गहचौ । गादह वाहन रथ आरुहचौ ॥
पवन वेग सौं पहुँच्यौ जाइ । बाननि बंदर घाल्यो छाइ ॥ ४ ॥
तालू महँ वेध्यौ दस बान । भयौ घाव तनुमंत कुपान ॥
सिला एक हनुमत कर धरी । तिल तिल कै राखस का तरी ॥ ५ ॥
बहुरचौ तरुवर लियौं रिसाइ । तब छाँडयौ चौबार फिराइ ॥
तीन बान तिहि अधफर हयौ । तरवर टूंक टूंक ह्वै गयौ ॥ ६ ॥
देखत पवन पूत रिस भई । तब पुनि बह आगर कर लई ॥
धाइ निसाचर दूंहथ हयौ । गूद मास एकत मिलि गयौ ॥ ७ ॥
जंबुमालि राखस बलि बंड । हनुमत करयौं मांस कौ पिड ॥
रावन सुन्यौ महाबल हयौ । कछू कुपित कुछ बिलखौ भयौ ॥ ८ ॥
सात तहाँ मंत्री के पूत । तिन सँग सेना जुरी बहूत ॥
माझी साथ चहूं दिसि गए । देखि हनू धनु गुन तिन दए ॥ ९ ॥
तिनके बान लहै को अंत । तिल तिल कै बेध्यौ हनुमंत ॥
पवन पूत रिस सकी न टारि । एकति घाले धरनि पछार ॥ १० ॥

श्लोक

मांन प्रछधं वितिहंति राक्षसं, महाबलं येन पराक्रमं तं ।
कपिं जुआरन्य पुनरेव राक्षसो,तदेय वीरो मभि जायते रनं ॥

कोऊ तरुवर आगर हस । सात कुंवर खिन महँ खै लए ॥
बहुरि हनू मढ ऊपर गयौ । सुनि रावन कोपंतर भयौ ॥ ११ ॥
पंच महारथि एकहि जोर । तिन कहँ सैंहथि दियौ तमोर ॥
राजा कहै न कीजैं गर्व । यह है कोऊ गन गंधर्व ॥ १२ ॥
आपु रापि जूझै करि बुद्धि । तातैं ताहि होति रन सिद्धि ॥
ऐसैं बचन जु रावन भनै । एकै सुहरु लाख क्यौ जिनै ॥ १३ ॥
वीर पच्छ दूधर सिरु नाइ । भास करन चलियौ समुहाइ ॥
एक प्रहस्त राखस जु गवाखु । माझी पांच सयन ता लाख ॥ १४ ॥

विरुपाक्ष दूधर जपनु भास करन्न प्रहस्तु ।
पंच लाख सेना सहित ज्यों रन चढ़यौ गभस्तु ॥ १५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाँचौं साजि चले मयमंत । देखत तहाँ गये हनिवंत ॥
फूल्यौ वीर चौगुनौ भयौ । बेढित महु माखीकरि लयौ ॥ १६ ॥
दूधर मन बाढ़ी बहु रीस । सर पचास हनियौ कपि सीस ॥
उफरि बीर रथ ऊपर परयौ । दूधर घालि धरनि महँ मल्यौ ॥ १७ ॥
हनुमत बेढ़े दलहि मभारि । राखस लाख कड़ोरे मारि ॥
विरूपाक्ष तव जियहि रिसान । बेध्यौ हनुमत अगतित बान ॥ १८ ॥
दोऊ धाए मुदगर लए । बंदर हियैं सामुहैं भए ॥
तरुवर लै धाए बल बंड । दोऊ करे मास कौ पिंड ॥ १६ ॥
राखस देखे जूझे खरे । भास करन प्रहस्त रिस भरे ॥
बहुतक धाइ त्रिसूलनि हयो । रुहिर लेप बंदर तनु भयौ ॥ २० ॥
तव हनुमंत इसौ परि दीठ । मानहु कपरा रँग्यौ मंजीठ ॥
दूकर गिरिवर लियौ उखारि । छांड़्यौ राखस सीस सम्हारि ॥ २१ ॥
पंचौ सेनापति संघारि । बहुरौ पैठौ दलहि मभारि ॥
अति रिस वेग तेज हनुमंत । जहां तहां दीसै बलवंत ॥ २२ ॥
हाथी सौं हाथी गहि हनौ । रथ रथ सरिस विष्नु कवि भन्यौ ॥
हैवर सौ हैवर गहि मारि । अगनित दल घाल्यौ संघारि ॥ २३ ॥
हय गज परे रहे धर छाइ । मारग रूंध्यौ चलन न जाइ ॥
कोऊ जूझ न करतौ दीठु । फिरि हनिमंत त्तारन हय ईठु । २४ ॥

श्लोक

कपिवरस्तु जौ जिना गतं रने । निहंत्य वीरं सबलं सवाहनं ॥
तदेव तासां परितोष्यतो रनं । कृत क्षणं कलस्वा प्रमक्षयं ॥
पंचौ परे सुनैं जव राइ । बाँईदिसि चाहियौ रिंसाइ ॥
बैठयौ देख्यौ अखै कुवांर । उठौ पिता कहँ कियौ जुहार ॥ २५ ॥
आयसु लै तव रथ आरुह्यौ । हेम जटित तिहि धनुहर लह्यौ ॥
हय गय रथ हन बरन न जाइ । गिरि धर अंवर रहियौ छाइ ॥ २६ ॥
कंचन जाल जरयौ बहु भाइ । आपुन सज्यौ लंक के राइ ॥
तिहि रथ बैठयो अखै कुमार । राखस सकल करहिं जै कार ॥ २७ ॥
इंद्र समान जाहि भरि याउ । रावन असी वरतियौ ठाउ ॥
जाहु पुत्र जनि लावहु वारा । ल्यावहु वेगि बाँधि बंदरा ॥ २८ ॥
चल्यौं साजि तव अखै कुमार । तबै पिता कों कियौ जुहारु ॥
धनु टूटयौ निकरत दरबार । असिवर गिरत न जानी सार ॥ २६ ॥
गीध कटक महँ डोलत घनैं । जाइ पहूंच्यो सगुन न गनै ॥
तारन बैठयी देख्यौ जाइ । रही सयनधर अंबर छाइ ॥ ३० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ताहि देखि गरज्यौ हनुमंत । ता खिन दुसह नाद गाजंत ॥
तपैन दिनयरु बहैन वाउ । कंपी धरनि डरयौ सुरराउ ॥ ३१ ॥
गिरि कंप्यौ सागर अकुलान । जबहिं कुंवर संधान्यौ वान ॥
बाल भाउ अरु कुंवर अबूझ । कबहूं करत न देख्यौ जूझ ॥ ३२ ॥
तब तिहि हनुमत तृन वत गन्यो । सुर पति वज्र असुर जनु हन्यौ ॥
डारे राखस बान रिसाइ । हनू लगत बेदन नहिं काइ ॥ ३३ ॥
तब रिस करि केसरि सुत धाइ । बहई आगर लई उठाइ ॥
मारे राखस जात न गनै । सुरपति वज्र धाइ जनु हनै ॥ ३४ ॥
खिनक माँझ तिन करयौ सँघार । तब तिहिं पकरयौ अखै कुमार ॥
अति रिस हनू गह्यौ झुकराइ । मीड्यौ धरती मांहि मिलाइ ॥ ३५ ॥
मेद मास एकत मिलि गयौं । जै जै साधु अकासहिँ भयौ ॥
जूझयौ कुंवर उठयौ कहराउ । विलख बदन लंका कौ राउ ॥ ३६ ॥
अति रिस करि कर बीरा लयौ । रावन मेघनाद कहँ दयौ ॥ ३७ ॥
मेघनाद सजि चढ़्यौ कुमारु । चलत पिता कहँ कियौ जुहारु ॥
रथ बैठ्यौ जननी सिर नाइ । हनुमत पास पहूंच्यौ जाइ ॥ ३८ ॥
ता रन ऊभौ देख्यौ वरी । मेघनाद कोप्यौ परजरी ॥
लाग्यौ करन बान संधान । प्रलै करन मनु काल रिसान ॥ ३९ ॥
ताके सर लागे अँग घनै । ते सब तृनवत हनुमत गनै ॥
देखत मेघनाद भो ध्यान । बंदरु नाहीं मोहिँ समान ॥ ४० ॥
जानि मरम मन यह मति करै । अक्षय वीरु न मार्‍यौ मरै ॥
रिसकै लयौ ब्रह्म कौ बान । हनुमत सोचै अति अकुलान ॥ ४१ ॥
देव बान क्यों झूठो करौं । बरु मैं या जीवन बिनु सरौं ॥
भावौ पवन-बंसु खैजाइ । होइ निकंटक रावन राइ ॥ ४२ ॥
अरु विनसै राघौ कौ काजु । ब्रह्म तेज क्यौं मेंटौं आजु ॥
इतनौ सोचि हनू मन रह्यौ । वानु अमोघ कुँवर कर गह्यौ ॥ ४३ ॥
छाँड्यौ कान प्रमानहि संधि । मेघनाद हनुमत लियौ बंधि ॥
चहुँ दिसि धाए वीर सम्हारि । तरुवर बाकल लिए उपारि ॥ ४४ ॥
तिन ता बंधन करचौ बहोरि । हनुमत सहे न डारे तो [टो] रि ॥
सांगे घालि लै गए उठाइ । रावन पास पहूँच्ये जाइ ॥ ४५ ॥
नग्र माँझ कौलाहल भयौ । तबहिँ हनू लका महँ गयौ ॥
सब कोइ देखै दौरी आवैं । इत उतकै तह नैन चलावैं ॥ ४६ ॥
महल झरोखन लगीं अवासा । देखि सुंदरीं लैहिं उसासा ॥
एकै कह बांधौ है माई । नातर लंका लेतौ खाई ॥ ४७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धनि तू मेघनाद अति बली । तूं संपति देवनि की हरी ॥
बंदरु पकरि आनौ देवरा । कोरि अनेक राखस इहि मारा ॥ ४८ ॥
मंदोदरि चलि आई तहाँ । बंध्यौ हनू सभा महँ जहाँ ॥
मंदोदरि तह कह्यौ रिसाई । यह मौ देखत मारौ जाई ॥ ४९ ॥
यहि बंदर मेरो सुत मारौ । सोग कियौ रावन परिजारौ ॥
हनुमत देखि पुत्र संभरचौ । सौग क्रोध रावन परिजरचौ ॥ ५० ॥
राजा मंत्री लए बुलाइ । सारन सुक्र बईठे आइ ॥
आयसु लैते वूझै ताहि । काकौ पूत कवन तैं आहि ॥ ५१ ॥
कहि किहि कारन आगम कियौ । साँचु बोलि जो चाहै जियौ ॥
दानव देव यक्ष गंधर्व । वन किहि काज विधाँस्यौ सर्व ॥ ५२ ॥
बोलौ हनू कह्यौ सति भाउ । अवघ पुरी भौ दसरथ राउ ॥
रामु पुत्र ताके घर भए । पिता अदेस निकरि बन गए ॥ ५३ ॥
सुंदरि साथ नाम ता सिया । मिथिला अधिप जनक की धिया ॥
लहुरौ बीर सु लछमन नाउ । तेरह बरस वसे वन ठाँउ ॥ ५४ ॥
सो सुंदरि अब काहू हरी । बन ढूंढ़े रघुनाइक बरी ॥
चाहत बीर पहुँचे तहाँ । दुरि सुग्रीव बईठौ जहाँ ॥ ५५ ॥
दुख सुग्रीव राम सों कह्यौ । ता तिय कारन बालिहिँ बह्यौ ॥
अरु सुग्रीवहिँ दीनौ राज । बोल्यौ करन राम कौ काज ॥ ५६ ॥
हौं मंत्री सुग्रीवहि तनौ । हनुमत नाम आपुनौ भनौ ॥
पवनपूत अंजनि उर भयौ । सिया गठएस नृपति परठ्यौ ॥ ५७ ॥
देखी सीता खरी अनाहु । मानौ चंद गिल्यौ मुख राहु ॥
भई राउ देखन की आरि । ता लगि डारचौ बाग उखारि ॥ ५८ ॥
राखस मोहिं जो मारन गए । आपु राखि तेहू खै लए ॥
अब नहि बिनसी बात निवान । हित करि कहौं सुनौ दै कान ॥ ५९ ॥
तू राजा त्रिभुवन महँ बरी । भोरैं नारि राम की हरी ॥
राखि अपुनपौ कीरति वेलि । रामु मित्र करि सीता मेलि ॥ ६० ॥
ज्यौं मानसहि जिरै विष पियैं । त्यों तोहि जिरै जनक की धियै ॥
तूं जनि जानै बेई देव । जिन तू पकरि कराई सेव ॥ ६१ ॥
जिहि तोहिँ काँख चाँपि है लियौ । रामु सो बालि एकु सर कियौ ॥
चाहै जियौ तो सिय मुकराइ । देखि बिचारि लंक के राइ ॥ ६२ ॥

॥ इति हनुमत रावन-संवाद ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतनै सुनि हनुमत के बैन। कोप भरे रावन के नैन ॥
असुरनि आयसु दियौ हँकारि। यो मो देखत डारौ मारि ॥ ६३ ॥

कोरि कोरि कोर रानि फोरि फोरि मारिए।
काटि काटि माँसु बाँटि फाँटि फाँटि डारिए ॥
खैंचि खैंचि खाल हाड भूंजि भूंजि खाउ रे।
मूंड टांगि पौरि रुंड लै उड़ाइ जाउ रे ॥ ६४ ॥

यह सुनि रावन लिए हथ्यार। मारहिं बंदर लगहि न बार ॥
जिनके पुत्र बघे हनुमंत। ते मारन कौं उठे तुरंत ॥ ६५ ॥
रावन बोलत भई न वार। रहे बैठि ते जम आकार ॥
तबहि विभीषन बिनती करै। मेरौ वचन राउ चित धरै ॥ ६६ ॥
अंग भंग करि मेलौ दूत। जो मारौ तौ पाप बहूत ॥
वेद पुरान सुनै मैं राइ। जीव बसीठु न मारचौ जाइ ॥ ६७ ॥
और दूत नहिँ आवै कोइ। तो अपकीरति जुग जुग होइ ॥ ६८ ॥

बंधौं वचन सुनत सुख उपज्यौ हँस्यौ लंक को राउ।
वंदर अंग भंग वै कीजै होइ न वध कौ ठाँउ ॥
अब यह बेग पूंछ परजारहु बेढ़ि रुई सन सूत।
रावनु कहे अग्नि ज्यौ उपजै सींचहु तेल बहूत ॥ ६९ ॥
कोऊ धाए कपरा लाए कोऊ रुई कपासु।
कोऊ सन सूतौ लै पहुँचे वेढन लागे तासु ॥
बिच बिच मैर्ननि लागे दैननि बिच बिच सींचहिँ तेल।
तिहिं पूंछ बढ़ाई भरी न जाई राखस लागे खेल ॥ ७० ॥
बालक वृद्ध तरुन मिलि नारीं लै लै आवहिँ तेल।
तिन देखि विभीषन परम विचच्छन मन सोचत वग मेल ॥ ७१ ॥

वे सब हँसैं विभीषन डरचौ। जबहिँ लंगूर जाइ नहिँ मरचौ ॥
समुझाए समुझै नहि कोइ। अब निजु कछू उपद्रव होइ ॥ ७२ ॥
इतनौ सोच विभीषन रह्यौ। सब राखस मिलि हनुमत गह्यौ ॥
पूंछ बारि लै पहुँचे तहाँ। सीता बन महँ बैठी जहाँ ॥ ७३ ॥
जिहि तो सरिस सँदेसौ कह्यौ। सीता देखि सु बंदरु गह्यौ ॥
आइसु दियौ लंक के राइ। अब मारहिंगे दुख दिखराइ ॥ ७४ ॥
देखि सिया बिलखी ह्वै रहै। तब आसिष हनुमत सों कहै ॥
जो मो सत्त देव जानंत। (तौ) नैकु न अंग जरै हनुमंत ॥ ७५ ॥
इतनौ सतु कहियौ तिहि बाल। तेल सूत सन उपजी ज्वाल ॥
सीता दृष्टि अग्नि नहिं जरी। अंगु न जरै अगिनि परजरी ॥ ७६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की यह राम मया कौ भाइ। कै सीता कौ सत्तु सुहाइ ॥
वेदन मोहिं नाहिं दीसंत। मन ही मन सोचै हनुमंत ॥ ७७ ॥
सोचि वीर अति लहुरौ भयौ। छूटीं पास निनारौ गयौ ॥
बन महँ पाई आगर परी। सो कर गहि अति गाज्यौ बरी ॥ ७८ ॥
वन महँ वीर उठौ किलकारि। सब रखवारे घाले मारि ॥
वैठौ जाइ लंक कैं वार। सब नगरी महँ परी पुकार ॥ ७९ ॥
सीता चाहति रैनि भवंत। जे मंदिर देखे हनुमंत ॥
ते मन धर अति जारे बरी। घर घर लंक अग्नि परजरी ॥ ८० ॥
घर घर दीसतु हनुमत वीर। जनु वैसाँदर धरचौ सरीर ॥
तोरन परे तिसे आकार। जनु तप पूरे टूटहिं तार ॥ ८१ ॥
हा करि करि सब बोलैं धनीं। निंद्रा करहिं ते रावन तनी ॥
बिच बिच धूम बीच बिच झंक। बिच बिचख कारी दीसति लंक ॥ ८२ ॥
उड़ै झोलु चमकहि अंगार। उठहिं सादु खरहरहिं पगार ॥
हय हींसत गज करहिं चिकार। राखस बोलैं जै जैकार ॥ ८३ ॥
कूद्यौ हनू पहुँच्यौ तहाँ। कुम्भकरन कौ मंदिर जहाँ ॥
आतुर ह्वै रानी चलि आइ। अंचलु जोरि सुबिनै कराई ॥ ८४ ॥
सुनि हनुमत मेरी इक बात। धनि तो मात पिता गुरु तात ॥
षट महिना लगि सोवै राई। तब लगि भोजन होइ अघाई ॥ ८५ ॥
मो अहिवात दीजिये देवा। हमतौ करैं तुम्हारी सेवा ॥
फेरि हनू रावन घर गये.................................. ॥ ८६ ॥
रावन कोप जाइ नहिं सह्यौ। बंदरु मारहु मारहु कह्यौ ॥
आइसु लै जे सोहैं गए। सवा लाख राखस छै लए ॥ ८७ ॥
हनुमत हियैं राम संम्हरचौ। पूछ बुझावन सागर परचौ ॥
सरमा सीता सरस कहंत। देखि देखि लंका प्रजलंत ॥ ८८ ॥
अरु तिहि कह्यौ सबै व्यौहार। ज्यों राखस दल कियौ सँघार ॥
वैठौ पर्वत पूंछ बुझाइ। सोचत हनुमत मन पछताइ ॥ ८९ ॥
विनु आइसु मैं कीन्हौं काम। आराधतनि विरोध्यौ राम ॥
लंका दाह माँझ सिय परी। मेरी बुद्धि विधाता हरी ॥ ९० ॥
पाप धर्म अति को पुनि गुनै। मन पछिताइ हनू सिर धुनै
अब मैं झाँप समुद महँ करौं। कै सिर असिवर खंडित मरौं ॥ ९१ ॥
अब हौं कपिनि सामुहैं जाइ। कैसैं सकि हौं मुख दिखराइ ॥
इतनौ सोचत लेत उसास। भाषा एक भई आकास ॥ ९२ ॥
सीता कुसल बसति बन माँहैं। रामुहिं जपत सीस की छाँहैं ॥
सनि भाषा आपुन सामह्यौ। सब ब्यौहार आपनौ कह्यौ ॥ ९३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माथै कर दै कही असीस। नभ दै आवहु छतीस ॥
बाढ़्यौ वीर चौगुनौ भयौ। गर्जतु तहं पर्वत चढ़ि गयौ ॥ १ ॥
वार बार जो पौंचौ पास। उपयौ गरुर(ड़) मनौ आकास ॥
पर्वत जोजन तीस उँचाई। चहुं दिसि दस जोजन चकराइ ॥ २ ॥
फाँदत हनू जाँघ बल भयो। सो गिरि गड़ि धरनी महँ गयौ ॥
पाई धमस वजी पट तारा। लट क्यौ सेस कछू लियौ भारा ॥ ३ ॥
सेस लोक महँ बाढ़ी चिंता। हनू सबद अकास पहुँचा ॥
हनुमत वेग धरयो करि गाज। इंद्र धनुष मनु भई नराज ॥ ४ ॥
आवत वीर न लागी वार। सब बनचर मिलि जानी सार ॥
धोखौ करि सिगरे अकुलान। वायु पूत अंगद पहिचान ॥ ५ ॥
ता देखन कपि सब सामुहे। ते तरुवर पर्वत चढ़ि रहे ॥
अंगद जामवंत हैं जहाँ। प्रथमहि हनू पहूंच्यौ तहां ॥ ६ ॥
अंक लाइ पूछत कुसरात। कहि अब वीर सिया की बात ॥
पर्वत सिखर सिला चाकरी। तहाँ वैठि गयौ बानर बरी ॥ ७ ॥
लंक दहन सीता कुसरात। कही पेड़ तैं हनुमत वात ॥
सब बंदर थुति बहुत कराइ। तो धनि जननि अंजनी माइ ॥ ८ ॥
धनि के सरी पिता वह वाउ। जाके पुत्र अतुल भरियाउ ॥
जामवंत पूछत सुनि पूत। कहौं कर्म जे करे बहूत ॥ ९ ॥
आवत जात करे गुन सोइ। वहुत सुनैं हियरा सुख होइ ॥
सुनौ अजा बोलैं हनिमंत। जब नाक्यौ साइर को अंत ॥ १० ॥
बाढ़े काया बदन पसरि। बीचहिं रोकि रही इक नारि ॥
उठि गाजी जनु भादौ मेह। मोहि सुनत उपज्यौ संदेह ॥ ११ ॥
तब वह राखसि मोसौं कहयौ। बहुत दिवस भूखैं तोहि लहयौं ॥
देखि नारि मैं बुधि मन धरी। अपनी देह तनक सी करी ॥ १२ ॥
तानै मो कहुँ जात न दीठ। बेगि देव मुहँ बाट पईठ ॥
पैठत पेट पसारे पाँइ। नारि उदर फाटयौ सुनि साँइ ॥ १३ ॥
खरहरि धरनि प्रान ता गए। जै जै सबद अकासह भए ॥
अैसैं तहँ भाषा मच्चरी। नाउ सिद्धिका राखसि बरी ॥ १४ ॥
सौ हेंला मारी हनुमंत। महावली सुर असुर खयंत ॥
यह सुनि तबहिं अगहुड़ौ गयौ। पर्वत एक तरीछौ भयौ ॥ १५ ॥
कंचन संग रतन बहु जरचौ। डरप्यौ देव नयन जब परयौ ॥
मो रिस भई उचाई लात। मोसौं डरति कहत नग बात ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुर पति डर सायर मंझारि । तो पितु मोहिं गयो बैठारि ॥
काटे पंख इंद्र गिरि तनै । मैं दुरि राखि लिये (ए) आपुनै ॥ १७ ॥
नाम सुनाभ आउँ गिरि राउ । खिन विलमौ तोहि करौ पसाउ ॥
तब मैं ता सन बिनई सेवा । करी पैज रामनि सौं देवा ॥ १८ ॥
विरमहि वीर लंक कैं जात । तो मैं दुरगति लहि हौं तात ॥
पर्वत सिला एक खरहरी । मैं मनुहारि तासु सौं करी ॥ १९ ॥
आगैं चल्यो सिखिर सिर नाइ । लंक पौरि तव पहुँच्यौ जाइ ॥
फिरी लंक पहुँच्यौ बन माँहँ । सीता देखीं सीसे छाँहँ ॥ २० ॥
सीसे डार लागि मैं रह्यौ । आयौ रावन सोऊ लह्यौ ॥
रावन कह्यौ सु कहन न जाइ । सुनत बात तिय उठीं रिसाइ ॥ २१ ॥
निंद्रा वहुत करति ता तनी । मारन उठयौ निवारयौ धनी ॥
मंदोदरि राख्यौ समुझाइ । तिवई अवध न मारन जाइ ॥ २२ ॥
जैबे की बुधि लागी तोहि । सीता कहै न पूछै मोहि ॥
राज समझि गो लंक मँझारि । तब कोंपीं रखवारिनि नारि ॥ २३ ॥
तिनहिं न सूधौ ऊतरु दियौ । वहुत सिया सौं निग्रह कियौ ॥
तब ते नारि सोइ सब रहीं । मानहुं काल नींद संग्रहीं ॥ २४ ॥
तबै बुद्धि करि प्रगट्यौ आप । ज्यौं जानकी न देइ सराप ॥
कहि संदेस पत्यारौ दियौं । सीता पहँ मनि चीन्हौं लियौ ॥ २५ ॥
कह्यौ संदेसौ करत जुहारु । तुमहि देव दीन्हौ आभारु ॥
छाँडी सीता लेति उसास । जीवित देव तिहारी आस ॥ २६ ॥
राघौ मित्र सुन्यौं सुग्रीव । तिन बातनि सुनि राखति जीव ॥
कछू बुद्धि मेरे मन मई । रावन की वारी खै लई ॥ २७ ॥
रूख उपारैं लगी पुकार । धाए राखस लएँ हथ्यार ॥
असी सहस तिन किंकर नाम । तुम पसाइ मारे संग्राम ॥ २८ ॥
आगर एक लोह अति जरी । तिनकैं हनत हाथ मौ परी ॥
सो लै तिन सनमुख हौं गयौ । असी सहस वह दल खै लयौं ॥ २९ ॥
रावन जममाली परठयौ । जूझ करत सोई मरि गयौ ॥
ताहि मारि मठ वैठौ जाइ । मंत्री पुत्र पहुँचे आइ ॥ ३० ॥
तुम सौं कौन बढ़ावै बात । घरी एक महँ मारे सात ॥
तब तिनकीं सुधि रावन लही । आयसु भयौ पँच परगई ॥ ३१ ॥
आवत तिनहिं न लागी बार । वेढि रहै ज्यो जम की धार ॥
धरी एक महँ कियौ सँघारु । तब सजि आयौ अखै कुमार ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ताहि परें रावन दुख कियौ। मो कहँ मेघनाद समदियौं ॥
ब्रह्म पाँस तिहि बाँध्यौ मोहिँ। देव वानु हौं सक्यौ न टोरि ॥ ३३ ॥
रावन पहँ लै गयौ कुमार। बूझै राजा सब ब्यौहार ॥
तब मैं करुवौ ऊतरु दियौ। आपुन रावन मुद्गर लियौ ॥ ३४ ॥

रावन बंधु विभीषन नाम। तिहिँ मारत राख्यौ उहि धाम ॥
राजनीति समुझायौ राइ। दूत न साँईं मारन जाइ ॥ ३५ ॥
वानर पूंछहिँ कियौ उपाउ। सुनि आनंद्यौ राखस राउ ॥
जितौ नगर पायौ सन सूत। बेढ्यौ कपरनि मैन वहूत ॥ ३६ ॥

दीन्हौं अग्नि घालि कर तेल। मरनु हमारौ उनकौ खेल ॥
मांहिँ मेल्यौ सीतहिँ दिखराइ। अति रिस परयौ लंक महँ जाँइ ॥ ३७ ॥
मंदिर जारि करे मसिवान। उबरयौ कुँभकरन कौ थान ॥
सागर मैं लंगूर बुझाइ। पुनि सीता देखी जाइ ॥ ३८ ॥
सीता चलत कह्यौ परनाम। सुनि सँदेस मन जपियौ राम ॥
वहुत बात को कहै बढ़ाइ। तुम प्रसाद परसे तुम पाँइ ॥ ३९ ॥

इतनी बात कही हनुमंत। बंदर सुनि जैकार भनंत ॥
सब मिलि कैं यह निग्रह किया। कहि हनुमत क्यौं देखी सिया ॥ ४० ॥
कहौ बीर जब देखी जाइ। राम लछिन कहि कहि बिलखाइ ॥
मैलौ कपरु आंसुजल भीन। देखी सीता दुख गति लीन ॥ ४१ ॥
मैले अंग छीन अतिं अंग। भूमि सयन राखस तिय संग ॥
बेनी दंड मैल जरि रह्यौ। ता मुख चंद्र राहु जनु ग्रह्यौ ॥ ४२ ॥

आठौ पहर न करति अहारु। चाहहि मिलन राम भरतारु ॥
आंसू मींजत अंचल देह। ताहि देखि मो बढ़यौ संदेह ॥ ४३ ॥
अति मलीन ता मैलन जरी। देखी समुद सोग महं परी ॥
खिन खिन रोवै लेइ उसास। मन धरकै रावन की त्रास ॥ ४४ ॥
जल भरि नैन कहै हनुमंत। मो दुख होतु सिया सुमिरंत ॥
बहुत बात तुमसौं को कहै। इन कष्टनि सीता बन रहै ॥ ४५ ॥

सुनीं बात अंगदु यौं कह्यौ। अब लौं सिया बहुत दुख सह्यौ ॥
बालि न जायौ अंगद नाम। रावन मारि तिया दैउँ राम ॥ ४६ ॥
आयसु राघौ देइ हकारि। स्यौं परिवार दिखाऊँ मारि ॥
जब सुग्रीव कटकु लै जाइ। ना वह लंक न रावन राइ ॥ ४७ ॥
जब रघु वान झरै घन धार। बूड़त लंक न लागहि बार ॥
लखिनु बिजुलि तरपै जिहि जाम। रावन रन भै भीतहि ताम ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पवनपूत बड़ अजगुत कियौ। तुम कल छाँड़ि सिया दुख दियौ॥
अब नाकत साइर कौ तीर। बंदर दुख पावैं बलवीर॥ ४९ ॥
यह सुनि तब बोल्यौ जामत। सुनि अंगद पंडित हनुमंत॥
राम पैज अैसी मन धरी। रावन हति मिलऊं सुंदरी॥ ५० ॥
समुझ्यौ अंगद सुनि यह बात। तुम बिनु को समुझावै तात॥
अब सु सयन लै चलिये तहाँ। वानर पति नर पति हैं जहाँ॥ ५१ ॥
इतनौ चरित हनू कौ सुनै। नासै पाप विष्नु कवि भनै॥
कुमति दोष नासै तन रोगु। होइ न बंधव नारि वियौगु॥ ५२ ॥
जामवंत सब कारन कह्यौ। सुनि तब बालिनंद गहगह्यौ॥
बूड़त लंकहि राखतु कौन। राघौ सहित लछिमन भौन॥ ५३ ॥
यह सब कारज करिहैं राम। तुम देखत हूहै संग्राम॥
अब न वीर बिलमन कौ भाउ। भेंटहु चलिकरि कपि कौ राउ॥ ५४ ॥

क्रमशः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जहाँ राम लछिमन कपिनाथ। दूरि देस पर्वत तरु साथ ।।
रामहिँ दैन सिया की सार। बंदर चले न लागी बार ।। १ ।।
गए वीर जोजन पच्चीस। मधुवन सजल सरोवर दीस ।।
तहँ रखवारौ दधिमुख रहै। तपै न दिनकर बात न बहै ।। २ ।।
बन थाप्यौ सुग्रीव कपेस। समुद वार दच्छिन के देस ।।
तहाँ न कोऊ पैठन लहै। दधिमुख मुमा राइ कौ रहै ।। ३ ।।
ता वन आनि पहूँचे वरी। तिन बिनती अंगद सौं करीं ।।
सीता चाहि सहै अति दुक्ख। वहु दिवसनि हम साधी भुख्ख ।। ४ ।।
तरुवर जाति फरे बहु कोरि। आइसु दै तौ खैए टोरि ।।
यह सुनि अंगद आइसु दियौ। बन फल खाहु सयल जल पियौ ।। ५ ।।
बंदर चढ़े दसौं दिसि पूरि। फल खाए तरु डारे चूरि ।।
एकति भूलहिँ गहि गहि डार। एकति फाँदि करैं सर पार ।। ६ ।।
ता बन बहुत कुलाहल भयौ। हाँकत दधिमुख सामुह गयौ ।।
मरनहार तुम बानर ढीठ। तुम मधुवन अनकहैं पईठ ।। ७ ।।
जिहिँ ठाँ चंद तपै नहिँ भानु। पवन् न बहै हलावै पानु ।।
जो सुग्रीव न देख्यौ बालि। सो वन डारचौ मूल उखारि ।। ८ ।।
इतनौ कहि तव आँगैं गयौ। अंगदु धाइ मूठिका हयौ ।।
तब दधिमुख लै भाग्यौ जीउ। पहुँच्यौ तहाँ जहाँ सुग्रीउ ।। ९ ।।
सो परिहसि वोल्यौ पालागु। अंगद हनू उजारचौ बागु ।।
तोहि जिवत मारे वन पाल। रूख न उबरचौ साजी डाल ।। १० ।।
अंगद टोरी मेरी कानि। छाँडचौ मुमा तिहारौ जानि ।।
दधि मुख बचन राइ जब सुनै। तब कपि राउ बुद्धि मन गुनै ।। ११ ।।
कहिउ लखन सहँ बारंबार। उन पाई सीता की सार ।।
उनि अव देव सिरायौ काज। ता लगि बागु विधाँस्यौ आजु ।। १२ ।।
पवनपूत सम बली न कोइ। निजु सीता सुधि ल्यायौ सोइ ।।
लखन सुनत इतनी कुसरात। कही जाइ रघुपति सों बात ।। १३ ।।
तैसौ भयौ राम की हियौ। जनु भरि अंजुल अमृत पियौ ।।
दधिमुखसरिस कह्यौ कर जोरि। मामा मधुवन जाउ बहोरि ।। १४ ।।
मन मौं कछू न करि बिसमाउ। अंगद हनू बेगि लै आउ ।।
काजु विचारचौ राघव तनौ। दधिमुख दुख भूल्यौ आपुनौ ।। १५ ।।
माथौ नायौ चल्यौ तुरंत। गयौ जहाँ अंगद हनुमंत ।।
दुं कर जोरै दधि मुख कह्यौ। मैं साँईं वन भंगु न सह्यौ ।। १६ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इक तूं वालि पूत जुग[व]राज। अरु कीन्हौं साँईं कौ काज ॥
राजा सुद्धि तुम्हारी लही। जब हौं बात जाइ सब कही ॥ १७ ॥
सुनत बात आनंद्यौं राउ। अब तुम वेगि पधारहु पाउ ॥
दधिमुख तनी करी मनुहार। अंगद बंदरु लिये हँकारि ॥ १८ ॥
गरजत वीर पयानौ कियौ। धर अंबर तिन धुनि पूरियौ ॥
किलकिल सवद सुन्यौ जब राइ। हरष्यौ अंगद अंग न माइ ॥ १९ ॥
राम सरिस तब बिनयौ जाइ। अंगदु आयौ काज सिराइ ॥
अति गलदार गुसाईं करइ। काहू संक न हियरा धरइ ॥ २० ॥
बिनु आइसु बन भंज्यो आजु। मैं जान्यौ उन कीन्हौं काजु ॥
इतनौ कहत पहुँचे आइ। राम पास सब लिए बुलाइ ॥ २१ ॥
देखि लखन अरु राजा राम। तब सब बंदर करत प्रनाम ॥
अंगद हुकम हनू कहँ कियौ। कहि सु बात ज्यों आयौ गयौ ॥ २२ ॥
तिहि ठां पुनि क्यों देखी सियौ। तो कहँ कहा सँदेसौ दियौ ॥
बोल्यौ वायुपूत वलवीरु। सौ जोजन सागर कौ तीरु ॥ २३ ॥
ताहि फाँदि दच्छिन दिसि गयौ। तव वह वन मौ ठाढ़ौ भयौ ॥
जोहौं साँईं आगैं जाँउ। नगर एक तिहि लंका नाँउ ॥ २४ ॥
तहँ राजा रावन बलवंत। राघौ सुनौ कहै हनुमंत ॥
ढूंढ़ी नगरी रैन मझारि। तब हौं लई न सीता नारि ॥ २५ ॥
जब हौं गयौ असोक बन माँहँ। तब देखी सीसे की छाँहँ ॥
अैसी देखी कहन न जाइ। राम लखन कहि,कहि बिलुलाइ ॥ २६ ॥
खीनी देह मलिन अँग चीर। राखसि साथ रहै अति भीर ॥
मोसहँ साँईं कह्यौ सँदेस। सो तुम सौं हम कहत नरेस ॥ २७ ॥
राखस बस हौं भई अनाह। कारन कौन बिसारी नाह ॥
कहियौ वीर सँदेसौ और। जब हम तुम पर्वत चीतौर ॥ २८ ॥
तब उहिँ काग छियौ मो अंग। तुरत कियौ सो नयना भंग ॥
अवहि लखन किन आयसु देतु। रावन मारत नहीं संदेह ॥ २९ ॥
रघुकुल तिलक विचारौ भाउ। यह न होइ विरमन कौ ठाँउ ॥ ३० ॥

श्लोक

आनंद भूषर्ण पुंसां। जम लाभोमुपोषिता।
परकर्मे प्रभावे च। जायते सुरतेषु च ॥

सस बंधौ रावन बहौ निश्चै सिया मिलाइ।
नव जोवन घन बीज ज्यौं बालम छिनु छिनु जाइ ॥ ३१ ॥

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बालि बह्यौ जिमि एकहि घाइ। जामवंत सुग्रीव सहाइ ॥
अरु लछिमन सौ बांधव जासु। पर घर तिया बसहि क्यों तासु ॥ ३२ ॥
पाप हमारौ तिरछौ भयौ। अबहिं सु राम मनावै दयौ ॥
पुनि हिय आई सुरति बहोरि। माथे तें मनि आफी छोरि ॥ ३३ ॥
बहुरि संदेस न हनुमत कह्यौ। नैननि रामु छाइ जल रह्यौ ॥
इतनौ राम सँदेसौ सुन्यौ। सीता कह्यौ हनू सब भन्यौ ॥ ३४ ॥
सो मनि लै पुनि देखी हाथ। हिये लगाइ रह्यौ रघुनाथ ॥
खन देखैं खन लोपै मनी। ता सुख भयौ मिली मनु धनी ॥ ३५ ॥
खन खन राखैं हियैं लगाइ। बहुरि न निछुटि जाइ तिहि ठाँइ ॥
मन महँ कहै हनूमत करी। माया मनि मेरैं कर धरी ॥ ३६ ॥
यह प्रपंच सब अंगदु कियौ। अब वह जीवति नाहीं सियौ ॥
अैसौ या मनि कौ परभाउ। कहै राम सुनि हौ कपि राउ ॥ ३७ ॥
सोग अग्नि मो जरत सरीर। सीता वचन सुनत सुख नीर ॥
हनुमत ज्यों न हंस उड़ि जाइ। बार बार ता वचन सुनाइ ॥ ३८ ॥
विस्तारि वीर कहै हनुमंत। अवहि न कोऊ सुनहि कहंत ॥
विष्णु दास मथि ग्रंथ अपार। काढ़ो कथा सु अमृत सार ॥ ३९ ॥
बहुरौ हनुमत आइसु लिह्यौ। सब संदेस राम सौ कह्यौ ॥
दिहि जिहि बचन सिया सँभरए। सुनि सुनि राम मुरछि धर गए ॥ ४० ॥
सुनि संदेश मन सोचै राम। दुर्गम लंक नहीं संग्राम ॥
सायर भवन तिरन क्यों जाइ। बहुतै दुख करि मन पछिताइ ॥ ४१ ॥
तब सुग्रीव कहै तिहि ठाँइ। तुम मन सोच करत अब काँइ ॥
मो सारिखौ जासु उरगान। ताहि न पूछत अति पछितान ॥ ४२ ॥
पाहन बंधहुं सायर सेतु। लंकहिं जारि करौ तहं खेत ॥
स्यौं परिवार रावनहिं मारि। राम मिलाऊँ तुम कौ नारि ॥ ४३ ॥

श्लोक

निरूपवाहस्य दीनस्य सोप कार्ज कुलात्मनं।
सर्वथा विष सीदंतु व्यास निश्चय राघवः ॥

सुनत बात उपज्यौ हंकार। पवन पूत बूभ्यौ व्यौहारु ॥ ४४ ॥
कैसी लंक किसौ दल साजु। क्यौं रावन प्रति पालतु राजु ॥
कहै वीर ऊँचौ गिरि ठाँउ। बसत लंक तिहि रावन राउ ॥ ४५ ॥
चारि पौरि खिरकीं को गनै। राखस बली रहहि यह भनै ॥
सुहर सहस दस लिए हथ्यार। राखत देव सु पूरब द्वार ॥ ४६ ॥
किएँ साज राखस इक कोरि। ते राखहिँ पच्छिम की पौरि ॥
उत्तर पदम एक मैं सुनै। रहिहि महा भर रावन तनै ॥ ४७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक अयुत दच्छिन के द्वार । नाम जाद अति वली जुझार ॥
हय गय पाइक अरु रथ कोरि । माँझ रहै लंका की खोरि ॥ ४८ ॥
दुहु कुल बहुत वली सब कोइ । स्वामी दोह मन लहैन सोइ ॥
इतनौ दल नित साजैं रहै । और असंखि ताहि को कहै ॥ ४९ ॥
राखस रहत जे सिंह दुवार । ऊपर पते जनावत सार ॥
राम सुनत हनुमत के बैन । अति रिस करे अरुन निज नैन ॥ ५० ॥
बोल्यौ कर गहि धनुहर वान । उठि कपि राजा करहिँ पयान ॥
माथे ऊपर रवियनु वहै । उत्तर फालगुनि राघौ कहैं ॥ ५१ ॥

क्रमशः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इक शुभ लग्न चंद्र ग्यारहौं । इहि पयान रन रावन वहौं ॥
सुनि सुग्रीव उठयौ सिर नाइ । सब सेनापति लिए बुलाइ ॥ १ ॥
तिन कंधनि तब चढ़ें तुरंत । अंगद लखनु राम हनुमंत ॥
आगै चलहिं कुमुद नल ठाट । जाय सँवारत औघट घाट ॥ २ ॥
हाथनि तरु तिन लीन्है चूरि । ते कपि चले अंबर धर पूरि ॥
ऊपर ऊपर वादर कहै । समुद्र पाटि रावन रन वहै ॥ ३ ॥
लंक जारि राखस संघारि । रामहिं मिलवैं सीता नारि ॥
मंदौ भयौ न एक्कौ सौनु । फरक्यों राम दाहिनौ नैन ॥ ४ ॥
निरमल भानु पवन सुभ बहै । निजु रन जीतौं रघुपति कहै ॥
हरष्यौ रामु सगुन सुभ भए । कपि दल सव विंध्याचल गए ॥ ५ ॥
तहाँ न विरम्यौ बंदर ठाट । मेले जाइ समुद के घाट ॥
पर्वत ऊँचौ नाम मयंद । तिहिं चढ़ि मेल्यौ कपि कौ इंदु ॥ ६ ॥
जामवंत स्यौं लछिमन राम । घरी चारि कीन्हौं विश्राम ॥
ऊँची लहरनि उठै झकोर । मनौ मेघ छाए चहुँ ओर ॥ ७ ॥
खन खन भीम नाद गरजंत । मगर मच्छ दीसहिं उछरंत ॥
ऊभौ राधौ देखत तासु । ज्यौं सायर त्योंही आकास ॥ ८ ॥
मानौ दल दूसरौ समुद्र । करै नाद बंदर भय रुद्र ॥
इन दूं महँ इतनौ है हेत । यह पीरौ वह दीसै सेत ॥ ९ ॥
रघुनंदन पूछत कपि राउ । यह है मूल मंत्र कौ ठाउ ॥
अब बिचारि ऐसी मति करौ । बिलमुन कीजे सांयर तरौ ॥ १० ॥
इतनौ कहत सिया सुंमरी । तिहि के दुक्ख राम बुधि हरी ॥
पारु न सकिए दृष्टि पसारि । ए दोई एकइ अनुहारि ॥ ११ ॥
सायरु देखत विहवल भयौ । करन विलाप राम तब लयौ ॥
बोलत राघव सुनि कपि राइ । सीता परसि मोंहिँ छुइ आइ ॥ १२ ॥
तूं सांई इतनौ दुख देहि । अब कत अंत हमारौ लेहि ॥
बंद गोसाइँ मया अब गाहि । ताहि देखि मोहू तन डाहि ॥ १३ ॥
इहि विधि होइ जु सिया मिलाप । तो भागै मेरौ संताप ॥
इकु तौं सीता खीनी देह । राखस बस ता भयौ सँदेह ॥ १४ ॥
अति उपवास नयन जल झिरे । सिया न जीवइ निहचैं मरे ॥
पारस माहिँ बसतु ज्यौं ससी । त्यौं सीतहिं बेढै राखसी ॥ १५ ॥
जिहि दिन नैननि देखौं भाइ । सो दिन सोने कौ सव आइ ॥
बहु विधि रोवत लेत उसासु । तब लछिमन समुझावै तासु ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर जोरतु अति विनवतु सेव । तुमहिँ न सोक बूझिए देव ॥
इतनी कथा राम दल भई । चलि तब कथा लंक महँ गई ॥ १७ ॥
विष्नु दास कवि देखि पुरान । तैसो कवित कियो जु बखान ॥
हियैं बिचारयौ रावन माइ । अब यह राखस कुल खें जाइ ॥ १८ ॥
अति दुख दीरघ लेति उसास । पहुँची तबहिँ विभीषण पास ॥
तब वह जननी जोरति हाथ । तूँ समुझाउ निसाचर नाथ ॥ १९ ॥
ता राधौ सौं किसौं परान । भंजन गढ़न जासु कर बान ॥
सायर सोखि करैगो खेत । कै पाहन बाँधैगौ सेत ॥ २० ॥
सायर जल महँ बूडै लंक । सुनत पुत्र मो उपजी संक ॥
वे सब देव रूप कपि किए । श्राप जानि ब्रह्मावर दिए ॥ २१ ॥
अरु नंदीगन तनौं सरापु । नर बंदर हरि है नृप दाप ॥
अबहि विभीषण दसवौ दाउ । कहि राजा रावन समुझाउ ॥ २२ ॥
और बात कहि सकत न कोइ । सु करि बच्छ जिहिँ जीवन होइ ॥
सुनत सँदेस जु माता पास । गयौ विभीषण राइ अवास ॥ २३ ॥
कियौ जुहार चरन सिर धारि । पास बैठि बिनतो अनुसारि ॥
जब तैं सीता लंकहि आई । तब तैं असगुन बहुत दिखाई ॥ २४ ॥
होति सधूम होम की आगि । गई देव सिंघासन लागि ॥
छत्रु गिरायौ बाउ झकोरि । घोरे बिडरि गए रथ तोरि ॥ २५ ॥
चेटा खाइ होम हवि गए । रूख अकाल फूल फल भए ॥
दिन दुपहर अति टूटहिँ तार । रटहिं सियार लंक कैं बार ॥ २६ ॥
बहुत होत नित कौवा रोरु । तीतुर रटत भए बिनु भोरु ॥
गीध चरख खप्पर बेताल । लोट चील्ह हरितनि की माल ॥ २७ ॥
जब तैं भो सीता पैसारु । बर्नाज बसे वहि लंका वारु ॥
सीता जाइ राम कैं गेह । होम जाप करि दछिना देह ॥ २८ ॥
भगति करौ गुरु बांभन तनी । राखि लेहु लंका आपुनी ॥
मेरे वचन हिएँ धरि आजु । साँईं करहु निकंटक राजु ॥ २९ ॥
चौदह सहस तिहारैं नारि । एक लागि तूँ राजु न हारि ॥
इतनौ सुनि सगुननि के भाइ । कछु संवयौ कछु कोप्यौ राइ ॥ ३० ॥
बोलत भाषा अति गंभीर । सकल सभा तुम राखस वीर ॥
बंदरु एक लंक डहि गयौ । तुम पहँ सो न निवारचौ गयौ ॥ ३१ ॥
तपसी जीतन करौ उपाउ । बार बार यौं बिनवै राउ ॥

मंत्री उवाच

जब तिरिहैं सागर की भौनु । तुम सौं लरि है बंदर कौनु ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज्यों भागैं मेरौ सँदेहु । तैसौ मंत्र सबै मिलि देहु ॥
बोलहि मंत्री सुनि अब देव । तैं वर बंदि करें सुर सेव ॥ ३३ ॥
जीते नाग पैठे पाताल । बस कीन्हैं दसहूँ दृगपाल ॥
तैं कुबेर जीत्यौ कैलास । कुसुम विमान लियो ता पास ॥ ३४ ॥
जमु बाँध्यौ रवि तपै रसोइ । ता समरंगन जींतहि कोइ ॥
मै दानव तो सह सँधि करी । दोनीं कन्या मंदोदरी ॥ ३५ ॥
चारचौ जिते वरुन के पूत । पहुमि राइ रन हनै बहूत ॥
ज्यों बन महँ तरुवर की छाँहँ । तेते छत्र घरें घर माह ॥ ३६ ॥
एकहिं सर रावन सब हए । ज्यों तरु दाव लगैं जरि गये ॥
बंदर चंचल जाति सुभाउ । तुम सों क्यों करिहै भरियाव ॥ ३७ ॥
अरु द्वै तपसी लछिमन राम । तुम सौं क्यों जीतहिँ संग्राम ॥
मन महँ स्वामी करौ न सक । बंधव बली दुर्ग गढ़ लंक ॥ ३८ ॥
दुस्तर खाई सागर जासु । सो राजा कहि संकतु कासु ॥
ऐसी सिख दै मंत्री रहे । रिस करि वचन प्रहस्त सु कहे ॥ ३९ ॥
बंदर एक न पुहुमी रहई । जो नृप मौ कहँ आयसु कहई ॥
बोलत वज्रदंत परजरे । तुम विधुना बुधिहीनै करे ॥ ४० ॥
बंदर रीछ तनौ डर करहु । कत कायर आयुध कर धरहु ॥
दुर्मुख कहत करत अति गाज । बात कहत तुम लगति न लाज ॥ ४१ ॥
हम नर बंदर चाहन जाहि । तुम मूरिख मन संक न ताहि ॥
ता क्यों डरै जाहि जो खाइ । भाग तुम्हारे पहुँचे आइ ॥ ४२ ॥
बहुतक कहै वीर रस वाक । मुखहिं पसारहिं फुलवहिं नाक ॥
बोल्यौ कुंभकरन कौ पूत । अनख तिहारौ सह्यौ बहूत ॥ ४३ ॥
मो कहँ आयसु दीजे तात । सबै बाँधि लैं आऊँ जात ॥
उंदरू भौ क्यों डरै मँजारु । सिंध डरै हरिनहि परिवारु ॥ ४४ ॥
पंछी राउ विसह डरु करै । तौ राखस नर बंदर डरै ॥
सुनत बात रावन कै पूत । अति रिसि बोले बचन बहूत ॥ ४५ ॥
मंत्री बीस सहस भरसाथ । सबै चलौ आयुध लै हाथ ॥
बोलत पैज करत डंफान । आजु न तपसी पावै जान ॥ ४६ ॥
अबहि राखि को राखै जंत । जिहिँ छल लंक डही हनुमंत ॥
उठौ विभीषन दूं कर जोरि । साँईं समुझायौ जु बहोरि ॥ ४७ ॥
कछू अकर्महि चलौ निवारि । तातैं जन्म न आवै हारि ॥
सागर नाकि नगर जिहि डह्यौ । सो तुम सब मिलि एकु न वह्यौ ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब आवत कपि अगनित कोरि। क्यों करि सकिहौ तुम रन रोरि ॥
बैरी सर्प गनौ नहिँ हीन। तौ न पत्याउ जु भाखत दीन ॥ ४९ ॥
तुम हैलां मारन सामुहे। वह है जिनि खरदूषन वहे ॥
बिन अपराध हरी तुम नारि। आदि पुरुष सौं माड़ी रारि ॥ ५० ॥
अब राघव कहँ सीता आफि। धन कुटुंब निज लंका राखि ॥
रावन जबहिँ जुरै रन रंग। जौलौं होहि नगर नहिँ भंग ॥ ५१ ॥
ज्यौं जीवन उपजै न संदेह। त्यौं लै रामहि देहु बिदेहि ॥
जौलौं लछिमन सर अंगार। परै लंक मानौ अंगार ॥ ५२ ॥
जोलों रन गाजै हनुमंत। तुम लै सीता देहु तुरंत ॥
ज्यों ज्यों कंठ धरै दससीस। ज्यों ज्यों प्रान रहैं भुज बीस ॥ ५३ ॥
ज्यों ज्यों पुत्र कलत्र धन राज। त्यों सीता लै सौंपो आज ॥
रवि सम तेज जु तीखन धार। जिनकौ वेग गरुर आकार ॥ ५४ ॥
जबहि राम सर छाँड़ै तोहि। तब रावन सम्हरिए मोहि ॥

श्लोक

अकीर्ति कोषं सुख धर्म नाशं, भजास्वि कीर्ति जस धर्मवर्द्धनं।
प्रसीद जीवोत्तन पुत्र बांधवो, प्रसीदतां दासरथं चरं त्वया ॥

निसुनै बचन विभीषन तनै। सब मंत्री बूझै आपुनै ॥ ५५ ॥
होइ पाप कूरौं मत देउ। बूझै ताहि सो मंत्र करेउ ॥
ब्रह्म मूल ज्यों ओं अंकार। जैसो धर्ममूल उपगार ॥ ५६ ॥
ज्यों नर ग्यान मूल सुख लहै। मंत्र मूल राजा त्यों कहै ॥
औरै हिएँ उपावै वुद्धि। एकै कहत साहसै सिद्धि ॥ ५७ ॥
अब मो मनह पत्यारौ भयौ। सबही छाँडि बली है दयौ ॥
भंजै गढ़ै करै सत खंड। कादर सौं हारै बलिबंड ॥ ५८ ॥
जु कछु काजु मन हेला कियौ। दइय सुकाज किएँ देखियौ ॥
कीजहु मंत्र धर्म दै साखि। तुम जनि बात कहौ मन राखि ॥ ५९ ॥
जातैं कुसजु होइ अरु पाप। अर्थ हानि राजहिँ संतापु ॥

श्लोक

बांधवं गुरु मंत्री च यस्य राज्ञा प्रियं वदेत्।
शरीरं धर्मं को शोभां किं प्रसादं महीपते ॥

दुहुँ कुल निर्मल बुद्धि निधान। अर्थ विचारहु वेद पुरान ॥ ६० ॥
तुम तैं मंत्री औंर न कोइ। कहौ मंत्र जो जैसौ होइ ॥
बूझत मंत्र लंक कौ राउ। तासौं कहत प्रहस्त सुभाउ ॥ ६१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिहि सुख जीउ राउ कौ रहै। सोई कीजे मंत्री कहै ॥
जो मन राजा भावै कर्म। यह है राज नीति कौ धर्म ॥ ६२ ॥
परधन परतिय अरु परगेह। सांईं सूरंतन फल एह ॥
अबहि देहु छाँडौ विसमाउ। यह घर बंदर रीछ बसाउ ॥ ६३ ॥
मेह हाड तैसे दीसंत। जनु कपिदल साहसै वहंत ॥
जो क्यों करि दल दधि तरि आहि। तो वे भागि न मो पहँ जाहि ॥ ६४ ॥
जो हम जूझैं पहिले पार। तो कपि भगि जैहैं असरार ॥
निसुनै बचन प्रहस्त जु भनै। जै जै करत महोदर गनै ॥ ६५ ॥
जैसी देव बुद्धि मन लागि। अैसी होई नृपति कै भागि ॥
एकै बात कहत सब कोइ। तातैं काज सिद्धि यह होइ ॥ ६६ ॥
एकहि एक परत नहि ठान। तौ वह विनसै काज निदान ॥
राखस मंत्र इसौ वूझिए। आपुन पर विच रत जूझिए ॥ ६७ ॥
वे म्रग हम केहरि सुनि राइ। जा खैए ता डरिए काइ ॥

दोहा

परवल निज वल देखि, तव विग्रह कीजे गाजि ॥ ६८ ॥
अनवल वहुवल देखि, तव भिरतह चलिए भाजि ॥ ६९ ॥

चौपही

एकु विशेष हमारी जाति। जूझहिँ देव अँध्यारी राति ॥
बंदर जाति द्यौस पर जूझ। क्यौ हम पूजै तपी अवूझ ॥ ७० ॥
हम असि जूझैं वे नखदंत। वे कपि हम राखस भय मंत ॥
वे मूरिख हम परम सुजान। कहौ राम जीतै किहि ग्यान ॥ ७१ ॥
हम सलाह पहिरैं रनरंग। वे कपि वपुरे उघरे अंग ॥
मारत तिनकौं नहिँ संदेह। मंत्र महोदर भाखत एह ॥ ७२ ॥
मंत्र महोदर परचौ विचार। विरूपाच्छ वोल्यौ जैकार ॥
कपि क्यों सहै हमारी गाज। वात कहत तुम नाहिन लाज ॥ ७३ ॥
अैसौ मंत्र करचौ सव साथ। उठित विभीषन जोरे हाथ ॥
मधुर वचन संवोध्यो ताहि। अति बुधिवंत देव गुरु चाहि ॥ ७४ ॥
परिहरि धर्म मंत्र जो करहिँ। मान लोभ जे हियराँ धरहिँ ॥
हर तर पर तर हरैं गवार। स्वामि सुहातो वोलनहार ॥ ७५ ॥
अैसैं व्याधि रुचै नखदंग। काटे अपगुन न लहिए अंत ॥
वचन सुहातो अधिक अहारु। ए जव तव दुख सहहिँ अपारु ॥ ७६ ॥
सो मंत्री जो करहि न कानि। बोलै धर्म पाप पहिचानि ॥
मंत्र काज सारथ मन धरे। मंत्री मिस बैरी संचरे ॥ ७७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देव विचारि हमारो मंत्र । रामहिँ सींता आफि[अर्पि]तुरंत ॥
तुम मति भूलौं पहिले भर्म । अविगति सकल राम के कर्म ॥ ७८ ॥
इतनै बचन विभीषन कहे । मेघनाद तब एक न सहे ॥
अरि रिस करि बोल्यौ निरभंस । तू न होइ राखस कौ बंस ॥ ७९ ॥
इहिँ कुल भौ जाकौ अवतार । कहि को सत्रुहिँ डरपहि स्यार ॥
तो देखत मैं त्रिभुवन जयौ । जूझत कहि कव पछहौं भयौं ॥ ८० ॥
मारि लियौ सुरपति मैमंत । समुद्र मांझ दुरि वच्यौ जयंत ॥
देखत सुरन इंद्र लियौ बंधि । अब मो सरिस जिनै कहि संधि ॥ ८१ ॥
दानव देव जिते मैं सर्व । ब्रम्ह पसाउ जितै गंधर्व ॥
मानुस तपसी बन फल खॉहिँ । भैटें भयैं क्यौं जीवत जाहिँ ॥ ८२ ॥
अजुगत वचन परचौ नहिँ सहचौ । ऊतरु तबहिँ विभीषन कहचौ ॥
तू अजहूँ अति बारौ तात । जानहि कहा मंत्र की बात ॥ ८३ ॥
जो कर धनुस अबहिँ सुत धरहि । तो निज तीन भुवन संघरहि ॥
तासौ मूढ कहा संग्राम । भंजन गढ़न सँवारन राम ॥ ८४ ॥
अव कौ मंत्र पुत्र करि एहि । लै रघुवर कौं मिलौं विदेहि ॥
अति तीछन जमदंड समान । सहिन सकौ रघुवर के बान ॥ ८५ ॥

श्लोक

प्रगृह्य रत्नं बहुभूषनानि' वस्त्र सुदिव्यानि मनि सुवनंम् ।
सीता सु रामाय करे च देहि वसेत्सलकाधिसुखं अशेषम् ॥

इति श्री रामायने विभीषन वाक्य मेघनाद संवादो नाम सर्गः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

अैंसौ मंत्र विभीषन कह्यौ । ऊतरु देत न रावन सह्यौ ॥
कोइ विहँसै कोइ मिलवै हाथ । कूकि भई राखस कैं साथ ॥ १ ॥
अति करि कोपु न राव सह्यौ । तब पुनि मंत्र महोदर कह्यौ ॥
जिहि सुरपालु विरोध्यौ जाइ । सु क्यौं सयानैं बात कहाइ ॥ २ ॥
त्रिभुवन उत्तिम तिवई रेनु । दुख पावै ता आफै [अर्पे] कौन ॥
आपुन रावन ल्यायौ जाइ । क्यौं परिहरै विभीषन ताइ ॥ ३ ॥
राघव तपसी सागर पार । ताको डरु करि हौहु गँवार ॥
सुनत विभीषन लियौ उसासु । निज राखस कुल भयौ विनासु ॥ ४ ।
एकहिँ मते सकल परिवार । एक बिभीषन बरजन हार ॥
अरे महोदर समुझि गँवार । अब लंका राखौ इथि बार ॥ ५ ॥
राघव छाँड़ै वान रिसाइ । खिनक माँझ लंका खै जाइ ॥

श्लोक

न रावनो नापि महादरे च ना कुंभकर्णें अति कायनां तथा ।
न इंद्र जित्वा न राक्षसं कुलं प्रसोढ लंकास्तु प्रणाशनंमतं (॥
सुनि रावन वंधव की वात । रिस करि सिर धुनि मोरे हात ॥ ६ ॥
इकु कंपै अरु राते नैन । लै उसास तव भाखत वैंन ॥
जो क्यौं राम सरन अनुसरै । द्वै कर जोरि जु बिनती करै ॥ ७ ॥
स्यौ लछिमन पा लागौं आइ । तौ हौं दैउँ सिया मुकराइ ॥
जो वह परम विरोधी होइ । सरनागत न सतावौं सोइ ॥ ८ ॥
छत्री कुल जाकौ अवतार । ते कत डरपि तजै अहंकार ॥
रावन नाम धरचौ पितु माइ । क्यौं अहँकार तजौं जु डराइ ॥ ९ ॥
तू कायर नर वंदर डरहि । बैरी बस तूँ विनती करहि ॥
सत्रु सराहतु निंदतु मोहि । कायर नहीं पाप डर तोहि ॥ १० ॥
अरु मेटतु मेरी मनुहारि । अब वोलहि तौ डारौं मारि ॥
कोटि राम सिरजै करतार । रावन एक लेइ हथियार ॥ ११ ॥
इंद्र रुद्र जो करिहै छाँहं । तौ रन जितौं एक छिन माँहं ॥
कहत विभीषन तब अति कोहँ । तू भूल्यौ सीता के मांह ॥ १२ ॥
मंत्र कहत तोंहि उपजत दापु । अब भौ उदौ तिहारौ पापु ॥
तुम जानत सव वेद पुरान । नीत अठारह करत बखान ॥ १३ ॥
अव सब बिसरे एकहि वार । राजा लंक विंहूरन हार ॥
देख्यौ देव तिहारौ करन । अब मोहिँ राघव के पग सरन ॥ १४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहै विभीषन बारहिँ बार । अब सुत तजि मरिहौं करतार ॥
मैं धनु पुत्र कलत्र परिहरौं । अब हौं राम चलन अनुसरौं ॥ १५ ॥
सहि न सकौं यह गरवौं दोष । राघव परिहरि लहौं न मोष ॥
जब तिहिं कह्यौ राम पहँ जान । सुनि लंका पति अधिकु रिसान ॥ १६ ॥
कर दाहिनै गह्यौ करवाल । दीसतु मनहुँ रिसानौ काल ॥
रावन कोपि सामुहौं गयौ । उर मह लात विभीषन हयौ ॥ १७ ॥
अैसौ दीसतू धरतीं परचौ । बज्र घाइ जनु गिरि खरहरचौ ॥
मंत्री मिलैं लयौं समुझाइ । बहुरि सिघासन बैठचौ राइ ॥ १८ ॥
सब मिलि वैठि रहे चौ पास । ज्यो ससि कैं परिवेष अकास ॥
कोई सरिस न बोलत कोइ । कछू सभा महुँ सबद न हौइ ॥ १९ ॥
धरियकु राजा सोचत तिसौ । लह्यौ हिलोर समुद्र जल जिसौ ॥
तबहि विभीषन जोयो पासु । खिनक कोप तजि लेत उसास ॥ २० ॥
वहुरौ सोचतु हिएँ कुमार । मोहि सु लोक भयौ संसार ॥
कहै विभीषन मो बड़ भाग । या पापिहिं अपजस जग लाग ॥ २१ ॥
लात घाउ मो कहँ सुख मोखू । मोहिं सुजस रावन अति दोषु ॥
करचौ पाछिलौ सो जसु हरचौ । मूढ कोप सागर महँ परचौं ॥ २२ ॥
बंधव सरिस करचौ अहंकारु । कौनु मरत तोहिं करहि उधारु ॥
रावनु कहज जीउ लै जाइ । बार बार मोहिं दोषहिं काइ ॥ २३ ॥
अब हौं मूढ़ पत्यारौं तोहि । जो क्योंहू सौनै को होइ ॥
प्रथम बुरौं जो हिरदैं धरै । यातै कर्म असुभ सब करै ॥ २४ ॥
सो मैं मत अब तेरौ लहचौ । स्वामी तजि रिपु सेवन कहचौ ॥

श्लोक

सदनं कलहो नित्यं विप्रानां मान खण्डनं ।
आज्ञाभङ्ग महीपालं भ्रातृयो प्रिय भ्रातृजः ॥
कंटकस्य च भग्नस्य दन्ताश्चलितयो मुखं ।
कुशील सहितं बंधु सावसालं पुरां भवेत ॥
संभवं ब्रह्मणो तेजं संभवं स्वस्त्रियो सुखं ।
संभवं अहितो बंधु संभवं सहितो च सः ॥

जो तेरे मन राघव रहचौ । निकसि विभीषन रावन कह्यौ ॥ २५ ॥
और होइ तौ हतौ परानु । तोहि दयौं मैं जी को दानु ॥
तू सांई अरु जेठौ भाइ । जो हौं लात प्रहारचौ साँइ ॥ २६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोहिँ न कछुवै विसमौ दाप। फिर नृप तोहिँ होइ संताप ॥

श्लोक

सभायां पौरुषं यस्य सततं प्रियवादिनं।
असतं पुरुषं वाक्यं विदधातु रिपोरिव ॥

अव जो बुद्धि गनौ तो तनी। राखहि जो लंका आपुनी ॥ २७ ॥
जो जीवहु कौ लोभ कराइ। यह पुर छाँड़ि पताल जु जाइ ॥
यह कहि तव माथौं भुइ धरचौ। सिर प्रनाम राजा कहँ करचौ ॥ २८ ॥
मंत्री चार आपुनै लए। देखत उपै अकासहिँ गए ॥
तिन कहं चलत न लागी वार। पहुँचे पाँचउ सागर पार ॥ २९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाँचउ अंतरीछ आवंत। प्रथम दृष्टि परियौ हनुमंत ॥
कही सार सुग्रीवहिँ पास। यह रावनु आयौ आकास॥ १ ॥
साँईं हम कहँ आइसु देहु। सिल तरवर लै मारिय एहु॥
तब सुग्रीवहु आइसु दियौ। सब कपि मिलि यह उद्दिम कियौ॥ २ ॥
अलमलु देखि विभीषन डरचौ। सागर तीर तबहिँ पग धरचौ॥
रे कपि सूर एक पल रहौ। सुनहु बात मति आवध गहौ॥ ३ ॥
तुम सौं मरमु कहौं आपुनौ। हौं बांधव दस कंधर तनौ॥
मतौ करत सिय आफन[अर्पन]कही। यह न बात लंकापति सही॥ ४ ॥
राघव नाम लेत भूपाल। सभा माहिँ मो हयौ लताल॥
बातकु कहै दिखावै त्रास। ज्यों दुख भरिए नेन्हौ दास॥ ५ ॥
छाँड़ी नारि पुत्र धनु राजु। मैं सरनागत आयौ आजु॥
बंदर वीर मया मन धरहु। अब मो संक सबै परिहरहु॥ ६ ॥
करि प्रसाद मति लावहु बार। बेगि देहु रघुनाथहिँ सार॥
सुनि सुग्रीव अचंभय भयौ। उठि तब राम लखन पहँ गयौ॥ ७ ॥
अंगद हनू लिए नृप साथ। विनवत राजा सुनि रघुनाथ॥
रावन बंधु विभीषन नाम। आयौ तुम सरनागत राम॥ ८ ॥
दैयत संका उपजी मोहिँ। यौ छरि आयौ मारन तोहि॥
मंत्री चार अवर ता साथ। पाँचौं सूरे आयुध हाथ॥ ९ ॥
इकु बैरी अरु राखस जाति। कहि साँईं बिससहि किहि भाँति॥
अब जो साँईं आइसु देहु। तौ अब पापिहि मारौं एहु॥ १० ॥
रावनु पठयो पाप विचारि। आइसु करौं तौ डारों मारि॥
इतनी बात कही कपि राइ। रामु न ऊतरु दीन्हौं ताहि॥ ११ ॥
एक मुहूरत सोच्यौ हिएँ। करत विचार राम चित दिएँ॥
सब बंदर मिलि कहियौ मंत्र। अंगद जामवंत हनुमंत॥ १२ ॥
जो सूझै सो ऊतरु देहु। किहि विधि तुम पर यहु मत एहु॥
राजनीति अति अगम विलास। दसए दाउ जो मंत्र प्रकास॥ १३ ॥
कर्म विचारि जो करिहै कोइ। ता पाछैं ते दोष न होइ॥
अंगद कहत पठावहु चार। बात कहत तिन लखहि विचार॥ १४ ॥
तब वे मंत्री बूझि विचारि। कहै बात एकहि उनहारि॥
तौ उन आवन दीजे राइ। कहा भएँ रावन के भाइ॥ १५ ॥
दूजैं हनुमत बोली साखि। इहि हौं मारत लीन्हौं राखि॥
यह है राम धर्म की मूल। यातैं और न जानि सुकूल॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जामवंत तब बोल्यौ राउ। कह्यौ विभीषन तनौ सुभाउ ॥
यह लंकेस उदास्यौ देव। आयौ राम करन तो सेव ॥ १७ ॥
रावन लोभ गहिर अहँकार। यह समुझावत वारहिं वार ॥
हाथी चढ्यौ निरंकुस लएँ। वाइलात रावन इन हए ॥ १८ ॥
अब जो राम याहि परि हरै। तौ जल झाँपि विभीषन मरै ॥
यातैं सकल सिरैहै काजु। वहुत मान दै राखौ आजु ॥ १९ ॥
ज्यौ ज्यौ मिलतू न बैंट कुठार। त्यौं तरु काटि न सकत कुल्हार ॥
मैगल वस पुनि मैंगल होइ। जानि जाति बस कहिए लोइ ॥ २० ॥
अरु यह भीत बंधु की संक। या परिहरत पाप अति बंक ॥
भीत निवारत पातक होइ। मात पिता सुत घातक जोइ ॥ २१ ॥
जामवंत यह भाख्यौ जाम। उत्तम मंत्र मानि लिय राम ॥
यहै मंत्र मेरे मन मित। मो तुम प्रकट कह्यौ हनि चित ॥ २२ ॥
गहि आयुध जो सनमुख होइ। प्रथम घाउ घालै जो सोइ ॥
हाँकि भिरैं सनमुख संग्राम। मारौं ताहि कहत यों राम ॥ २३ ॥
अति बुधि बली ग्यान संजूत। कद्रू नाम वरुन कौ पूत ॥
तिहि नृप नीर्ति वचन हैं कह्यौ। सुनि राजा मेरे मन रह्यौ ॥ २४ ॥

श्लोक

कर संपुटकं दीनं वाचा नाम पराधिनं,
निहत्या च वनं प्राप्तं नीतिजानंति राघव।
दलितास्ते परेषांवा अपि प्रान परित्यजेत,
रक्षितव्यं कृतात्मानं भवेद्भीतो यमात्यः ॥
कामेच्छापि न रक्षंति स्वयं शक्तियथात्वयं,
तत्तुल्यकि गृहीतंवा रक्षंतु शरणागतं।
आदरस्तु कृतं तस्य सर्वं गछंति रक्षिता,
दीन संपुटक चैव ग्राहयं तस्यनृपोत्तम ॥

दीन चलैकर संपुट किएँ। ता क्यौं सरन धरौ भय हिएँ ॥
जो न देइ ता राखन दाइ। सो नर धर्म भीतु लै जाइ ॥ २५ ॥
नर ताके सरनागतु जासु। ता देखत तिहि होइ विनासु ॥
ताहि देखि जो घालै घाउ। कुंभी नरक लहै नर ठाउ ॥ २६ ॥
अबै विभीषन आयौ सरन। हमै विलंब न बूझतु करन ॥
जो वह कुटिल प्रान तौ हरौ। जो वह भीत तो संग्रह करौ ॥ २७ ॥
जो यह रावन आयौ होइ। तो कपिराइ मारिये सोइ ॥
या परिहरत पाप कह डरौं। वरु सरनागत लगि जो मरौं ॥ २८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुनि सुग्रीव कियौ जैकार। आनंद्यौ बंदरु परिवार ॥
धनि दसरथ कौशल्या माइ। धनि हम जो नित परसत पाँइ ॥ २९ ॥
इतनौ कहि तहँ पहुचे जाइ। कही बात लीन्हौं समुहाइ ॥
चरन राम के घाले हाथ। हियैं लगाइ लियौ रघुनाथ ॥ ३० ॥
मेरे जान विभीषन जिसौ। लखन सुमित्रा नंदन तिसौ ॥
बार बार भेंटैं गर लाइ। बिछुरयौ बंधु मिल्यौ जनु भाइ ॥ ३१ ॥
सब ब्योहार विभीषन कह्यौ। रावन लात सभा ज्यों बह्यौ ॥
तातैं सरन गुसाईं पाइ। ताकि सरन अब उबरयौं राइ ॥ ३२ ॥
धनि हों अलभ लाभ जिहि लह्यौ। राघौ सरिस विभीषन कह्यौ ॥
खिनकु सुनत मौंगे रहि राम। पुनि लछिमन सौं बोलतु ताम ॥ ३३ ॥
सागर नीर बंधु लै आउ। थपौं विभीषन लंकहि राउ ॥
आनि नीर सिर छींटा दियौ। करि अभिषेक तिलक तब कियौ ॥ ३४ ॥
माथैं कर धरियौ रघुराइ। मनौ छत्र सिर सुषमा पाइ ॥
आसिषु चाहि चरन गहि रह्यौ। निज मुख राम लंकपति कह्यौ ॥ ३५ ॥
जौलौं धरनि नाग कै सीस। जौ लौं गगन सूर ससि दीस ॥
जोलौं कथा राम व्यौपरहिँ। तौलौ राज विभीषन करहिँ ॥ ३६ ॥

॥ इति श्री रामायने विभीषन अभिषेको नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विलम्यौ खिनकु विभीषन राउ । बोले राघव करहु पसाउ ॥
बाँधत सेतु न लावहु वार । ज्यों कपिदल सब उतरहि पार ॥ १ ॥
सगर तिहारौ पुरुखा भयौ । तिहिँ खनि सेतु समुद मिरमयौ ॥
तातैं लहियौ सागर नाम । या पहँ मारग माँगहु राम ॥ २ ॥
इतनौ कहत विभीषन मंतु । मंत्री बूझैं सकल तुरंतु ॥
तब कपि राजा भाख्यौ एह । आपुन राघव धरनौ देहु ॥ ३ ॥
ताके बचन राम मन धरे । समुद्र तीर कुस संथर करे ॥
राघव सोहत तहाँ वईठ । जनुक कुंड वैसंदर दीठ ॥ ४ ॥
उवौ सूरु निसि गई बिहाइ । राघौ लखिमन लियौ बुलाइ ॥
देखहु गारौ सागर तनौ । रूप न दरसावत आपुनौ ॥ ५ ॥
मेरौ वैरी पेट समाइ । अब मो सरिस रह्यौ गरुवाइ ॥
अति संभई पुरुष जो होइ । जीवत वींर मरैं वर सोइ ॥ ६ ॥

श्लोक

क्षिमाबंतं समायुक्तं, मामयं वरुणालयं ।
असामर्थं विजानीया, ध्रिगुमां याति जीवनं ॥
चापयामानया सोपि, मृिते सरन सेवया ।
सरेणशोषयिष्यामि, पश्चाजांति दिवंगता ॥
दंभोलिताछोरने को अंभोनिधि हतं मया ।
भस्मीकुरुस्थ लंकारि, सागरस्य विनाशनम् ॥

मैं राखी सागर की कानि । मोहिँ रह्यौं वह कायर जानि ॥
ताकी बुद्धि हँसै संसार । करौ जु नीच जोग उपगार ॥ ७ ॥
सागर जल जारन के काज । बज्र समान तिनहि गुन गाज ॥
मैलौ तानि समुद संघरौं । जलनिधि सोखि धूरिनिधि करौं ॥ ८ ॥
लछिमन धनुष वान लै आउ । हौं मानव सागर भरियाउ ॥
सोखत नीर न लावहुँ बार । बंदर जाहिँ पयादे पार ॥ ९ ॥
इतनौ कहि तब धनुहर लयौ । बान अनेकन सागर हयौ ॥
उठौ धूम आकासहँ जाय । जलचर बहुत मरे अकुलाइ ॥ १० ॥
उसटि गयौ जल जोजन बीस । सहि न सकी राघव की ईस ॥
अगिनिं बान गुन कियौ रिसाइ । देखि समुद आयौ अकुलाइ ॥ ११ ॥
पुरुष रूप अति रतनन जरचौ । आवत दृष्टि राम की परचौ ॥
नासिर मुकुट रतन उर हार । कुंडिल श्रवननि लसत उजार ॥ १२ ॥
नदी नवासी नवसौ साथ । आइ राम कहँ जोरे हाथ ॥
हौं कृतघ्न सुनि मो सहँ बात । दैयत जितैं जबहि तो तात ॥ १३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवनि पास बचन जब लह्यौ। सु अब सुनौ सागर यौं कह्यौ ॥
राजा दसरथ माँग्यौ एहु। एक पुत्र मेरे घर देहु ॥ १४ ॥
सूर सबल अति धरमी सोइ। जातै मोकहँ कीरति होइ ॥
इतनौ सुनि तब देव कहंत। चार पूत ह्वै हैं वलवंत ॥ १५ ॥
जेठै तिनहिँ महावल होइ। सागर कीरत तारहि सोइ ॥
यह बरु लै दसरथ तब गयौ। तब वह मित्र हमारौ भयौ ॥ १६ ॥
हौं भैया करि मान्यौ सोइ। तू मोहिँ जानि पिता सम लोइ ॥
सुनि राघव यह आदि सहाउ। शत्रु मित्र जो एक सुभाउ ॥ १७ ॥
दुसह हिलोर सुभर जल भरचौ। सुर नर असुर जात नहिँ तिरचौ ॥
यह न होइ मेरौ अपराधु। राघव रहत सु सदा अगाध ॥ १८ ॥
रावन नाखि सिया लै गयौ। यह मो एकु अलच्छनु भयौ ॥
अब तुम कोपि कियौ संधानु। निफल न जाइ राम कौ बान ॥ १९ ॥
पच्छिम उत्तर बीच जु देस। छाँड़हु अग्निवान हरि केस ॥
सागर वचन बान छाँड़ियौ। जारि सुनीर मूलकि कियौ ॥ २० ॥
भयौ राम कह जै जैकार। कह्यौ भेद इमि उतरहु पार ॥
बंदर एक आहि नल नाम। आइसु ताहि देहि जो राम ॥ २१ ॥
बाँधै मोहिँ समुद यौं कह्यौ। सागर पास भेद यह लह्यौ ॥
उहि बिसकर्मा यह वर लहचौ। तब नल रामचंद्र सौं कहचौ ॥ २२ ॥
मेरे पिता मोहिँ वर दियौ। सो अब करौं जो चाहौ कियौ ॥
सुनत बचन तब हरषे राम। नल कहँ आइसु दीनौ ताम ॥ २३ ॥
बाँधहु सेतु न लावहु वार। अरु सुग्रीव जनावहु सार ॥
दुइ सै चाल छंद चौपही। आगम हेत विष्नु कवि कही ॥ २४ ॥
विभीषन आगम कौ हेतु ?। कहिहों ज्यों अब बाँध्यौ सेतु ॥
विष्नुदास कवि कह्यौ बखान। पढ़त सुनत गंगा अस्नान ॥ २५ ॥

इति रामायने सुंदरकांडे सेतुबंधननाम सर्गः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निसुनौ विजय इंद्रजित तनौ। बिचलायौ बंदर दल घनौ॥
करयौ कपट माया संग्राम। नाग पास जिहि बाँधे राम॥ १॥
आइ विभीषन रामै मिल्यौ। सागर बाँधन कपिदल चल्यौ॥
सबै साथ उठियौ कहि राइ। वन महँ वीर पहूँचे जाइ॥ २॥
सुनि सुग्रीव आप धाइयौ। पर्वत एकु हाथ करि लियौ॥
सव मिलि तरुवर सिला उपारि। लै आए सायर की पारि॥ ३॥
धाए बनचर रीछ लगूँर। हाथनि तरुवर लियैं समूर॥
पूरि चले बंदर मयमंत। महाकाय हरि से बलवंत॥ ४॥
पाहन काठ न दीसति संधि। सौ जोजन ऐसैं लिए बंधि॥
चौदह जोजन प्रथम बखानि। दूजे दिन छत्तीस समान॥ ५॥
तीजे दिन पचास पूरियौ। चौथे दिन सागर बंधियौ॥
सौ लामौ दस की चकराइ। देखि राम मन माँझ सिहाइ॥ ६॥
बंदर उतरन लागे पार। करहिं देवता जै जै कार॥
पूरि चले बंदर वर बीर। महाकाय गिरि मान सरीर॥ ७॥
आगैं पांछै वांय दाहिनै। अंतरीछ ह्वै चलियौ धनै॥
हनुमत कंध राम आरुहे। अंगद लछन वीर भरु वहे॥ ८॥
आध मुहूरत नाक्यौं सेतु। मारि मेल्यौ लंका कौ खेत॥
तबहिं समुद्र इंद्र सन कह्यौ। राम न रावन जै हैं वह्यौ॥ ९॥
यह राजा वह तपसी आहि। कैसैं समसरि पूजति ताहि॥
पुनि लैंगौ मंदिर आपुनै। दिव्य वान तिहि दीन्है घनै॥ १०॥
दिव्य वस्त्र दिव्यै आभरन। रामहिं दै स्तुति लागौं करन॥
सागर थापे लखमन राम। सबनि सहित कीन्हैं विश्राम॥ ११॥
भा परभात कटक महँ गये। बंदर देखि अनंदित भये॥
जै जै सवद भयौ कहराउ। सुधि पाई तव राखस राउ॥ १२॥
देखौ कपिद उतरो पार। रावन हकरायौ परिवार॥
मेघनाद सौं रावन कह्यौ। इसौ सुचित्त न गढ़पति रह्यौ॥ १३॥
बंजर कटक होय अति गाज। सुनत पुत्र मोहिं उपजति लाज॥
मेघनाद सुनि विनवत सेव। बंदि करे मैं सुर नर देव॥ १४॥
मानुष रूप ते लछिमन राम। मोसौ क्यों करि है संग्राम॥
यह सुनि तव बोल्यौ अतिकाय। सैंहथ राजा कियौ उपाय॥ १५॥
इतनौ तव न विचारह्यौ हिएँ। मीच रूप सिय आयौ लिएँ॥
यह सुनि रावन उठयौ रिसाइ। सारन सुकहिं लिए बुलाइ॥ १६॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दीऊ मंत्री जाहु तुरंत । लै आवहु सेना कौ अंत ।।
कितनौ सयन कौंन के साथ । आयुध कहा लिए तिन हाथ ।। १७ ।।
आपुन बंनर रूप करेहु । बेगि आनि मो आइसु देहु ।।
आपु रूप वनचर के भए । सारन सुक्र सैन महँ गए ।। १८ ।।
सब सेना देखी निकुताइ । ताहि संख्य कछु कहन न जाइ ।।
देखत सेत बंध के तीर । विभीषनउ लखे वर वीर ।। १९ ।।
तिन गहि राम पास लै गयौ । पहिचानइ तब ठाढ़ौं भयौं ।।
बहुत बादु राघौ सन कियौ । रावन जोग अधिक बल दियौ ।। २० ।।
तू जनि गर्वँ नाख्यौ नीर । तिरवौ रावन उदधि गंभीर ।।
ता तिरि रघुपति जैहौ पार । तौं बदिहौं तुम तीरन दार ।। २१ ।।
सूरज जाकैं तपै रसोंई । देव बंदि जानतु सब कोइ ।।
जागौ वगरु बुहारै वाउ । ता सामुहैं धरौ क्यों पाँउ ।। २२ ।।
सारनि बचन सुनै रघुनाथ । कही वीर यह साँची वात ।।
तुम मति भूलो जानै देव । पलक माहिं सब करिहौं छेव ।। २३ ।।
इतने बचन कहे रघुनाथ । समदे दूत हनू दै साथ ।।
जो कोइ बीचन डारै मारि । आवहि दूत लंक पैसारि ।। २४ ।।

रामचंद समुदाए दूत । गए सो रावन निकट सु सूत ।।
राजा बैठो जहाँ अवास । तहाँ बुलाए अपने पास ।। २५ ।।
कहि अब बात जु पूछत तोंहि । क्यों दल देख्यो कहि अब मोहि ।।
तब मंत्री बोल्यौ सिर नाइ । सांई संख्या गनी न जाइ ।। २६ ।।
पौंरुष पार न लहौं कहंत । कोरि तितीस देव सुत संत ।।
जज्ञ नाग किन्नर अवतार । राम लखन दो ऊकरतार ।। २७ ।।
इतनौ सुनि दसकंधर हँस्यौ । सारनि सुक्र हियैं डर बस्यौ ।।
को अति बली सो मोहिं सुनाउ । जो रन काल्हि करे भरियाउ ।। २८ ।।
हाथ पसारि दिखावतु ताहि । वह दिखि हनू पवन सुत आहि ।।
अंगद नाम जो बलि कुमार । सो जयंत बंदर अवतार ।। २९ ।।
औंरै बहुत बताए ताहि । सूरज सुत कपि राजा चाहि ।।
जामवंत रीछन कौ राइ । ब्रह्मा आप अवतरचौ आइ ।। ३० ।।
बिसुकम निल वरुन हैं नील । को गनि सकत इनहिँ गुन सील ।।
और कहत को पावहि पार । ए कपि सब देवन अवतार ।। ३१ ।।
सारन सब बंदर दिखराइ । तब लाग्यौ बिनवन गहिँ पाँइ ।।
अजहूं नाहिन बिनस्यौ काज । सीता आफि[पि] करौ सुखराज ।। ३२ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुक्र कहै साँई मन धारि। वह सो हनू को राखस मारि॥
पुरी प्रजारौ बाग उपारि। अखै कुंवर जिहि लीन्हौं मारि॥ ३३ ॥
याकौ जनम जवहि महि भयौं। तवहि फाँनि सूरज पहँ गयौ॥
तीन सहस जोजन परिमान। तरहौं छाँड़ि गयौ तब भान॥ ३४ ॥
भूठौ गर्व न हियरा धरहु। नर बंदर लखि आनँद करहु॥
सहसवाँह नर बंदर वरी। लै अवतार माया उन करी॥ ३५ ॥
अवही राम पलटि घर जाइ। सीता लै मिलिए सुनि राइ॥
मेरे वचन धरहु तिज कान। नातर दस मुख परौ असान॥ ३६ ॥
जब यह बात सुनी रावनै। मंत्री धका दिवावै घनै॥
ए कायर घालहु निकसाइ। यो कहँ डरहि सुनावत आइ॥ ३७ ॥
सार्रानि सुक्र निकासे मारि। सार दूत तब लियौ हँकारि॥
दल देखन पठयौ जु बहोरि। कैसे बली रहैं कै कोरि॥ ३८ ॥
सारदूल चलियौ सिर नाइ। ता खिन कटक पहूँचौ जाइ॥
दृष्टि विभीषन की जब परचौ। कियौ कोप राखस वह धरयौ॥ ३९ ॥
मारयौ मुहँ मुहँ त्रास दिखाइ। राम पास तव गहि लै जाइ॥
पूछत राम दूत यह कह्यौ। रावन जीति देव जम गह्यौ॥ ४० ॥
जाकै डर डोलति अति धरनि। करौ कहा नर वानर वरनि॥
सका मेघ तिहि सूरज स्वारु। दिन प्रति पवन बुहारै द्वार॥ ४१ ॥
सूर चंद्र तिनके मनुहारि। मीच वाँधि पलिकांतर डारि॥
जासों क्यौं करिहौ भरियाउ। मानौ बात तपिन के राउ॥ ४२ ॥
मंत्री समुभावत नित ताहि। मानतु नहीं लंकपति जाहि॥
तातैं तुम सों कहिए देव। हम तुम संधि होइ इहि छेव॥ ४३ ॥
तुम काटी सुपनेखा नंक। वह जानकि हर लई निसंक॥
सागर बाँधि करी तुम बाट। तुम वंधव को कीन्हौ ठाट॥ ४४ ॥
तातैं तुम यह मनहिँ बिचारौ। तुम भृगु-सुत सों लियौ कुठारौ॥
सो दीजे सीता लै राम। सुख करि पहुँचौ अपने धाम॥ ४५ ॥
तब राघौ बोले विसधाई। फरसा तुम का करि हौ भाई॥
रावन राज परिहरै लंक। वन वसि मान न बैरीं संक॥ ४६ ॥
तहाँ कौन फरसा सों काम। सारदूल सों भाखत राम॥
औरौ संधि होइ किहि रीति। तुम नृप हम सों करत जु प्रीति॥ ४७ ॥
भूमि लई छत्रिन हति राम। दीनी द्विजननि उबरी ताम॥
पुनि बावन बलि नृप सौं मागि। दियौ स्वर्ग इंद्रासन त्यागि॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बलि बाँध्यौ तिहि दियौ पताल। तुमहिँ मिलत का देहिँ भुवाल ॥
हती लंक यह सुबरन मई। सो हम मिलत बिभीषन दई ॥ ४९ ॥
तातैं तुम अब फिरि घर जाइ। रावन सौं कहियौ समुझाइ ॥
चहै जियौ तौ बन पगु धारि। नातर छिन महँ डारौं मारि ॥ ५० ॥
कहि मंत्री समदे रघुनाथ। हनू दयौ पहुँचावन साथ ॥
रावन पास गए सुख पाइ। बूझन कौं नृप लिए बुलाइ ॥ ५१ ॥
तासौं वचन सु मंत्रिय भनै। बंदर कटक पार नहिँ गनै ॥
सब ब्योहार तहाँ कौ कह्यौ। मारौ बाँधि दूत यह लह्यौ ॥ ५२ ॥
ए नर बंदर बलो अपार। सागर नाकत भई न बार ॥
हरि अवतरियौ लछमन राम। सीता आफित [अर्पि] जौ संग्राम ॥ ५३ ॥
जो अब राजा संधि न करइ। राघव-समर बूड़ि कुल मरइ ॥
लंक विधंसि सिया बल लेइ। बंदि-मोक्ष सब देवनि देइ ॥ ५४ ॥
बोलत रावन मन बिसमाउ। बंदर कौन पुत्र कहि नाउ ॥
जिन सागर बाँध्यौ खिन माहिँ। बंदर जात कहन क्यौं जाहिँ ॥ ५५ ॥
मंत्री कहत सुनत तब राइ। कपि सुग्रीव सबनि कौ साँइ ॥
अंगद कुँवर बालि को पूत। पवन नंद कहिए हनुवंत ॥ ५६ ॥
बिसुकर्मा-दन नल कहौ। जामवंत तनु ब्रह्मा लहौं ॥
बंदर नाम प्रहस्त जु जाहिं। धर्म-पुत्र कहिए नृप ताहि ॥ ५७ ॥
सतवलि बरुन अग्नि-सुत नील। ईनकौ क्यों बरनौ गुन सील ॥
द्विविद मयंदु अस्विनी कुमार। इनसौं बंदर कहत गँवार ॥ ५८ ॥
पंच पुत्र गुरु मंत्री तनै। तेऊ रावन सुनि दुख सनै ॥
तिनके बल को संख्य लहंत। नाम बखानि सुमंत्रि कहंत ॥ ५९ ॥
गंध मर्द गजवाउ गवाखु। पाँच वीर दल जीतत लाख ॥
देव पुत्र ए तेतिस कोरि। तजि कुबुद्धि सीता दै छोरि ॥ ६० ॥
इतनौ सुनि तब लंका राउ। सिया छलन कौ कियौ उपाउ ॥
बिद जच्छ कौं आइसु दियौ। माया सीस राम कौ कियौ ॥ ६१ ॥
रावन कपट बुद्धि तब करै। लै सिर जानकि आँगैं धरै ॥
देखत ताहि मुरछि धर परी। चेती तब तिय अति भय भरी ॥ ६२ ॥
हा हा राम, राम ! हा ! राम। सिय संतपित सूखि सर ताम ॥
मैलौ कंथरु अँसुवनि भींन। सोचति बाल दई दुख दीन ॥ ६३ ॥
तब लालच करि रावन कह्यौ। आजु राम लछिमन मैं वह्यौ ॥
बंदर मारत गए भगाइ। अब करि राज मोहि घर आइ ॥ ६४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतनौ सुनि सीता लरखरी । जो तू नीच भयौ अति बरी[ली] ।।
ज्यों अब आयौ रामहिं मारि । त्यों अब सीस खड़ग मो सारि ।। ६५ ।।
सरमा नाम राखसी बाल । बात कहत हँसियौ ततकाल ।।
माया सीस न मानहु संक । रामचंद्र घेरैं गढ़ लंक ।। ६६ ।।
सुनि डरप्यौ रावन मन माँहिं । उसटि बैठियौ तरुवर छाँहँ ।।
बूझत मंत्रि भयौ संदेह । कहौ किसैं गढ़ राखत एह ।। ६७ ।।
एक विभीषन तनी कुमारी । दूजैं सरमा राखस नारी ।।
त्रिजटा तीन सु हित मन गहै । भली बात जानकि सहँ कहै ।। ६८ ।।
मंत्री राई मंत्र जब भयौ । दै दलबल मंत्री पर ठयौ ।।
सुहर[सूर]असंखि कहन नहिं जाइ । दक्खिन पौरि पठाए राइ ।। ६९ ।।
और महोदर पारु सु बरी । दक्खिन पौरि गए सुर अरी ।।
सुक सारनि उत्तर के बार । मेघनाद पच्छिमहिं कुमार ।। ७० ।।
विरूपाक्ष की सैन अथाह । बहु विधि वीर रहे सजि माह ।।
गज चौपास फिरत तब धाइ । मालवंत विनयौ तब आइ ।। ७१ ।।
तिहिं तो काँख वाँधि गहि लियौ । राम सु बालि एक सर कियौ ।।
सहस बाहु रन जीत्यौ तौहि । गति काटी मति हीनौं जोहि ।। ७२ ।।
वे मानुस वे बंदर जानि । मीच बुलाई सैंहथ आनि ।।
तातैं राइ कुदारी कंधि । सीता आफि[अर्पि]करत किन संधि ।। ७३ ।।
रावन सुनी न बात सुहाइ । मालवंत लागी बुढ़वाइ ।।
वा तपसी की करत भटाइ । मेरे कर्म बिसारत आइ ।। ७४ ।।
यह सुनि रावन उठौ रिसाइ । राम विभीषन लियौ बुलाइ ।।
बल छल मंत्र तिसी अब कीजै । जैसैं भेद लंक कौ लीजै ।। ७५ ।।
सुनत विभीषन बोले बैन । मैं लंका पठए सुधि लैन ।।
चारौं पैठे चारिहु द्वार । लै आए लंका की सार ।। ७६ ।।
अनल ह················ति । दिन राति ।।
पहिरै कवच···········नी । रहत पौरि राखस बल धनी ।। ७७ ।।
कछु अंत सेना कौ लह्यौ । सो रघुनाथ सुनौं अस कह्यौ ।।
जब कुबेर सौ विग्रह भयौ । रावन सामुह जूझन गयौ ।। ७८ ।।
जुरे महारथि जे परधान । साठ लाख रावन उनमन ।।
रथ दस सहस जुरे मय मंत । पाइक जुरियौ कोटि अनंत ।। ७९ ।।
जो दस सहस तुरी असुवार । सो सब रावन अधिक जुझार ।।
बारह लाख हजार पचास । अैसी दल प्रति पौरि निबास ।। ८० ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अैसौ करि पौरिन कौ साज । आपु करत लंक पति राज ।।
अब तुम कपि दल आइसु देहु । रावन मारौ' नही सँदेह ।। ८१ ।।
उद्दिम करहु न लावहु बार । घेरौ जाइ लंक कौ द्वार ।।
इतनौ बचन विभीषन कह्यौ । सुनि राघव आनद मन लह्यौ ।। ८२ ।।
ऊठें राम लै धनुहर हाथ । लौनै बोलि सबै कपि नाथ ।।
पौरिनि कपि दल पठयौ राम । तिजकौ धौं कहिए गुन-नाम ।। ८३ ।।
आयुन पर्वत चढ़न सुमेल । साजि चल्यौ बंदर दल ठेल ।।
लंका देखन कौ सतु कियौ । साथ विंभीषन राखस लियौ ।। ८४ ।।
राम जबहिं पर्वत चढ़ि गयौ । देखत लंक सूर्य अंथयौ ।।
जोजन तीन सु गिरि पर ठाँउ । ठौरु न वच्यौ देइ जहँ पाँउ ।। ८५ ।।
ता चढ़ि राम विजोयौ पासु । सागर त्यों दीसतु आकास ।।
चंद तार झाँई छवि देखि । सूर अंथयौ कौ करि लेखि ।। ८६ ।।
राति बसे पर्वत की पीठि । पुनि प्रभात उठि लंका दीठि ।।
बंदर सयन करत अति गाज । तरुवर सिल सब के कर साज ।। ८७ ।।
तिहि ठाँ रावन की अमराई । चहँ दिसि कुसुम सुगंध सुहाई ।।
बरनत बिरछनि को लहि पार । वनु देख्यौ वानर परिवार ।। ८८ ।।
देखत भव मिलि उद्दिम कियौ । इक इक तरु सबहिन गहि लियौ ।।
आइसु लै सुग्रोवहि जोग । लंकहि चाहि चल्यौ कपि लोग ।। ८९ ।।
इक सुबरन मय देखि अवास । जनु कु सिखर पर्वत कइलास ।। ९० ।।

श्लोक

तंरत्नं पूर्वं वहि संनिधानं । प्रसाद पालं घिरलक्कृतं च ।।
पुरी महायाति कपाल युक्तं । सादारथिं दृष्टि सहा वलेन ।।
इति श्री रामायने सुंदरकांडे लंका अवलौकनं नाम सर्गः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सगुन देवि सुख उपज्यौ राम। लखन अंक भरि लीनौ ताम॥
तैंसौ राम हियैं सुख भयौ। मानौ रावन रन अव हयौ॥ १ ॥
देखि लंक गिरि धस्यौ तुरंत। आगें लखन कियौ हनुमंत॥
और बलो जो बानर भले। ते सब निकट पछौहै चँले॥ २ ॥
चहुँ दिसि दस जोजन चकराई। तुरत लंक तिन घेरी आई॥
ते बंदर पर्वत आकार। गर्जत काल तिन मनौ असरार॥ ३ ॥
उत्तर लखन राम दोऊ वीर। और बहुत कपि दल की भीर॥
पूरब नील अवर कपि घनै। दच्छिन अंगद कपि अनगिनै॥ ४ ॥
हनू और बंदर दल दार। इन रोक्यो पच्छिम कौ द्वार॥
राजा आपु माँझ दलु लह्यौ। ता पर असुर विष्नु कवि कह्यौ॥ ६ ॥
जुत्थ कोरि अधिपति छत्तीस। लहौ तिनहि बल नृपति सरीस॥
साज विभीषन कहिये जोरि। तिन पौरिन गनि राखे कोरि॥ ६ ॥
एकति दस गज बल बल बंड। एकति सहस तौल कर दंड॥
कोऊ सौ गज कै उनमान। तेजवंत जनु दूजौ भान॥ ७ ॥
एकनि अति बल सहिए काइ। बैसाँदर जनु पवन सहाइ॥
दुहुँ दल बेढचौ लंक पगार। पवन न तहाँ लहत पैसार॥ ८ ॥
ऐसैं लंका परी पुकार। घेरे राम आइ चहुँ द्वार॥
बंदर कोटि महाकपि साथ। प्रबल बली तिन तरवर हाथ॥ ९ ॥
कपि गरजे जनु भादौं मेह। सकल निसाचर भयौ सदेह॥
रावन मन अति उपजी संक। स्यौं मंदिर थरहरियौ लंक॥ १० ॥
रूंधी लंक देखियौ राम। राजा बोलि लियो तब ताम॥
यौं बोल्यौ दसरथ कौ पूत। होइ पाप जो जाइ न दूत॥ ११ ॥
सुनि जय सबद सबनि मिलि कियौ। बालि नंद कहँ आइसु दियौ॥
तुरत वीर तुम लंका जाइ। हौंजु कहौं सो कहौ सुनाइ॥ १२ ॥
राखस राज्य परिहरहु लंक। छाँड़ि जाहु बन बनि निरसंक॥
तू रावन सामुहौ पताल। नगर विभीषन थाप्यौ भुवाल॥ १३ ॥
सीता आफि[अर्पि]चरन अनुसारि। छाँड़ि राज लंका परिहारि॥
मति भूलै तू परिजन गर्व। त्रन नल ज्यौं त्यौं जारौं सर्व॥ १४ ॥
राखस होन सकल धर करौं। तो भुज बीस सीस दस खुरीं॥
जो द्वै महँ उत्तम गति काजु। सो उत्तर कहिए नृप आजु॥ १५ ॥
इसे सँदेस राम जब कहे। सिर धरि अंगद तब सामुहे॥
नाइ सीस उपयौ आकास। पहुँच्यौ रावन तनै अवास॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रावन मंत्री सहित बईठ। आँगैं ठाढ़ौ बंदर दीठ ॥
सब ही सभा अचंभौ भयउ। आपुन राजा बूझन लयउ ॥ १७ ॥

वस्तु-बंध

कहि नाम बंदर कवन देसह किहि काह मंदिर महँ प्रवेसह ॥
जिहि जारि लंका गयौ बहुरी आइयौ तिहि वेषह ॥ १८ ॥
सुर नाग नर गंधर्व सर्वह धाइ भुजवल हौं जिन्यौ ॥
कहि वीर कौन बताइ अबही मोहिँ तू तृन सम गिनौ ॥ १९ ॥

चौपही

तब रिस लागी अंगद भन्यौ। जिहिँ भुवाल तेरौ बल जिन्यौ ॥
तासु पुत्र मैं अंगदनाम। कहत संदेस पठायौ राम ॥ २० ॥
अब तू राम चरन अनुसरहि। कै वन बस दससिर परिहरहि ॥
द्वै महँ जो भावै सु बिचारि। ज्यों रघुवंस न आवत गारि ॥ २१ ॥
ऐसौ बचन कह्यौ मो ईस। सीता परिहरि कै दस सीस ॥
रिस करि बोल्यौ लंका राउ। कहि को बाल तात तोहि नाउ ॥ २२ ॥
मूरख रिस जु लगावत मोहि। गहि पाथर पछराऊँ तोहि ॥
जिहि तोहिँ काँख दाबि गहिलयौ। फिर सब धरनि अरघ रवि दयौ ॥ २३ ॥
जब प्रनाम देवनि कौं कह्यौ। तब तू काँख निछुटि भुव परचौ ॥
दस सिर बीस भुजा जब दीठ। हँसत हँसत लै घरह पईठ ॥ २४ ॥
मो खेलन की पुजई आरि। रे रावन कत भूल्यौ बालि ॥

दोहा

मन मैलौ मुख हँसि मिल्यौ, अंगद कहि कुसलात।
अब मित्रापन जानि बो, सुख नृप बालि सु गात ॥ २५ ॥
तबहि तरकि अंगद यह कह्यौ। रूस्यौ राम कहा सुख लह्यौ ॥ २६ ॥
तिन तें होइ न अवर गँवार। जी चाहै परिहरि परदार ॥
काटि सीस तैं पूजा ठए। संकर दीन्हें बहुरौ भए ॥ २७ ॥
एक बार रघुपति सर खुरैं। तौ दस कंधर कंठ न जुरैं ॥
तिहि कारन हितु मानत मोहिँ। रावन कहन पठायौ तोहिं ॥ २८ ॥
जहाँ जहाँ लंकापति फिरे। बालि राइ गुन तहँ तहँ तिरे ॥
अनजानत तुम आनीं सियो। आदि पुरुष सौं विग्रह कियो ॥ २९ ॥
लछिमन क्रोध अधिक अनियार। जमपुर जैहौ स्यौं परिवार ॥

रावनोवाच

प्रथम जिनी[ती]तारुक सो नारि। पुनि मारिचि रिषि डारचौ मारि ॥ ३० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बंदर वालि बान उन हयौ। कब उन जूझ सु हर सों जयौ ॥
ईसुर धरैं भए बहु काल। लाजनि परिहरि गए भुवाल ॥ ३१ ॥
उहि सीता लगि लालच कियौ। धुन्यौ धनुष रघु द्वैटुक कियौ ॥
विरही राम विभीषन दीन। दुवनि सोच लछिमन बल हीन ॥ ३२ ॥
करै सुग्रीव वालि कौ सौगु। कहि अंगद को जूझन जौग ॥
चपल नील नल ताहू चाहि। आहि सुखैन गनत को ताहि ॥ ३३ ॥
बूढ़ौ जामवंत अरु तार। इन कह आयुध गहहि गँवार ॥
गंध मरद बंदर केसरीं। दुविद कुमुद ए चारउ बरी ॥ ३४ ॥
तिन कहँ ध्रनु गुन देहि जु वान। कहि अंगद तिहि कवन सयान ॥
जिते तिहारे कपि बल जाति। एक्कै राखस सकतु निपाति ॥ ३५ ॥
जंबुक जूथ एक केहरी। ताकौ का करि हैवे लरी ॥
सुनि रावन अंगद यों कहइ। तो सव कुल इक बान सो वहइ ॥ ३६ ॥
दिष्ठि जु परत करत संग्राम। एकहि बान निपाततु राम ॥
इतनै सुनि अंगद के बैन। कोप भरे रावन के नैन ॥ ३७ ॥
कठिन वचन सुनि को पुर रह्यौ। बंदर मारहु रावन कह्यौ ॥
धाए राखसवीर न टर्यौ। तिन सब मिलि अंगद दृढ़ धर्यौ ॥ ३८ ॥
तब नहिँ हियौ संक तिहिँ तनौ। चाहहि बल निरखन आपुनौ ॥
राखस लागि रहे ता पास। स्यौं मंदिर लै उड़्यौ अवास ॥ ३९ ॥
लै उपयौ ता सजड उपारि। पाँ लागे ति गिराये झारि ॥
मंदिर पर्‍यो लंक महँ डारि। खूंदीं बहुत राखसी नारि ॥ ४० ॥
रावन देखि अचंभौ कियौ। मंडल सिखर बैठि गाजियौ ॥
ठोकि कंध बल कियौ बहूत। हौं अंगद सुरपति सुत पूत ॥ ४१ ॥
राघव आयसु दियौ न मोहिँ। तातैं रावन छाँड्यौ तोहिँ ॥
राखस मारि गिराइ अवास। चहुँ दिसि जोवत नृपति उदास ॥ ४२ ॥
अंगद उपय राम पहँ गयौ। रावन मन चिंता चित दयौ ॥
आइसु दीन्हौं लिए हथ्यार। रहे पूरि कपि लंक पगार ॥ ४३ ॥
हाथ तरुवरनि लीन्हैं चूरि। बंदर लंक रहे भरि पूरि ॥
अैसैं बेढ़ि रहे चहुं पास। जैसैं लहै न लेन उसास ॥ ४४ ॥

तस्मिन्महावीर वरं विधत्ते, कोलाहलं राक्षस राजधानीं ।
प्रगृह्य रक्षांसि महायुधाना, जुगं तदाताइव सोबिचिंत्य ॥

॥ इति श्री रामायने अंगद लंकागमनं नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

रूधी लंका मंत्रिन भनी। उपज्यौ क्रौध राउ जब सुनी ॥
दुगुन साज पुनि गढ़ कौ कियौ। प्रति पौरिनि राखस बलु कियौ ॥ १ ॥
गिरि तरुवर सब कोटि पगार। चढ़े वीर दीसत इक सार ॥
देखत डरपि घरी द्वै रह्यौ। पुनि रावन धीरंतन गह्यौ ॥ २ ॥
धूरि सिला तिन तरुवर काटि। चहुँ दिसि खाई घाली पाटि ॥
पूरी खाई करी निसंधि। गरज करत कपि ठोकहिँ कंध ॥ ३ ॥
आयौ राम ईस अवतार। सबै असीस देहिँ कपि दार ॥
कर गहि गदा विभीषन गयौ। रामभद्र पहँ ठाढ़ौ भयौ ॥ ४ ॥
नमस्काल आँगैं ह्वै कियौ। वह पुनि चाहत आइसु लियौ ॥
बार बार कहियौ तिन नाम। बंदर जिते जुरे संग्राम ॥ ५ ॥
रावन हँकरायौ परिगह्यौ। दुहुँ दल जूझ बहुत भर लह्यौ ॥
ते सजि आए राखस बली। समुद नीर लहरी जनु छली ॥ ६ ॥
वे उन, वे उन वागतु मार। राखस बंदर होत संघार ॥
कोऊ तरुवर पाहन हनै। मारत आन राम की भनै ॥ ७ ॥
जहाँ भिरत अंगद सुग्रीव। तिंहि ठाँ युद्ध प्रबल तिन कींव ॥
वे आयुध लीन्हैं मयमंत। ये जूझहिँ तरुवर नख दंत ॥ ८ ॥

श्लोक

वनौकसां तत्र तुसं निनादे। लंकापतिं नावरसावराणां।
प्रक्षालि तारा रवि कोटि नादं। द्वाभ्यां महाभ्यांमिवसागराणाम् ॥

राखस सयल पचारे राइ। द्वद्व जूझ भयौ ठावहिँ ठाँइ ॥
भिरे प्रजंघ अवरु संपाति। वे बंदर वे राखस जाति ॥ ९ ॥
नील निकुंभ पतनु नल ठाइ। विरूपाक्ष लछिमन समुदाइ ॥
बंदर एक महोदर कह्यौ। ता सह बज्र मुष्टि रन सह्यौ ॥ १० ॥
पर तापन राखस गज अरे। तहाँ सुखेन महोदर लरे ॥
देवांतक सौं भिरचौ गवाखु। तीसर सरभ सरनि अभिलाखु ॥ ११ ॥
सारनि निरिषहि उपज्यो जूझि। वान सिला दिसि विदिसा सूझि ॥
कुमुद अकंपन बाग्यौ मार। धूमनयन केसरी जुझार ॥ १२ ॥
जूझहिँ जामवंत मकराख। वरसहिँ धारन बान असाख ॥
बंदर घूम निसाचर कुंभ। दुहूँ भिरे जनु चंडी सुंभ ॥ १३ ॥
नारंतक रावन कौ पूत। भयौ पतन सह मारुव दूत ॥
सति बलि सरि सेहँ भिरचौ विजोह। जनु छोकरि सौ रोर्‌यौ सोह ॥ १४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रावन मंत्री सूक रिसान। वे गद सौं बेध्यौ दस बान ॥
गंध मर्दं कपि बली अपार। तासौं भयौ परशूसौं मार ॥ १५ ॥
राखस चारि महारथि लरे। राम प्रहार जूझि रन गिरे ॥
चारि बान चारौं के सीस। रावन गिरत सुनैननि दीस ॥ १६ ॥
अग्नि केतु जग्य केतु जुझार। रस्मिकेतु सप्तकेतु अपार ॥
जूझत जहाँ कपिन कौ राउ। को बरनैं ताकौ भरियाउ ॥ १७ ॥
राखस सयन बहुत खै लिए। रन भू पिछले पाँइन दिए ॥

छंद

हय बंदर राखस संघारहिँ राखस परे अनंत ॥
हय हीसत गैयर गुँजारत होत सादु भयमंत।
उठौ निनाद सादु रन दुसहो सुर नभ भो अकुलान ॥
आपुन लरत विभीषन देख्यौ रावन अथिक कुपान ॥ १८ ॥
द्वंद्व जूझ राखस कपि भयो। लोपि अकास सूर गड़ि गयौ ॥
दू महँ एक नहीं मुरि जाइ। बहुतक वीर भिरत समुहाइ ॥ १९ ॥
कारे राखस कारी राति। अति कारी रीछन की जाति ॥
कछू न सूझत अति अँधियार। ठेल ठेल अति करहि सुमार ॥ २० ॥
कनक सनाह रतन बहु जरे। कंठहार अंगुलि मूंदरे ॥
मुकुट उदोत करै तिन सीस। मूल तेज जनु पर्वत दीस ॥ २१ ॥
कोपे बंदर रीछ लँगूर। हाथन तरुवर लिए समूर ॥
इक मारैं अरु दाँतन खाँइ। राम काज मरिबे न डराँइ ॥ २२ ॥
जो सामुहैं परै रथ आइ। बंदर बीसक लागैं धाइ ॥
टूक टूक करि डारहिँ टोरि। तेई आयुध करैं बहोरि ॥ २३ ॥
किल किलाइ धावहिं मयमंत। धाइ गहैं हाथिन के दंत ॥
खिनकु माँहिँ ते लेंइ उपारि। जोधा मैगल डारहिँ मारि ॥ २४ ॥
असवारहिँ भेंटहिं रन माँहि। एकनि बहुत खैंचि लै जाहिँ ॥
इक इक करि ता लेहिँ पिरान। स्यों जोधा मारहिँ किक्यान ॥ २५ ॥
कोई मुरकि न देखहिँ दीठि। कोऊ मुरि न चलै दै पीठि ॥
राम लखन बरषहिँ सरधार। हय गय पगनि उठी अति छार ॥ २६ ॥
छाए नयन न सूझत काइ। पाउँ न धरत बनत तिहि ठाँइ ॥
छै महारथी राम सामुहे। ते धाए कर असिवर गहे ॥ २७ ॥
आवत तारे इक इक बान। मुरछि परे ते गए पिरान ॥
लागे राम करन संघात। मनहुँ अकासहिँ उलका पात ॥ २८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोसहिं बान तिसे अनियार। जनिकु नगर बरसत अंगार।।
सौहैं जिते गए रन रंग। जनिकु दिया महँ परे पतंग।। २९ ।।
मारि तुरंग धुजा काटियौ। मेघनाद रथ हीनौ कियौ।।
देखौ बागी बिपरित मारि। गयौ कुँवर अंगद सह हारि।। ३० ।।
जाय भूमि तिहि आसन ठयौ। राम जीति चाहहिं जस लियौ।।
राते कुसुम माल उर धारि। कुसके ठाँइ पात विस्तारि।। ३१ ।।
रातौ चौर कियौ उपरैनु। असिवर आहुति लाग्यौ दैन।।
समधि वहैरौ सुरुवा लोह। छाग कंठ काटत निरमोह।। ३२ ।।
ताकौ रुधिर कियौं तिहि नीर। जग्यँ सिरानौ हरष्यौ वीर।।
सिखर दाहिनौ बरचौ हुतास। उत्तम सगुन भए सब तास।। ३३ ।।
रथ निकर्‌यो ता कुंड मझारि। राखस देखि उठयौ जयकारि।।
होम कुंड तैं उठि किक्यान। पलन्यो सौन साँकरैं पलान।। ३४ ।।
तिहि चढ़ि इंद्र जीत रन गयो। सब जन डीठि अगोचर भयौ।।
अंतरीछ बोलै भरियाउ। मारौ राम लखन कपि राउ।। ३५ ।।
भयौ अदृष्टि करों संग्राम। सब बंदर पठऊँ जम धाम।।
बंदर हीन करौं अब धरनी। सिया करो लंकापति घरनी।। ३६ ।।
जीवत बाँधि विभीषन लैउँ। इतनौ करि तातहिं सुख दैउँ।।
करी पैज राघव पहँ गयौ। वरसत बान अगौचर भयौ।। ३७ ।।
अति वेध्यौ दुहुँ तनौ सरीर। धनु गुन कियौ रिसानै वीर।।
तबहिं दुहुँनि अवलोकि अकास। सर-सर तब छायो आकास।। ३८ ।।
पचिहारे सो न मारयौ जाइ। रहियौ अंधकार उपजाइ।।
सुनियत नहीं धनुष टंकार। दीसत नहीं रूप आकार।। ३९ ।।
रथ हे बरन कछू सह दान। सबही कटकहिँ लागे बान।।
जनु बंधूक कुसुम कौं माल। बंदर परे हनै सर-जाल।। ४० ।।
दीसहिँ तिसे राम लछमना। जनु द्वै टेसू फूले वना।।
ब्रह्म बान लछिमन कर गह्यौ। तबहि बचन राघव सों कह्यौ।। ४१ ।।
आयसु हौइ तौ मेलौं बान। एक्कै राखस लहिहि न जान।।
हा हा कार करत तब राम। उत्तिम करत न ऐसों काम।। ४२ ।।
एक लागि त्रिभुवन संधरहि। करि उपाउ ज्यौ राखस मरहि।।
जित तें आवत देखहु बान। तित छाँड़हु तुम हूँ संधान।। ४३ ।।
इतनौ कहि लछिमन समुझाइ। ता तन सर छाँड़े रघुराय।।
कछू न वाकौं सरै सिराइ। घाल्यौ कपि दल सबै गिराइ।। ४४ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्लोक

स एवमुक्तवा बचनं महायशः । वधोनरो दृश्यतसंस्कारिनः ।।
रथप्रणीतः च नभौ न वर्षतः । तदा महार्षं तुरितं निरीक्षितम् ।।

चौपही

जब न जाइ जीत्यौ संग्राम । मन उपाइ करि चित्यौ राम ।।
दस कपि महा बली पर ठए । सुधि लैंनै अकासहिँ गए ।। ४५ ।।
नील मयंदु सरभु हनुमंत । और सुखैंन रिषभ दुविदंत ।।
गज के सरि दस गए अकास । पहुँचे जाइ निसाचर पास ।। ४६ ।।
बंदर वीर देखि आवंत । अंधकार तिहि कियौ तुरंत ।।
अति कोप्यौं ते बानन हए । बंदर दस धरनी गिर गए ।। ४७ ।।
तिनहिँ देखि सो अति गहगह्यौ । मेघनाद रावन सों कह्यौ ।।
बाँधौ इंद्र मैंड़ि निज जूझ । क्यों जूझहि तुम तपी अबूझ ।। ४८ ।।
इतनौ कहत नाग सर साँधि । लछिमन राघब लीन्हैं बाँधि ।।
टारैं देह न कंपित भुजा । दीसतु मनौ इंद्र की धुजा ।। ४९ ।।
पहिल्यौ मुरिछ पर्‌यौ रन राम । लछिमन खिनकु कियौ संग्राम ।।
फुरति दुहुँन की मंदी स्वास । सुर छाँड़ी जीवन की आस ।। ५० ।।
नाग बान बाँधे जब रना । रावन पुत्र राम लछमना ।।
हनू विभीषन मीढ़े भए । अंगद जामवंत तहँ गए ।। ५१ ।।
ठाढ़ौ रुदन करैं सुग्रीउ । बहुत विजोग विधाता कीउ ।।
घाइ न वंधहिँ विसमय करहिँ । राम चरन लैं हियरा धरहिँ ।। ५२ ।।
देखत मेघनाद गहगह्यौ । हँसि हँसि बचन एक तिहि कह्यौ ।।
खर दूषन जिहि मारे राम । सो मैं जित्यौ माया संग्राम ।। ५३ ।।
जिहि सर से बंध वंधियो । जाकौ डर रावन मन कियौ ।।
लंका नगरि जासु डर डरी । ताहि सरन सर की संथरी ।। ५४ ।।
अब यह पास न छटति काँइ । इंद्र सहाइ करै जो आइ ।।
रावन आज निकंटक भयौ । माया जूझ राम कौं हयौ ।। ५५ ।।
यह कहि लंका गयौ बहोरि । आकंपे तैंतीसौ कोरि ।।
कपि राजा रोवत सिर ढोरि । सब बंदर पछिताइ बहोरि ।। ५६ ।।
तिन समुझाइ विभीषन कह्यौ । मुरछ्यौ राम नहीं रन बह्यौ ।।
अब तुम सैना धिरवहु आप । छाँड़हु यह झूठौ संताप ।। ५७ ।।
जब दोऊ सँभरहिँ वर बीर । तब तुम अति दुख हरैं सरीरु ।।
यह कहि सब दल धीरज दयौ । मेघनाद रावन पहँ गयौ ।। ५८ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नायौं सीस बचन तिन कह्यौ। आजु राम लछिमन मैं बह्यौ ।।
इतनी सुनी पुत्र की बात। सुख भौ राजा रावन गात ।। ५९ ।।
मुख चूम्यौं अंकहिं भरि लयौ। रावन कह्यौ राज तू दयौ ।।
समदि कुंवर नृप दियौ पसाउ। मन सोच्यौ लंका कौ राउ ।। ६० ।।
अब सीता निज तजै पिरान। कहौ बुद्धि राखौ किहि ग्यान ।।
भागी सुर जीवन की आस। अब सुख सीय आइ है अवास ।। ६१ ।।
इतनौ सोचि नारि हकराइ। दीनी सीता पास पठाइ ।।
सुनि त्रिजटा रावन यों कह्यौ। मेघनाद राघव रन बह्यौ ।। ६२ ।।
जासु पुरुष की आसा संक। राज गेह आवति है लंक ।।
अब तू कुसुम विमान चढ़ाइ। परे धरनि आवहि दिखराइ ।। ६३ ।।
यह करि कह्यौ हमारौ आजु। मानौ मोहिं देति है राजु ।।
त्रिजटा बूढ़ी बहुत सयान। मन विहँसौ चढ़ि लियौ विमान ।। ६४ ।।
इहि विमान सीता आरुहै। तब रघुनाथ मरचौ को कहै ।।
अैसों सोचि नारि तहँ गई। सिया चढ़ाइ विमानहिं लई ।। ६५ ।।
भूमि परचौ दसरथ कौ पूत। देखि सिया दुख करति बहूत ।।
होत विवाह रिषिन जो कह्यौ। सुनि त्रिजटा सो मो मन रह्यौ ।। ६६ ।।
उत्तम लक्षण यह नृप धिया। जन्म न विधवा ह्वै है सिया ।।
आजु बचन ते झूठे भए। राम लषन इंद्रजित हए ।। ६७ ।।
मोहिँ सिखदेइ कहा हौं करौ। कै विष पियौ जीभखंडि मरों ।।
मिली भौंहँ नहिँ ऊँच लिलार। बिकट दंत नहिँ पिडुरीं बार ।। ६८ ।।
धरनि न धसकति मोहिँ चलंत। कारन कौन दियौ दुख कंत ।।
मैं न विरोध्यौ गुरुजन देव। चूकी नहीं जाति की सेव ।। ६९ ।।
परिहरि अतिथि न भोजन कियौ। कारन कौन दई दुख दियौ ।।
त्रिजटा संबोधैं तिहि ठाँइ। मौंगी रहहु विसूरति कॉइ ।। ७० ।।
माया जूझि मुरछि धर गए। मेघनाद नहिँ राघव हए ।।
मरैं न होइहि ऐसी सिरो। जनम न दीठइ विधवा तिरी ।। ७१ ।।
ए दोउ कारन लिए विचारि। सिया समझाई त्रिजटा नारि ।।
सीता समुझि असोकहँ गई। तब रघुनाथ चेतना भई ।। ७२ ।।
जब देखे लछमन के जाइ। रोवत राम बहुत पछिताइ ।।
कपिपति सरिस बचन तिन कह्यौ। द्वै पछिताए हियरा रह्यौ ।। ७३ ।।
लंक विभीषन भयो न राजु। लषिन परी अवस्था आजु ।।
ना हौं चाहौं लंका लियो। ना हौं मिलयौं चाहौं सियौ ।। ७४ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहा सुमित्रहिँ ऊतरु करौं। यह सुग्रीव दोष तें डरौं ॥
इतनौ कहि बहुरौ लरखरचौ। मुरछि राम लछिमन पहँ परचौ ॥ ७५ ॥
तहाँ विभीषन आवत जानि। बंदर देखि रहे डर भानि ॥
धूमवलाइ कहै सुग्रीउ। यह मूर्छा नाहीं निर्जीव ॥ ७६ ॥
करन विभीषन आयौ सार। तुम कत॰ धीरज तजत गँवाँर ॥
भाजत कत रावन सुत जानि। सब समुझाए धूम सयान ॥ ७७ ॥
देख्यौ करत विभीषन सार। आपुन सैं हथ झारत छार ॥
अति दुख करै विभीषन वीर। सिर धुनि नैननि मोखै नीर ॥ ७८ ॥
यह अवस्था राम कत भई। हौं अनाथ कत कीनौ दई ॥
जिहि जिहि डारन दीजै पाँउ। विधना भानत सोई ठाँउ ॥ ७९ ॥
कहै विभीषन दयो विकूर। इच्छत लाभ गयौ गिरि मूरु ॥
मति पछिताउ करौ कपिराइ। अजहूँ स्वाँस कंठ रघुराइ ॥ ८० ॥
अबहीं जागि धनुष कर लेइ। रावन मारि राजु तोहिँ देइ ॥
अैसे बचन जु कतिपति भनैं। तब धीरंत विभोषन सनै ॥ ८१ ॥
बहुरौ विनयौ कह्यौ कराइ। रामहिँ लै तुमहूँ घर जाइ ॥
तहँ लै राखौ लक्षिमन राम। मैं रावन मारौं संग्राम ॥ ८२ ॥
हनुमत छाँड़ि जाहु मो साथ। कालहि मारि बताऊँ नाथ ॥
पंचौ लोकपाल लै जुरे। जो वह भागि पतालहि दुरै ॥ ८३ ॥
जो जानकी देहि मुकराइ। मारौ तऊ न मो पर जाइ ॥
कहत सुखैन विभीषन सुनै। जाति कौन जाति बिनु जिनै ॥ ८४ ॥
अब उपाउ चितौ सब कोइ। राम उठें तुमकौं जस होइ ॥
दैयत देव जूझ जब भयौ। तबही देव भूमि गिरि गयौ ॥ ८५ ॥
मो गुरु ल्यायौ मूल उषारि। ता परसैं सुर उठे हँकारि ॥
बूझ्यौं तब सुग्री सुखेन। तिन मूलिन कौ कारन कौन ॥ ८६ ॥
कैसी भाँति रहति किहि थान। जो लावै ताकहौ प्रवान ॥
तब सुषेन तिनसों यह कहै। षीर नीर सागर महँ रहै ॥ ८७ ॥
सौ जोजन द्रौनागिरि नाम। सो नर असुर न देख्यौ धाम ॥
जब सब देवन अमृत लियौ। तब साधुनि आवत छीटियौ ॥ ८८ ॥
ता लगि मूलि सजीवन भई। पवन पूत पहँ जाहि सुलई ॥
इतनौ कहि सुषेन जन रह्यौ। पवन प्रचंड भयानक बह्यौ ॥ ८९ ॥
सावधान सब बंदर भए। सबनिं सिला तरुवर कर लए ॥
राखस जानि करी समुहान। नारद लाग्यौ राम के कान ॥ ९० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दै दाहिनै सु जोरै हाथ । कह्यौ रिषीश सुनहु जगनाथ ॥
आपुन कर झारै ता खेह । हा विधि राम कहा गति एह ॥ ९१ ॥
करन समर्थ सृष्टि संघार । सो धर परचौ कवन व्यौहार ॥
तू नारायन त्रिभुवन धरन । तुही आदि महिनामथ करन ॥ ९२ ॥
संख चक्र गद सारँगपानि । जग गुरु तोहिँ सकत को जानि ॥
तैं ही मच्छ कच्छ तनु धरचौ । तू वराह त्रिभुवन उद्धरचौ ॥ ९३ ॥
वावन ह्वै छलियौ बलिराइ । मान्यौ सहसबाहु कौ ठाइ ॥
वैर पिता के रिस मन धरी । छत्री पुहुमि निछत्री करी ॥ ९४ ॥
तेरे नयन चंद्र अरु भान । उठि अब कहा होत अग्यान ॥
तू दिगपाल भयो दस भेद । तो उसास प्रभु चारौं बेद ॥ ९५ ॥
तू श्रवननि अश्विनी कुमार । नासा गंधवाह असरार ॥
उदर समुद्र दंतगिरि देव । चउदह भुवन करत तौहि सेव ॥ ९६ ॥
उठि उठि हाथ धनुष कर लेहि । बंछि मोछ देवन कौं देहि ॥
इतनौ कहि नारद गौ थान । लाग्यौ पवन राम के कान ॥ ९७ ॥
सुमिरहु खगपति करौ न वार । मनुहारैं वनचर को दार ॥
वायु वचन राघव जब सुनैं । सुमिरचौ गरुड़ हियैं आपुनैं ॥ ९८ ॥
तव आयौ बनिता कौ पूत । लंका अति भय भयौ अकूत ॥
लागे तरुवर रूख उड़ान । गिरि कंप्यौ सागर अकुलान ॥ ९९ ॥
वेग गरुड़ कैं उपज्यौ चाउ । सुर नर असुर भयौ कहराउ ॥
आवत तिसौ दीठि अतराल । जनु आकास अग्नि की ज्वाल ॥ १०० ॥
देखत बंदरु दल भय भरचौ । भागे तिनहि राम बिनु सरचौ ॥
तिहिँ चौबार दाहिनौ दियौ । तिहि निधि चरन सीस परसियौ ॥ १०१ ॥
पोंछ्यौ गात आपुनै हाथ । तवहि नैन उधरे रघुनाथ ॥
चेते राम कुँअर लछिमना । वहुरि गरुड़ बूझेता छिना ॥ १०२ ॥
आवहि कतह कवन तू वीर । तो देखत सुख भयौ सरीर ॥
तव वोल्यौ पक्षी कौ राउ । बनिता उर कस्यप रिषि जाउ ॥ १०३ ॥
तुम हौ इष्टि हमारे देव । ता लगि साँई आयौ सेव ॥
वोलहि गरुड़ राम सुनि बैन । नाग पास यह छूटत क्यौं न ॥ १०४ ॥
हौनहार देवन कौ काज । मेघनाद निग्रहनत आज ॥
माया करहि निसाचर जाति । इनहिँ समान द्यौस अरु राति ॥ १०५ ॥
तिन महं मेघनाद अति बरी । अैसे मति हूजों प्रभु घरी ॥
सावधान को बैरी छरं । जागत चोर लछिमि क्यों हरै ॥ १०६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुपथ करंत ब्याधि कत होइ । हरि जप जमपुर जात न कोइ ॥
कारन जितौ तुमारौ लह्यौ । बोल्यौ गरुड़ राम सों कह्यौ ॥ १०७ ॥
बारे बूढ़े अरु नर नारि । सब राखस घालौ संघारि ॥
भेंटि राम लछिमनहि समान । पहुँच्यौ खगपति अपुनै थान ॥ १०८ ॥
बंदर सयनु उठचौ सब गाजि । चले राम जूझन कहँ साजि ॥
बंधन मुक्ति राम को सुनै । नासै पाप, विष्नु कवि भनै ॥ १०९ ॥
मन थिर बुद्धि सुनै जो कोइ । रन रावर महँ हार न होइ ॥ ११० ॥

॥ इति श्रीरामायन सुंदरकांडे नागपाश मोचनो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निसुनौ कुंभ करन की रीति । जिहि सुर असुर करे बस जीति ॥
बंदर दल जीत्यौ संग्राम । निज कर सीस खुरचौ ता राम ॥ १ ॥
अैसैं मेघनाद जीतियौ । चेत राम धनुहा कर लियौ ॥
विष्नुदास कहि चौथे खंड । जूझ्यौ कुंभकरन बलबंड ॥ २ ॥
तब रावन सौं मंत्री कह्यौ । आपुहि राम जूझ सामुह्यौ ॥
साजहु सूर जौ भले जुझार । वह सुनि नृप बंदर किलकार ॥ ३ ॥
रावन सुनत अचंभौ भयौ । नाग पास क्यों कर छुटि गयौ ॥
अैसौ सोच करी मन संक । स्यौं मंदिर थहरानी लंक ॥ ४ ॥
धूमनयन कौं आयसु दियौ । अगनित लाख साज दल लियौ ॥
पहिरि सनाह कसे हथियार । रथ चढ़िगौ पच्छिम के द्वार ॥ ५ ॥
तिहि धाँ धाय गह्यौ हनुमंत । देखत उपज्यौ जूझ तुरंत ॥
वे उन वे उन वाग्यौ मारु । राखस बंदर गिरे अपार ॥ ६ ॥
जब बंदर दल भागत दीठि । लै तरुवर हनुमंत पईठ ॥
एक घाइ रथ घाल्यौ तोरि । पाँइ पयादौ उठौ बहोरि ॥ ७ ॥
तिहि हनुमंत हिये महँ हयौ । अति रिसाइ तब तरुवर लियौ ॥
छाँड़्यौ धूमनयन के सीस । गौ गड़ि धरनि माँहँ नहि दीस ॥ ८ ॥
धूम परचौ सब भागे मोरि । तब रावन सुधि लई बहोरि ॥
मन मन कछू करचौ ता सोग । आइसु भौ आकंपन जोग ॥ ९ ॥
जिहि संकाए सुर नर जक्ष । चलौ सयनु ता अगनित लक्ष ॥
निकरि पौरि पच्छिम की गयौ । पैंड़ पैंड़ ता असगुन भयौ ॥ १० ॥
देखन जूझ बहुत तिहि कियौ । वानर सैंन बहुत खै लियौ ॥
दूंद मयंद कुमुद नल चारि । कर तरवर लै उठे प्रचारि ॥ ११ ॥
मारे राखस सेना परी । तब कोप्यौ आकंपन बरी ॥
बंदर कोइ न सौंहौं गयौ । हनुमत तरु उखारि कर हयौ ॥ १२ ॥
ताकैं नेक न लाग्यौ जाम । तिल तिल करिकै काटौ ताम ॥
हनुमत देखि अचंभौ कियौ । पर्वत कोपि वीर तब लियौ ॥ १३ ॥
असुर लियौ पर्वत औसान । दीसत पर्वत दुहुँनि समान ॥
तिहि हनुमंत कोपिकै हयौ । रावन बहुत चून ह्वै गयौ ॥ १४ ॥
चौदह सत राखस ता तनै । मारे हनुमत रन महँ घनै ॥
रुधिर झिरत जब राखस दीस । तरवर हयौ अकंपन सीस ॥ १५ ॥
गए प्रान आकंपन परचौ । बहुरी राखस कोइ न लरचौ ॥
कुसुम वृष्टि कपि के सिर भई । तबहिँ खबर रावन प गई ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बीरा दयौ प्रहस्त बुलाइ। अब तुम जूझू करौ रन जाइ ॥
कै निहचिंत मोहि कँ तोहि। हमहिँ पत्यारौ भैया जोहि ॥ १७ ॥
कहत प्रहस्त कुबुधि मन धरी। रामचंद्र सों संधि न करी ॥
को रामहिँ जीतन समरत्थ। परवत परत को ओड़ै हत्थ ॥ १८ ॥
मो तैं होइ सो पौरुष करौं। तेरे काज प्रान तजि मरौं ॥
बंदर दल बहुतै खै लैऊँ। जीवत पछि हौं पाँउँ न दैउँ ॥ १९ ॥
नमसकार रावन कहँ कियौ। सैन असंख साथ कै लियौ ॥
पूरब द्वारैं निकसौ जाइ। बंदर सैन उठे कहराइ ॥ २० ॥
बहुत बीर तब गये पराइ। दुसह भार तिहि सह्यौ न जाइ ॥
देखि प्रहस्त रुधिर नदि बही। आपुन धाइ गदा कर गही ॥ २१ ॥
धाइत हनी नील के सीस। कौप्यौ रुधिर झिरत जब दीस ॥
राखस रूख सिवर महँ हयौ। कछू प्रहस्तहिँ छोभ न भयौ ॥ २२ ॥
रूख उखारि लियौ पुनि तालु। कोपि नील ता हयौ कपालु ॥
गए प्रान कोप्यौ अति बली। लई सुध्धि लंका खरहरी ॥ २३ ॥
सुनि मंदोदरी पहुँची तहाँ। राजा सुख बैठे हे जहाँ ॥
बूढ़े महल दार गिहि साथ। त्रेतन करिया तिन के साथ ॥ २४ ॥
चतुर चौंर तिहि लए सँवारि। चतुर सिँगार करये बन नारि ॥
लहुरौ पूत साथ अति काय। रावन पास पहूँची जाय ॥ २५ ॥
मंत्री मालवंत ज़र जूत। आवत संग मंदोदरि पूत ॥
तरहीं दीठि नाइ सिर रह्यौ। राजा बचन नारि सहँ कह्यौ ॥ २६ ॥
कहि मंदोदरि सभा मँझारि। कत आई सिगार सँवारि ॥
अरु देखिये खरी भय भीत। तो कहँ भई लंक की चिंत ॥ २७ ॥
कहि मंदोदरि निसुनहु कंत। मैं तुम सुनै जूझ कह जंत ॥
बहुत बीर घाले संघारि। अजहूँ देहु पराई नारि ॥ २८ ॥
तू हरि ल्यायौ जाकी नारि। राजा ताहि सकत क्यों मारि ॥
जूझ दुहूँ दिसि दिन दिन भयौ। न्याउ कुन्याउ विचारत दयौ ॥ २९ ॥
ब्रह्म वंस तू राखन बली। अब तो बुद्धि विधाता छली ॥
तू गरबी नर वानर जानि। सांई कुजस गोत की हानि ॥ ३० ॥
मंत्र वचन जु विभीषन कहे। ते तुम राजा सुनत न सहे ॥
लात प्रहार सभा महँ हयौ। अधिक सहाइ राम कहँ भयौ ॥ ३१ ॥
हीरा रतन पदारथ लेहु। सिया सिँगार राम कहँ देहु ॥
अरु अतिकाइ गहे तिन पाँइँ। अब वह राम पलटि घर जाँइँ ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बोलत रावन यह सुनि नारि। बहुत वीर घाले तिहि भारि ॥
अब जो संधि राम सहँ होइ। अहंकारि हँसिहै मो लोइ ॥ ३३ ॥
मैं तैंतीस कोटि सुर जिनै। बंदि गेह राखे आपुनै ॥
मैं निज कर कैलास उखारि। अब जो संधि करौं तो गारि ॥ ३४ ॥
अजहूँ कुंभकरन सोवंत। दूजौ मेघनाद जीवंत ॥
तीजैं मेरे कंठहँ स्वास। तू रानी मन संकहि कास ॥ ३५ ॥
आपुहिं आज लहौं संग्राम। जमपुर पठऊँ लक्षिमन राम ॥
जब मैं सब बंदर दल हनौं। तबहिं कंत कहिए आपुनौ ॥ ३६ ॥
सुनि मंदोदरि लेति उसास। सीस ढोरि चढ़ि गई अवास ॥
रावन मंत्री लिए हकारि। मेरौ रथ लै आउ सँवारि ॥ ३७ ॥
रथ रावन कौ ल्याए जोरि। हय गय पाइक रथ सों कोरि ॥
धुजा पताका अन अन दीस। सेत छत्र राजा के सीस ॥ ३८ ॥
बाजे बजत होंहि अति नाद। वानर सेन लजत सुनि साद ॥
निकस्यौ उत्तर दिसि के द्वार। तब रघुनायक पाई सार ॥ ३९ ॥
देखि सैन अति विस्मय भयौ। राम विभीषन पूछत लयौ ॥
जनु दसित सायर कौ मौन। मो सन कहि यह जोधा कौन ॥ ४० ॥
यह रावन जिहि सीता हरी। आँगैं पुत्र इंद्र अरि बरी ॥
एक महोदर अरु अतिकाइ। औरु निकुंभ कुंभ सुतराइ ॥ ४१ ॥
इतनौ बचन विभीषन कह्यौ। रामचंद्र धनुहर कर गह्यौ ॥
सबनि विभीषन दिये जनाइ। तौ लगि रावन पहुँच्यौ आइ ॥ ४२ ॥
बंदर सैन बहुत गी पारि। भूली सुधि तरुवर दिये डारि ॥
तब सुग्रीव रिसानौ हियैं। पर्वत एक गयौ कर लियैं ॥ ४३ ॥
तिहि रावन सामुहै अखारि। अंतरीछ उहि काटे मारि ॥
बहुरौ अग्नि बान साधियौ। रावन कपि पति हिरदै हयौ ॥ ४४ ॥
धरनी मुरछि जु गयौ तुरंत। नृपहिं परत कोप्यौ हनुमंत ॥
बंदर और सामुहैं गए। मारे बाननि पिछहैं भए ॥ ४५ ॥
दस हनुमंत बीस नल गनै। तीस मयंद नील तहँ हनै ॥
सत्तरि सत सर हन्यौ गवाखु। बान अनेकनि गजहनि लाखु ॥ ४६ ॥
औरै कपि पति मारे खरे। दुरे जाइ रघुपति आसरे ॥
उठी राम धनु गहि कोपियौ। मेरौ दल हनि इन जस लियौ ॥ ४७ ॥
तब बोल्यौ लक्षमन कुमारु। यह न होइ उत्तम ब्यौहार ॥
जा देखत स्वामी दुख सहै। सो नर नीच नर्क गति लहै ॥ ४८ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समदि राम दोन्हीं अँकवारि। कह्यौ बंधु जूझियौ बिचारि।।
वाकौ छत्र जतन करि लेहु। दृढ़ रावन आपन तन एहु।। ४९ ।।
चल्यौ लखन धनुहर लै हाथ। पहुँच्यों तहाँ गिरचौ कपिनाथ।।
हनुमत बेगि सुमिर आपुनौ। पैना लियौ तास रथि तनौ।। ५० ।।
रावन पर सो रह्यौ उभारि। अहो निसाचर डारौं मारि।।
तू मेरौ बल जानत काइ। जमपुर पठऊं मुठिका घाइ।। ५१ ।।
सुनि रावन यह कहै प्रचारि। रे कपि अब मोहिँ मुठिका कार।।
मो तन कछू न बेदन होइ। तेरौ जस बोलहि सब कोइ।। ५२ ।।
इतनौ सुमिरि धाइ सिर हयौ। रावन तनकौ छोभ न भयौ।।
जब उहिँ जीवत चाह्यौ गहन। कोपि हनू तब लाग्यौ कहन।। ५३ ।।
तर ऊपर जिहि बारी करी। अरु परजारी लंका पुरी।।
पुनि रन मारचौ अख कुमार। सो हनुमत जानिए जुभार।। ५४ ।।
यह सुनि कोप्यौ लंका राउ। कियौ हनू कहँ मुठिका घाउ।।
लागत तबहिँ वीर करमरचौ। मुरछचौ पवननंद धर परचौ।। ५५ ।।
घरी माँहिँ जाग्यौ हनुमंत। नृप सनमुख धायौ हाँकंत।।
रावन हियौ पवन सुत हयौ। लागत सो डगमग डोलियौ।। ५६ ।।
मुरछचौ थंभ टेकि रथ रह्यौ। धनि धनि पवनपूत सहँ कह्यौ।।
जाकौ वैरी तो सम होइ। ता जसु जगत कहै सब कोइ।। ५७ ।।
जाकौ बैरी उत्तम पूत। ता पुरुषहिँ जस होइ बहेत।।
नन्हें सरिस जु जूझत कोइ। सो नर सुजस लहै नहिं लोइ।। ५८ ।।
हनुमत कहहि कहा मैं कियौ। जो तूँ मेरे मारत जियौ।।
बारंबार सुनावत तोहिं। मरन भलौ ध्रगु जीवन मोहिं।। ५९ ।।
तबहिं रिसाइ मुठीका हयौ। हनुमत मुरछि धरन गिरि गयौ।।
रावन उसटि न पायो जान। हनू देखि धर नील कुपान।। ६० ।।
कपि पर्वत मेल्यौ नृप सीस। राजा मन बाढ़ी अति रीस।।
बहुत बान करियो संधान। नील नहीं राखस उनमान।। ६१ ।।
उठौ हनू तब खिनकु सम्हारि। कौतुक देखत हियैं विचारि।।
नीलहि बीच जूझ जो करैं। मानहिं बुरौ कोप मन धरैं।। ६२ ।।
डारे पर्वत रूख उपाटि। अंतर रावन घाले पाटि।।
एकौ तहाँ न साजौ जाइ। तबहिं मुकुट चढ़ि बैठचौ आइ।। ६३ ।।
हीन सरीर करत अति गाज। रावन मन उपजत अति लाज।।
ज्यों त्यों बान लियौ उसटाइ। तबहिं धुजा पर बैठे जाइ।। ६४ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धनुहर ऊपर दीन्हौ पाँउ। देखि कोपियौ लंका राउ॥
अति रिस अग्नि बान सो हयौ। खिसकि मुरछि धरनी गिरि गयौ॥ ६५ ॥
यह है नील अग्नि कौ पूत। तातैं दुक्ख न होइ बहूत॥
कौतुक सवनि जूझ कौ दीठ। लछिमन तिरछौ आन पईठ॥ ६६ ॥
ताहि देखि रावन धनु लियौ। तब रिसाइ ऊतरु यह दियौ॥
जो ताकौ ब्रह्मा कौ सरन। लछिमन करौं तिहारौ मरन॥ ६७ ॥
वचन कठोर बहुत तिन कहे। ठाढ़ैं दसरथ नंदन सहे॥
ऐसौ कहत अगरुडौ सरै। उत्तम निज कीरति नहिं करै॥ ६८ ॥
जूझ काज हौं ठाढ़ौ आइ। करिए रावन तुमहिं सुहाइ॥
तरुनी नारि आपु कुच गहै। ना वह मोहै ना सुख लहै॥ ६९ ॥
त्यौं लहिए गुन पुरुषहि तनौ। आपुहि जस बोलै आपुनौ॥
पुरिष जु कछुवै करै सुकर्म। अपनै कहत होइ नहिं धर्म॥ ७० ॥
रावन कोपि चढ़ौ सुनि वात। लछिमन कहँ सर छोड़े सात॥
अधफर कुँअर कोपि बलबंड। इकु इकु बान कियौ द्वै खंड॥ ७१ ॥
काटत देखि कोपि रावन्न। ब्रह्म वान गुन दीनौ कंन॥
तिहि सर लछिमन उर महँ हयौ। लागत वीर धरनि गिरि गयौ॥ ७२ ॥
जब उठियौ लछिमना कुमार। हियैं तीन सर किये प्रहार॥
मुरछि राउ रिस मन महँ भई। सबल सकति रावन करलई॥ ७३ ॥
मेली सकति लछिमन हिय हनै। लागत गुन सुमिरे आपुनै॥
हौं औतरचौ सेस धर आनि। अब डरु गयौ निसाचर जानि॥ ७४ ॥
गनत नही रावन के घाइ। रथ चढ़ि लरचौ अगाउँ जाइ॥
मुठिक प्रहार हिए महँ कियौ। मूरछि रावन रथ पर गिरचो॥ ७५ ॥
रावन परचौ देखि हनुमंत। गहि लछिमन तिहि लियौ तुरंत॥
करत देव सब जय जय कार। जीत्यौ रन लछिमना कुमार॥ ७६ ॥
कोप्यौ रावन कोप्यौ राम। दुहुँ राजनि लाग्यौ संग्राम॥
उहि वा कोपु कियौ अतिवंत। मानौ सुरपति गज मय मंत॥ ७७ ॥
ब्रह्म इंद्र जम करै सहाइ। वहै देइ राखस कौ राइ॥
ताकौ बाप वरुन कौ सरन। तौब नि साचर तेरौ मरन॥ ७८ ॥
राम वचन रिस भई सरीर। रावन साधे अगनित तीर॥
बेध्यौ हनुमत भयौ न व्याम। देखत रुधिर रिसानौ राम॥ ७९ ॥
करि टंकार धनुप गुन दयौ। कियौ बिषम सर ता उर हयौ॥
तोरि धुजा रथ हीनौ कियो। मुरछि रह्यौ सार्रथि गहि हियौ॥ ८० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुंडल मुकुट डारियौ ठोरि। कबच वान दस मारचौ फोरि॥
कह्यौ राम बहुरौ घर जाहु। सजि आवौ पुनि पहिरि सनाह॥ ८१ ॥
विलखि बदन रावन गयौ मोरि। आकंपे तैतीसौं कोरि॥
तिहूँ लोक मन संसय भयौ। का कारन रावन घर गयौ॥ ८२ ॥
मंत्री सकल लए हँकराइ। आपुन राजा बात कहाइ॥
नंदीगन को कह्यौ सराप। मैं निज उदय भयौ अब पाप॥ ८३ ॥
अब हों जूझि न सकिहौं आइ। कुंभकरन तुम लेहु जगाइ॥
और करो प्रतिपौरनि साज। तुम दृढ़ लंकहि राखहु राज॥ ८४ ॥
आयसु लै मंत्रिय गए जहाँ। कुंभकरन कौ मंदिर जहाँ॥
ठाढ़े भए सामुहे जाइ। घाले पवननि माँस उड़ाइ॥ ८५ ॥
बहुत जतन करि नेरैं गए। बोलि जगावत कहिले भए॥
जागै नही रहे पचि हार। तब लै भैरि बजावहि भार॥ ८६ ॥
ऊपर ता राखस के अंग। लै दौराए गजनि तुरंत॥
तिल तिल देह खूंदता गई। निद्रा अधिक निसाचर भई॥ ८७ ॥
फरिस सेल सकती करि वार। हनहिँ अंग गहि खैंचहिं वार॥
आयुध टूटहिँ अंग न लागि। तदिय करौंटू देत नहिँ जागि॥ ८८ ॥
सूर दस सहस थकियौ मार। जानत नहीं रहे सब हार॥
तब मंत्रिन उपजायौ मंत्र। हँकराइं सुंदरी तुरंत॥ ८९ ॥
सोरह वरस तनी उनहरि। सजि सिँगार ते पहुँचीं नारि॥
कोइल सरिस मोर धुनि भई। यह सुनि नीद निसाचर गई॥ ९० ॥
जागि वीर ऊभौ ह्वै रह्यौ। जस मंत्री रावन सहँ कह्यौ॥
भोजन मागत देहु अघाइ। ना तरु लंका घालै खाइ॥ ९१ ॥
आयसु दयौ चली ज्योनार। आपुन राउ करावत सार॥
लै कीन्हौं भातहिं अम्मार। अति ऊँचे पर्वत आकार॥ ९२ ॥
सुरापान समद्यौ दै सार। मूंड कलस धरि चले कलार॥
भैंसा आठ सहस आठसै। ता महँ एक न बासौ बसै॥ ९३ ॥
सुरा महिष म्रग अन्नजु गयौ। खाइ निसाचर ठाढ़ौ भयौ॥
जस मंत्री बूझ्यौ तिहिं ठाइ। काची नींद जगायौ काइ॥ ९४ ॥
जीत्यौ इंद्र वरुन जम राउ। तीन लोक मान्यौ भरयाउ॥
रावन दियौ निकंटक राज। कारन कौन जगायो आज॥ ९५ ॥
तब जस मंत्री बिनती करी। तुम सोवत नृप सीता हरी॥
बंदर एक गए सो कियौ। बाग विधंसि पुरी दहि गयौ॥ ९६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ता पहँ सुधि सीता की लही । आयौ राम लंक विग्रही ॥
प्रहस्त अकंपन अखै कुमार । एकहि जूझ भए संहार ॥ ९७ ॥
इतनौ सुनि करि मन हंकार । बंदर सब मारौं असरार ॥
वे द्वै तपसी बंदि कराउँ । सुनि जस तक रावन पहँ जाउँ ॥ ९८ ॥
मंत्री कहै न आतुर होहि । राजा देख्यौ चाहत तोहि ॥
अति अकुलानैं विनसैं काज । आयसु लै पुनि जूझहु आज ॥ ९९ ॥
तब उठि रावन के घर जाइ । मानहुँ लगे पर्वतहिं पाइ ॥
देख्यौ जात अचंभौ भयौ । राम विभीषन बूझन लयौ ॥ १०० ॥
गिरि समान अति थूल सरीर । बहुत महाजन बेढ़ै वीर ॥
तेज फुरै जनु दूजौ भान । को यह जोधा कहि इहि नाम ॥ १०१ ॥
यह है पूत विश्रवा तनौ । रावन चाहि याहि बल घनौ ॥
कुंभकरन इहि राखस नाम । रावन बन्धु अजित संग्राम ॥ १०२ ॥
जब यह बारौ हतौ कुमार । बहुत जीव करतौ संघार ॥
सुनी बात तब उपज्यौ दास । तब इहि धाता कहौ सराप ॥ १०३ ॥
मास छै सोउत लहै न सार । त्रिपित न होइ खाइ आहार ॥
अब संदेह परचौ जब आइ । ता लगि रावन लियौ जगाइ ॥ १०४ ॥
अब यह खेत करै गौ जागि । बंदर दल चलिहै गौ भागि ॥
एही साँईं सुरपति जिन्यौ । रामनि सरिस विभीषन भन्यौ ॥ १०५ ॥
जिन देख्यौ ते गए पराइ । राम हँसे लींन्हैं बहुराइ ॥
नील पठायौ तिरछौ गयौ । तिहि सब बंदर दल धीरयौ ॥ १०६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुंभकरन रावन पहँ गयौ। जनु रवि ओझिल पर्वत भयौ ।।
नाइ सीस तब सभा बईठ। रावन मन तूठचौ जब दीठ ।। १ ।।
सेवक भलौ कुलीनी नारि। बंधु जो होइ आपु उनहारि ।।
पंडित सभा सपूतौ पूत। पाँच देखि सुख होइ बहूत ।। २ ।।
नाइ सीस बंधव यह कहचौ। कहा गुसाईं आयसु लहचौ ।।
काची नींद जगायौ मोंहि। कहौ कहाँ विग्रहनै तोंहि ।। ३ ।।
सागर सोधि चुरू महँ लैउँ। सुरपति ब्रह्म बंदि गहि दैउँ ।।
कहत रिसानौ बारहिंवार। पर्वत मीड़ि करौं अव छार ।। ४ ।।
जब वल कुंभकरन कहि रहचौ। सुनत बात राजा गहगहचौ ।।
ता सों बात पेड़ तैं कही। अब राघौ लंका विग्रही ।। ५ ।।
दानै देवन हौं जु न डरौं। जैसौ नर बंदर डर करौं ।।
तो तैं बीर वहुत भरियाउ। सबनि जीति कर लेउ पसाउ ।। ६ ।।
कुंभकरन तब कहत कुमार। मैं साँईं बरज्यौ सौ बार ।।
करि विसास मति छत्रिहिं मारि। सीलवंत परिहरि परनारि ।। ७ ।।
ज्यों तप रिषिनि देव है मूल। सेवक सेव करै तिहि तूल ।।
धर्म मूल ज्यों पर उपगार। राजहिं राजनीति व्यवहार ।। ८ ।।
राजनीति राजनि आभरनि। राजनीति दुस्तर भय तरनि ।।
राजनीति सुख सुजस भँडार। मूल गयैं निरफल व्यौहार ।। ९ ।।
दानौ देव न बाँध्यौ सेतु। अवहि लंक विरु रन के हेतु ।।
जिहि हो तरि आयौ रघुनाथ। यह तुम मीच पसारौ हाथ ।। १० ।।
मतौ कहत मंत्री तोहि डरहीं। स्वामी मन लीन्हैं संचरहीं ।।
जान विभीषन रामहिं मिल्यौ। सिया ल्याइ सैंहथ बिस मिल्यौ ।। ११ ।।
वैद पुरोहित मंत्री जासु। तीनौं वोलहिं राज सुहासु ।।
काया धर्म अर्थ की हानि। ता लगि तीनौ करहिं न कानि ।। १२ ।।
नारद पास भेद मैं लहचौ। कुंभकरन रावन सौं कहचौ ।।
ए नर कपि देवत औतरे। माया करि तो कह तन धरे ।। १३ ।।
तुम नाहीं जानत या भेव। रामचंद्र नारायन देव ।।
यहई त्रिभुवन तारन तरन। सीता दै ताकौ तिहि सरन ।। १४ ।।
तू जेठौ अरु त्रिभुवन राइ। मैंड़ टोर सिख दयौ न जाई ।।
कहै महोदर सुनहु कुमार। राजनीति के अगम विचार ।। १५ ।।
जिहि नर जान उचायहु भार। सो पुनि है निर्वाहन हार ।।
ना तैं करी बंधु की सेव। ना तप करे न ध्याये देव ।। १६ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सोवत खात तोहि जुग गयौ। कब तें कुँअर सयानौ भयौ।।
जबही राम दृष्टि संचरै। यह रावन तवही पुनि मरै।। १७ ।।
अब तुम कछू देउ दिढ़ दाउ। ज्यों राखिये लंक कौ राउ।।
कुंभमरन कोप्यौ तिहि बार। अरे महोदर कायर स्यार।। १८ ।।
जूझ न देख्यौ काननि सुन्यौ। बातनि चाहत रामहि जिन्यौ।।
उनकहँ गहौ न कर हथियार। बंदर सयन करौं संघार।। १९ ।।
दोऊ तपी विभीषन मित। बंधौं रावन करि निहिचिंत।।
तूठौ राउ बात जब सुनी। मनि उतारि दीनी आपनी।। २० ।।
कवच मुकुट कुंडल आभरन। रथ चढ़ाइ लाग्यौ थुति करन।।
हाथ सहस द्वैरथ कौ फेरु। दीसत मनौं चलत गिरि मेरु।। २१ ।।
धुजा पताक चौंर फहराइ। ढोल दमामें बाजत जाइ।।
आठ चक्र बनए सुत धारि। हेम रतन नग बहुत सँवारि।। २२ ।।
अगिनित खर जोते मयमंत। पवन विशेषत धरि धावंत।।
सौ धनुहर ता तनौ सरीर। तितनौ माप फेर वरवीर।। २३ ।।
कर धनुहर लै जूझन गयौ। रघुदल देखि अचंभौ भयौ।।
ताहि देखि बंदर अकुलान। अंगद घेरौ लहत न जान।। २४ ।।
तुम हौ सुर बंदर की रीत। तुमहि निसाचर सकत न जीत।।
अंगद कहै सुनौ नल नील। सूर समान तुमहि बस सील।। २५ ।।
तुम भागत अति अप जस लहौ। तातैं कोपि वीर रन रहौ।।
तो धर भार न फनपति धरै। बालपूत यह बिनती करै।। २६ ।।
कीरित मुएँ तिहारी होइ। जीतैं राम मिलावहि जोइ।।
दुहूँ दाँउँ जस है इहि वार। भागत कुजस लहै संसार।। २७ ।।
यह सुनिवानर उठे पचारि। परवत पखान लिए सुधारि।।
मारत कुंभकरन की देह। लागत फूटि होत अति खेह।। २८ ।।
अति व्यापे तब उठे रिसाइ। एकनि मारै एकनि खाइ।।
ऐसैं संघारहि कपि वरी। मानौ ज्वाल सघन वन परी।। २९ ।।
एक भागि गिरिं कंदर दुरे। एक झापि सागर महँ परे।।
एकति उतरे सागर पार। बहुतक सरन भए रघुवार।। ३० ।।
बहुरौ अंगद धीरक देइ। एकै कपि नहिं कहौ करेइ।।
अबही तुमहीं लागी बाइ। देखत आगि मरन क्यों जाइ।। ३१ ।।
बुधि बल करिय हनू बूझिए। आपुन पर बिचारु जूझिए।।
रौघट कटत न पर्वत घाइ। तासों जूझ करन क्यों जाइ।। ३२ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बहुतक बातन कपि धीरए। सब बंदर मिलि सामुहिँ गए॥
तरवर सिला ति करत प्रहार। नहिँ संकत विश्रवा कुमार॥ ३३ ॥
सोरह बीस तीस अकवारि। गहि बंदर धर डारत सारि॥
पंद्रह सहस वीर खै लए। पुनि साहस करि सनमुख गए॥ ३४ ॥
खर मारे सारथि तब हयौ। ता रथ धुजा टोर भुइ दयौ॥
टोरचौ रथ सारथि तब हयौ। कुंभकरन के मन रिस भयौ॥ ३५ ॥
पर्वत सौ भुइँ ठाढ़ौ भयौ। वेढौ चहूँ पास कपि लयौ॥
धाइ हनू कर पर्वत लयौ। सीस निसाचर के तब हयौ॥ ३६ ॥
आवत सबल मुठीका मार। पर्वत सहस खंड कर डार॥
कोप्यौ कुंभकरन मयमंत। उसरि त्रिसूल हयौ हनुमंत॥ ३७ ॥
मूर्छौ वीर न उद्दिम करौ। मुख पैंड़ैं लोहू तिहि परौ॥
घाउ जु करहि खिनकु महँ लाखु। दुविद कुमुद नल सरभ गवाखु॥ ३८ ॥
इन पाँचन मिलि पाहन हयौ। कुंभकरन कै छोभ न भयौ॥
कोऊ मारे लात चपेट। कोऊ परत सामुहें हेट॥ ३९ ॥
धरनि परे सोहहिँ तिहि ताक। जनु चैताऊ फूले ढाक॥
देख्यौ जबहिँ गदा कर लियें। बंदर दल संक्यौ तब हियें॥ ४० ॥
दुरे जाइ रघुपति के सरन। राखि राखि लागे यह कहन॥
उठि सुग्रीव सीस नाइयौ। हाथ उखारि ताल तरु लियौ॥ ४१ ॥
छीन सरीर करत अति गाज। कुंभकरन तोहि लगत न लाज॥
कहत निसाचर तू कपि राउ। बल आपुनौ मोहिँ दिखराउ॥ ४२ ॥
हौं तो पहिलैं घाउ न करौं। राज दोष के पातक डरौं॥
मित्र जती बूढ़ौ गुरु राउ। बालक तिया गौंत कौ घाउ॥ ४३ ॥
आठ विचारि करै नर जोइ। तेहि सुग्रीव नर्क नहिँ होइ॥
राजा यह सुनि कियौं प्रहार। नहिँ संक्यौ कुंभेन कुमार॥ ४४ ॥
तब सुग्रीव कोप मन कियौ। रिस करि राजा मुदिगरु लियौ॥
छ सहस छह हैवर मन तुली। अरुता महँ छासठ आगरी॥ ४५ ॥
षोडस बीस अवर पल चारि। संकर सूलतनी उनहारि॥
लामी मोटी गनी न जाइ। सहस भार की धरी गढ़ाइ॥ ४६ ॥
जो प्रत बालमीक महँ लही। तितनी विष्नुदास कवि कही॥
ऐसौ सूल सबल तोरियौ। कुंभ करन तब पर्वत लियौ॥ ४७ ॥
तिहि सुग्रीव हिए महँ हयौ। मुरछयौ राउ धरनि गिरि गयौ॥
वनचर भागि गए लै जीउ। राखस चापि लियौ सुग्रीव॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिक भयौ ता मन महँ चाउ। उहि गहियौ वानर कौ राउ॥
काँख चापि लै गयौ तुरंत। ताहि देखि सोचत हनुमंत॥ ४९ ॥
अब जो या पहँ लैउँ छुड़ाइ। मानैं बुरौ कपिन कौ राइ॥
हौं सेवक यह मेरौ साँइँ। याकौं अपजस होइ सदाइँ॥ ५० ॥
अरु इहि पौरुष नाहिन अंत। अैसौ सोचि रह्यौ हनुमंत॥
कुंभकरन लंकहिँ लै गयौ। नगर माँहिँ अति कौतुक भयौ॥ ५१ ॥
जाग्यौ नृप सुनिव किलकार। जो देखहि ते कोट पगार॥
तब नृप मनहिँ विचारत भाउ। अब राखस कौ करौ उपाउ॥ ५२ ॥
राम हंसहि राखस बिलखाहिँ। हाहा कार होइ गढ़ माहिँ॥
या राखस कौ करिहौं सोइ। जीवत मरै विगूचन होइ॥ ५३ ॥
इतौ सोच तिहि वाधि उफारि। वैठौ राखस तनै कपारि॥
हाथनि कान नाक गहि दंत। टोरे बंदर वीर निसंक॥ ५४ ॥
बनचर उपय अकासहिँ गयौ। अधिक क्रोध राखस मन भयौ॥
जब उहि देख्यौ राउ पगार। नाक कान बिनु भयौ कुमार॥ ५५ ॥
बहुरौ फिर बंदर दल गयौ। लाग्यौ खान बावरौ भयौ॥
खाए राखस बंदर घनै। ना सु पिछानत पर आपुनै॥ ५६ ॥
तब लछिमन कहँ आयसु भयौ। कर गहि धनुष असुर पहँगयौ॥
कोपि वीर सर छाँड़े घनै। लागत नहीं अंग तिहि तनै॥ ५७ ॥
ताके गात न एकै गड़ै। बंदर द्वै सौ तापर चड़े॥
झारयौ अंग लई फुरहरी। बंदर सकल गिरे लरखरी॥ ५८ ॥
लछिमन तिनहि लह्यौ संग्राम। अतिरिस कोपि रिसानौ राम॥
मेरौ सयन सबै खै लयौ। जूझत ढीठ निसाचर भयौ॥ ५९ ॥
जो बल तोहि तो आयुध साज। जमपुर तोहि पठावहुँ आज॥
रामचंद्र सह राखस कह्यौ। हौ रन तो पहँ जाउँ न बह्यौ॥ ६० ॥
नाहिन राम मारुची वालि। जो बल होइ तो धनुष सँम्हालि॥
तू खरती सरु दूसन हयौ। ताके गर्व गरुत्तन भयौ॥ ६१ ॥
जनि राघव भूलहि उन भाइ। मोहिँ जीति बाचहु रघुराइ॥
हौं विश्रवा पूत अति वरी। मैं संपति दिति सुत की हरी॥ ६२ ॥
तू अब प्रथम प्रहारै मोहिँ। राघव जीवित खैहौं तोहि॥
कोप्यौ राम कियौ संधान। दीसत मनौ रिसानौ भान॥ ६३ ॥
हिये माझिँ मारयौ वर वीर। कछुव न वेदन भई सरीर॥
कोपि निसाचर मुदिगरु लियौ। राम रिसाइ टूक द्वै कियौ॥ ६४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टूटी बाहु तासु धर परी। दवियौ बहुतक बानर बरी ॥
और बान तव लियौ विचारि। दूजी काटी तबहिँ सम्हारि ॥ ६५ ॥
हियै माँझ एकहि सर हयौ। ताहिं भेदि धरती गड़ि गयौ ॥
जब ता काटी दोई बाँहँ। कोपि परचौ बंदर दल माँहँ ॥ ६६ ॥
भागत वीर न पावहिं जान। कुंभकरन लागौ मिलि खान ॥
दिव्य वान राघव गुन दियौ। तासु चरन दोई काटियौ ॥ ६७ ॥
धरहरि धरनि परचों मुहँ बाइ। परचौ सु रीछ बानरनि खाइ ॥
गै द्वै राम अगहुडौ सरौ। सर सर हनि तिहि पूरचौ गरौ ॥ ६८ ॥
दिव्य वान छाँड़ियौ बहोरि। अर्द्ध चंद्र सिर डारचौं टोरि ॥
मुवे सहस द्वै बंद्रर जहाँ। कुंभकरन गिरियौ सिर तहाँ ॥ ६९ ॥
रोक्यौ कछुक समुद कौ नीर। कूंभकरन कौ परचौ सरीर ॥
गिरि कंप्यौ सागर अकुलान। बंदरदल देखत किलकान ॥ ७० ॥
नगरी लोग सबै खरहरचौ। जान्यौ कुंभकरन रन परचौ ॥
लछिमन तनौ सुनौ भरियाउ। जिहि रन जित्यौ सबल अतिकाउ॥ ७१ ॥
तासु जूझ नहिँ बरनन जाइ। पंच महारथि और सहाइ ॥
वीत्यौ कुंभकरन कौ खंड। बरनत महाँकाय बलबंड ॥ ७२ ॥
जैसी विधि जूझ्यौ रन आइ। तैसी कथा कहौं सतभाइ ॥ ७३ ॥

कुंभकरन देख्यौ परचौ, डरयौ निसाछर सत्थ।
लंक रखन अरि दल दहन, को दूजौ समरत्थ ॥ ७४ ॥

इति रामायने सुंदरकांडे कुंभकर्न महाजोधा बध नाम खंड ।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

भगि राखस राजा पहँ गए । विनवत बहुत भीत मन भए ॥
लै आफहु [अर्पहु] रघुनाइक वाम । लंका राखि राइ मिलि राम ॥ १ ॥
जब नृप बंधु सुन्यौ रन परचौं । धरी एक मुरछौ दुख करचौ ॥
उठि उठि जोवत चारौं पास । ता गुन सुमिर लेत अति स्वास ॥ २ ॥
लंक सिया मोहिँ नाहिन काम । वंधु बिहून तजौं धन धाम ॥
तब मैं खेत जित्यौ सुर राइ । कुंभकरन जो करचौ सहाइ ॥ ३ ॥
सो सीता लगि जूझ्यौ वरी । मेरी बुद्धि विधाता हरी"
कहत विभीषन मारौ लात । आगैं आइ भई वह बात ॥ ४ ॥
ऐसी बात कहत जब सुन्यौ । लंकेसुर पहँ तीसरु भन्यौ ॥
होन होहु तु मरे उर जाउ । लछिमन सों मान्यौ भरियाउ ॥ ५ ॥
मूरख मन पछतायौ करैं । पंडित वर्त्तमान व्योतरैं ॥
अब मो साइँ आयसु देहु । तपसी मारि बताऊँ एहु ॥ ६ ॥
देवंतक समुझावत ताइ । नारंतक तीजौ अतिकाइ ॥
ए तीनौ रावन के पूत । तिन सँग सेना चली बहूत ॥ ७ ॥
महां परसु अरु तीसरु कह्यौ । वीर महोदय गज आरुह्यौ ॥
बरनत सैन जात नहिँ गन्यौ । चलत सु जूथ सेस सिर धुन्यौ ॥ ८ ॥
बहुत महारथि आयुध लिए । बंदर दल महँ जूझन गए ॥
देखि दुहूँ दल बागो मारु । बे उन, वे उन करत सँघारु ॥ ९ ॥
अंगद कोपि अगाड़ो गयौ । नारंतक ता सनमुख भयौ ॥
अंगद हन्यौ असुर इकतीर । भयौ निफल भेदचौ न सरीर ॥ १० ॥
बालि पूत सर लगत कुपान । मुठिक सीस मारे किक्यान ॥
नारंतक भुइँ भयौ जुझार । धाइ सीस कपि कियौ प्रहार ॥ ११ ॥
रकत प्रवाह बदन तैं भयौ । अंगद तब धरती गिर गयौ ॥
संभरि गात खिनकु सुस्ताइ । अति रिस गौ सामुहें ता धाइ ॥ १२ ॥
अंगद हन्यौ मुठीका धाइ । नारंतक न सम्हारौ ताइ ॥
गए प्रान भौ विकल सरीर । तव कीप्यौ देवंतक वीर ॥ १३ ॥
विष्नुदास यह कारन कह्यौ । बालिनंद राखस रन बह्यौं ॥
इनकौ जूझ जु बरन न जाइ । जिते आइ तिन कीनै घाइ ॥ १४ ॥
नील सरिस तव बागी मारि । दीसतु सिव त्रिपुरहिँ अनुहारि ॥
हनुमत तिरछौ मूठिका हयौ । खरहरि सो धरती गिर गयौ ॥ १५ ॥
देख्यौ परचौ वीर देवंत । हाँकि महोदर उठचौ तुरंत ॥
धाइ हनू ता मैंगल हयौ । मारचौं सीस चून ह्वै गयौ ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जूझि महोदर धरती परचौ । तब गजु धाइ हनू सो लरचौ ॥
करि संग्राम घरी द्वै तीन । ताकौ फरिस हनू लियौ छीन ॥ १७ ॥
मारचौ असुर मुरछि धर परचौ । हनुमत फरिस घाउ सिर खुरचौ ॥
तीनों सुत सुनियौ रन परे । हिएँ सोच रावन कर मरे ॥ १८ ॥
जनु दिखात रावन को काल । लंक खरभरी डरचौ भुआल ॥
जब तीसर रावन सुत परचौ । महाँ परसु राषस परजरचौ ॥ १९ ॥
वादर रिखभ परस अति चाउ । दोहुन सौं वीतौ भरियाउ ॥
रिखभ हयौ तिहिं गदा प्रहार । मुरछौ धरनी परचौ कुमार ॥ २० ॥
घरी एक बहुरौ संभरचौ । बंदर धाइ अगाऊँ लरचौ ॥ ११००

दोहा—

महापरसु देख्यौ परचौ, तब कोपौ अतिकाउ ॥ २१ ॥
आजु न मारौं रामदल, रघुकुल भानौं ठाँउ ॥ २२ ॥

राम पेड़ ता लछिमन डाल । तिहि प्रति शाखा अवर भुवाल ॥
पात फूल जो वनचर कोरि । आज सु तरवर डारौं टोरि ॥ २३ ॥
सारनि सरिस कहै अतिकाइ । आजु राम जु न भानौ ठाइ ॥
मालिवंत हौं गर्भ न धरचौ । रावन अंग न मैं अवतरचो ॥ २४ ॥
हाँके सारथि तुरी रिसाइ । आवत राम लखे अतिकाइ ॥
कहै विभीषन यह व्यौहार । यह को है पर्वत आकार ॥ २५ ॥
जोतै तुरियन सहस अनूप । जिनके बरन सकत को रूप ॥
राखस तेज न सकहु निहार । सूरज सहस तनी उनहार ॥ २६ ॥
धनुष चढ़ाएँ असि कर लियैं । करतु डफान न संकत हियैं ॥
वंदर सकल सयन भय भौन । मों सहँ कहि यह जोधा कौन ॥ २७ ॥
ऊतरु देत विभीषन राइ । रानी मालिवंत इहिं माइ ॥
यह रावन कौ लघु सुत आइ । काहू पास न जीत्यौ जाइ ॥ २८ ॥
बहुत द्यौस धाता ध्याइयौ । यह रथ धनुष कवच पाइयौ ॥
याहि पितामह आयसु दियौ । दानव देव जीत बल लियौ ॥ २९ ॥
साईं याहि नाम अति काइ । जीते बहु प्रथमी के राइ ॥
आपुन करौ जूझ कौ साज । हारन जितन तिहारौ आज ॥ ३० ॥
सुनि रावन सुत कह्यौ प्रचार । बंधव सहित घालिहौं मार ॥
लै करि धनुष जुरचौ संग्राम । मो पर भागि न बाचहु राम ॥ ३१ ॥
इतनौ सुनि कोप्यौ लछिमना । धनुष चढ़ाइ लियौ ता छिना ॥
ताकौ सुनि दुसहौ टंकार । बोलौ रावन तनौ कुमार ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लछिमन वालक बुद्धि अबूझ । जानै कहाँ हरौ है जूझ ॥
तो मारत अपकीरत होइ । वालक जित्यौ कहा जस लोइ ॥ ३३ ॥
हौं जो तो कहँ छाँड़ौ बान । तू छाँड़हिगौ भागि परान ॥
तोहिं सुगति मो अपजस घनौ । जूझन पठौ बंधु तुहि तनौ ॥ ३४ ॥
सुनि लछिमन बोलौ तिहि बीच । तुहि अब आज बुलायौ मीच ॥
छाँड़ि डफान वीर अति काउ । जो बल तोहि सो मोहिं बताउ ॥ ३५ ॥

वस्तुबंध

जो न काटौं आजु कोदंड बान बान तन तो खुरौ ।
जो न कवच तोहि काटौं जो सारथि अवहि न वहौं ॥
जो इन तून सर्वनि घटाऊ अपनी ज्ञाति सहाउ ।
सीसन कुंडल स्यौं खुरौ तु लाजौं दसरथ राउ ॥ ३६ ॥

तौ हौं लाजौं दसरथ राउ । जो रन धरौं पिछौंड़ौ पाँउ ॥
राखस अैसे सोह पवाहि । तू अवही जम मंदिर जाहि ॥ ३७ ॥
कोपि निसाचर घाले बान । आवत लछिमन कियो सँघान ॥
कोपि लखन ताकौ सर हयौ । टूटौ खंड खंड ह्वै गयौ ॥ ३८ ॥
ताहि देखि कोप्यौ अतिकाइ । वान वान धरि घाली छाइ ॥
लखन विभीषन मंत्री चार । ये उबरे दल कपि सब मार ॥ ३९ ॥
लछिमन देखि बान गुन दयौ । सनमुख सीस निसाचर हयौ ॥
सहि न सकौ ना निष्ठुर घाइ । पर्वत सौ उठियो अतिकाइ ॥ ४० ॥
तब तिहि बान लगत तन दीठ । रुहिर भरचो जनु पर्वत दीठ ॥
चेति निसाचर बहुत कुपान । तब सोरह संघानै बान ॥ ४१ ॥
आवत देखि लखन काटियौ । और बान राखस गुन दियौ ॥
उर लाग्यो लछिमन के आइ । देखि रुधिर तब उठो रिसाइ ॥ ४२ ॥
खिन इक साखत लगी न बार । सात सहस सर हने कुमार ॥
ते सब कवच लागि मुरि गये । निफल बान लछिमन के भये ॥ ४३ ॥
अग्नि बान तब लियौ रिसाइ । दिन यरु सर साध्यौ अतिकाइ ॥
ते ऊपर पर अधफर लरे । एक मुहुरत लरधर परे ॥ ४४ ॥
लछिमन तबहि इंद्र सर लयो । वायुवान राखस गुन दयो ॥
इहि विधि भरे दुहुनि संधान । लाग्यो पवन लखन के कान ॥ ४५ ॥
ताकौ सर मुसकिल तिहि कह्यो । अैसैं जान न तो पहँ बह्यौ ॥
कवच अभेद्य वज्र उनहारि । अति दृढ़ ताहि ब्रह्म सर सारि ॥ ४६ ॥
सिख दै पवन जबहि नीसरचो । ब्रह्मबान लछिमन गुन करचो ॥
ग्रहगन गिर सागर थरहरचो । देखि सँधान असुर सुर डरचौ ॥ ४७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चल्यो बान सो गगनहिं लागि । मानौ महाप्रलय की आगि ॥
आवत वीच हन्यो सर कोरि । चलौ सवल सो सक्यो न मोरि ॥ ४८ ॥
मारे गजासूल के घाइ । सकति मुसल तिहि हनै रिसाइ ॥
ताके आयुध बान न गनै । वेग सहित राखस उर हनै ॥ ४९ ॥
सीस मुकट कुंडल स्यों गिरौ । बड़ी सरीर धरनि पर परयो ॥
यौ कहराउँ नगर जब सुन्यौ । राइ सोगु करि माथो धुन्यौ ॥ ५० ॥

इति श्री रामायने सुंदरकांडे अतिकाय बधो नाम सर्गः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

निसुनहि विष्नुदास कवि कहै। लछिमन मेघनाद ज्यों बहै ॥
ताके जूझ न जान्यो अंत। भयो सहाइ वीर हनुमंत ॥ १ ॥
रोवत रावन करत प्रलाप। काहे पुत्र दियौ संताप ॥
मो जीवत तोहि तपसिन बह्यो। धृग जीवन दसकंधर कह्यो ॥ २ ॥
मेघनाद बिनवत सुनि तात। जूझन को तुम कत पछितात ॥
जो अतिकाइ डरनि रनभाज। तो तुम तात होहि बहु लाज ॥ ३ ॥
जो अब मेरे कंठह प्रान। सोच करत तुम रंच सयान ॥
लछिमन राम वहौं रन आज। लंका करहु निंकंटक राज ॥ ४ ॥
तूठौ रावन सुनि सुत बान। बहुत साज दै विनवत तात ॥
सेत छत्र माथे फरहरचो। रथ चढ़ि वीर पयानौ करचौ ॥ ५ ॥
तब सो होम साल महँ गयौ। कारौ छाग होम कहँ लयौ ॥
ताके रुहिरैं आहुति देइ। ब्रम्हवान · लै होम करेइ ॥ ६ ॥
राते अंग कुसुमभय धूप। औरैं राते बसन अनूप ॥
ताकौ होम भयौ परमान। निकसौ कुंड माँहि रथ आन ॥ ७ ॥
तिहि चढ़ि गयौ वीर आकास। पहूँच्यौ तब रघुपति दल पास ॥
आपु अदृष्ट भयौ अति रीस। बरसत बान कपिन के सीस ॥ ८ ॥
लछिमन सरिस कह्यो यों राम। मेघनाद माया संग्राम ॥
सबनि सिला तरुवर संम्हारि। मुरछे वीर परे धर पार ॥ ९ ॥
जामवंत गज अंगद तार। संपति वीर प्रजंघ जुझार ॥
धूमकेतु नल अरु हनुमंत। मुरछे गंधमर्द मयमंत ॥ १० ॥
कुमुद सरभ उलकामुख नील। तपन समान जिनहि वल सील ॥
दुविद सुखेन सुबल सुग्रीउ। इन सरीर मानौ नहिं जीउ ॥ ११ ॥
हेम माल गोरिख भगवासु। इन कपि फुरत जु मंदो साँस ॥
बंदर पारिजात केसरी। बान वृष्टि इनके सिर परी ॥ १२ ॥
लछिमन वीर राम विग्रहें। तिहि दल एक विभीषन रहे ॥
उहि जानी मैं डारे मार। मेघनाद गयौं नगर मँझार ॥ १३ ॥
तबहि विभीषन पहुँच्यौ आइ। राजा हनू परे रघुराइ ॥
पहुँच्यौ रघुनंदन के पास। देखि ताहि तिन संका भास ॥ १४ ॥
बहु अस्तुति करि लिए जगाइ। × × × ॥
लई लेसतिन दीवट हाथ। देखत सकल कपिन कौ साथ ॥ १५ ॥
रन भुंइ देखत फिरत बहोरि। परे जहाँ कपि चौंसठ कोरि ॥
जामवंत चेत्यो तिहि बार। विभीषन सों पूछत सार ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मो सह देव जु कहौ तुरंत। जीवत मुयौ किसौ हनुमंत ॥
बोलत तवहि विभीषन राइ। मोसहँ अजा कहौ समुभाइ ॥ १७ ॥
सकल मुरछि बंदर दल परचो। तुम हनुमंत कहा संभरचो ॥
जामवंत तव विनवत सेव। हनुमत मरत मरै सव देव ॥ १८ ॥
वाहि जिवन जीवहि सब कोइ। कारज यहि वाहो तैं होइ ॥
सुनियो बैन अजाजो कह्यो। हनुमत उठितव पग गहि रह्यो ॥ १९ ॥
यो कहँ देव मया मन कीजे। कहा काजु सो आयसु दीजे ॥
कहत अजा सुनि पवन कुमार। तुम चलि जाहु न लावहु वार ॥ २० ॥
हेमवंत पर्वत की चूरि। तिहि ठाँ धरी पितामह मूरि ॥
वायुपूत आतुर लै आउ। राम सहित सव कटक जिवाउ ॥ २१ ॥
तापह जरत दीप उनहारि। बुधि वल लीजहु मूल उखारि ॥
तिहि ठाँ अवरु न जैहै कोइ। यह कारज तोही तैं होइ ॥ २२ ॥
इतनौ सुनत तवहिं हनुमंत। पर्वत चढ़ौ गरुड गुन संत ॥
बाढ़ि सासु आकासहि कियौ। देखत सबनि सौगुनो भियो ॥ २३ ॥
बाँधि फाल उपयौ अतिबरी। पर्वत सिखर सिला खरहरी ॥
कौतुक जिते गये तिहि ठाँइ। बंदर उड़े अंग की बाइ ॥ २४ ॥
गोहिंन पर्वत उड़े असंखि। मानों गरुड़हि लागो पंखि ॥
तव सुग्रीव अचंभौ भयो। उपयौ हनू हेम गिरि गयो ॥ २५ ॥
घरी एक तव पर्वत जोइ। मूल न चीन्हत कैसो होइ ॥
जानि विलंब हनू कोपियो। सबै उखारि हाथ गिरि लियो ॥ २६ ॥
नाना गंध लेत सुख दौरि। कौतुक देखत अगनित कोरि ॥
सब कोइ देखि रहै भिभकाइ। राम पास लैं पहुँचो जाइ ॥ २७ ॥
मूल पिछान लई जामंत। जागे राम लखन जु छुवंत ॥
रीछ लंगूल जगे सब हरी। हनुमत तनी वहुत (थुति) स्तुति करी ॥ २८ ॥
वहुरौ आयसु कह्यो बुलाइ। मूल थान धरि आवहु जाइ ॥
हनू मूल लैं गयो बहोरि। मन हरषो तैं तीसों कोरि ॥ २९ ॥
जागि राम तव उठे कृपाइ। बानर वीर लिये हंकराइ ॥
आयसु दियो करौ मति संक। वेगहि पैठि जाहु गढ़ लंक ॥ ३० ॥
सुनत बात बानर उठि चले। आँगैं भये सुमट जें भले ॥
हाथ निवार अरूरे लये। राखस भागि लंक महँ गये ॥ ३१ ॥
लखन राम जो छाँड़हि वान। ते बहुतन के हरहिं पिरान ॥
लंकेसुर रिस करी बहूत। समदे कुंभकरन के पूत ॥ ३२ ॥

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुंभ निकुंभहिं आयसु दयौ । अगनित लाख साजि दल लयौ ॥
आवत राखस हन्यो रिसाइ । हन्यो मयंद परचो खहराइ ॥ ३३ ॥
देखि मयंद धरनि गिरि गयौ । ताल रुषव वानर उठि लयौ ॥
ऊपर पर ते करहिं प्रहार । दोऊ मुरछित बारहिं वार ॥ ३४ ॥
उफरचो रिषभ अगहुड़ौ गयौ । कुंभ निसाचर मुठिका हयौ ॥
फाटौ सीस धरनि महँ परचौ । संकर सूल तिपुर जनु परचो ॥ ३५ ॥
देखत उठौ निकुंभ रिसाइ । कियौ प्रहार हनू कहँ जाइ ॥
ताके जूझ न जानौ अंत । लरत निकुंभ वीर हनुमंत ॥ ३६ ॥
आगर एक लोह अति जरी । कनयर रचित ज्वाल जनु जरी ॥
रिस करि हनुमत हयो कपाल । मूरछि खंड कियौ अतराल ॥ ३७ ॥
धाइ निसाचर मुदगर लियो । कोपि हनू कहँ सिर महँ हयौ ॥
मुरछि परचो घर हनुमत वीर । पुनि कोपियो निसाचर धीर ॥ ३८ ॥
लियौ पवन सुत रथ महँ डारि । हरषवंत भयो हियैं मँझार ॥
तब लै नगरी लाग्यौ जान । राखस सैन सकल किलकान ॥ ३९ ॥
लाज्यौ हिरदै उठौ रिसाइ । मल्लजुद्ध लाग्यौ समुहाइ ॥
राखस सवल न जीत्यौ जाइ । देखत राम वीर लिखाइ ॥ ४० ॥
पर्वत सौ मीड़ौ अति वरी । भौंजो देर पसी खर भरी ॥
टोरी नार सकति अरु ग्रीव । हनू निसाचर मारचौ जीव ॥ ४१ ॥
परचौ निकुंभ राइ जब सुन्यौ । मकर नयन सौं आयसु भन्यौ ॥
आजु हमारो परिहससार । रथ चढ़ि वीर राम रन मार ॥ ४२ ॥
आयसु लै कोप्यौ वरवीर । राम मारि खरकौं दिउँ नीर ॥
सारौं आजु बयरुआधु नौ । परहसु है तुमतें मुहि घनौ ॥ ४३ ॥
पैज असुर जब लाग्यौ करन । सुनि रावन दीनैं आभरन ॥
आयुध मुकुट सैन अति साज । चलौ वीर बंदर दल गाज ॥ ४४ ॥
असगुन भौ ता करत पयान । धू धू काल लोपियौ भान ॥
धुर दाहिनौ तुरी लरखरचौ । पेनागिर सारथिकौं परचौ ॥ ४५ ॥
धुज पताक ताके भए भंग । अरु असु मोकहँ तासु तुरंग ॥
दक्षिन कर कंकन गिरि परचो । देखत सगुन विकल मन धरचो ॥ ४६ ॥
साहस कछू करत मन संक । हा हा शब्द भयौ तब लंक ॥
बंदर भजे तजौ संग्राम । जाइ दुरे जहँ लछियन राम ॥ ४७ ॥
तब मकराक्ष कोपि कर कह्यो । तू वह रामजु मो पितु हयो ॥
तेरे रुधिर अंजुली दैउँ । उरिन पिताहि होउँ जस लैउँ ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिहि गति जूझ आज जो करै। कीरति मरैं सुगति अनुसरैं ॥
इतनौ सुनि रघुवीर कुपान। मूरख आप घुतै अग्यान ॥ ४९ ॥
जो दस सहस निसाचर साथ। सो खल मारौ एकहिं हाथ ॥
इतनौ सुनि मकराक्ष कुपान। रामचंद्र वेधे दस बान ॥ ५० ॥
ते न लगे अंगन रघु तनैं। एक बान दूं दूं सर हनैं ॥
वे वाकहँ वे वाकहँ हनै। सूझत तहाँ न आप पर वनै ॥ ५१ ॥
राघव कोप न सक्यौ सँभार। हैवर सारथी हनै प्रचार ॥
परत देखि खर-नंद रिसान। भयौ पयादौ करि संधान ॥ ५२ ॥
लै त्रिसूल छाँड़ौ रिस लागि। मानौ छुटी प्रलय की आगि ॥
राम बान छाँढ़्यौ आ पुनौ। टूटि त्रिसूल परचौ ताननौ ॥ ५३ ॥
मूठि उठाइ बहुरि धाइयो। अति रिसअग्नि बान छाँड़ियौ ॥
एक पैड़ नहि लहियौ जान। परचौ धरनि परिहरे पिरान ॥ ५४ ॥
खरकौ परत सुन्यौ जब परचौ। हिएँ सोचि रावन परजरचौ ॥
मेघनाद सों कहै हँकारि। रथ चढ़ि पूत राम रन मारि ॥ ५५ ॥

छंद

रथ चढ़ि धायौ, जूझन आयौ, द्वै दल वाग्यौ मारु।
ते कपि गाजहिं, निसिचर लाजहिं, करहिं ते अति संगारु ॥
ता सैन परानौ, देखि कुपानौ, मेघनाद वरवीर।
बरसत सर धारनि, बहुत प्रकारनि, जनुघन भादौ नीर ॥ ५६ ॥
काहू गांतनि सरसों सातनि, काहू सतनि अधिक्क।
ते गज नल नीलौ, हनू गहीलौ, समर निसाचर कुप्प ॥
गिरिवर धर डोले, जल निधि छोले, बंदर दल अकुलाइ ॥
सो गयो अवासहि, रावन पासहि, माथौ नायौ जाइ ॥ ५७ ॥
तिहि आवत दीठौ, रावन तूठौ, कहौ पूत कुसलात।
अब इहि संग्रामा, परचौ न रामा, कही इंद्रजित बात ॥
तरु काटे गोरें, होत बहोरें, जो वह उबरत मुलु।
तैं राम न मारचौ, काज बिगारचौ, बहुरौ होहु डडूल ॥ ५८ ॥
तब सुनि बाता, सकुचौ गाता, गयो कुंड के पास।
तिहि होमु सिरायों, तब रथ पायौ, चढ़ि पहुँचौ आकास ॥
तव बान बहूतं, दसरथ पूतं, छिन महँ घाले छाइ।
सागरि न पईठं, आवत दीठं, धनु गुन कियौ रिसाइ ॥ ५९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

दुहूँ वीर कर लिये चढ़ाइ। अंग निसाचर हनैं रिसाइ॥
मेघनाद अति रिसे मनकरी। कुहुरु उपायौं माया करी॥ ६० ॥
दिव्य वान राघव पर ठयो। ता अति तेज उजारौ भयो॥
चरित निसाचर कियौ बहूत। माया अंध रच्यौ आकूत॥ ६१ ॥
भयौ अगोचर छाँड़त वान। तिन आवत रघुवीर कृपान॥
जेते वान इंद्रजित हने। काटि राम सव तृन सम गिनै॥ ६२ ॥
मेघनाद जब जात न बह्यो। हँसि तव बचन बंधु सों कह्यो॥
भूख प्यास निद्रा नहिं करी। वारह वर्ष न भूगई तिरी॥ ६३ ॥
जो कोइ पुरुष होइ दृढ़ ऐसौ। मेघनाद रन जीतिहि तैसौ॥
तव सुनि लछिमन बिनवत सेवा। मेघनाद मैं मारहुँ देवा॥ ६४ ॥
जो मोकहँ दीजहि फरमान। तौ छाँड़ौं ब्रम्हा कौ बान॥
एकै सव राखसकुल हरै। इन सौं जूझ कौन नित करै॥ ६५ ॥
तब रघुनाथ उतरु यह दियौ। सबनि विरोध न मेरौ कियौ॥
रावन एक तनौ अपराधु। ऐसौ करम करै नहिं साधु॥ ६६ ॥
तालगि वाल वृद्ध तिय वहै। सुनि लछिमन रघुनंदन कहै॥
राजनीति जो चलिए टारि। तौ रघुवंसहिं आवहि गारि॥ ६७ ॥
वाकौ सबद सुनन दै मोहिं। राखस मारि दिखाऊँ तोहिं॥
डरप्यौ मेघनाद गयौ तहाँ। थान निकुंभल नगरी जहाँ॥ ६८ ॥
कपट बुद्धि ता पापहिकरी। माया रचि रघुपति की तिरी॥
रथ बैठाइ तहाँ लै गयौ। पच्छिम द्वारैं ठाढ़ौ भयौ॥ ६९ ॥
हनुमत देखि करें संदेह। मैलि चीर तन सीता एहु॥
मैली बेनी ताके सीस। मैं एकौ आभरन न दीस॥ ७० ॥
देखि हनूं तब लई उसास। छाँड़ि जूझ गो राखस पास॥
विनवत हनुमत लालच कियैं। देखि विचारि वीर निज हियैं॥ ७१ ॥
ब्रह्मवंस रावन कौ पूत। तिवई मारत पाप बहूत॥
तिवई अवध कहत सब कोइ। याहि वधै नर धरम न होइ॥ ७२ ॥
यह पतिव्रता विरह संग्रही। छाँड़ि इंद्रजित हनुमत कही॥
मेघनाद बोलां तिहि ठाँइ। राज धर्म तुम जानत काँइ॥ ७३ ॥
जातैं अपनो बैंर सारिये। बैंरी को कुनवा मारिये॥
भोजन हमहिं आइ मानई। हम राखस कहिए निर्दई॥ ७४ ॥
देखि विचार जाइ जो खाइ। ताके पातक किसौ डराइ॥
इतनौ कहि राखस परि जरौ। बांएँ कर ता चोटिहिं धरौ॥ ७५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सीता राम रास बिलुलाइ। कियौ घाव हनुमंत दिखाइ।।
बाएँ काँध काँख दाहिनी। माया सीता राखस हनी।। ७६ ।।
फर फ़राई धर परियौ आइ। बंदर देखि रहयौ मुरझाइ।।
भागन लागे अति भय भरे। हनुमत करि सब धीरे करे।। ७७ ।।
आपुन सिला जु लई उखारि। मेघ नाद पर दीनी डारि।।
ताकौ रथु सारधि लै गयौ। उद्यमथ नृफल हनू कौ भयौ।। ७८ ।।
वायुपूत अति रिस मय जाल। लंक भेदि सिलगई पताल।।
हनुमत जाइ राम सन कही। मेघनाद असि सीता बही।। ७९ ।।
सुनत मुरछि धरनी गिरि गयो। जनु तरु घाइ कुल्हारी हयो।।
लखिन चीन्हि सीस लै धरचौ। राम मनहि कछु साहस करचौं।। ८० ।।
मानौ राम भयौ निरजीव। हियरा दुःख करै सुग्रीव।।
तब लछिमन लै छाँड़चौ तीर। चेति राम संभरचो सरीर।। ८१ ।।
आपद परै सहै सब कोइ। सो निज पुरिख जु धीरौ होइ।।
रावन पापी भुंजत राज। राम बिसुरत देखत आज।। ८२ ।।
पाप धर्म मति बरनहु कोइ। दैवहि भावति सो गति होइ।।
तुम पितु वचन राज परिहरचौ। धरस चलत व्रत हियरा धरचौ।। ८३ ।।
जीति कुबेर बहुत धनु लियौ। रावन पाप चलत सुख कियौ।।
तू बिन गथ उहि संपति घनी। देखि राम माया विधि तनी।। ८४ ।।
तपु जप धर्म आइ धन हीन। द्विज चंडालहि सम धन लीन।।
तवहि विभीषन कहत विचारि। सीता कौं को सकिहै मार।। ८५ ।।
कौने बुद्धि राम तुम हरी। मेंघनाद माया की करी।।
तुम प्रथमहिं माया मृग छरे। माया जूझ जूझ धर परे।। ८६ ।।
अब माया सीता के सोग। उठि रघुनाथ हँसत सब लोग।।
इतनी बात विभीषन कही। चेत्यौ राम धीर मति गही।। ८७ ।।
तासों कहत जु अचरज भयौ। अब वह मेघनाद कत गयौ।।
कहत विभीषत सुन जग नाथं। लछिमन दीजे अब मो साथ।। ८८ ।।
वंदर वली देहु संग लाइ। मो पहँ इंद्रजीत कहँ जाइ।।
थान निकुंभिल महँ तप करै। ब्रह्मध्यान इकटक चित धरै।। ८९ ।।
वहुत दिवस धाता ध्याइयौ। कवच बान तवहीं पाइयौ।।
अरु तब ब्रह्मा तासौं कह्यौ। तू रन तापहँ जैहै बह्यौ।। ९० ।।
वारह वरस संजमी सोइ। भूख प्यास साधी जेहि होइ।।
ताके घाइ टूटि सिर परै। जग्यँ साल महँ अनत न मरै।। ९१ ।।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बंदर सैंन सहित हनुमंत। रीछ सहित दीजे जमबंत॥
अरु मो लछिमन देहु सहाय। मारौं मेघनाद अब जाइ॥ ९२॥
कह्यौ विभीषन सोई कियौ। हनू सहत लछिमन सँग दियौ॥
किलकिलंत कपि रीछन दार। बेढी तुरत जाइ मखसार॥ ९३॥
भागे राखस करत पुकार। मेघनाद कहँ दीनी सार॥
कारे तुरगन रथ आरुह्यौ। धनुष विरंचि-दत्त कर गह्यौ॥ ९४॥
राकस जहँ रोके हनुमंत। इंद्रजीत तहँ गयौ तुरंत॥
बान अनेकनि हनुमत हन्यो। विभीषना लछिमन सों भन्यौ॥ ९५॥
यहि दिखि रावन तनौ कुमार। गन्यौ लंक महँ एक जुझार॥
अब जो तुस पहँ मारौं जाइ। तौ रावन पहँ कहा सिराइ॥ ९६॥
इतनौ कहि जब आँगै गयो। साल द्वार तब ठाढ़ौ भयौ॥
राखस दल दीनौ बिचलाइ। मारि अखयवट लीनौ जाइ॥ ९७॥
ताखिन मेघनाद धाइयौ। बलकरि वह वरु चाहत लियौं॥
लखन विभीषन देख्यौ आइ। तब तोहि कहियौ बचन रिसाइ॥ ९८॥
तूं जू पिता हौं तेरौ पूत। कर्म तात तुम कियौ अजूत॥
तूं जु जनम रघुबंसहिँ लियौ। आज जु अंत हमारौ कियौं॥ ९९॥
इक स्वामी तो जेठौ भाइ। रे विसास कत छोड़न जाइ॥
मारि आपुनौ डारत छाँहँ। यह हम सुनी हुती जग माहँ॥ १००॥
जिन जीते गन गंध्रव देव। ते तुम करत नरन की सेव॥
अति रिस कोपि इंद्रजित कहौ। दुर्जन सेवत का फल लहो॥ १०१॥
कुल अपनौ तू करौ सँघार। कैसैं तरै नरक कौ पार॥
तबहि विभीषन ऊतरु दियौ। पुत्र विचार पिता जो कियौ॥ १०२॥
चौदह सहस जासु सुंदरी। तिहि कत नारि पराई हरी॥
पापी मतौ कहत रिस करै। वचन हमारौ चित्त न धरै॥ १०३॥
रहे कोप पर्वतहि बईठ। जो फल भयौ सो तुम सब दीठ॥
ध्रिगु सो बंध्रु जो हित परिहरै। बंधु सो ध्रिगु हिय दाव जो धरै॥ १०४॥
मारैं व्याधि जु उपजत अंग। ज्यावहि ओखद रहत सुदंग॥
रिषि मारे सु सुरन विग्रहे। अरु अधिकार सबन के लहे॥ १०५॥
देखि विचार विभीषन कह्यौ। जगत बैर करि को सुख लह्यौ॥
उपज्यौ गर्भ कैकसी तनै। तब तैं धरम चलत आपुनै॥ १०६॥
रिषि जु पिता न प्रीति अनुसरै। मेघनाद जो पापहिँ डरै॥
तबहिँ विचारि विभीषन कह्यौ। लछिमन आइ अखैवट लह्यौ॥ १०७॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेघनाद मति तूं सत हार। मरहु सामुहैं घाउ सम्हार।।
कीजहु जूझ करहु मति संक। दुर्लभ भयो राज गढ़ लंक।। १०८ ।।
हरत परत मति छाँड़हि तात। सहियहु घाउ सामुहैं गात।।
तबहि इंद्रजित कहियों कोपि। रहियो वीर एक छिन रोपि।। १०९ ।।
मेघनाद तौ लहौं न नाम। आजु न मारौं लछिमन राम।।
इतनौ कहि कोप्यौ वरवीर। बेध्यौ लछिमन अगनित तीर।। ११० ।।
बंदर रीछ जु सन्मुख गये। दस दस बान सबनि तन हये।।
दससत लछिमन हनुमत सात। सौ सर लगे विभीषन गात।। १११ ।।
जामवंत केसरि दस हनैं। नील कुमुद नल गनत न बनैं।।
अैसैं बाननि बरसत वीर। जनु भरि भादौं वरसत नीर।। ११२ ।।
दुसह गाज करि अति बल मरै। सोरन माँहिं न टारौ टरै।।
तवहिं विभीषन कह्यौ पचारि। इहि ठाँ मेघनाद की हारि।। ११३ ।।
जो अब इहि ठाँ मारौ जाइ। तौं रावन पहँ कहा सिराइ।।
लछिमन कोपि बान गुन कियौ। तासु अभेद कवच काटियौ।। ११४ ।।
देखत सबन टूटि धर परचौ। तब अति कोपि इंद्रअरि लरयौ।।
बीत्यौ जूझ दुहूँ दल अैसौ। दैयत देवनि वाग्यौ जैसौ।। ११५ ।।
असिवर सक्ति गदा के घाइ। राखस बंदर मारहि धाइ।।
बंदर तरुवर पर्वत हाथ। मारत धाइ असुर कौ साथ।। ११६ ।।
वे उन सौं वे उनसौं अरे। बानर बहुत निसाचर परे।।
फाटौ कवच लछमन जानि। विभाषना धायौ तजि कान।। ११७ ।।
अरु सहाइ तिहि मंत्री चार। बहुत सूर तिन हनै पचारि।।
अरु यहि कहि कपि दल धीरए। तुम रन बहुत वीर खय लये।। ११८ ।।
अब मति भागि बिनासौ काज। रावन मारि दिखाऊं आज।।
जिते परे सु महारथि ताम। ते गनि कहत विभीषन नाम।। ११९ ।।
कुंभ निकुंभ अकंपन बरी। और प्रहस्त परिसु अति बरी।।
वक्रमूल असिकर्ण दिवंत। प्रजंघ महान परचौ नारंत।। १२० ।।
अप्रोहि सुसौनि ताकु जुझार। महोदर वक्राक्ष लंकानु कुमार।।
महापरसु तिसरा अति काय। जीव पक्ष जंमालि महाउ।। १२१ ।।
महा सूहर भारौ वेग वंत। जग्य केतु रश्मि केतु गनंत।।
विरूपाक्ष सुप्रच्छ विचार। बज्रमुष्टि अरु अखै कुमार।। १२२ ।।
खर दूषण त्रिसरा नृप जानि। मंत्री के सुत कहे वखान।।
एते सब सेनापति रहे। तिनके नाम कहै कवि रहे।। १२३ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुनत बात अति आनँद भए। तिहि ठाँ बल करि ठाड़े भए ।।
हनुमत हाथ ताल तरु लयौ। बहुतक मारि असुर दल हयौ ।। १२४ ।।
मारे राखस परे करारि। पुनि ल्यायौ पर्वतहिं उखारि ।।
अत्ति ऊंचौ गहि डारचौ दूरि। सहस महारथि मारे चूरि ।। १२५ ।।
तिन देखत सुर रिपु दुख पाइ। बान बान कपि लीनौ छाइ ।।
लखिमन सरिस विभीषन कहे। अब मो हाथ न मारत बहे ।। १२६ ।।
मेघनाद मो पुत्र समान। आवत नहीं करत संधान ।।
सुनि लछिमन सर छाँड़े चारि। रथ के तुरी गिराये मारि ।। १२७ ।।
एक बान रथ सारथि हायो। तब रथ छाँड़ि पयादौ भयौ ।।
बंदर सैन दौरि चढ़ि गयौ। ता रथ टूक टूक करि दयौ ।। १२८ ।।
राखस करत अचंभौ दीस। लछिमन हयौ तीन सर सीस ।।
उहि सर पाँच वदन बेधियौ। कोपि विभीषन सर साँधियौ ।। १२९ ।।
ताहि भेदि धरती गड़ि गयौ। अंतक बान इंद्रजित लयौ ।।
वान कुबेर जु लषनहिं दियौ। सो इन ता सनमुख छाँड़ियौ ।। १३० ।।
दोऊ लरत धरनि गिरि गये। दुहुँ मिलि अपर बान कर लये ।।
हेम चित्र अति तेज जु मरचौ। रुद्र-मंत्र मंत्र्यौ गुन धरौ ।। १३१ ।।
जो हौं राम धरम कौ मूल। मंत्र सरिस मन हिय अनुकूल ।।
जो मो मन यह सत्य सहाउ। मेघनाद परियो इहि धाउ ।। १३२ ।।
यह कहि बान वीर गुन धरै। टूटि असुर सिर धरती परै ।।
यहर गात कहि छांड़चौ बान। सुर संक्यौ कंप्यौ ब्रह्मान ।। १३३ ।।
बागत तबहिं असुर धर परचौ। उड़ि सिर रावन अंजुलि परचौ ।।
तूठौ इंद्र बहुत थुति करें। बली निसाचर कापहँ मरै ।। १३४ ।।
जाहि जूझ पचिहारे देव। भुवनर जीति कराई सेव ।।
सो मारयौ लछिमन संग्राम। धनि रघुवंस वीर धनि नाम ।। १३५ ।।
गयौ इंद्र कहि इतनी बात। वेदन भई कुंअर के गात ।।
मुरछि परचौ लछिमन वट छाँहँ। हनू विभीषन गहियौ बाँहँ ।। १३६ ।।
लछिमन जबहिं धरनि गिरि गयौ। तब रघुनाथ बहुत दुख भयों ।।
अंगन ठालौ देखत ठाँउ। लागत जहाँ और सर घाउ ।। १३७ ।।
परचौ इंद्रजित रामनि सुन्यौ। जय जय बचन बंधु कहँ भन्यौ ।।
आनंदे तैंतीसों कोरि। कुसुम वृष्टि वरसंत सुदौरि ।। १३८ ।।
तब रघुनायक अैसी कहइ। अैसी हितु मोमन महँ रहइ ।।
सुनहु विभीषन मोमन भाउ। तोहि लखन सम लेखौं राउ ।। १३९ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जा लछिमन सौ बंधु कहाइ। ताहि रज की चिंता काइ॥
आजु कहौं लंकेसुर वरी। जिहि मतिहीन जानकी हरी॥ १४० ॥
हनुमत पठयौ राम हँकारि। वहुरौ ल्यावौ मूरि उखारि॥
स्यौं लछिमन बंदर तन छिए। ते उठि चलैं मरे सब जिए॥ १४१ ॥
राखस भागि नगर महँ गये। कहत बात अति बिलखे भये॥
साँईं मेघनाद रन परचौ। इतनौ सुनि रावन लरखरचौ॥ १४२ ॥
रोवत राजा लेत उसास। काहे पुत्र मिटाई आस॥
राघौ तनौ सुनौ भरियाउ। ज्यों रन हयौ लंक कौ राउ॥ १४३ ॥
राखस कपि दोऊ रन अरे। रावन राम महा भर लरे॥
वीत्यौ मेघनाद कौ खंड। लछिमन रन जीत्यौ बलवंड॥ १४४ ॥
महा रमायन भारथ्यौ तैसौ। राम राव नहिं वीत्यौ जैसौ॥
रावन लही पुत्र की सार। सिर धुनि मुरछौ वारहिंवार॥ १४५ ॥
धरी चार मुरछित भयौ वीर। तव फिरिकै संभलत सरीर॥
जब चेत्यौ दुख करत वहूत। वारहिवार पुकारत पूत॥ १४६ ॥
मेघनाद गुन हियरा धरइ। अति विलाप लंकेसुर करइ॥
तेरो उत्तर किरिया काज। मोकहँ करन न आवहि आज॥ १४७ ॥
मेरौ तौहिं चाहियत कियौ। अजुगत तोहि मरत मैं जियौ॥
तेरे जनम जितौ सुख भयौ। तातैं सतगुन अब दुख दयौ॥ १४८ ॥

इति श्री रामायने सुंदरकांडे मेघनाद महाबीर बध नाम सर्गः

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सर भरिहौं न भयौ रे पूत । इते बचन तिहि कहे बहूत ॥
कोप्यौ रावन हियैं विचारि । तब सब मंत्री लिये हँकारि ॥ १ ॥
आयुध साज हमारौ ल्याउ । लै आवहु रथ साजि सनाह ॥
गिरिवर सिखर जबहि तप कियौ । तब मोकहँ धाता बर दियौ ॥ २ ॥
तावर पाय जगत जस जिन्यो । मारौं राम निसाचर मन्यौ ॥
इतनौ कहि तब रथ आरुह्यौ । दीसत जनकु केसरी छुह्यौ ॥ ३ ॥
बाजे सब्द धरनि खरहरी । काहू कछु न भाष संभरी ॥
तब रथ चढ़ि रावन चिंतयौ । या सीता लगि इतनौं भयौ ॥ ४ ॥
प्रथम सीस काटौं तिहि तनौ । पाछैं राम लखन रन हनौं ॥
खड्ग उचाय लियौ तिहि हाथ । सुक सारन मंत्री लिए साथ ॥ ५ ॥
तब असोक वन पहुँच्यौ जाइ । सीता देखि रही बिलखाइ ॥
दुख करि सीता मन चिंतयौ । मेरे कारन इतनौ भयौ ॥ ६ ॥
हनुमत तबहिं कही लैं जाव । हौं हठि रही न पाइ परान ॥
सुक सारन तब कह्यौ रिसाइ । तिय है अवध मारि नहिँ जाइ ॥ ७ ॥
तू रावन तय करे बहूत । उत्तम रिषि विश्रव कौ पूत ॥
संध्या जाप होम तुम करहु । चारि वेद निज मुख उच्चरहु ॥ ८ ॥
अवध तिरी जो डारहु मारि । कियौ पाछिलौ सुकृतन हारि ॥
कालिहि चौदस भद्रा होइ । रावन कोप सकै सहि कोइ ॥ ९ ॥
मेरे वचन धरौ नृप कान । परिहरि पुत्र सोक कौ थान ॥
यातैं कुजस होहि संसार । अति बल जीतौ सिय-भरतार ॥ १० ॥
मानि बात रावन घर गयौ । राखस सैन बोलि सब लयौ ॥
आपुन सभा बईठौ आइ । दू दल जूझ भयौ समुहाइ ॥ ११ ॥
जुरचौ सैन भयो जूझ अपार । सिल बाननि छायौ संसार ॥
वे उन वे उन अंतर हनै । जूझहिँ राखस बानर घनै ॥ १२ ॥
भागत देखि राम कोपियौ । बाँधि तून धनुहर गुन कियौ ॥
हँसि हँसि राघव छाँड़तु बान । जा ताके ता हरत पिरान ॥ १३ ॥
राखस भगे लंक महँ गए । बहुत वीर रावव रन हए ॥
मारे जिनके पूत भतार । रोवहिँ राखसिँ करतिँ पुकार ॥ १४ ॥
यह कहि कहि ते पीटतिं हियौ । यह विरोध सूपनखा कियौ ॥
पूत मराइ कटाई नंक । राखस मरे जराई लंक ॥ १५ ॥
रावन जबहि सताए देव । तब तिन करी ब्रह्म की सेव ॥
तबहि पितामहँ कही रिसाइ । तिवई लगि लंका खँ जाइ ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सो तिवई सीता अवतरी। ता कारन संघरहि सु बरी ॥
मूरिख रावन लहत न पारु। राघव सिरजि सँधारन हारु ॥ १७ ॥
अैसो बिलखतिँ देखी नारि। रावन राखस लिये हँकारि ॥
मेरौ रथ धनुहर सन्नाहु। सारथि बेगहि साज कराहु ॥ १८ ॥
काछ देत मति कोऊ रहै। चलहु तुरत दसकंधर कहै ॥
बंदर रीछ सैन को गनै। मारौं राम निसाचर भनैं ॥ १९ ॥
इतनौ कहि तब रथ आरुह्यौ। अगनित राखस दलसँग लह्यौ ॥
जब लंकेसुर चलियौ कोपि। उड़ी खेह दिनकर गयो लोपि ॥ २० ॥
चलतन आनक बजे निसान। गनत न तिनको संख्या जान ॥
शृंग सौरि आलावुनि ताल। उठत सबद जनु बरसा काल ॥ २१ ॥
एक एक गन परत न गुनी। बजे अठारह ख्योहनि सुनी ॥
धसकति धरनि सुनत गलदार। लए साजि षट तींस हथ्यार ॥ २२ ॥
असिधर चक्र सूल चुकुआर। हुलिका भाला फरस कुदार ॥
पट्टि सफलगु मुसल तरवार। कुंतहि गहत पचारि पचारि ॥ २३ ॥
धनुहर बज्र कुंत अरु दंड। डाक डवरु गहियौ वलवंड ॥
संख सर्कति खेटक गोफान। मुगदर गदा गहै अतिवान ॥ २४ ॥
साजि प लाठी छुरी कटार। गहि लक टीरी फरिस कुल्हार ॥
काठी कटरा गुरिज पडंग। गहैं वीर मन धरत न भंग ॥ २५ ॥
आयुध बीस बीस कर गहे। अरु सोरह रथ ऊपर लहे ॥
तीन चरन दस जाके सीस। काल समान जाहि भुज बीस ॥ २६ ॥
तीन महारथि अगमन चले। वीर महोदर परसु जु भले ॥
रावन चल्यौ छत्र दै सीस। आँगें लरत मजारनि दीस ॥ २७ ॥
घूंधकाल दांसत चौपास। रोवतिँ नारीं सुनी अवास ॥
नकटौ सौंहैं बोलत ढीठ। गीध पताका आइ वईठ ॥ २८ ॥
सारथि पहँ पैनागिरि पर्यौ। धुर दाहिनी तुरीलरखर्यौ ॥
रबि रथ तरहरि फिकरत स्याल। जनु रावनहि बुलावत काल ॥ २९ ॥
ना माथौ न दाहिनि वाँहँ। दीसति नहीं आपुनी छाँहँ ॥
रथ बैठी स्यामा सिर धुनै। नयन नीर मंदोदरि तुनै ॥ ३० ॥
दुपहर दिन नित टूटत तार। फिरत नहीं चढ़ियो अहंकार ॥
तिरी रूप करि रोवति लंक। रावन करत न मन महँ संक ॥ ३१ ॥
जब राजा गौ सिंह दुआर। चौदह सहस ताहि वर नार ॥
जिनि सो जनम न देख्यौ नैन। मंदोदरि सह भाषत बैन ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रोवहि कर मीड़हि पछिताइ। स्वामिनि अजहूँ कंत दिखाइ॥
तिनहिँ बतावति हाथ पसारि। वह रावन जाकी तुम नारि॥ ३३ ॥
भरि लोयन देखौ सब कोइ। सुनि यह भेटँ दुलंभी होइ॥
धीरैं धीरैं हाँकत तुरी। एक एक निरखत सुंदरी॥ ३४ ॥
अैसनि छाँड़ि सिया कत हरैं। बहुत भाँति पछितायो करैं॥
जो बुधि पाछैं सोचतु लोइ। तिहि जो प्रथम चलत सब कोइ॥ ३५ ॥
यह उपदेस विष्नु कवि कहै। सो नर गंज न कबहूँ लहै॥
पापहि मूल क्रोध अरु मोह। दुखहि मूल जो सुतनि बिछोह॥ ३६ ॥
रस तैं विरस कहत सब कौइ। परिहरि तीन सुखी नर हौइ॥
खिनकु मोह करि पुनि हंकार। रावन नाक्यौ सिंह दुवार॥ ३७ ॥
उपज्यौ जूझ भई किलकार। बंदर तरु राखस हथियार॥
उपज्यौ जूझ दूहूँ दिसि घनौ। तहाँ न सूझत पर आपुनौ॥ ३८ ॥
राखस जोग कपिन तरु हृए। हाड़ गोड़ एकन मिलि गए॥
बंदर हये निसाचर वीस। परत देखि रावन गहि रीस॥ ३९ ॥
कान प्रमान धनुष तिहि तान। प्रथम नील वेध्यौ दस बान॥
नौ हनुमंत पाँच गज हयौ। तीन मयंदु धौकि धर दयौ॥ ४० ॥
ए कपि नायक लीन्हौं जीति। कियौ जूझ रावन यह रीति॥
बंदर भगे राम पहँ गये। मनौ विरंचि सरन सुर भये॥ ४१ ॥
तरुवर गहि धायौ सुग्रीव। वीर पच्छ तोहि मारहुँ जीव॥
ताको राजा मैगलु हयौ। तर व धाइ नाग गिरि गयो॥ ४२ ॥
छाँड़ी सिल राखस सिर तनैं। उहि लखि हई खड़्ग आपुनैं॥
चाँपी सिला दाहिनैं पाँयँ। बंदर हन्यो मुठीका धाय॥ ४३ ॥
धरनि एक खिन मूरछि परचो। पुनि सुग्रीव बहुरि संभरचो॥
उठत वेग सौंहौं गयो धाइ। उर मह मुठिका हन्यो रिसाय॥ ४४ ॥
ओछे घाउ असुर नहिँ परचो। तब कपि राजा अति पर जरथो॥
असिवर पायौ रनहि मँझार। स्यों कुंडहि सिर तोरचो मारि॥ ४५ ॥
विरूपाक्ष जब जूझ्यो दीठ। कोपि महोदर आइ पईठ॥
लै तरुवर सुग्रीउ सु दौरि। आवत ता रथ डारचौ टोरि॥ ४६ ॥
तबहि महोदर असिवर गह्यौ। एक खड़ग सुग्रीवहि लह्यौ॥
दोइन पास खड़ग हथियार। दूऔ पयादे लरत जुझार॥ ४७ ॥
वह वा कहँ वे वाकहँ अरे। दुहुअनि के असि झरि धर परे॥
कोपि कपीस महोदर अरे। द्वै मूसल दुहुअनि कर परे॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माथैं कपि पति राखस हयौ। टूटौ सीस चून ह्वै गयौ ॥
परचौ महोदर कपि पति जिन्यौ। देखत रावन माथौ धुन्यौ ॥ ४९ ॥
ज्यों जेठहिं सरिता जल हीन। त्यों रावन दल देखत छीन ॥
महा परसु तब लयो हँकारि। आयसु दयौ राम दल मारि ॥ ५० ॥
चाहौं जिन्यौ राम तो पास। कहि अब करिये काकी आस ॥
इतनी सुनि रावन की बात। महापरसु तब फुलयौ गात ॥ ५१ ॥
काल समान धनुष तिहि तानि। अंगद सैन सँहारत जानि ॥
अंगद बहुत करयौ संग्राम। कौतुक देखत लछिमन राम ॥ ५२ ॥
घरी चार जूझ्यो रन रंग। काहुहुँ घाउ न लाग्यौ अंग ॥
बीस तीस लामी चाकरी। सोरह हाथ ऊँचाइ खरी ॥ ५३ ॥
सो मिल लै अंगद अरि हयो। पंजर टूटि असुर गिरि गयो ॥
परचो परसु जब देख्यौ नैन। तब सारथि सन भाखत बैन ॥ ५४ ॥
यह रथ राम निकट लै जाहि। मारहु स्वर्ग पतालहि चाहि ॥
डारैं कटै पेड़ जो रहै। बहुरौ उलहै रावन कहै ॥ ५५ ॥
जर काटैं पालौ कुम्हिलाइ। रघुकुल-कंदु निकंदौं जाइ ॥ ५६ ॥

दोहा

परचों परसु देख्यौ महाँ, कोप्यौ रावन राउ।
तौ लाजौं जननी पिता, राम न मारौं ठाँउ ॥ ५७ ॥

वस्तु-बंध

जो न काटौं राम कौ चाउ, विभीषन असिवर हनौ ॥
लाख बान लछिमन जो न मारौं, हनुमंतहि तृनवर गुनौं ॥
जामवंत अंगद जु न पारौं, रन नल नील गवाछु।
गज केसरि दुविद मयंद न ताड़ौं, रावन नामु न आसु ॥ ५८ ॥

जो न कंदु रावन कौ खनौ। रावन नाम न अपनो भनौ ॥
आज करौं तासौं संग्राम। कै पुहुमी रावन कै राम ॥ ५९ ॥
बोलत पैज धाइ तहँ गयौ। देखत राम अचंभौ भयौ ॥
विभीषन सों बूझत सार। यह को है पर्वत आकार ॥ ६० ॥
कहत विभीषन रावन राइ। विश्रव तात कैकसी माइ ॥
यह कुबेर की लहुरौ भाइ। महाँ अजीत न जीत्यौ जाइ ॥ ६१ ॥
रावन जानि राम धनु लियौ। निमजि पनचि टंकारो कियौ ॥
डोली धरनि सेस करमरचो। छोम्य समुद नीर ऊछरचौ ॥ ६२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राम वान छाँड़्यौ करि चाउ। बीचहि हन्यो लंक के राइ॥
अंतर काटि करयौ द्वै खंड। रिस लागी लछिमन बलि बंड॥ ६३॥
अति रिस भरैं पचारैं ताहि। तो तन रामबधन सकुचाहि॥
एक प्रहार करै जो मोहिं। तो हौ रावन मारौ तोहिं॥ ६४॥
तब रिस करि लंकापति भनै। मारौं राम तोहि को गनै॥
मित्रा तन व्याहति रन केलि। तीनौं होहिँ आयु सम हेलि॥ ६५॥
परिहरि ताहि राम पहँ गयौ। रावन रुद्र वान गुन दयौ॥
सोई बान राम गुन तानि। भयौ जूझ मेदिनि अकुलानि॥ ६६॥
मय दानव ईसुर लगि कियौ। तब सु वान आपुन कर लियौ॥
गुन धरि मंत्र पूरि परठयौ। अध फर बहुत रूप सो भयौ॥ ६७॥
एकनि अर्ध चंद्र असि धार। एक सिघमुख दसन करार॥
खुरप समान सु उलक अनूप। मेल्यौ एक भयौ बहुरूप॥ ६८॥
बिसु कर्मा राघव कहँ दियौ। गंध्रव वानु कोपि छाँड़ियौ॥
उपत्यौ जूझ गगन गो पाटि। रावन के सर घाले काटि॥ ६९॥
काटे बान देखि धर परे। रावन दिव्य वान संभरे॥
राम हुतासन बान सँभारि। रावन के सर डारे जारि॥ ७०॥
ताके बान निफल सब गये। विलख बदन दसकंधर भये॥
करै दुसह धनुहर टंकार। मुरकत नहीं तजतु हंकार॥ ७१॥
तब सर सात लखन गुन दए। धुजा काटि सारथि सिर हए॥
देखी धुजा परत तिन सीस। लेत उसास असुर कौ ईस॥ ७२॥
पांच विभीषन छाँड़े बान। रावन हिए हए किक्यान॥
पाँइ पयादो धायौ बरी। छाँड़ी सकति लोह अति जरी॥ ७३॥
राम मित्र कहँ आवत जानि। कान प्रमान धनुष तिहि तानि॥
अर्धचंद्र सर छाँड़े तीन। चारि खंड करि डारी छीन॥ ७४॥
काटत सकति देखि धर परी। भो कोपंतन राखस बरी॥
औरौ सकति लई तिहि धाइ। ताकौ तेज बरनि नहिँ जाइ॥ ७५॥
मय दानव लगि संकर करी। सो कुबेर लै लंका धरी॥
सोअब परी रावन के हाथ। जा बल समर जित्यो सुरनाथ॥ ७६॥
कनक रतन जरियो बहु भार। निफल न जात एक ही बार॥
छाँड़ी सबल विभीषन लागि। मानौ प्रलय समय की आगि॥ ७७॥
देखि लखन सनमुख धाइयौ। ठेलि विथीपन पछिहौं कियौ॥
आपुन ओड़ि रह्यो ता घाइ। विस्मय करत लंक कौ राइ॥ ७८॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तब रावन कहियो अकुलान। तू पर काज परिहरे प्रान ॥
रे लछिमन तैं अजगुत कियौ। बंधव राखि हमारौ लियौ ॥ ७९ ॥
लछिमन कहै सुनौ सति भाउ। थाप्यो लंक विभीषन राउ ॥
राम वचन तो भूठौ जाइ। जो लछिमन मरिबे हि डराइ ॥ ८० ॥
परति सकति देखी उरजाम। स्वस्ति स्वस्ति कहि बोलो राम ॥
हा हा करति सकति उर परी। खरहरि मुरछि परचौ धर वरी ॥ ८१ ॥
देख्यौ धरनी परत कुमार। करौ राम रावन सह मार ॥
बिचलौ राखस पछिहौं गयौ। रामचंद्र तहँ ठाढ़ौ भयौ ॥ ८२ ॥
देखी सकति भेदि धर रही। तब रघुनायक काढ़न कही ॥
लाग्यौं कपिदल कौ भरियाउ। पचिहारे सुन छाँड़ति ठाँउ ॥ ८३ ॥
धाइ सु आपुन गही रिसाइ। काढ़ीं सकति तबहिं रघुराइ ॥
देखिहि धीर हियैं करमरचौ। मुरछि राम लछिमन पहँ परचौ ॥ ८४ ॥
जाग्यौ लखन लखन तब करै। दोऊ हाथ हिए पर धरै ॥
धुनत सीस छिन रहत न राइ। तरुवर जर सु हनी जनु वाय ॥ ८५ ॥
आपु करत बंधव परु छाँहँ। छिन छिन धाइ गहै ता बाँहँ ॥
छिन कोपै छिन लेत उसास। छिन न तजै बाँधव को पास ॥ ८६ ॥
या लगि दसरथ आयसु कह्यौ। या लगि मैं कंचन मृग बह्यौ ॥
या लगि भयौ सिया कौ हरन। इहि ठाँ भयौ लखन कौ मरन ॥ ८७ ॥
यहई रावन बहतौ आज। देतौं यहै विभीषन राज ॥
और करत औरै होइ गयौ। कीजे कहा जु कूरौ दयो ॥ ८८ ॥

दोहा

आजु निसाचर मारतौं, देतौ बिभीषन राज।
दैयहि कोइ मति विस्वसौ, सिद्धि विनास्यौ काज ॥ ८९ ॥

चौपही

सुनत विभीषन अति अकुलान। छाँड़ि सोक रघुनाथ कुपान ॥
मन महँ आपु बिचारत भाउ। यह न होइ बिलमन को ठाँउ ॥ ९० ॥
लछिमन मरै, सिया पुनि जाइ। अरु पाछैं रामहिं जमु खाइ ॥
ये तीनौं मो नाहीं काजु। जो हौं दैउँ विभीषन राजु ॥ ९१ ॥
कही बात सुग्रीव बुलाइ। लखन किकिंधा राखौ जाइ ॥
अरु तुम कीजौ याकी सार। मैं रावन मारौं इहि बार ॥ ९२ ॥
देख्यौ कारन बढ़त बहूत। बोल्यौ तबहि धनंतर पूत ॥
नाम सुखेन जाति सो हरी। नारी देखि परिच्छा करीं ॥ ९३ ॥
तिहि हनुमंतहिं कह्यौ बुलाइ। जौलौं सूर न उदय कराइ ॥
तौलौं मूल ल्याइ हनुमंत। अबहीं लछिमन उठैं छुवंत ॥ ९४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वंदर कटक भई यह बात। कही दूत सुनि राखस नाथ ॥
लछिमन हेतु मंत्र कपि ठयौ। हनू सँजीवनि कौं चलि गयौ ॥ ९५ ॥
दिन के उवत मरैं वह वीर। ता कारन मतु की जैं धीर ॥
यह सुनि रावन चिंता भई। माया पुरी बीच निरमई ॥ ९६ ॥
मेवा बहुत धरे पकवान। भाँति भाँति बिंजन तिहि थान ॥
तरुनी सुंदर रूप अनूप। माया रची लंक के भूप ॥ ९७ ॥
देखत हनू मोह मन भयौ। ता पुर देखन कौ मत ठयौ ॥
देखि बिलंब पिता अकुलान। लागौ पवन हनू के कान ॥ ९८ ॥
तासु बात सुनि चलियौ वरी। गयौ अयुध्या पुर तब हरी ॥
जानि भरत तब विनवत सेव। लछिमन जूझि गिरे रन देव ॥ ९९ ॥
ता कारन सुनि नृपति कुमार। रवि के उदै मरै इथि वार ॥
ताहि देखि मन बिलखैं राम। लछिमन मरत नसानौ काम ॥ १०० ॥
बिसुकर्मा नंदन वह बरी। नाम सुखेन जाति सो हरी ॥
नारी देखि कही तिहि बात। मूल जु आवहि प्रथमहि प्रात ॥ १०१ ॥
तातैं करहु भरत संधानु। ऊगहि नहीं प्रात वह भानु ॥
यह सुनि धनुष भरत कर गयौ। कहि तब बचन बान गुन दयौ ॥ १०२ ॥
जो सूरज ऊगहि आकास। तो तुम करहु रसातल वास ॥
इतनौ सुनि हनुमत बल भयौ। ता खिन उपाय द्रौन गिरि गयौ ॥ १०३ ॥
तहाँ बरत दीपक अनुसार। देखत हनुमत करि गलदार ॥
वानर आवत पाई सार। रखवारन लीनै हथियार ॥ १०४ ॥
ते सब हनुमत दिये गिराइ। स्यौं पर्वत लै चल्यौ उड़ाइ ॥
आवत सूर उयौ जनु भान। तब मन भरथ कुँअर अकुलान ॥ १०५ ॥
मारचौ हनू परचौ खहराइ। हा हा राम सरन तो पाँइ ॥
इतनो सुनत भरत भैं भयौ। ता खिन चलि हनुमत पहँ गयौ ॥ १०६ ॥
को तू बली कहौ निज नाम। सर लागत जो सुमिरे राम ॥
कहत वीर सुन भरत कुमार। हौं हनुमंत अंजनी वार ॥ १०७ ॥
राम काज मैं आगम कियौ। मो कहँ मारि कुजस तैं लियौ ॥
मेरे मरत नास दल भयौ। उद्यम निफल राम कौं गयौ ॥ १०८ ॥
मरिहै राम नृपति सुग्रीव। अरु सीता परिहरि है जीव ॥
मो मरतन लछिमन क्यों जिए। तातैं राम सुमिरि दुख किए ॥ १०९ ॥
इतनौ सुनि दसरथसुत कहयौ। सूरज जानि तोहिं अब बहयौ ॥
तातैं वीर कहौं सति भाउ। बैठि बान कपि गिरि ठहराउ ॥ ११० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तौं हों मेलौं बान हँकारि । परौ जाइ कपि दल मंझार ।।
यह सुनि हनुमत सोचत हियौ । चाहत वीर भरथ बल लियौ ।। १११ ।।
भली कही तुम भरत कुमार । हौं सर बैठौं गहौं पहार ।।
तुम बल करि खैचौ गुन तानि । परों वीच नहिँ सो मन आनि ।। ११२ ।।
यह सुनि तब संधान्यौ तीर । लै पर्वत बैठ्यौ कपि वीर ।।
जब उहि खैंचौ धनुहर तानि । तब हनुमंत बिचारत बानि ।। ११३ ।।
स्यौं सर भरतहिँ मसकि असार । पैठि जाउँ जैसै पातार ।।
इतनौ सोचिहनू मन रह्यौ । भरत खैंचि सायक गुन बह्यौ ।। ११४ ।।
जब छाँड़न कौ करत विचार । तब बोल्यौ पवनेस कुमार ।।
राखि राखि गुन परख्यो तोहि । हू है कुजस बीर अब मोहिं ।। ११५ ।।
यह सुनि भरत समित सर कियौ । करि स्तुति कवि पर्वत लियौ ।।
उड़ि आकास चल्यौ हनुमंत । मनौ प्रभाकर उदय करंत ।। ११६ ।।
ता देखत सबकैं डर भयौ । पर्वत सहित सैंन महँ गयौ ।।
देखत राम विचारत भाउ । अब ऊग्यौ कस्यप को जाउ ।। ११७ ।।
या कहँ मारौं अब इहिं बार । जातैं सब जग होइ अंध्यार ।।
इतनौ सोचि राम मन रह्यौ । बिसुकर्मा-नंदन तब कह्यौ ।। ११८ ।।
तब सुखेन रामनि धीरए । हनुमत वीर मूल कहँ गए ।।
मालिवंत गिरि पहुँच्यौ जाइ । मूलि न चीन्हैं मन पछिताइ ।। ११९ ।।
जान्यौ द्यौस अवारौ जंतु । तब मन मों कोप्यौ हनुमंत ।।
सबै उखारि हाथ गहि लियो । दूजी घरी आइ वह गयौ ।। १२० ।।
ताकौ तेज उयौ जनु भान । सुनत बात मन समुझ्यो राम ।।
चाहि लई तब मूरि सुखेन । उदर सँजीवनि लाग्यौ दैन ।। १२१ ।।
बान नासिनी दीनी घाइ । आए पूरि सबै अँग घाइ ।।
सुख संजीवनि उठो संभारि । राघव कहँ दीन्हीं अँकवारि ।। १२२ ।।
उठत कुँवर विनवत गहि पाँइ । साँई पैंज तिहारी जाइ ।।

दोहा

रावन बहि लंका दहौं, अरु घर आनौ सीय ।।
सीस विभीषन छत्र दै, सम्हल पैंज जु कीय ।। १२३ ।।

लखन जु विनवत पैंज सँभारि । दिन अथवत लंकापति मारि ।। १२४ ।।
जो क्यों ·रति लहै रघुनाथ । रावन मरै न तेरे हाथ ।।
लखन बचन सुनियो जब राम । बंदर रीछ हँकारे ताम ।। १२५ ।।
गाजे दुसह नाद अति बरी । रावन श्रवन महाँधुनि परी ।।
सुनि गलदार कोप मन कियौ । राजा जान्यौ लछिमन जियौ ।। १२६ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आपुन कहै सूत सन राउ । मो रथ मायावी लै आउ ॥
बरनि न सकत हयन की जाति । तिनके मुख मानुसकी भाँति ॥ १२७ ॥
घोरे कैसे चरन सरीर । अैसे हय जोते वरवीर ॥
तिहि रथ चढ़ि पहुँच्यौ आकास । वरषत सर रघुनंदन पास ॥ १२८ ॥
भयौ अदिष्ट करत संग्राम । वाननि मोहे लछिमन राम ॥
देख्यौ रावन तनौ भरयाउ । अरि रिस राघव लीन्हौं चाउ ॥ १२९ ॥
यह भुमि वह आकासहिं गयौ । देखि इंद्र मातलि परठयौ ॥
लैगौ मातलि इंद्र विमान । ता चढ़ि उपजौ जूझ समान ॥ १३० ॥
आजु बधौं नृप लहौ न जान । जोवल होइ सो लीजे बान ॥
विरह अग्नि जानकी सरीर । बुझउँ मँदोदरि नैनन नीर ॥ १३१ ॥
जिहि सर रावन सुरपति जिन्यो । सो सम्हारि रघुनंदन भन्यो ॥
राघव कर देवनि कौ वान । ता देखत रावन अकुलान ॥ १३२ ॥
रावन मुरछो देखत ताहि । धरत न रथ हाँक्यौ परिगाहि ॥
जाग्यौ रावन उठ्यौ रिसाइ । अरे सूत तोहिं लागी बाइ ॥ १३३ ॥
कहिधौं जित वैरी की दीठि । रनकत करी हमारी पीठि ॥
दैयत देव जिन्यै मैं कोरि । तपसी लगि चलियो कत मोरि ॥ १३४ ॥
तैं कत देखी मेरी हारि । अबका तो कहँ डारौ मारि ॥

सूतोवाच

तू रथ मोहि गुसाँईं रह्यौ । रुद्र बान राघव कर गह्यौ ॥ १३५ ॥
में समुझ्यौ स्वामी तो काज । तालगि रथ फेरयौ रन आज ॥
यातैं मो कहँ दीजतु दोष । तेरे हाथ मरत मोहि मोष ॥ १३६ ॥
अब भागौं कुल लाजौं राउ । कुंभी नरक लहौं तब ठाँउ ॥
इतनौ बचन सूत जब कह्यौ । सुनत तबै रावन सुख भयौ ॥ १३७ ॥
हाँक्यौ रथ रावन ढिग गयौ । दुहुँ दल जूझ महाभरु भयौ ॥
वानर रीछ जूझ वहु परे । दसमुख सनसुख जे रन अरे ॥ १३८ ॥
राखस गिरे न गनत प्रमान । रावन राम जु छाँड़त बान ॥
इत वानर उत राखस गिरे । प्रलय होत अैसैं रन अरे ॥ १३९ ॥
जेई सर रावन कर लेइ । ते सर राघव गुन गुन देइ ॥
ऊपर पर सर छालहिं काटि । लरहिं वान ज्वाला भुवि पाटि ॥ १४० ॥
छायौ दिनकर विंब असूझ । उपन्यौ वान वान जब जूझ ॥
विलख बदन तब देवनि कह्यौ । रावन क्रोध रामरन छूह्यौ ॥ १४१ ॥
दोई वीर क्रोध आरुहे । दोउन दृढ़ आयुध कर गहे ॥
दोउन मन उपन्यौ अहंकार । दुहुन बान छायौ संसार ॥ १४२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बीसौं सहस भार भयौ अंत । सख्या लहौं न बान गनंत ॥
समर राम लंकेसुर अरे । सर संधहिँ दस-दस आगरे ॥ १४३ ॥
घरीं चारि वींत्यौ संग्राम । रावन तैं अधिकानौ राम ॥
देखि विभीषन कह्यौ प्रचारि । साँईं अवहिँ लंकपति मारि ॥ १४४ ॥
वचन विभींषन के जब सुने । हँसि तब सर संधे आपुने ॥
अरध चंद्र सर घाले चारि । रथ के तुरी गिराए मारि ॥ १४५ ॥
पचएँ बान धनुष कियो भंग । रावन और लियो सारंग ॥
सर सर राम धनुष छाइयौ । राम रिसाइ काटि द्वै कियौ ॥ १४६ ॥
लियौ निसाचर तीजौ चाउ । बानंनि छायौ रघुपति राउ ॥
भाँति भाँति जूझत बलबंत । संख्या तिहि पौरुषै अनंत ॥ १४७ ॥
घाइनि ऊपर घालत घाइ । धर अंवर तिहि बाननि छाइ ॥
खुरपवान राघव कर छूट । लाग्यौ कंठ एक सिर टूट ॥ १४८ ॥
नौ सिर जूझ महाँ भरु करै । मारत कपि सो रन गिर परै ॥
देखत तीन बान रघु धरे । तीन सीस काटे धर परें ॥ १४९ ॥
कंठ निसाचर लागे जाइ । तीन सीस लै उड़ेंमिलाइ ॥
मौह्यौ वीर गएँ सिर चारि । करी महूरतु भर पुनि रारि ॥ १५० ॥
राम भद्र मन वाढ़ी रीस । हए पाँच सर पाँचौं सीस ॥
टूटे नव तव एकइ रह्यौ । ता बल विष्नुदास कवि कह्यो ॥ १५१ ॥
बालमीकि रिषि कहियौ जितौ । लखि पुरान मैं भाख्यौ तितौ ॥ १५२ ॥

छंद

एक वीर खग्गन हनत एक सूल गहि मारै ।
एकनि कौं गहि धरनि पछारै एक बान गहि तारै ॥
एकनि कों नव हनत धाइ रन फरिसा मुदगर छुरिया ।
वीर रावन कोपि बानर रीछ के सिर खुरिया ॥ १५३ ॥
एक धरनी एक तरनी एक जम के लोक ।
एक पर्वत गिरे बंदर एक सिव के लोक ॥
एक भगत समुद्र बूड़े एक गिरि रन माँहँ ।
बान वाननि गिरे बंदर हनै राखस नाह ॥ १५४ ॥
बाहु अष्टादस कपि न पति हन करी अति रीस ।
द्वै बाहु राघव वीर सौं रन करतु लंका ईस ॥
इत गिरे वानर रीछ धरनी उत असुर बल वंड ।
राम रावन मुखहूँ अति धुनि कंपि यौ नव खंड ॥ १५५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करि कोपि राघव धनुष लावइ, हन्यो रावन राइ ।
तिहि क्रोध करि निज सरहि गुन धरि काटियो जु रिसाइ ॥
रघुवीर कोपित अतिहि सोकित, लियौ औरै बान ।
तिहि देखि आवत, हाँकि धावत, हन्यौ निजसर त्रानु ॥ १५६ ॥
द्वै लरत अगरनि झरति धरनी गिरे भुविरन आइ ।
छुटि गए जवही राम रावन के चढ़े कर जाइ ॥
करि मंत्र दोइनि धनुष गोइनि धरे बान अमोघ ।
सर छुटत राघव बान लाघव बाढ़िगौ अति ओघ ॥ १५७ ॥

चौपही

रावन कंठ लगत जव जाइ । तव सुन धरनि परत सिर आइ ॥
असुर-ईस ने बहु दल वह्यौ । तब मातलि रघुपति सो कह्यौ ॥ १५८ ॥
जो अगस्त तुहिँ दीन्हौं बान । सो रघुनाइक करौ सँधान ॥
धनि मातलि गुन मानौ तोहि । चुक्यौ बान सम्हरायौ मोहि ॥ १५९ ॥
रवि सम तेज गरुर सम जासु । रावन सहि न सकत तिहित्रास ॥
मंत्र पूरि जव छाँड़यौ बान । मेरु डिग्यौ सागर अकुलान ॥ १६० ॥
हियौ भेदि धरनीं महि गढ़चौ । दसवों सिर खुरि रघुकर चढ़चौ ॥
गए प्राण ता लागत धाउ । गिरि धर परचौ लंक कौ राउ ॥ १६१ ॥
देवनि अंतर कौतुक दीस । कुसुम वृष्टि बरसी रघु सीस ॥
राघव विजय मरन रावनौ । जस हनुमंत श्रवन सुनि घनौ ॥ १६२ ॥
एक चित्त सुनि देइ जु दान । थोरौ होत सुमेरु समान ॥
जरा मरन तन ब्याधि न होइ । रन चढ़ि जीत सकत नहिं कोइ ॥ १६३ ॥
जिहि सर वाधि प्रजारी लंक । मन न धरी रावन की संक ॥
सुर कंटक दस कंधर हयौ । सो श्री रामचंद्र तुव जयो ॥ १६४ ॥
नि सुनौ सिया अवधि पैसार । ज्यों नर पातक जाहिं अपार ॥
विष्नुदास भारहि बल कह्यौ । राम राज जैसी विधि लह्यौ ॥ १६५ ॥
वंदर सयन उठौ गल गाजि । राखस गए लंक महँ भाजि ॥
रानी मंदोदरि सुधि भई । लै रनिवास कंत पहँ गई ॥ १६६ ॥
हिएँ धरे रावन के पाँइ । रानी मंदोदरि बिलखाइ ॥
चौदह सहस और जे धनीं । सिर धुनि लट तोरहिँ आपुनी ॥ १६७ ॥
विभीषनै के सुमरहि वैन । मंदोदरि जल ढारति नैन ॥
गोत सँधारचौ सीता लागि । सैं हथ भई बंस ज्यों आगि ॥ १६८ ॥
रोवत सुनि रावन की नारि । राम विभीषन लियौ हँकारि ॥
ए सब सुंदरि वरजि रहाउ । रावन किरिया करि अब आउ ॥ १६९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहत विभीषन इसौं न होइ । या पापो मुख्र देख न सोइ ॥
दस बंदर लैं जाहि कढ़ोरि । चाँपि समुद मैं आवैं बोरि ॥ १७० ॥
तब हँसि राम दिवाई आन । अंतर अपनौ होइ निवान ॥
और न तिहि पनदेवा रह्यौ । तूँ करि काज मानि मो कह्यौ ॥ १७१ ॥

इति श्री रामायने सुंदरकांडे रावन राजा महाजोधा वध नाम खंडः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

करचौ विभीषन किरिया काज । पुनि बैठौ रावन के राज ॥
लछिमन जाइ छत्र सिर दियौ । सब कपि ताहि सीस नाइयौ ॥ १ ॥
मंत्री राखि राम पहँ जाइ । पुनि गहियो रघुनंदन पाँइ ॥
द्वै कर जोरि कहै वह राइ । गढ़ महँ अब तुम धारौ पाँइ ॥ २ ॥
कहतु रामु यह धर्म न होइ । दई वस्तु जो भुगतै कोइ ॥
वायु पूत तुम लेहु बुलाइ । देइहि सुधि सीता कहँ जाइ ॥ ३ ॥
हनू बिर्भीषण आयसु दियौं । जाइ प्रनाम सिया कहँ कियौ ॥
समाचार सब ता सहँ कहे । ज्यों लंकेसुर राघव बहे ॥ ४ ॥
सुनि यह बात सिया गह गही । हनुमत सरिस बात तिहि कही ॥
तब कपि बिनवैं लागत पाँइ । कहि स्वामिनि मन बिलखी काँइ ॥ ५ ॥
सीता ऊतरु दीन्हौं ताहि । मो पहँ कछू बसन नहिं आहि ॥
जौ लगि वीर लहै अवसान । जीजै काल वित्त उनमान ॥ ६ ॥
देखत सुनत कथा के संग । जैसौ सुख उपजै जिहि अंग ॥
ताकौं मोल देइ जो कोइ । ता उपगार उरिन रिन होइ ॥ ७ ॥
सुनत हनू बिनयौ कर जोरि । अब जननी मैं पायौ कोरि ॥
इतौ बचन तुम मो सहँ कह्यौ । मानौ इंद्र भुवन मैं लह्यौ ॥ ८ ॥
सीता दाँत जीभ तव धरै । हनुमत सरिस निहोरो करै ॥
समुझायो हनुमत तिहि बार । समदौ कहहु राम सौं सार ॥ ९ ॥
अवहि वीर मति विसधौ होहि । सीता देख्यो चाहत तोंहि ॥
गयौ हनू तब विनती करन । जैसैं प्रथम होहिं आभरन ॥ १० ॥
विभीषना तैसैं पहिराउ । पुनि सीया मो पहँ लै आउ ॥
तबहिँ विभीषन पाई सार । उठि गौ जहँ रावन भंडार ॥ ११ ॥
दै भूषन त्रिजटा परठई । लिएँ हँसत सीता पहँ गई ॥
न्हाइ सीस साजे आभरन । मन महँ लागी चिंता करन ॥ १२ ॥
ऐसें नारि सिँगार न करै । हिएँ मोंह जो पुरुष न धरै ॥
इनकौ बचनु न मैटन जाइ । हँसति पालकी बैठी आइ ॥ १३ ॥
राउ विभीषन आँगैं भए । सिया सहित राघव पहँ गए ॥
उतरि राम गिरि रहे सूमेल । तहाँ भयौ सीता सहँ मेल ॥ १४ ॥
उमहे बंदर कौतुक गए । महलदार उठि वेतनि हए ॥
ऊपर पर तब सब कपि कह्यौ । या सीता लगि अति दुख सह्यौ ॥ १५ ॥
सेतु बाँधि जा कारन दियौ । कैसी नारि आइ सो सियौ ॥
महलदार तब मारत फिरहिँ । तदपि न कपि पिछहैं अनुसरहिँ ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचंद्र तिनकौ मन लह्यौ। कोपि विभीषन सौं तब कह्यौ ॥
मति कोउ बरजौ कौतुक हार। देखन देहु सिया इहि बार ॥ १७ ॥
तुम छाँड़हु पालकीं उघारि। जु न देखै सो देंहें गारि ॥
जग्यँसाल अर तीरथ जात। बंदि विवाह मिलत निज भ्रात ॥ १८ ॥
अतुल सोग दरसावै आप। नारि न होइ दृष्टि कौ पाप ॥
बारें जोवन करत उछाह। ताकौ पिता न करत विवाह ॥ १९ ॥
पुनि जो पतिव्रतु पालति सोइ। करम पाप ता त्रिय नहिँ होइ ॥
इतनो कहि तब लई हँकारि। ता तन राघव दृष्टि पसारि ॥ २० ॥
कछुक दुक्ख करि मन रिस भई। विलखत देखत विलखी भई ॥
ऊपर पर नहिँ बोलत वैन। ता तन देखि तरहुते नैन ॥ २१ ॥
कहयौ राम सीता सहँ चाहि। अब तूँ जित भावै तित जाहि ॥
तोहिँ घर राखत धर्म न होइ। मो अपजस भाषत सब कोइ ॥ २२ ॥
कै रहि गेह विभीषन तनै। कै ममसार जाहि आपुनै ॥
कै तू रहि तारा की बाँह। सो करि तोंहि रुचै मन माँह ॥ २३ ॥
मैं रावन मारचौ इहि काज। छत्री धर्म मनै धरि लाज ॥
उपज्यौ दाप परचौ नहिं सहचौ। काज न तोह मोहिं रघु कहचौ ॥ २४ ॥
अजुगत वचन कहे जब राम। सुनि मन सोचति सीता वाम ॥
अैसे वचन सुनत गह मरै। तब लछिमन सों बिनती करै ॥ २५ ॥
आगि आनि मो सह दिबु लेइ। तब मो कहँ पुनि आयसु देंइ ॥
बार बार बिनवति पग लागि। तब लछिमन पर जारी आगि ॥ २६ ॥
परिकर्मा दीन्हीं रघुनाथ। ठाढ़ी सिया सु जोरैं हाथ ॥
देखहिं सुर तैंतीसों कोरि। नमस्कार कीन्हौं कर जोरि ॥ २७ ॥
रिखी जोग तिय करि परनाम। जपै मंत्र मन राम सुजान ॥
मन वच कर्म जानि दिन करौ। रामजु तजि औरहि मन धरौ ॥ २८ ॥
चित जो चलै सपन की बार। तौ मोतन दहि कीजौ छार ॥
जौ हौं सुद्ध पतिव्रत जानि। तौ बैसंदर राखहु प्रान ॥ २९ ॥
वैसंदर तुम त्रिभुंवन साखि। शुद्ध जानि मोहिं लीजौ राखि ॥
इतनौ कहि तब पावक परी। हा हा भाख तबहि सुर करी ॥ ३० ॥
कपि दल राखस मो कह राउ। घरी घरी सु उठावति पाँउ ॥
भई अगिनि गंगा कौं नीर। अंगु न डाढ़यो बचौ सरीर ॥ ३१ ॥
देवनि अंतर भाषन कियौ। धनि धनि यह निर्माइल सियौ ॥
गिरिजा दमयंती सति तिया। कै यह आइ रेणुका सिया ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वंदर राखस करत बिचार। याके सत बरततु संसार ।।
राम राइ अनबोल्यौ रह्यौ। इंद्र रिसाइ वचन तव कह्यौ ।। ३३ ।।
राम तोहि ऐसी मति भई। जैंसी होइ मंद मानई ।।
हँस्यौ राम तुम कह्यौ अजूत। हौं मानुस दसरथ कौ पूत ।। ३४ ।।
वार बार यों बूझत ताहि। सुरपति कहौ कौन हौं आहि ।।
अैसौ वचन ब्रह्म जब सुन्यौ। जानि चरित राघव सौं भन्यौ ।। ३५ ।।
तू हरि तो गुन नाम अनत। हौं पुनि पार न लहौं कहंत ।।
तवहि विरंचि प्रनति अति करी। राम गेह राखी सुंदरी ।। ३६ ।।
करि मंगल रघुपति तव कह्यौ। आजु जानकी मैं जसु लह्यौ ।।
तू नित निर्मल मेरे जान। मूरख मन न पत्याइ निवान ।। ३७ ।।
ता कारन यह निग्रह करयौ। अब तोहिं सोधि ग्रेह मन धरौं ।।
सीता तन जु हमारौ आहि। रावन निग्रहि सकत न ताहि ।। ३८ ।।
बिनु दिवु लिएँ तोहिं जो ग्रहौं। जग निंदा अति अपजस लहौं ।।
जदपि सुसुद्ध वस्तु जो होइ। लोक निंद्य तैं त्यागहि सोइ ।। ३९ ।।
ता कारन मैं यह मत कियौ। तू मेरी माया निज सियौ ।।
महादेव राघव सहँ कह्यौ। तू सुररिपु रावन रन बह्यौ ।। ४० ।।
अव सीझ्यौ अमरनि कौ काज। चलो अजुध्या करि अब राज ।।
बंधु मित्र प्रति पालहु देव। वहुरि करौ जननी की सेव ।। ४१ ।।
सूरज बंस रोपि इहि बार। वहुत करौ लछिमन की सार ।।
अस्वमेध करि दीजहु दान। पुनि आइयौ ब्रह्म के थान ।। ४२ ।।
बहुत कहत सिख अब तुम जोग। राजनीति प्रतिपालहु लोग ।।
सिव के वचन सुनत सुख हियौ। चढ़ि विमान सुरपति सँग लियौ ।। ४३ ।।
गयौ राम दसरथ अस्थान। लखन सिया सँग लिएँ सुजान ।।
भेंटि चरन बंदे तव राइ। राजा कंठ लगे दुव भाइ ।। ४४ ।।
भेंटि राम थुति करत बहूत। दसरथ कह्यौ कुसल हौ पूत ।।
सीता सरिस नृपति तब कह्यौ। जान कितो सत स्वर्गहिं लह्यौ ।। ४५ ।।
मैं सब दुख काटे इहि बार। उबरे ते सोधहि संसार ।।
मेरे वचन राम वन गयो। तब दुख बहुत अबहि सुख भयौ ।। ४६ ।।
चलत वचन जो कैकेइ कहे। अजौं ते तिरछे हिय होइ रहे ।।
सुनत राम तब विनवत सेव। एक वचन मोहिं दीजे देव ।। ४७ ।।
जो कैकेई वचन परिहरै। तौ जनि देव मोहिं बध करै ।।
धनि सु पुरुष धनि बंधव नारि। तो मुख देखहि बारंबार ।। ४८ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निरमल सीता राम सनेह । राघव वचन दोष मति देहु ।।
अरु कीजो लछिमन की सार । राउ सिखावत बारहिँ बार ।। ४९ ।।
सुनत बात आनंद्यौ राम । बहुत प्रनति करि बोल्यौ ताम ।।
जिनकौं सीख देत तुम घनी । धनि हौं धनि लछिमन धनि धनी ।। ५० ।।
दसरथ देवलोक है राउ । कहै इंद्र मन धरि सत भाव ।।
देव दरस क्यों निरफल होइ । जो फल माँगहु पावहु सोइ ।। ५१ ।।
इंद्र वचन सुनि रघु गहगह्यौ । सैन जिवाउ देव सौं कह्यौ ।।
मेरे काज लंक गढ़ अरे । रीछ लँगूर जूझि धर परे ।। ५२ ।।
मैं पुनि काज तिहारौ कियौं । सैन जिवावहु जो वर दियौ ।।
ना तरु थान पधारौ पाइ । नाहिन और वरनि पर भाइ ।। ५३ ।।
ऊतरू तबहिँ दयौ सुरराइ । मरयो सनु को सकत जिवाइ ।।
तौ दूजौ हौं सृष्टा भयौ । माँगन वर तुम ऐसौं लयौ ।। ५४ ।।
अब तुम कियौ सुरनि कौ काज । ता लगिं सैन जिवावहुँ आज ।।
कपि जु निसाचर घाले खाइ । सो न जिएँ भाषत सुरराइ ।। ५५ ।।
इतनौ कहि तेहि उद्यम कियौ । सघन धार अमृत वरसियौ ।।
ते सब जिए बूंद लागंत । रीछ लंगूर उठे विहसंत ।। ५६ ।।
मारु मारु कहि करि अरि गाज । तरुवर सिला सबनि कर साज ।।
चले लंक गिरि सौंहैं धाइ । हँसत राम तिन लिए बुलाइ ।। ५७ ।।
बंदर देखि तबहि सुख भयौ । ता रन कष्ट सकल दुख गयौ ।।
चढ़े आप आपुनै विमान । बहुरौ देव गए निज थान ।। ५८ ।।
गयौ विभीषन लंक मझारि । ल्यायौ उत्तम दासीं चारि ।।
सब आभरन पटोरे हार । दीसत रतन जटित इक सार ।। ५९ ।।
चंदन कस्तूरी घनसार । महकत तिनकौ वास अपार ।।
ए सब मिलए मर्दन कियौ । राघव जोग विभीषन दियौ ।। ६० ।।
जब लै रामहिँ आगैं धरे । भरत सम्हारि हिंएँ दुख धरे ।।
दुक्ख बहोरि कियो मन माहिँ । किहि विधि वेगि अवधपुर जाहिँ ।। ६१ ।।
नाहिँन मोहिँ भोग पर भाउ । रचहु वीर अब चलन उपाउ ।।
चौदह बरस मोहिँ बन गई । अति दुख बंधु भरत कहँ भई ।। ६२ ।।
अह निसि राम राम जप हिएँ । कपरा तजि तन बाकल लिएँ ।।
इहि गति भरत आहिँ अति दुखी । हम करि भोग होहिँ अब सुखी ।। ६३ ।।
अबऊ तुम चितवौ मन माहिँ । ज्यों हम बेगि अवधपुर जाहिँ ।।
कहत विभीषन सुनि रघुनाथ । लछिमन सीता कपिदल साथ ।। ६४ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो तुम पहँ आयसौ लहाउँ । खिनक माँझ नगरी लै जाउँ ॥
सुनत रामु मन अचरज कियौ । मित्र विभीषन बूझन लियौ ॥ ६५ ॥
कहहि बात समुझावहि मोहिं । क्यों लै जाहि कहा बल तोहि ॥
सुनहु देव कबहूँ रिस करी । रावन वेढी अलकापुरी ॥ ६६ ॥
दसकंधर जीत्यौ बल बंड । तब कुवेर पहँ लीन्हौं दंड ॥
रतन जरचौ पर्वत आकार । है विमान ताके भंडार ॥ ६७ ॥
सो रावन कैं मंदिर रहै । तिहि आरुहौ विभीषन कहै ॥
भौ संतोष राम गहगह्यौ । आनौ वेगि राम यों कह्यौ ॥ ६८ ॥
अरु सुग्रीव लखन लै जाहि । बैठि सिँघासन तिलक कराहि ॥
अवधु नाम महलौं जु अवास । अरु त्रिजटा रहती सिय पास ॥ ६९ ॥
उन तब कीन्हौं बहुत सहाउ । सुखी करों दोऊ लै आउ ॥
वहुत रतन सुग्रीवहि दीज । जानि कुहमरी पूजा कीज ॥ ७० ॥
सब वनचर पूजहु कर भाउ । सुखी करहु दोऊ लै आउ ॥
इतनी सुनी राम की बात । लै लछिमन सुग्रीव सँघात ॥ ७१ ॥
बंदर वहुत साथ होइ चले । अधफर सगुन भए तिन भले ॥
रतन जटित सिंघासन दियौ । मधुरे पंच सबद वाजियौ ॥ ७२ ॥
मंदोदरी तिलक दियो सीस । कहीं विभीषन जोग असीस ॥
धर्म बुद्धि तेरे मन वसै । न्हात बार जनि तेरो खसै ॥ ७३ ॥
हौं पतिव्रता असीसौं तोहि । करौ राज अजरामर होहि ॥
बहरौ तिलक कियौ सुग्रीव । कह्यौ न आशिष सोच्यौ जीव ॥ ७४ ॥
जा कहँ राघव दीन्हौं राज । हमहिँ कहा आशिष सौं काज ॥
वहुत रतन गजमोतिन हार । जो कछु वस्तु भली भंडार ॥ ७५ ॥
दै सुग्रीवहिँ लाग्यौ पाँइ । तुम दुख देखे राम सहाइ ॥
लछिमन पूजा करि चौगुनी । कपि पूजे करि मंगल धुनी ॥ ७६ ॥
कुसुम विमान लियौ कपिराइ । पहुँचे खंड खंड नृप आइ ॥
तिन देखत हरष्यौ रघुनाथ । चलि चलि कहि ता जोरे हाथ ॥ ७७ ॥
महाबली कपि ते संघात । बैठौ राम हरष भयौ गात ॥
राम सुग्रीव विमानहु चढ़े । लछिमन सीता आनदँ मढे ॥ ७८ ॥
सुनहु विभीषन राघव कह्यौ । मासछ मो कारन दुख सह्यो ॥
अबहि भित्र इनकी करिसार । सबनि समदि दै कंकन हार ॥ ७९ ॥
जिहि आभरन रहै मनजाहि । सोई राजा दीजे ताहि ॥
जनु बरसै भादव घन नीर । दीसत परै सु मोती हीर ॥ ८० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पद्‌म अठारह कपिदल गनौ । समुदे तिंनहिँ रतन दै घनौ ।।
तब रघुनाथ सराहौ ताहि । भलौ विभीषन रावन चाहि ।। ८१ ।।
जिहि हरिभगति धरम महचित । लोभ मोह नहिँ हिरदै अंत ।।
पर सुंदरि नहिँ देखी नैन । काहुहिँ दूषि न बोलत वैन ।। ८२ ।।
याके गुन कौ अंत न लहै । मेरे हिएँ विभीषन रहै ।।
रावन राइ विभीषन अैसौ । पटतर काँच कंचनहिँ जैसों ।। ८३ ।।
राम बहुत संभाषन कियौ । भो कहराउ पयानौ दियौ ।।
सिर परसे राघव के पाइँ । पहुंचे खंड खंड कपि राइ ।। ८४ ।।
पुनि राघौ संदेस कहाइ । थोरी दूर पधारौ राइ ।।
समदि विभीषन उर लाइयौ । वार बार संभाषन कियौ ।। ८५ ।।
थोरी दूर रामु जव कह्यौ । सुनि तब मित्र विकल होइ रह्यौ ।।
दीजे राम वचन मुहिं एक । देखौं नैन तुमहि अभिषेक ।। ८६ ।।
भरत सतोषन भेंटौं जाइ । अरु कैंकई सुमित्रा माइ ।।
परसौं पग कौसल्या तनैं । आवन देहु संग आपनैं ।। ८७ ।।
उपजी मया राम यों कह्यौ । गढ़पति बिनु गढ़ सूनौ लह्यौ ।।
जो तेरैं चलिवे पर भाउ । तो दृढ़ लंका साजौ राउ ।। ८८ ।।
लंका माँझ पधारौ पाँउ । एक द्यौस फिर गढ़हिँ दृढ़ाउ ।।
स्वामि धरम जिनके मन बसै । ते गढ़ राखि राउ कहुँ धसैं ।। ८९ ।।
सामुहिँ तहाँ विभीषन गयौ । रामचंद्र हियरा सुख भयौ ।।
अब नाहिँन बिलंव को काज । राघव चढ़ौ विमानहि आज ।। ९० ।।
ऊतर तबहि विभीषन कह्यौ । जो राघव कौ आयसु लह्यौ ।।
मन समान इह उद्यम थान । अंतरीछ होइ चलै विमान ।। ९१ ।।
यह हैं देव तुम्हारे भाइ । ता लगि आयसु चाहै साँइ ।।
मैं तुम पूजि चढ़ायौं येह । अरु तुम जोग कहा मम गेह ।। ९२ ।।
सुनि आनंद भयौ रघुनाथ । चलु चलु करि ता जोरे हाथ ।।
आयसु लै उठि अंतर भयौ । ऊँचौ लंका समसरि गयौ ।। ९३ ।।
कहै देखि रावन के गेह । तो लगि सिया विधंस्यों एह ।।
इहि ठाँ कुंभकरन मैं वह्यौ । तो कारन रघुनंदन कह्यौ ।। ९४ ।।
मारयौ मेघनाद अतिकाउ । सीता देखि बहौ इहिं ठाँउ ।।
सेतुबंध सीतहि दिखराइ । नगर षिंषिधा पहुँचे जाइ ।। ९५ ।।
बहुरौ राम सिया सन कहयौ । इहि गढ़ बालि राय मैं हयौ ।।
भौ सहाइ यो लछिमन बंधु । पंपासरवर हन्यौ कबंधु ।। ९६ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आँगैं जाइ दिखावत ठाँउ। सीता इहि ठाँ परचौ जटाउ॥
दिखरावत तिहि थानहिं गयौ। इहि ठाँ हरन तिहारौ भयौ॥ ९७॥
सूपनखा बिटवी इहि ठाँइ। तौ तुम हरी लंक के राइ॥
कहि कहि बात पसारत हाथ। सीतहिं दिखरावत रघुनाथ॥ ९८॥
सरिता सरवर बन दिखराइ। पहुँचे भरद्वाज पहँ आइ॥
तब रिषि तिनकौ आदर कियौ। अरघु राम सीता कहँ दियौ॥ ९९॥
पंद्रह वरष पाँच दिन गए। इतनै दिन रामहिं वन भए॥
काटे बंधन देवन तनै। राखस कुल संघारे घनै॥ १००॥
सागर पाट मिलाई धनी। सो मैं बात प्रथम तैं सुनी॥
अबजु देव तेरे मन रहै। वर मो पहँ माँगौ रिषि कहै॥ १०१॥
तेरे कर्मनि अति संतोष। दीन्हौं सुरनि बंदि तैं मोष॥
बोलै राम कहै सति भाउ। जो तुम रिषिपति करौ सहाउ॥ १०२॥
औंधपुरी महँ तरवर जेते। फूलहिं सदा फरहिं सब तेते॥
जा तरुवर कौ फूलु न आहि। कुसुम सुवास होइ ता माहिं॥ १०३॥
इसौं होइ जिहि मारग जाउँ। बाँधि फूल फल अमृत खाउँ॥
सुनि तब रिषिहिं करचौ परनाम। उठि भुनसारैं चलियौ राम॥ १०४॥
तबहि हनू सन आयसु कहचौ। सुनि तब पवननंद सामुहचौ॥
तब राघौ संदेस कहाइ। तो बिनु और न आवै जाइ॥ १०५॥
नंदी ग्राम भरत कहिं सार। लखिए सबै नगर व्यवहार॥
सब सों कहि मेरी कुसरात। परषहि चिन्ह कहत तब बात॥ १०६॥
जो भरतहिं आयौ न सुहाउँ। तो हौं हनू पलटि बन जाउं॥
सुनि संदेस वीर हनुमंत। नमस्कार कै चल्यौ तुरंत॥ १०७॥
गुहि राजै तब दीन्हीं सार। पहुँच्यौ जाइ भरथ के द्वार॥
गुह राजा सुनि आगैं भयौ। हनुमत वीर भरथ पहँ गयौ॥ १०८॥
देख्यौ जाइ जती के भेस। बाँधे जटा बकल तनु लेस॥
आगैं होइ कीन्हौं परनाम। कहचौ वीर आयौ अब राम॥ १०९॥
दोऊ बांधव सीता नारि। आए कुसल लंकपति मारि॥
सायर बाँधि पुरी सब ढही। हनुमत बात भरत सहँ कही॥ ११०॥
सुनि सुख उपज्यों मूरछि रहचौ। घरीं एक चेत्यौ तब कहचौ॥
देखत हौं न पतीजौं तोहिं। कोऊ असुर छलत है मोहिं॥ १११॥
कहि तू देव जच्छ गंधर्व। देखत तो डर मो भयो सर्व॥
जो तू मन पतियावै मोय। होइ सकत तौ पूजौ तोय॥ ११२॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साई मन महँ करि बिसवास । हौं हनुमत राघब कौ दास ।।
करनौ वेगि चाहिए काम । आयसु मोहिँ दियौतब राम ।। ११३ ।।
भरत पत्याइ करी ता सार । दीन्हैं हय सौ गाँउ कुठार ।।
लाख गाँउँ ता पूजा करी । सोरह तरुनि दई सुंदरी ।। ११४ ।।
दासीं बहुतक तिनके साथ । सौपीं भरत हनू के हाथ ।।
सोनौ कपरा दए अनंत । सीस नाय बिनवौ हनुमंत ।। ११५ ।।
देव पुरुष धन चाहत सोइ । जाकैं ग्रेह पुत्र तिय होइ ।।
तरुवर डार रहौं फल खाँउँ । कालै करिहौं धन तिय गाँउँ ।। ११६ ।।
कहै भरत अब मो पहँ लेउ । धर्म लागि विप्रन कहँ देउ ।।
कहै हनू सहँ राज कुमार । दानहि मान लहै संसार ।। ११७ ।।
हँसि तव हनू सबै धन गह्यौ । अैसौ वचन भरत जव कह्यौ ।।
आपद परैं जु सत्तहिँ गहै । निज सु पुरुष सुख कारन लहै ।। ११८ ।।
पुरुष जनम जब ही जो करै । तब सु काज समयौ संचरै ।।
जैसैं रहट घरी कों माल । रीती भरत रहत सब काल ।। ११९ ।।
वहुरि भरत बूझयो हनुमंत । सब व्यवहार कह्यौ कपि संत ।।
बनु ज्यों भंज्यौ, रावन बह्यौ । कछ संताप कछू सुख लह्यौ ।। १२० ।।
रावन मारे कौ अति सुक्ख । रामचंद्र कष्टहि सुनि दुक्ख ।।
सत्रुघनहिँ समदियौ बुलाइ । तुम सु अजुध्या साजहु जाइ ।। १२१ ।।
अरु झारौ मन्दिर घुरसार । चहुं दिसि दूरि करावहु छार ।।
कुंवर भरत कौ आयसु लयौ । अलंकार कारन पुर गयौ ।। १२२ ।।
तबहि अजुध्या सोहति तैसी । कविय न बरनि सकति मति ऐसी ।।
आनंदे सुनि रघुपति नाउँ । उमहे लोग आइ नँदिगाउँ ।। १२३ ।।
एक मुहूरत जुगवर भयौ । भरथ पवन सुत बूझन लयौ ।।
हनुमत तोहि पत्याइ न कोइ । चंचल बुद्धि कपिनि कैं होइ ।। १२४ ।।
रामचंद्र तुम आवत कहे । एती बार बिलमि कहँ रहे ।।
हनू कहत न पत्यारौ मोहि । नैननि साँच दिखाऊँ तोहि ।। १२५ ।।
झूठौ बोलि वधाई लई । तौ यह कुसुम वृष्टि कत भई ।।
वृक्ष अकाल भए फल फूल । कंटक खीर भए सम तूल ।। १२६ ।।
तुम देखत तरुवर फुलि फरयौ । यह वर भरद्वाज रिषि करयौ ।।
कातिक पून्यौ चंद समान । परयौ दृष्टि आवत सु विमान ।। १२७ ।।
हय गय छाँड़ि पयादे भए । थोरे मारग सनमुख गए ।।
भरथ नाइ सिर जोरे हाथ । कपिपति सौं कहियौ रघुनाथ ।। १२८ =

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देखौ साधु बंधु जिहि रीति। अैसी मन महँ मेरी प्रीति ॥
इतनौ कहत निकट तब धाइ। बंदे भरत राम के पाँइ ॥ १२९ ॥
पहिलैं भेंटचौ कंठ लगाइ। कर गहि लियौ विमान चढ़ाइ ॥
बूझी कुसल बात करि प्रेम। कहौ भरत विप्रनि घर छेम ॥ १३० ॥
राम कहत जब तैं बन गए। तब तैं कहौ सुखी द्विज भए ॥
नीचौ सिर करि ऊतर दियौ। सांईं चलत बहुत धन दियौ ॥ १३१ ॥
तब तैं विप्र अजाचित भए। अजहूँ नहीं पराएँ गए ॥
पैसत नगर राम द्विज दीस। मन आनंदे देत असीस ॥ १३२ ॥
निर्मल विप्र देखि सुख भए। सब संताप राम के गए ॥
थाती देव पराई धरैं। बिरले भागवंत निस्तरैं ॥ १३३ ॥
कहै भरथ सुख पायौ आजु। रामचंद्र अब लीजे राजु ॥
इतनौ सुनत गहवह्यौं हिएँ। राम लगाइ भरत उर लिए ॥ १३४ ॥
चलि विमान नीरैं पुर गयौ। उतरि राम तब पाँ पाँ भयौ ॥
कहत राम सुनि कुसुम विमान। मेरौ बचन करौ परिमान ॥ १३५ ॥
अलकापुरि तुम धारौ पाँउ। जहाँ कुवेर जच्छ कौ राउ ॥
जब आयसु राघव कौ भयौ। सो विमान चलि थानहिँ गयौ ॥ १३६ ॥
बंदे रिषि वशिष्ठ के पाँइ। आसन राम बईठे आइ ॥
एकु विभीषन अंगद राइ। भरत सत्रुघन भेंटै आइ ॥ १३७ ॥
अंकमाल लछिमन कहँ कियौ। नमस्काल कहि भेंटी सियौ ॥
सीतहिँ राम साथ कै लई। प्रथम गए जहँ हैं कैंकई ॥ १३८ ॥
कियौ जुहार चरन गहि रह्यौ। राम बचन माता सहँ कह्यौ ॥
तू गुरु तू माता निज देव। यह नर मूढ़ न जानत भेव ॥ १३९ ॥
तब तुम मातु इसी बुधि लागि। राघव कहहि जननि मो भागि ॥
तुव प्रसाद मैं तीरथ किए। राखस मारि मित्र कपि किए ॥ १४० ॥
काटे लंकापति दस सीस। मो गुन लहे तिहारी रीस ॥
इतनौ सुनि सो रही लजाइ। राम सुमित्रा भेंटी जाइ ॥ १४१ ॥
कौसिल्या के लागे पाँइ। भरि अंकौ सिर चूम्यौ माइ ॥
पुनि देखी जानकी बहोरि। कौंसिल्या बैठी धनु छोर ॥ १४२ ॥
धनु विलसत अति मंगल कियौ। राम जननि संतोष्यौ हियौ ॥
उत्तम नीच वृद्ध अरु बाल। ए आनंद भए तिहिं काल ॥ १४३ ॥
विष्नुदास यह कह्यौ न होइ। मनही मन जानत सब कोइ ॥
बंदर पुरुष रूप सब भए। नायौ सीस राम पहं गए ॥ १४४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देखत शत्रुघनहिं सुख भयौ। नाऊ लै रामहिं पहँ गयौ ॥
पहिलैं न्हान भरत कौ कीउ। पाछैं लछिमन औ सुग्रीउ ॥ १४५ ॥
राउ विभीषन राम अन्हाइ। बैठे सौंधौ अँगनि चढ़ाइ ॥
पहिरैं कपरा कंचन रंग। अलंकार साजे सब अंग ॥ १४६ ॥
माथैं जटा सबै परिहरीं। पिता बचन लगि राघव धरीं ॥
राम भरत कीन्हौं सिंगार। सत्रूघन औ लखन कुमार ॥ १४७ ॥
कौसिल्या सिंगारी सियौ। अलंकार सब सासुन दियौ ॥
जो सुग्रीउ राइ की नारि। ते कौसिल्या लईं हँकारि ॥ १४८ ॥
दीनैं गहिनैं रतननि जरे। मोतिन हार गरे साँकरे ॥
मन्त्री कहैं करौ अभिषेक। ऐसौ गयौ महूरत एक ॥ १४९ ॥
सत्रूघन सौं कह्यौं हँकारि। देहु सिंहासन अवधि मझार ॥
सुनत सत्रुघन सुख भयौ हियैं। राम पास गो आसन लियैं ॥ १५० ॥
ता पर बैठे रघुपति नाथ। लखन लिएँ चौंरनि निज हाथ ॥
रामचंद्र के रथ के नाम। सर्वांग सोभन सुंदर ताम ॥ १५१ ॥
सारथि भरत कुँवर तब भयौ। निर्मल छत्र सत्रुधन लियौ ॥
चौंर विभीषन कपिपति गहे। इहि विधि अवध पुरी पग लहै ॥ १५२ ॥
जूथनाथ नौ सहस कहंत। ते कपि साथ भए अति संत ॥
चंदन लेपि किएँ तन बास। हाथिन चढ़े चले चौपास ॥ १५३ ॥
भयौ अकास सब्द जैकार। राघौ अवध करचौ पैसार ॥
उत्तम सगुन लहे तिन घनै। पहुँचे गेह राम आपुनै ॥ १५४ ॥
दसरथ मंदिर रामनि कहे। तिहिं कपिनाथ विभीषन रहे ॥
मेलैं घरी एक दिन गयौ। तब कपिपतिहिँ भरत बीनयौ ॥ १५५ ॥
अब बिलंब कौ काज न होइ। तीरथ जलहिँ पठावौ कोइ ॥
लै आवै सब सागर नीर। अभिषेकौ राघव वरवीर ॥ १५६ ॥
सुनि सुग्रीव तब आयसु दियौ। वायुपूत पूरव दिसि गयौ ॥
दच्छिन रिषभ पछिम नल गयो। उत्तर पथ अंगद दल ठयौ ॥ १५७ ॥
और तीनि दिसि चले तुरंत। बेगद सूरज सुत जामंत ॥
कियौ पयानौ वीर सुषेन। ए पहुँचे तीरथ जल लैन ॥ १५८ ॥
लै जल कपि आए जु बहोरि। हींड़े तीरथ अरसठ कोरि ॥
अरप्यौ रिषि वसिष्ठ के हाथ। भौ अभिषेक तिलक रघुनाथ ॥ १५९ ॥
डार लई पीपर की हाथ। मंत्री कन्या रिषि के साथ ॥
तिन अभिषेक राम सिर कियौ। लै कुसुमनि अक्षत छाँड़ियौ ॥ १६० ॥

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मंडप मंत्र वेद धुनि भई। आई चलि कौसल कँकई ॥
सुंदरि धनी सुमित्रा साथ। मोती कनक थार ता हाथ ॥ १६१ ॥
करति तिलकु आरतो उतारि। जितनी साथ गई तिहि नारि ॥
बंदर बोलहिँ जय जय कार। बहुधन दीन्हौं मंगनहार ॥ १६२ ॥
कहै राम अभिषेकहु आज। करो वसिष्ठ भरत को राज ॥
हौं सुख देखौं चाहौं याहि। यह है दुखी भयौ मो चाहि ॥ १६३ ॥
इतनौ सुनत भरत बीनयौ। तुमहिं सरिस लछिमन बन गयौ ॥
सांईं मोहिं बहुत सूख एहि। आसन थापि छत्र सिर देहि ॥ १६४ ॥
हँसि लछिमन तब बिनई सेव। मोहिँ राज बूझिए न देव ॥
रिषि अभिषेक भरत कह कियौ। तब कर छत्र सत्रुघन लियौ ॥ १६५ ॥
सेत छत्र आप्यौ कपिनाथ। लीनौं तबहि विभीषन हाथ ॥
ऊभे भए सबै कर जोर। उपज्यौ जय जय सब्द बहोरि ॥ १६६ ॥
सुर रिषि असि करमन कर भाउ। गँधर्व गीत कीनौं उपजाउ ॥
अपछर नाचहिँ तोरहिँ ताल। देखहि सकल सभा भूपाल ॥ १६७ ॥
सब जन मन अति भयौ अनंद। जनु चकोर जनु प्रगटे चंद ॥
कनय कुसुम कमलन करि भाउ। देवराज माया निरमाउ ॥ १६८ ॥
दै पठई सु पवन के हाथ। पहिरी कंठमाल रघुनाथ ॥
जो निर्मोलक रतननि जरे। कंकन हार करन मूंदरे ॥ १६९ ॥
ते सुग्रीउ विभीषन राइ। दै रामहिँ भैंटे गर लाइ ॥
अंगद कुँअर जिते कपिनाथ। दीनैं रतन तिनहिँ बहु हाथ ॥ १७० ॥
तूठौ पूजहि बारंबार। भली वस्तु राखी न भँडार ॥
सीता कंठ अमोलक हार। सो लैकर पूछौ भरतार ॥ १७१ ॥
आयसु विहँसि दयौ तब राउ। ताहि देउ जा पर तो भाउ ॥
सुनि जानकी बहुत सुख भयौ। तब हंकार पवन सुत लयौ ॥ १७२ ॥
घली माल कंठ ता तनै। बहुतक बचन भगति कहि भनै ॥
जब हौं सोग समुद्र महँ परी। तबहि हनू [अरपी] आफी मुंदरी ॥ १७३ ॥
सोई भई तरीछी मोहिं। उहि गुन उरिन न हौं कपि तोहिं ॥
बहुत भगति करि समदे राइ। राम अजुध्या राज कराइ ॥ १७४ ॥
ग्यारह अहस बरस बलिबंड। भुंज्यौ राज धरनि नव खंड ॥
बैठ्यौ राज अजुध्या करै। ता सिर सेत छत्र फरहरै ॥ १७५ ॥
तरुवर फूलहिँ फलहिँ सपान। सौति विरह दुख तिय दिल धाम ॥
अरु दीजतु विप्रनि कौं दान। लाख धंनु हरिचंद समान ॥ १७६ ॥

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिये असंख्य वस्त्र आभरन। लाग्यौ विप्रनि सेवा करन ॥
बीस कोटि मन सोनौ दियौ। पाछैं अस्वमेध इक कियौ ॥ १७७ ॥
अरु दस सहस वृषभ धुर दीन। दीन्हौं विप्र देखि धन हीन ॥
रोग सोग आपदा न होइ। विधवा नारि न दीसत कोइ ॥ १७८ ॥
परजा धरम सकल विधि धरै। पर धन लोभ न कोऊ करै ॥
मीचु अकाल होइ नहिँ काल। नित माँगे घन बरसहिँ माल ॥ १७९ ॥
कछू अनीत न होइ अकाज। सात दीप महँ पालत राज ॥
मन दै राम कथा जो सुनै। बाढ़ै आयु विष्नु कवि भनै ॥ १८० ॥
काटै व्याधि लक्ष्मि घर होइ। सोग व्याधि पीड़ित नहिं कोइ ॥
जीव कंठ मुख अहि निसि जासु। यह अचिर्ज जम त्रास न तासु ॥ १८१ ॥
राम राम जो राम कहाइ। सो नर नरक वास नहिँ जाइ ॥
जोग जुगति जो राखहि ध्यान। कनक रतन बहु दीजतु दान ॥ १८२ ॥
तीरथ सकल फिरत जो न्हाइ। तिन फल सुनहु रमायन भाइ ॥
महिमा कहि को जाहि सुपार। स्वारथ परमारथ उपगार ॥ १८३ ॥
विष्नुदास चित मति मन लह्यौ। रामचरित्र धर्म हित कह्यौ ॥ १८४ ॥

इति श्री रामायने सुंदरकांडे रामराज्य वर्णन नाम खंडः ॥१६००॥

अथ उत्तरकांड लिष्यते

कुंजतं राम रामेति मधुर मधुराक्षरं।
अरूढं कंपितं शाखं वन्दे॰वाल्मीकि कोविदम् ॥
नमोस्तु रामानुज लक्ष्मणाय। दिब्याय तस्मै जनकात्मजाय ॥
नमोस्तु रुद्रायद्धमान नित्यं। नमोस्तु चन्द्रार्कमनु क्रमेण ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

गजमुख एक दंत थुँदियार। उर उत्तर सिरार्द्ध ससिभार॥
कर फरसा उंदर आरुह्यौ। ता पहँ विष्णुदास वरइ लह्यौ॥ १ ॥
उज्ज्वल कपरु सु निर्मल हार। नेवर चरन करहि झनकार॥
वाहन हंस वीन कर धरैं। विष्नुदास भारति नम करैं॥ २ ॥
वालमीकि जो कह्यो पुरान। ताकौ अर्थ करन कौ जान॥
जो जानै तो होइ पसार। ता लगि कह्यौ कथा अनुसार॥ ३ ॥
राखस उतपति अरु तप कर्म। ज्यों सुर वंधि लिए निज कर्म॥
जिहि विधि रावन त्रिभुवन जिन्यो। गुरु बल विष्नुदास कवि भन्यो॥ ४ ॥
वैरी मारि निकंटक भयो। विधि करि छत्र राम सिर दयो॥
दिन दिन विप्र करहिं जयकार। बहै कुटुंव लोक कौ भार॥ ५ ॥
कछुवक दिन तिहि अंतर भए। मिलि सव रिषि रामनि पहँ गए॥
सिंह दुआर मैंटि प्रतिहार। करि परनाम कहन गौ सार॥ ६ ॥
राघव सौं विनयौ कर जोरि। बिनु गुदरैं मोहिं लावहिं खोरि॥
साथ अगस्त अवर रिषि घनैं। आए तुब दरसन कारनै॥ ७ ॥
मो कहँ आयसु दीजे राइ। पुनि बहोरि कै देउँ बुलाइ॥
बिनु आराधैं आए साँइँ। ऊतरु देहु विचारत काँइ॥ ८ ॥
इतनौ सुनि उठियो रघुनाथ। तुरत चलौ उठि बंधव साथ॥
दंड प्रनाम रिषि न कहँ कियौ। सैंहथ टारि सिंघासन दियौ॥ ९ ॥
अर्घदान तिन कियो बहोरि। पुनि रघु कुसल पूछि कर जोरि॥
बहु आदर कुल गुरु कौ कियौ। रतन जटित आसन थापियौ॥ १० ॥
हरषवंत राघव जव दीठि। अब निज कुसल कहौ जग ईठि॥
त्रिविध पाप जा देखत गयौ। अब तप सुफल हमारो भयौ॥ ११ ॥
पहिले जनम करे तप घनै। ते तुम दुसह द्रुवन रन जिनै॥
मेघनाद तुम रन भुमि बह्यौ। तेरौ भाग रिषीसुर कह्यौ॥ १२ ॥
जिहि जीत्यौ सब सुरपति साथ। लै सौंप्यौ रावन के हाथ॥
जाकौ जूझु न काहू लह्यौ। तो प्रताप रन हेला बह्यौ॥ १३ ॥
दुंद जूझ अधिकौ दिसि कियौ। राखस सयनि बहुत खैलियौ॥
अभैदान त्रिभुवन तुम दयौ। रावन कुंभकरन रन हयौ॥ १४ ॥
धनि तप धनि संजम व्रत धर्म। देखत राम कुसल भयो कर्म॥
कुंभ निकुंभ बध्यौं अतिकाउ। जंमाली कौ भान्यो ठाँउ॥ १५ ॥
इतने वचन रिषीसुर भनै। राम विचारत मन आपुनै॥
रावन कुंभकरन पै बली। किहि विधि मेघनाद थुति करी॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राम रिषीसुर बूझन लग्यौ। अचरज बहुत मोहिँ मन भयौ ।।
कैसौ बली कियौ तप काँइ। मेघनादहिं सराहतु भाइ ।। १७ ।।
जे रहते रावन की बाँह। साँई घाटि कौंन तिन माँह ।।
मोहि अचंभौ भयौ बहूत। तुम जु सराहौ रावन पूत ।। १८ ।।
सुन रघु-तिलक कहत रिषिराइ। मेघनाद रावन सुत आइ ।।
जा उतपति तप करि बर लह्यौ। तातैं दुसह जाइ नहि कह्यौ ।। १९ ।।
रिषि पुलस्त्य है कृतयुग भयौ। गिरि आसर्म करन तप गयौ ।।
बहुत दिवस तानैं तपु कियौ। तिहि तप देखि ब्रह्म वर दियौ ।। २० ।।
मिलीं अपछरा इकठीं भई। रिषि के आश्रम खेलन गई ।।
बहुत जक्ष नर किन्नर धियो। नियरे गीत वाद्य तिन कियों ।। २१ ।।
रिषि सु तब्रहि चित चंचल भयो। डोल्यौ पवन पातु जनु हयौ ।।
टरी समाधि न राखी जाइ। तब रिषि कहियौ शाप रिसाइ ।। २२ ।।
तुम कत आईं इहि आसरम। भूलों और रिषीसुर भरम ।।
अब जो रिस करि दैउँ सराप। तौ अविवेक होइ मो पाप ।। २३ ।।
बहुरौ अब बन आवै जोइ। कारी कुचिल दंतुली होइ ।।
होइ रूप राखस के वानि। अरु दुर्गंधि तन वास कुवानि ।। २४ ।।
इतनौ कहत सकल भय भरीं। घर घर सब पहुँची सुंदरीं ।।
बहुरि तिही बन चढ़ी न आइ। रिषि सराप तैं रही डराइ ।। २५ ।।
गई वरस दस अंतर बीति। जानी नहीं तहाँ की रीति ।।
कन्या ऋषि त्रिनर्विदहि तनी। तहाँ गई लीला आपनी ।। २६ ।।
डीठि परति कारी ह्वै गई। ता छिन कुचिल दंत नख भई ।।
अति बिलखानी लेति उसास। पहुँची जाइ पिता के पास ।। २७ ।।
देखि पिता मन विस्मयौ कियौ। बूझै कहि अब कारन धियौ ।।
कैसैं भई रूप तोहि हानि। साँची कहहु सकौं जो जानि ।। २८ ।।
तरहीं दीठि पिता सह कहै। तपी पुलस्त्य तात बन रहै ।।
ता आस्रम जबही हौं गई। अैसैं रूप देख तहँ भई ।। २९ ।।
मुनि त्रिनबिंद बिचारत हिऍं। गो आसरम संग धिय लिऍं ।।
कर संपुट गहि विनवत सेव। कन्या भगत गुसाईं देव ।। ३० ।।
जप तप नेम खीन तुव देह। करै भगति राखौ तुम गेह ।।
खरी सुसील अधिक गुनवंत। पानि ग्रहन रिषि करौ तुरंत ।। ३१ ।।
रिषि पुलस्त्य छिन एक विचारि। पानि ग्रहन कियौ तिहि नारि ।।
तब त्रिनविंद गहगह्यौ भयौ। पुनि अपने आसर्महि गयौ ।। ३२ ।।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुंदरि चलहि कंत मन लिएँ। दृढ़ पति भक्ति न चूकति हिएँ ॥
बहुत काल जब सेवा करी। देखि पुलस्ति मया मन धरी ॥ ३३ ॥
प्रहसित बचन रिषीपुर कह्यो। सुंदरि माँग जो तो मन रह्यो ॥
कहौं आपुनैं हिएँ विचारि। तोहि प्रसन्न भयौ हौं नारि ॥ ३४ ॥
जब प्रसन्न जानौ रिषि ईस। उपजी लाज नवायौ सीस ॥
बोली नहीं मानि पिय कानि। मन कौ भाउ लयौ रिषि जानि ॥ ३५ ॥
करि पसाउ वर दियौ तुरंत। होइ पुत्र मोसम तप वंत ॥
भनैं वेद मेरे आसरम। ताकौ होइ विश्रवा नाम ॥ ३६ ॥
रिषि के वचन सुनत वह नारि। दुगुनौ सुख भयौ मनहिँ मँझारि ॥
कछू दिवस ता अंतर गए। ताकैं पुत्र विश्रवा भए ॥ ३७ ॥
धर्म सील तप पिता समान। तेजवंत जनु दूजौ भान ॥
गुन अनेक कहि सकत न कोइ। ता समान सो ब्रह्मा होइ ॥ ३८ ॥
उपज्यौ तपी कठिन तप करइ। भनत वेद नर मुनि मन हरइ ॥
भरद्वाज तिहि उतपति सुनी। तिहिँ कन्या दीन्हीं आपनी ॥ ३९ ॥
रिषिनी नाम तासु रिषि धियौ। निज भरतार हितहिँ मन दियौ ॥
बरस पाँच जब अंतर गयौ। पुत्र सपुत्र नारि उर भयौ ॥ ४० ॥
जन्म रासि गन विप्रनि कह्यौ। धनधिप नाम तासु तव लह्यौ ॥
तिहि देखी तब रिषि की ख्याति। रिषि विश्रवा पुत्र बहु भाँति ॥ ४१ ॥
बाढ़े पुत्र पिता के पास। करे नेम व्रत तप उपवास ॥
चौदह सहस वरष तप भई। धनपति वरष एक सम गई ॥ ४२ ॥
पानी पवन तन्यौ ब्यौहार। और न भावतु रिषिहिँ कुमार ॥
तब आए देवनि रिषि राइ। सहित पितामहँ पहुँचे आइ ॥ ४३ ॥
ब्रह्म कह्यौ सुनि धनपति पूत। कठिन त्रास तप कियौ बहूत ॥
तेरे तपहि भयौ सुख मोहिं। अब माँगौ वर देहौं तोहि ॥ ४४ ॥
निसुनत वचन पितामह तनै। सोचत धन पति मन आपनै ॥
पुनि कर जोरि कही तिहि बात। लोकपाल पद दै जगतात ॥ ४५ ॥
सुनि ब्रह्मा तब कियौ प्रमान। अरु तिहिं दीनौं कुसुम विमान ॥
तो कहँ रचियौ एक सुठाउँ। तहाँ जाइ रहि है हित भाउ ॥ ४६ ॥
बर विमान धनपति कहँ दयौ। बहुरौ स्वर्ग पितामहँ गयौ ॥
रिषि आगैं बिनवत सुत सेव। कहि गयौ थान छोड़ि सुरदेव ॥ ४७ ॥
तब पूछत मैं सकुच्यौ बात। वह सु थान कहि को सुनि तात ॥
जरा व्याधि पीड़िए न कोइ। अरु पर चक्र न संका होइ ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहत विश्रवा ऋषि धरि ध्यान । लंका अमरावतिहि समान ।।
लंका नाम मनोहर पुरी । बिसुकर्मा रचि कंचन धुरी ।। ४९ ।।
मनि तोरन तिहि कनय पगार । सब मंदिर कंचन इकसार ।।
चहूँ दिसा पर खाई फिरी । भा भरिता राखस परिहरी ।। ५० ।।
नारायन जब गए पताल । सूनै ताहि भए बहु काल ।।
अब तुम जाइ बसौ तिहि थान । होइ तोहि जस इंद्र समान ।। ५१ ।।
इतनौ सुनि तिहि बंदे पाँइ । लंका पुरी बसाई जाइ ।।
बरस पाँच जब अंतर जाइ । तबहि भेंटि आवई पितु माइ ।। ५२ ।।

श्लोक

सदेव गंधर्व गनो विनिश्रिता । तथाप्सरो नित्य विभूषतालयम् ।
गभस्ति तत्तेजमयंविधास्मृतः । प्रतापलंकाभिवतो धनाधिपः ।।

।। इति श्री धनपति लंकाप्रवेशो नाम सर्गः ।।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

सुनी बात मन विस्मय भयौ। राम अगस्तिहि बूझन लयौ॥
यह मेरे मन अति संदेह। राखस पुरी रची क्यों एह॥ १ ॥
कहै अगस्ति राम सुनि बात। राखस वंस तनी उत्पात॥
हेति प्रहेति प्रजापति तनै। बरनै कौन तिनहिँ गुन घनै॥ २ ॥
लघु प्रहेति तिय संग न कियौ। जोग ध्यान मारग मन दियौ॥
लही मया सुहेत की धनी। वहि निज काल देवता तनी॥ ३ ॥
वर्धन ताकैं भयो सुपूत। महा तपी तप करम सँजूत॥
लक्षन सहित सुसंध्या धिए। सालकंटिता उत्तम तिए॥ ४ ॥
सो व्रधकेत केकसी भई। वीते काल गरभ संभई॥
उपजी लाज दुक्ख मन धरे। पर्वत सिखर गर्भ परिहरे॥ ५ ॥
भयौ सुकेसि तनौ अवतार। जनु संकर सुत स्वामि कुमार॥
बहुरौ सुंदरि पहुँची जाइ। तव सिव सक्ति पहुँचियौ आइ॥ ६ ॥
बालक जानि उछंगा लियौ। ईसुर पुत्र कह्यौ वर दियौ॥
आपुन बैठौ भुंजहि राज। महावली दल आवध साज॥ ७ ॥
गंधर्व धिया नाम गामिनी। भई सुकेस घरहि सो धनी॥
कछुवक दिन ता अंतर गए। तीन पुत्र ताके घर भए॥ ८ ॥
जेठौ मालवंत वर वीर। मध्य सुमाली साहस धीर॥
लघु माली सुत तीजौ भयौ। तिन तजि दुष्ट कर्म तिहि लयौ॥ ९ ॥
सुरन न गनहि गर्व आपुनै। वहुत द्यौस तप कीन्हैं घनै॥
भयौ प्रसन्न व्रह्म वर दियौ। तिन अजीत पद ता कहं भयौ॥ १० ॥
वरु लहि तवहिं सताए देव। तिन विनई संकर सौं सेव॥
हमहिँ सतावत राखस वरी। दुख दीनौ संपति सब हरी॥ ११ ॥
अब स्वामी परवानौ भाखि। बूड़त अमर लोक लै राखि॥
तिनकौं ईसुर उतरु दियौं। मैं सुत करि सुकेसि थापियौ॥ १२ ॥
ताके तीन पुत्र ए वरी। व्रह्म पसाउ देव लछि हरी॥
अव हौं तुमहिं सिखाऊँ मंत। तुम हरि मंदिर जाहु तुरंत॥ १३ ॥
विनती सुनि दृढ़ वाचा देइ। खिनक माँहिँ राखस खै लेइ॥
सुनत देव हरि मंदिर गए। विनती करहि विलखि मन भए॥ १४ ॥
असुरनि तनौ कह्यौ व्यौहार। सांई राखि लेहु इहि बार॥
विहँस्यौ हरि देवन धिरजए। रन मह मोहि वहुत दिन भए॥ १५ ॥
असुर सैन रन भानी ठाउँ। तुम घर जाहु सुरन के राउ॥
वाचा बंध देव घर गए। सुनी बात राखस मन लए॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हय गय दल सब सैन संजूत । जूझन अमतावतिहि पहूत ॥
असगुन बहुत होत तहँ जात । जाहि निसंक न बूझत बात ॥ १७ ॥
गर्व न गनंहि सौ न कौ सौन । हमहि भिरत रन लरिहै कौन ॥
नारायन कोपंतर भए । जूझन मालिवंत सहँ गये ॥ १८ ॥
चक्र हयौ माली कौ सीस । धरती परत सहोदर दीस ॥
भाग्यौ असुर न सूझत अंग । नारायन गोहित भयो संग ॥ १९ ॥
जबहि सैंन सागर महँ गयौ । मालवंत फिर ठाढ़ौ भयौ ॥
नारायन सह विनवै सोइ । यह क्षत्री कौ धर्म न होइ ॥ २० ॥
भागैं जात सु घालैं घाउ । कुंभी नरक लहै सो ठाँउ ॥
तब हरि कह्यौ मोहिं फल आज । तो कहँ मारि सुरन दैउँ राज ॥ २१ ॥
छत्री धर्म न भावत मोहिं । छल बल आजु न छाँड़ौं तोहिं ॥
रिस करि मालवंत तब कह्यौ । करहु प्रहार जु जैहौं बह्यौ ॥ २२ ॥
बातन ही क्यों वैरी जिन्यौ । अति रिष सहित निसाचर भन्यौ ॥
बाननि संख्या कहनि न जाइ । जिते असुर तब कीन्हैं घाइ ॥ २३ ॥
कर गहि गदा सामुहैं गयौ । तिहि हरि सबल हिए महँ हयौ ॥
रिस अति करचौ मुठीका घाइ । मुरछौ हरि तन सुधि न लहाइ ॥ २४ ॥
असुर सैन लंका महँ गयौ । जब नारायन मुरछित भयौ ॥
भूली निद्रा गयौ अहार । अति भय तज्यौ सैल संसार ॥ २५ ॥
रहि न सकहि ते कायर भए । सबही छाँड़ि पतालहिँ गए ॥
बाढ़्यों राजवंस परिवार । अचल सयन चतुरंग भंडार ॥ २६ ॥
इहि विधि मालवंत तहँ रहै । कथा अगस्त राम सों कहै ॥
यह मैं कथा पाछिली कही । पुनि सो नगरी धनपति लही ॥ २७ ॥
राजनीति प्रतिपाल्यौ राजु । बहुत दिवस कीन्हौं सुरकाजु ॥ २८ ॥

॥ इति श्री रामायने लंका मालिवंत राज्य वर्नन नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

धिया सुमाली लई हँकारि। केकसि नाम सु उत्तम नारि ॥
देखि रूप मन चिंता भई। अब इहि काहि विवाहौं दई ॥ १ ॥
सोचत ताहि बहुत दिन गए। लै धिय संग धरनि चल भए ॥
देखि कुबेर रथहिं आरुह्यौ। तब तिहि वचन सुता सहँ कह्यौ ॥ २ ॥
अब जो तू विश्रव रिषि वरहि। अैसौ पुत्र गर्भ तो धरहि ॥
जिन तैं तेरी कीरति होइ। सुख बिन पुत्र लहत नहिं कोइ ॥ ३ ॥
सुनैं सुवच कहियौ जो तात। बूझि लई सब रिषि की बात ॥
बहुरौ आपुन सार दिखाइ। वह रिषि पास पहूँची जाइ ॥ ४ ॥
लागी दिष्ट दिवस अंथयौ। तबहि रिषीस कुंड ढिग गयौ ॥
होम कियौ तहँ आसन ठयौ। ऊभी बार नारि मन दियौ ॥ ५ ॥
करत अचंभौ पूछत ताहि। साँचो कहहि तिया को आहि ॥
तरुन सरूप अकेली दीस। मो अचिरज इमि कहै रिषीस ॥ ६ ॥
कर जोरैं सो विनय कराइ। पिता सुमाली गौ पहुँचाइ ॥
नाम कैकसी आउँ कुमारि। कारज तुम मन लेहु विचारि ॥ ७ ॥
इतनौ सुनत ध्यान धरि रह्यो। वचन रिसाइ रिषीसुर कह्यौ ॥
काम अंध पापिनी गमारि। कत आई मो गेह मझारि ॥ ८ ॥
असुर काज आरधति मोहिँ। दैयत पुत्र होहिसी तोहिँ ॥
सौहीं साइं तनौ पर भाउ। ह्वैहैं दुष्ट कहैं रिषि राउ ॥ ९ ॥
कर जोरैं विनवति सुंदरीं। जो तुम दैउ मया मन धरी ॥
यह फल लहौ तुमहिं सेवंत। होहि पुत्र उत्तम गुनवंत ॥ १० ॥
विहसि रिषीस कह्यौ सुनि नारि। लहुरौ होहि ब्रह्म अनुहारि ॥
धर्म नीति मारग व्यौपरैं। राखस कुल बूड़त उद्धरैं ॥ ११ ॥
इतनौ कहि सौं विधि परनाइ। केकसि आस भई उर आइ ॥
बरस दसक ता अंतर गए। पहिलै गर्भ कैकसी भए ॥ १२ ॥
दससिर बीस भुजा अवतरयौ। पिता नाम दसकंधर धरयौ ॥
बिन कारन डरपै संसार। पुनि भौ कुंभकरन अवतार ॥ १३ ॥
सूपनखा कन्या तीसरी। जनु तिन जोग मीच अवतरी ॥
चौथैं भयउ विभीषन पूत। लछन बत्तीस धर्म संजूत ॥ १४ ॥
कह्यौ अगस्त सकल व्यवहार। रावन कुंभकरन अवतार ॥
तब पुनि राघव बूझन लयौ। कैसौ तप किहिकर वर भयौ ॥ १५ ॥
निसुनौ राम कथा रिषि कहै। जननि पिता ब्रत रावन रहै ॥
मन मह धरत न कूरौ भाउ। तात मात पर निसि दिन भाउ ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिन सुख मैं बरसैं सो भए। तबहि कुबेर पिता पहँ गये ।।
जननि जानि भैंटी कैकसी। देखत ताहि हिएँ बुधि बसी ।। १७ ।।
कुंडल तेज जनु दूजौ भान। इक सौवन सोभित द्वय कान ।।
देख्यौ कुसुम रथहिँ आरुह्यौ। मातु वचन रावन सौं कह्यौ ।। १८ ।।
यह कुवेर तुव जेठौ भाइ। या संपति बरनी नहिं जाइ ।।
यह तप तेज भयौ दिगपाल। जरा मरन नहिं छुवै कपाल ।। १९ ।।
अब धरि वचन हमारे कान। करि सो तप तिहि तोहि समान ।।
माता पिता होइ संतोष। तप बिन रावन सुक्ख न मोष ।। २० ।।
रावन हिएँ धरौ अहँकार। तप बल जो न जित्यौ संसार ।।
तो कैकसी लजाऊँ माइ। नमस्कार कै चल्यौ रिसाइ ।। २१ ।।
कुंभकरन गिरि ऊपर रहै। पाँच अग्नि दिन काया दहै ।।
वरषा मेघ सीत जल वासु। वरन सहस दस वीती जासु ।। २२ ।।
करत विभीषन अति तप ध्यान। निराहार दृढ़ आसन थान ।।
पूजीं वरस सहस दस ताहि। अति विधि कुम्करन तैं चाहि ।। २३ ।।
रावन बरस सहस तप करचौ। एक एक सिर असि कातरचौ ।।
उदये अस्त रहत निरहार। अति निसंक मन रहै कुमार ।। २४ ।।
वरस सहस नव गइँ अतीत। तहि नौ सिरकाटे इहि रीत ।।
सहस बरस तव पुनि पूजियौ। दसएँ सिर कौ उद्यम कियौ ।। २५ ।।
खड़ग कंठ रावन जब करचौ। ब्रह्मा आइ तासु कर धरचौ ।।
तेरे तप सुख उपज्यौ मोहिँ। माँगि सु रावन तूठौ तोहिँ ।। २६ ।।
तब सुनि रावन बिनती करै। सब नर देव मीच लगि मरै ।।
जो तुम सांई करहु पसाइ। मोहिँ अमर पद दीजे साँइ ।। २७ ।।
तीन लोक ब्रह्मा यों कहै। अमर सरीर न कोऊ लहै ।।
यह वर दयौ जात नहिं आज। और माँगि तू त्रिभुवनराज ।। २८ ।।
यह वर दै रावन यों कहै। दैयत देव मोहि नहिँ वहै ।।
नाग निसाचर अरु गंधर्व। ये मोहिँ जीत सकइँ नहिँ सर्व ।। २९ ।।
इतनैं माहिँ मरन नहिँ होइ। मानुषमृग पसु गनत न कोइ ।।
जिते जीव बरतहिँ संसार। ते सब देव मोहिँ आधार ।। ३० ।।
इतनौ सुनि हँसि धाता कहौ। तू सुर असुर न जैहौ बहौ ।।
नर वानर की संक न तोहिँ। याकौ कहा निहोरौ मोहिँ ।। ३१ ।।
अरु तू माया रूपी होहि। नव सिर पुनि उपजैंगे तोहि ।।
इतनौ धाता कियौ प्रमान। गयौ बिभीषन पास विमान ।। ३२ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ठाढ़े देव पितामहँ कहै। माँगि पुत्र जो तो मन रहै ॥
तेरे तप मो आसन टरचौ। हौं तेरौ दुख चाहत हरचौ ॥ ३३ ॥
कहत विभीषन हियैं बिचार। धर्म सु बुद्धि देहु संसार ॥
पाप बुद्धि निज प्रान न दोष। जानैं देव लहौ सुख मोष ॥ ३४ ॥
मो कहँ धर्म बुद्धि दै देव। जिहि सुख कारन लहिए मेव ॥
जो सुख कारज लहौं प्रभात। सो वर ब्रह्म देहु मो जान ॥ ३५ ॥
ब्रह्म ताहि तुष्टि पर दियौ। बहुत जुगन चिरजीवन कियौ ॥
कुंभकरन पहँ लाग्यौ जान। लखि तैंतीस कोरि अकुलान ॥ ३६ ॥
सकल देव ब्रह्मा पहँ गए। बिनवत अति सब बिलखे भए ॥
कुंभकरन कहँ जो वर देहु। पापी दुष्ट बुद्धि मन एहु ॥ ३७ ॥
यानैं करि कुभाइ तप कियौ। चाहत सुर पुर तप बल लियौ ॥
जो अब या कहँ तुम वर देहु। तौं वर लै त्रिभुवन खैं लेहु ॥ ३८ ॥
तब ब्रह्मा समुझाए देव। निफल न जाइ पुरुष की सेव ॥
अब मैं एक बुद्धि मन लही। याके कंठ बसै भारही ॥ ३९ ॥
तैसी हियै उपावै बुद्धि। वर मागत ज्यों लहै न सिद्धि ॥
आइसु माँगत लहै सराप। भाँग्यौ देत न लगत पाप ॥ ४० ॥
सुनि तब सुख मान्यौ सुरराइ। ब्रह्मा सरसुति लई बुलाइ ॥
कुंभकरन मुख करि तू बास। मो कहि कुविधि देहु बच तास ॥ ४१ ॥
आयस दै सरसुति परठई। देवी कुंभकरन पहँ गई ॥
ब्रह्म कह्यौ वर माँगि कुमार। हौ प्रसन्न तोहिं भौ इहि बार ॥ ४२ ॥
तब वर माँग्यौ रावन बंधु। जुग जुग होहु देव थिर कंध ॥
और छमासी निद्रा करौं। सुर नर संक न हियरा धरौं ॥ ४३ ॥
जब हौं जाइ करों व्यवहार। तृपिति न हौंहुँ खात आहार ॥
कर कर जोरे विनवत सेव। मोहिं गुसाईं यह वर देव ॥ ४४ ॥
ब्रह्मा कहै वचन परमान। पुनि अमरावति कियौ पयान ॥
मन पछितानौ भई कुबुद्धि। वर माँगत मैं लही न सिद्धि ॥ ४५ ॥
वर पाँएँ राखस घर गये। अगम बली निरभय मन भए ॥
कैकसि पिता सुमाली नाम। रावन पास पहूँचे ताम ॥ ४६ ॥
मंत्री बहुत और ता साथ। रावन आँगैं जोरे हाथ ॥
बार बार तानै यह कह्यौ। मेरे मन इच्छित फल लह्यौ ॥ ४७ ॥
अविचल राज करहु जग जिनी। माँगि लेहु लंका आपुनी ॥
प्रथम पुत्रि वह मेरी आइ। राउ कुबेर भयौ पुनि ताइ ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अजगुत कर्म न हौं हीं सहौं । रावन सौं नाना यों कहौ ।।
राउ हमारौ जेठौ भाइ । अजगुत मोहि करन नहिं जाइ ।। ४९ ।।
जेठौ बंधु पिता उनमान । तात विरोधहु कौन सयान ।।
समतर आसन बैठत पाप । कहि तासौं क्यों करिए दाप ।। ५० ।।
यह जु वचन सुनि रावन तनौ । मालिवंत दुख उपज्यौ घनौ ।।
तरहौं सीस नाइ सो रहौ । बहुरि वचन औरै दिन कह्यौ ।। ५१ ।।
रावन क्षत्री धर्म न एह । भैयन सौं जो करत सनेह ।।
सेवा मूल सगाई राइ । नातौ तासौं गन्यौ न जाइ ।। ५२ ।।
रूपवंत पतिव्रत इक नारि । कस्यप रिषि की सुंदर चारि ।।
कद्रू बिनता अदिती ताम । दिति मिलि चारि बखानत नाम ।। ५३ ।।
करी मया रिषि आशिष कह्यौ । अन अन भेस पुत्र फल लह्यौ ।।
अदिति देव दिति दानव भए । जूझत तिनहिं बहुत दिन गए ।। ५४ ।।
राज लोभ नित कंदल होइ । प्रीति सगत्तन लहतु न कोइ ।।
बहुत असुर घाले संघारि । स्वर्ग लोक गहि रह्यौ मुरारि ।। ५५ ।।
पन्नग गरुड़ बैर नित होइ । बहुत नाग संघारत सोइ ।।
बैर तासु कौ सह्यौ न जाइ । नाग रसातल रहे लुकाइ ।। ५६ ।।
नातौ जितौ असुर अरु इंद्र । तुम सौं तिसौं कुबेर नरिंद्र ।।
नगरी और न या सम आहि । दसकंधर पछितैहै ताहि ।। ५७ ।।
इतनौ बचन सुनत मन रहै । दूत बुलाइ सँदेसौ कहै ।।
धनपति मेरौ कह्यौ कराहि । जूझ छाँड़ि गढ़ परिहरि जाइ ।। ५८ ।।
गो प्रहस्त धनपति के ठाँइ । कहे सँदेस सुनै सब राइ ।।
खिन इकु हिएँ बहुत दुख भयौ । बूझन मंत्र पिता पहँ गयौ ।। ५९ ।।
तब विश्रवा सुनी यह ख्याति । रावन तनी कही उतपाति ।।
दुष्ट कर्म तिहि करे बहूत । तुं कैलास जाहि चलि पूत ।। ६० ।।
सुर किन्नर बहु क्रीड़ा करहि । जरा मरन भय चित न धरहि ।।
मंद सुगंध पवन जहँ वहै । बसि सुत तहाँ पिता यों कहै ।। ६१ ।।
तासु वचन माथौ नाइयौ । दल बल सहित पयानौ कियौ ।।
लोग महाजन लए बुलाइ । अलकापुर तब पहुँच्यौ जाइ ।। ६२ ।।
दूत बात रावन सौं कही । परजा कोइ न नगरी रही ।।
गये महाजन तजे अवास । सूनै मंदिर सकल निवास ।। ६३ ।।
मालिवंत उठि आगैं भयौ । लै दसकंधर लंकहि गयौ ।।
कंचन मंदिर देखे जाइ । रावन हरसित अंग न माइ ।। ६४ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राखस मिले मंत्र तिन कियौ। रावन सीस छत्र तव दियौ ॥
माया अधिकारी परधान। करहि मंत्र रावन के थान ॥ ६५ ॥
सुख दै बोलै राज सुहास। कबहूं खिनकु न छाँड़त पास ॥
रावन तिनहिं देइ बहु मानु। अति बाढ़चौ मातुल संतानु ॥ ६६ ॥
आलस खेती हाँसी नेह। सुख तैं व्याधि सु सारौ ग्रेह ॥
मामा मंत्र समूलौ राज। बिनसै आस पराए काज ॥ ६७ ॥
पहिलौ खंड विष्नु कवि कह्यौ। रावन राज जिसी बुधि लह्यौ ॥
दूजैं सरस कथा भाषियौ। जैसैं सकल लोक वस कियौ ॥ ६८ ॥
वसतु निकंटक लंका पुरी। वाढ़े पाइक रथ गज तुरी ॥
दीसै हाट वाट ब्यौहारु। बंदिन कौ लहिएँ जय काल ॥ ६९ ॥
रावन साजि एक रथ लयौ। कबहूँ फिरन अहेरैं गयौ ॥
भव भव तव बन जाइ पईठ। कन्या संग मयासुर दीठ ॥ ७० ॥
बोलत रावन अचरज कियौ। को तो साथ आहि यह धियौ ॥
कौन काज देसांतर जाहु। करौ मया मो गात कहाहु ॥ ७१ ॥
ऊतर देत मयासुर ताम। एक अपछरा मेरैं धाम ॥
सुरनि मया करि मो कहँ दई। यह मंदोदरि ता उर भई ॥ ७२ ॥
जेठे याहि पुत्र द्वै भए। सीलवंत विधना निरमए ॥
मायावी दुंदुभि द्वय नाम। दैयत देव अजित संग्राम ॥ ७३ ॥
जब धिय भई विवाहन जोग। निंदा करहिं हमारी लोग ॥
तरुनी कन्या धर्म न होइ। बार बार निंदत मोहिं लोइ ॥ ७४ ॥

श्लोक

कन्या पितृत्व दुःखाय। नरानामान कष्टिनं।
द्वे मुले संशयं कृत्वा। नित्यं कन्या कुमारिका ॥

चौपही

रावन सौं मय विनती करै। कन्या दुःख रूप अवतरै ॥
मात पिता कहँ चिंता होइ। दीजे काहि विवाहै कोइ ॥ ७५ ॥
वर कारन चाह्यौ संसार। अब तुम वन महँ मिले कुमार ॥
दिव्य रूप लक्षन संजूत। कहा नाम कहि काकौ पूत ॥ ७६ ॥
रावनु कहै सु रावनु नाउँ। ब्रह्मवंस विश्रव सुत आउँ ॥
कोटि अनंत असुर कौ राइ। फिरत अहेरैं बूझत काइ ॥ ७७ ॥
कह्यौ मयासुर जुगत्वै एहु। कन्या दैहुँ तुमहिं जो लेहु ॥
अब मो मन इच्छा फल लह्यौ। बार बार रावन सौं कह्यौ ॥ ७८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आनंद्यौ रावन तब कहै। ब्याह काज को परिहसु गहै ॥
अग्नि साखि जो विधि सौं देहु। तो मैं ब्याहौं कन्या एहु ॥ ७९ ॥
तब आचार मयासुर कियौ। भो विवाह रावनु चलु लियौ ॥
बसत लंक गिरि बरसक भयौ। कुंभकरन तव ब्याहन गयौ ॥ ८० ॥
बिंदज्वाल धिय राखस तनी। भई सु कुंभकरन कहँ धनी ॥
सरमा नाम आहि सो धियो। तब गंधर्व व्याह विधि कियौ ॥ ८१ ॥
गंधर्व वंस वह उपजी वाल। रूप वंत सुन्दर गुन माल ॥
तीन्यौ वसत सु लंक मँझारि। तीनहुँ घर अति उत्तिम नारि ॥ ८२ ॥
कनक रतन मंदिर सुख सेज। होत उदोत मनो रवि तेज ॥
कुंभकरन कौ जितौ अवासु। वाढ़ै कथा जु वरनौ तासु ॥ ८३ ॥
पतिव्रत पालहिं तीनहुँ नारि। नित सुख सेवत लंक मँझारि ॥
अैसैं रहत वहुत दिन गए। भूंजत राज निकंटक भए ॥ ८४ ॥
रानी गर्भ मंदोदरि धरौ। मेघनाद सुत तव औतरचौ ॥
रावन राजनीति परिहरै। सब जग लोग सतावत फिरै ॥ ८५ ॥
पर धन पर तिय लेत छुड़ाइ। दुखी करे सब पृथिमी राइ ॥
व्याहति घरनि वहुत दिन गए। सुखी कुबेर दूत पर ठये ॥ ८६ ॥
देवनि वर दीनौ तो जोग। अब मति बंधु सतावहि लोग ॥
परजा पर वर जैसी नारि। सिख दीजिए न घालौ मारि ॥ ८७ ॥
उत्तम पाप अलोकहि डरै। अंकुस हीन नीच व्योपरै ॥
इतनौ सुनत भई रिस राइ। जच्छ दूत घालौ मरवाइ ॥ ८८ ॥
सैन साज राखस दल लयौ। अलिकापुर चलि रावन गयौ ॥
सुनि कुबेर मन संसय भयौ। जूझ न म.................. ॥ ८९ ॥

× × ×

× × ×

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

तब हँसि वेदवंति तिय कहै। ताहि बरौं कै क्वाँरी रहै ॥
जा कहँ बारैं दीन्हीं तात। ताहि वरौ रावन मुनि वात ॥ १ ॥
इतनौ सुनि राखस परजरयो। सैंहथि तिय झोटा गहि धरचौ ॥
प्रबल जानि सो कोपी बाल। नखसिख तैं तिहि उपजी ज्वाल ॥ २ ॥
रावन डरपि केस छांड़ियौ। सती सराप कोपि तब दियो ॥
मेरे झौंटा लाग्यौ नींच। मो तैं होइ तिहारी मीच ॥ ३ ॥
इतनो कहत अगिनि महँ परी। हा हा कार भाष उच्चरी ॥
विलख वदन रावन घर गयौ। मिलि सब देव मतौ तन ठयौ ॥ ४ ॥
विनवत देव ब्रह्म मन धारि। रावन वधहित सिरजहु नारि ॥
त्रिभुवन जीत्यौं करत न संक। राखस बली गयौ गढ़ लंक ॥ ५ ॥
सुनहु देव धाता तब कहचौ। जो तुम मोपर नामहिँ लहचौ ॥
सब जतननि करि चितहु ताहि। कन्या पुनि उपजै ता माहि ॥ ६ ॥
आयसु सुरनि ब्रह्म पहं लहचौ। विधि सौं जग्यँ जाय तब ठयौ ॥
सो परमानु न सके चढ़ाइ। लही सुद्धि लंका के राइ ॥ ७ ॥
भयौ कोंप रावन तत छिनौ। पहुँच्यौ स्वर्ग सैन लै घनौ ॥
सकल देवता गे सब भागि। देखी तहाँ होम की आगि ॥ ८ ॥
इंद्र कुबेर जम कौवा भयौं। बरुन हंस हो सरवर गयौ ॥
डरपि कोड़िला भयौं कुबेर। सब भागे छाँड़चौ गिरि मेरु ॥ ९ ॥
आपुन रावन टारयौ पिंड। देख्यौं तहाँ मांस कौं पिंड ॥
घरियकु भयौ अचंभौ ताहि। मंत्री कहहु कहा यह आहि ॥ १० ॥
जो जिहि समझयौं सो तिहि कहचौं। रावन कहै मरम मैं लहचौ ॥
झूठौ होमनि कौ मिस कियौ। विप्रनि यह आमिष भूंजियौ ॥ ११ ॥
आपुन पिंड हाथ गहि लहचौ। लै रावन अपने गृह गयौं ॥
मंदोदरि कह सौंप्यौं जाइ। यहु रानी मोहिं देउ भुंजाइ ॥ १२ ॥
बहुरौं सुरनि मंत्र तब ठयौ। कपट बात नारद परठयौं ॥
लंकेसुर कौं कही असीस। पुनि रानी मंदोदरि दीस ॥ १३ ॥
उठि रानी रिषि आदर कियौ। पुनि सब सुरनि कुसल बूझियौं ॥
साँची बात कहौं रिषि राइ। तुम आए कारन किहि भाइ ॥ १४ ॥
नारद कह्यो, कह्यौं जो करहि। लै यह पिंड कलस महं धरहि ॥
घृत भरि जतन राखि अब सोइ। तहाँ श्रौंर जाने नहि कोइ ॥ १५ ॥
या कलसहि राखौ मूह बाँधि। और मांस रावन दै राँध ॥
रानी कियों जु नारद कहचौं। कछुवै मरम न रावन लहयौं ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रिषि धिरए तैंतीसों कोरि । छठैं मास आइयौं बहोरि ॥
कलस उघारौ मन्दोदरी । ताहिं माँझ कन्या नीकरी ॥ १७ ॥
उत्तम तेजवंत अति बाल । दीसंति मनौं अगिनि की ज्वाल ॥
सुनि रानी नारद यों कहैं । सावधान नर क्यों दुख सहै ॥ १८ ॥
रावन निज तो कहँ परिहरै । या कह पाटवर्द्धना करै ॥
जे उत्तम अपकीरति डरैं । जो गुनवंत मूढ़ भय करैं ॥ १९ ॥
राइ अनीति डरहि ज्यौं लोग । त्यों सुंदरि सौंतिहिं संजोग ॥
नारद वचन मन्दोदरि डरी । समुद घालि कन्या परिहरी ॥ २० ॥
लहरि झकोरनि गई बहाइ । मिथिला नगर पहूँची जाइ ॥
बालुक भूमि माँझ गड़ि रही । बहुत द्यौस नर काहु न लही ॥ २१ ॥
तब तिहि देसहि परयौं अकाल । भो अति चिंतित जनक भुइपाल ॥
द्वै कर जोरैं विनवत राउ । मो सह विप्र कहौं सति भाउ ॥ २२ ॥
क्यों भाजै मेरौं संदेह । कहौं बुद्धि ज्यौं बरसै मेह ॥
बोलहि विप्र सुनहु वर वीर । आपुन चलहु समुद के तीर ॥ २३ ॥
पाट महाजन लीजहि साथ । सैंहथ हल पकरौं नर नाथ ॥
जब राजा कर लांगल गह्यौं । भयो काज तब देवन कह्यौं ॥ २४ ॥
जै जै जै भाषा उच्चरी । नासि लागि कन्या झरि परी ॥
दीसंति कुँवरि तिसे आकार । सींची घृत जनु पावक झार ॥ २५ ॥
राजा हिएँ बहुत सुख भयौं । आनंद्यौं नगरी लै गयौं ॥
बरस्यौं मेघ सघन जल धार । पूरयौं सुख अति मिटयौं अकाल ॥ २६ ॥
कुँवर धरौं तब सीता नाम । सो यह घर है तेरे राम ॥
वहै वेदवंती तुम्हरे गेह । रावन मूढ़ न जानहि भेव ॥ २७ ॥
पूरब बैर जानि तुम कह्यौं । रिषि अगस्ति राघवसौं कह्यौं ॥
सुनि रघुनंदन रिषि वर कहै । कह्यौं सुज्यों रावन जग लहै ॥ २८ ॥
जिते भए त्रिभुवन के राइ । कोइ मारे कोइ गए पराइ ॥
प्रथम मनंतर मरुत भुवार । कीन्हौं देव जग्यँ रखवार ॥ २९ ॥
दसकंधर बोल्यौं मुनि राइ । छत्री भागहि पीठि दिखाइ ॥
ता कह पाप नर्क गति होइ । या कारन जानत सब कोइ ॥ ३० ॥
अब तू जूझ दान दै मोहि । कर जोरैं आराधौं तोहि ॥
सतु छांड़े न तोहि परिहरौं । जग्यँ विधंस आज तोहि करों ॥ ३१ ॥
बौलौं राजा सुन सति भाउ । कहि तोहि नाम कहां कौं राउ ॥
जग्यँ बिधंसन कहै कुबुद्धि । ऐसे कर्म करत कह सिद्धि ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रावन कहै न जानहि मोहि । माँगि माँगि हौं तूठौं तोहि ।।
मेरे कर्मनि भयौं अबूझ । अनजानत तैं करौं न जूझ ।। ३३ ।।
रिषि संव्रत तब बिनती करी । अब तुम जाहु जग्यँ परिहरी ।।
रावन तप विचारि आपुनौ । यह रू जग्यं पुनि ईसुर तनौं ।। ३४ ।।
रावन पचन करयो परमान । गयौं मोरि वन कुसुम विमान ।।
जग्यँ राइ कौं पूरौ भयौं । लंकेसुर औंध्यापुर गयौं ।। ३५ ।।
रविवंसी आरन्यक नाउँ । तासौं रन कीन्हौं भरियाउ ।।
जूझत बहुत सैन खै लयौं । कोप्यौ रावन चनकट हयौं ।। ३६ ।।
चेति राउ रावन सो कह्यौं । मूढ़ काल बस कौंन न बह्यौ ।।
तोसे पृथिवी उपजे घनै । मैं रन रंगति त्रिनवत गनै ।। ३७ ।।
गरब देखि तेहि उपज्यो दाप । लंकेसुर सौं कह्यौ सराप ।।
मेरे वंस जु उपजै कोइ । तोहि समूल निपातहि सोइ ।। ३८ ।।
कहि सराप ता गए पिरान । राजा सुगति लही निर्वान ।।
सुर असुरन मन संक न धरइ । रावन जग्यँ निपातत फिरइ ।। ३९ ।।

।। इति श्री रावन विजय आरन्यक बध नाम सर्गः ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

सुनत राम मन विसमौं भयो । विहँसि वचन रिषि,बूझन लयौं ।।
कोई बली न उपज्यो राउ । जो भानै रावन भरियाउ ।। १ ।।
रिषि अगस्ति तब उत्तर करै । ब्रह्म पसाउ न मारौ मरै ।।
जोधा पास न जाहि जु जिन्यौ । रावन चाहि बली अति घनौ ।। २ ।।
जब इहि जीति भुवन वस कियौं । महिषावती सैन लै गयौं ।।
ताके मंत्री बूझे जाइ । सहसबाहु मो देहु वताइ ।। ३ ।।
तब ता मंत्री कह्यौं सुठाउँ । साई छल क्रीड़हि मो राउ ।।
हय गय रथ मेगल चतुरंग । सब रनि वास तासु के संग ।। ४ ।।
रावन सुनत वहुत दुख भयो । मानौं रतन रंक गिरि गयौं ।।
माथौं धुनि चलियौं समुहाइ । नदी नर्मदा पहुँच्यौं जाइ ।। ५ ।।
निर्मल जल देख्यों सुभ ठाँउ । भयौं देव पूजन परभाउ ।।
तजि विमान तिहिआसन कियों । फूल लैन राखस समदियौं ।। ६ ।।
तिहि चलत खिन लगी नहि बार । आन करे फूलन अंब्रार ।।
पुनि लाग्यौं सिव पूजा करन । न्हाइ वस्त्र पहिरे आभरन ।। ७ ।।
ज्यों जल लहर पहूँचे आइ । सबै फूल लै गई बहाइ ।।
धूप दीप नैवद सब हरे । टरी समाधि नयन ऊघरे ।। ८ ।।
माथे ऊपर चढ़िगो नीर । कछु अचरज कछु कौप्यो वीर ।।
आयसु दै प्रहस्त परठयौं । देखि प्रवाह कहां तैं भयौं ।। ९ ।।
मंत्री को सक ऊपर गयौं । तब आगैं कोलाहल भयौं ।।
जाइ प्रहस्त देखि सो ठांउ । सहस बाहु जहँ पैरैं राउ ।। १० ।।
वहुत नारि ता बेढ़ै पास । मानौ चन्द किरन आकास ।।
सहसभुजा कै रोक्यौ नीर । घरी घरी प्रति छाँड़ै वीर ।। ११ ।।
गाहिरौ नीर जानि मत डरै । धाइ नारि आलिगन करइ ।।
बाँहँ सकोचै चलै प्रवाह । इसौ विनोद करै नरनाह ।। १२ ।।
देखि प्रहस्त गर्व गड़ि गयौ । रावन आँगैं ठाढ़ौ भयौ ।।
बिनवत मामा बारंबार । सांई बड़ा बड़ौ संसार ।। १३ ।।
वा आँगैं तू कछू न आहि । तू जग जित्यौ जिनै नहिं याहि ।।
ज्यों ज्यों सिघनि जनमु न गन्यौ । त्यों त्यों मत्तग यंदनि हन्यौ ।। १४ ।।
तव लंकेसुर चल्यौ कुपाइ । क्रीड़ा थान पहूँच्यौ जाइ ।।
मंत्री आगैं कहत पुकार । सहसबाहु इहि ठाँहर मारि ।। १५ ।।
सहसबाहु कौ मंत्री भनै । राजा तो कहँ तृनवत गनै ।।
अब निज राखस सैन अबूझ । बिनु अवसर जो माँगत जूझ ।। १६ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतनौ सुनि रावन परजरयो । काढ़ि धनुष मंत्री सौं लरचौ ॥
उपज्यौ जूझ भयौ कहराउ । सहस बाहु सुनि धायौ राउ ॥ १७ ॥
दोऊ राजा भिरे अपार । दुहुनि पास दृढ़ गदा हथ्यार ॥
ऊपर पर द्वै घालैं घाइ । काहू काहि न जीतत राइ ॥ १८ ॥
सहस वाहु रावन हिय हयौ । टूटी गदा खंड द्वै कियौ ॥
हियौ न फाटौ ताके घाइ । बह्यौ न जैहै जान्यौ राइ ॥ १९ ॥
मल्लजुद्ध तव भिरचो वहोरि । बाँध्यौ पकरि वीस भुज मोरि ॥
जै जै कार सबद उच्चरै । जनु बहुरौ बलि बामन छरै ॥ २० ॥
सैनि भागि राखस की गई । कुसुम वृष्टि राजा सिर भई ॥
रावन बंदि राखियौ गेह । रिषि पुलस्ति बुधि उपजी एह ॥ २१ ॥
धनि धनि धनि तू धनि वलबंड । धनुवतु धनु तेरे भुजदंड ॥
धनि व्रत बीज पिता धति माइ । तेरौ पौरुष कह्यौ म जाइ ॥ २२ ॥
इहि विधि रिषि पुलस्ति थुति करी । राजा लाज वहुत मन धरी ॥
पाँलागे वरु बिनवत सेव । मो कहँ आयसु दीजे देव ॥ २३ ॥
जिहि सुर असुर सकहिँ नहिँ जीति । तैं जु सिखायौ चलुन अ नीति ॥
वहुत धर्म जस ह्वै है तोहिँ । पूत भीख दै राजा मोहिँ ॥ २४ ॥
सुनि परनाम कियौ नरनाथ । रावन सौंप्वौं रिषि के हाथ ॥
वस्त्र तार कुंडल शृंगार । कहौ मंत्र आसन बैठार ॥ २५ ॥
पुहुमी राउ न पूजतु तोहिँ । तेरे जूझ भयौ खुस मोहिँ ॥
अवहिँ देव वाचा प्रतिपाल । मानस वपुरा मानत हाल ॥ २६ ॥
मीच जरा नित व्यापै रोग । क्रोध मोह अरु व्यापै सोग ॥
तिनकौ कहा करै संताप । जस थोरौ गरुऔ अति पाप ॥ २७ ॥
जाकौ ता समान भरियाउ । मेरे कहैं जीत जमराउ ॥
करहु केलि अस होइ विवाहु । ए समान कीजे नरनाह ॥ २८ ॥
रावन सुनत बात मन धरी । गो रथ मोड़ि जहाँ जमपुरी ॥
नारद जाइ ताहि सुधि कही । ताकी सैन साज कै रही ॥ २९ ॥
वे रावष वे जमन अनीत । ऊपर पर ते भिरत बहूत ॥
राषस तनौ देखि भरियाउ । तब अति कोप करयौ जमराउ ॥ ३० ॥
रथ चढ़ि काल दंड कर लयौ । अंतरिक्ष ह्वै ब्रह्मा गयौ ॥
जम आयुध यह झूठौ होइ । तेरे मारत मरत न सोइ ॥ ३१ ॥
मैं वाकौं वर दियौ अमीच । तो सुर असुर होइ नहिँ मीच ॥
अब तुम विनय करौ कर जोर । ज्यों रावन घर जाइ बहोरि ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मा वचन कह्यो समुझाइ। नमस्कार करियौ जमराइ ॥
जै जै सबद तवहि ऊचरचौ। जमहि जीति रावन घर फिरचौ ॥ ३३ ॥
जमपुर जीत ढीठ अति भयौ। भोगावती वरुन पहँ गयौ ॥
तिन जूझत दिन गए बहुत। भागे तवहि वरुन के पूत ॥ ३४ ॥
रावन वरुत पुरी लूटियौ। आँगैं बहुरि उभारौ कियौ ॥
जीते नाग लोक अति घनै। मंदिर बड़ बलिराजा तनै ॥ ३५ ॥
वामन तहाँ रहै प्रतिहार। लएँ कंध मूसल हथियार ॥
काल समान नयन साँउरौ। छोटौ मनुस देह चाकरौ ॥ ३६ ॥
हँसि दसकंधर बूझत ताहि। यह मंदिर कहि काकौ आहि ॥
वेगि आउ ता पुरुषहिँ बूझ। मो समान सकि है सो जूझ ॥ ३७ ॥
वामन वचन मयारू भनै। आजु अतिथि मेरैं पाहुनै ॥
वात पराई जानतु कोइ। करौ भगति जो मो पहँ होइ ॥ ३८ ॥
इतनौ सुनत कोप मन भयौ। रथ तैं उतरि भीतरौ गयौ ॥ ३९ ॥
सिंघनाद कोप्यौ बल राउ। इक सोवन सो मंदिर पाउ ॥
दिन कर मनौ जहाँ जशु घनौ। चौथौ राउ तेज तिहि घनौ ॥ ४० ॥
साहस करि सनमुख गो ढीठ। विहँसौ बलि जब रावन दीठ ॥
सो आवत पकरौ करि मोर। बालक ज्यों बैठारौ छोर ॥ ४१ ॥
छूटौ नहीं बहुत बल कियौ। तब बलि ताहि वात बूझियौ ॥
को तू कत आयौ पाताल। दुष्ट कर्म तैं कीन्हैं बाल ॥ ४२ ॥
जो तू कहइ तु भाजत मर्म। सांचौ बोल पुरुष यह धर्म ॥
गयौ गर्व दसकंधर तनौ। सच व्यौहार कहौ आपुनौ ॥ ४३ ॥
सुनत बात दुख उपज्यौ मौहिँ। हौं आयौ मुकुताउन तोहि ॥
यहर बचत सुनि हँसियौ राइ। नाहिँन वत्स तिहारौ ठाँउ ॥ ४४ ॥
वह सु पुरुष मो राखहि वार। सोबंधन मुकुतावन हार ॥
संख चक्र गद सारँग पानि। वह नारान वहै हरिजान ॥ ४५ ॥
वह वामन प्रभु तारन तरन। वह नौ खंड सिरज संघरन ॥
ए ही तीनि लोक बस किए। वे ही पुरुष बाँधि मो लिए ॥ ४६ ॥
दैयत कुल कीनौ संघार। वह सु पुरुष राखत मो द्वार ॥
सुनि रावनहि अचंभौ भयौ। नाइ सीस सो बाहिर गयौ ॥ ४७ ॥
वहुरौ पुरुष न देख्यौ जाइ। सीस धुनहि रोवहि पछिताइ ॥
मन धरि संक सु रावन गयो। ता खिन चन्द्रलोक मन दियौ ॥ ४८ ॥
दिन दस चलि ता नियरैं गए। चन्द्र सीत तब रावन हुए ॥
सब सेना ता बंधी ससी। राखस हियैं भीत अति बसी ॥ ४९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रावन सहँ बिनवत कर जोर। जान मरन चलिए घर मोरि ॥
सुनत बात रावन रिस भरो। भयो अकेलौ रथ परिहरौ ॥ ५० ॥
इंद्र समान जासु भरियाउ। अब भैंटौं मैं ता रनराउ ॥
दुहू राइ तब करिवत लियौ। दुहूं विदेव बान कर ठयौ ॥ ५१ ॥
दोऊ वीर बढ़े अहंकार। ता खिन ब्रह्मा पाई सार ॥
हा हा कार करत अकुलान। तू मत पुत्र होइ अपमान ॥ ५२ ॥
जिते जच्छ किन्नर सुरराइ। सोम न तो पहुँ जीत्यौ जाइ ॥
रावन सरिस कह्यो ब्रह्मा न। बरजि रहायौ दीनी आन ॥ ५३ ॥
दोऊ राइ मित्तत्तन भयो। सोम लिवाइ रावनहिँ गयो ॥
आयुध गहिन सकत सर संध। सीत तेज रावन गयो बंध ॥ ५४ ॥
साहस देखे भयौ भय मोहिं। जो बहुरौ वर दै हौं तोहिं ॥
नमस्कार तव रावन कियौ। ब्रह्मा तोहिँ सीतवर दियौ ॥ ५५ ॥
विधि सौं मंत्र निसाचर लियौ। तव अजीत दसकंधर कियौ ॥
जो कन्या सुर मुनि गंधर्व। ते रावन हरि लीनी सर्व ॥ ५६ ॥
चौदह सहस विमान चढ़ाइ। लंकहिँ लै आयौ वह राइ ॥
पुनि रावन पहूँचौ तिहि थ्थान। जिहि ठाँ पुत्र अग्यँ के वान ॥ ५७ ॥
देखत मेघनाद गहगह्यौ। द्वै कर जोरि पिता पहँ कह्यौ ॥
देखहु सांई जग्यँ सिरान। कुंड माहिँ निकस्यौ रथवान ॥ ५८ ॥
कवच धनुष पाशै तूनीर। जग्यँ सिरानौ हरष्यौ वीर ॥
सुनत बात रिस भई अपार। बैरी जोग कियौ अपकार ॥ ५९ ॥
जिनहिँ समर महँ चाहत जिन्यौ। ते तू पूजत रावन भन्यौ ॥
दोई एक साथ मिलि भए। पुनि सुअवास राइ के गए ॥ ६० ॥
दोऊ बंधु बुलिय हंकार। जे आनी ते दिखाइँ नार ॥
रोवति सुदरिँ करहिँ कलाप। तब रावन पहँ कहौ सराप ॥ ६१ ॥
तू पर तिय ल्यायौ गहि धार। तेरौ मरन होइ पर नार ॥
सुनत सराप विमीषन डरचौ। राजा कछु न वचन ऊचरचौ ॥ ६२ ॥
दोऊ वीर रहे पचिहार। देव सत्य करि तजि पर नारि ॥
तेरी बहिन सगी मोसेर। वीर महोदधि तनो पितेर ॥ ६३ ॥
कुंभ कहत मधु दैयत हरी। मधुपुर नाम नगर वह वरी ॥
कुंभकरन बिनवत सुनि राइ। अकरम करत सिद्धि सब जाइ ॥ ६४ ॥
ज्यों तू ए ल्यायौ पर धनी। त्यों लै गयौ बहिन तुवतनी ॥
सुनि यह बात रथहिँ आरुह्यौ। कुंभकरन कहँ आथसु कह्यौ ॥ ६५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेघनाद लीन्हौं समुहाइ। नगर विभीषन राख्यौ राइ ॥
दल दस साजि छोहिनो लियौ। देखि पुरान विष्नु भाखियौ ॥ ६६ ॥
मेघनाद चलियौ अगवान। तब हय गय रथ जुरे प्रधान ॥
चलियौ कुंभकरन दल माँहँ। सारनि सुक्र चले दुहु बाँहँ ॥ ६७ ॥
पूंछि पयानौ राजा करै। पयदल चलत धरति खरहरै ॥
उड़ी खेह छायौ संसार। रवि लोप्यौ भयौ धुंधूकार ॥ ६८ ॥
मधुवन जाइ पहूँच्यौ राउ। कुंभनि सीसु सुन्यौ कहराउ ॥
सोवत मधु न जनाई सार। आपुन गयरै गुफा के वार ॥ ६९ ॥
तेरे कारन गवन न कहै। कै हौ कै मधु पुंहुंमी रहै ॥
कुंभा नरक जोरि कर कहै। रावन रूठौ को रन सहै ॥ ७० ॥
मामा करि मधुपुरि हथियार। मन महँ रावन कियौ विचार ॥
जो मन भावै मधु भरतार। ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ॥ ७१ ॥
जो अवआइ चलन अनुसरै। तो वा सरिस जूझ को करै ॥
कह्यौ वचन दसकंधर राइ। तू मधु दैयत लेहि जगाइ ॥ ७२ ॥
वहिनि वचन मैं दीन्हौ तोहि। परिहरि जूझ मिलै जो मोहि ॥
नारि गुफा महँगई वहोरि। नाह जगावति अँगुठा मोरि ॥ ७३ ॥
जवहि सुन्यो रावन कौ नाम। सामुहिँ चल्यौ करन संग्राम ॥
सुंदरि दौरि गहे हता पाइ। अपनौ मरन न कीजे राइ ॥ ७४ ॥
होइ प्रीत रावन सहँ धनी। करहि राज इच्छा आपनी ॥
सो समुझ्यो सुनि सुंदरि बात। लंकापति सों जोरे हाथ ॥ ७५ ॥
देखि खिनकु रावन रिस ठई। वहुत प्रीति तब मधु सहँभई ॥
एक रैन बिरम्यौता पास। पुनि रावन चलिगो कैलास ॥ ७६ ॥
संध्या एक मुहूरत गयौ। रयनि उदय ससधर कौ भयौ ॥
गुपत भेष रंभा नीसरी। जाइ डीठि रावन की परी ॥ ७७ ॥
काम बान वेध्यौ उर माँहँ। धाइ गही रंभा की बाँहँ ॥
रंभा कही पुरानी बात। तुम गुरु ससुर हमारे तात ॥ ७८ ॥
छुवत पाप सुनि रावन जाहि। कैसें संग करहु तुम ताहि ॥
कैसौ नातौ रावन कहै। को इहि देस हमारौ रहै ॥ ७९ ॥
अरु तापहँ आभरण अनूप। मैंने कोइ देखी इति रूप ॥
तब रंभा बोली सतिभाउ। अलका पुरी जच्छकौ राउ ॥ ८० ॥
भानुकुमार नाम तिहि तनौ। तिनसों मोहिँ सनेह ति घनौ ॥
जाति अछरा रंभा नाउँ। अलकापुरी कुँवर पहँ जाउँ ॥ ८१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भई वार वोलो अकुलान। होति वार मुहिं दीजहु जान ॥
रावन सुनी न बात सुहाइ। बलके रमो दई मुकुराइ ॥ ८२ ॥
छूटे केस विलख मुख भई। रंभा भानु कुँवर पहँ गई ॥
देखी नारि खरो भय भरो। छूटे केस फटी कंचुरी ॥ ८३ ॥
मिटे तिलक उर टूटौ हार। भो अचिरज बूझै व्यवहार ॥
रंभा तासु कहै सति भाउ। दस कंधर लंका कौ राउ ॥ ८४ ॥
आवत वीच सकति गहलई। काम अंध पापी भोगई ॥
सुनत कुँवर तव उपज्यौ दाप। लंकेसुर कहँ कह्यो सराप ॥ ८५ ॥
बल कै रमी पराई नारि। तिय लगि मीच होइ विभिचारि ॥
जो पर सुंदरि रमै अकाम। सिर दस खंड होइ गौ ताम ॥ ८६ ॥
ब्रह्मवचन क्यों भूठे परैं। बिन खूटे रावन तब मरैं ॥
इतने वचन कुवेर सुत भनै। सुख भौ इंद्र दुंदुभी हनै ॥ ८७ ॥
तव जय जय भाषा उच्चरी। कुसुम वृष्टि रंभासिर परी ॥
बूझत रावन मन अकुलान। वाज्यौ कहा अकास निसान ॥ ८८ ॥
जै जैकार कौन कहँ भयौ। रावन मंत्री बूझन लग्यौ ॥
नलकूबर मन उपज्यौ दाप। राजा तुम कौ कह्यौ सराप ॥ ८९ ॥
बल कै रमै पराई नारि। सिर दस खंड होइ इसिवार ॥
सुनि सराप रावन मन डरै। वहुरि पराई नारि न हरै ॥ ९० ॥
चिंता करत बहुत पछिताइ। इंद्र लोक तव पहुँव्यौ जाइ ॥
निसुनौ रावन तनौ पचान। सुरपति भुवन सकल अकुलान ॥ ९१ ॥
नारायन के लागे पाँउ। राखस जीतुहु करहु पसाउ ॥
इंद्र सरिस हरि बिनती करै। अब रावन मौ पास न मरे ॥ ९२ ॥
इहि ब्रह्मा वर दियौ अमीच। दैयत देव हाथ नहिँ मीच ॥
रावन अरु रावन के पूत। अजहू करि हैं कर्म बहूत ॥ ९३ ॥
डरपैं तुमहि न छाँड़हि एहु। सनमुख जाइ जूझ तुम होहु ॥
इतनौ सुनत इंद्र हँसि गयौ। बहुत जूझ रावन सुर भयो ॥ ९४ ॥
और निसाचर अरुसुर बरी। चौदह भुवन भई खरभरी ॥
एक घरी कोपंतर भयौ। असिवर थाइ सुमाली हयौ ॥ ९५ ॥
जूझ्यौ पिता कैसकी तनौ। ताकौ दुख रावन भो घनौ ॥
देखत मेघनाथ परजरचौ। कुँवर जयंत सरिस नल लरचौ ॥ ९६ ॥
दोऊ सबल वीर रन बली। अगनित सैन दुहूनि की मली ॥
जान्यौ राखस जित्यौ न जाइ। तब पुलोम लै गयौ भगाइ ॥ ९७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रावन इंद्र जहाँ रन जूझ। अंध्रकार दिसि विदिसि न सूझ ॥
बहूत जूझ कै रावन खस्यौ। देखत मेघनाद परिहँस्यौ ॥ ६८ ॥
रावन वरजि रहायौ ताम। सुरपति सरिस जुरे संग्राम ॥
माया जूझ करहि बहु भाइ। घाइ होइ समुझिए न काइ ॥ ६९ ॥
भागे देव यज्ञ गंधर्व। किन्नर सैन परानौ सर्व ॥
इंद्र न जूझि छाँड़ि मुरि जाइ। मेंघनाथ लइ पाँस रिसाइ ॥ १०० ॥
घाली पाँस इंद्र कहँ डारि। बाँधि लयौ रथ ऊपर घालि ॥
जूझ छाँड़ि सुर गए पराइ। तब वह रावन पहुँचे आइ ॥ १०१ ॥
मेघनाद बिनवै कर जोरि। भागि गए तैंतीसों कोरि ॥
सुरपति बाँधि पाँस मैं लयौ। बहुत काज जस तो कहँ भयौ ॥ १०२ ॥
देख्यौ पुत्र तनौ भरियाउ। रावन बढ़ौ चौगुसौ चाउ ॥
दियौ पसाउ बहुत थुति करी। गए जीति जहँ लंका पुरी ॥ १०३ ॥
सूनौ थान इंद्र कौ दीस। करहिं सँताप कोरि तै तीस ॥
ब्रह्मा पास पुकारे जाइ। क्यों हू सुरपति लेहु छुड़ाह ॥ १०४ ॥
सुरनि सँदेस ब्रह्म तव कियौ। लएँ देव रावन पहँ गयौ ॥
भेटचौ रावन विनती करी। पुत्र पैंज निज मेरी फुरी ॥ १०५ ॥
तेरे कर्म भयो सुख मोहिं। माँगि वत्स सो वरु देउँ तोहि ॥
मेघनाद वर माँग्यों एह। मोहिं देव ध्अमरंतन देहु ॥ १०६ ॥
काहू पास न मारचौ मरउँ। तो पसाउ त्रिभुवन बस करउँ ॥
अजगुत माँग्यौ ब्रह्मा कहै। कौन पुरुष ध्अमरंतन लहै ॥ १०७ ॥
बारं बार कहत समुझाइ। सो वर माँगि जु दीनौ जाइ ॥
कर जोरैं वर मागाहि वीर। अरु दै कवच धनुष रथ तीर ॥ १०८ ॥
अरु मो थ्अंतरींछ गति हौइ। जूझत मोहिं न देखै कोइ ॥
कुंड होंम वर ता कहँ दियौ। इंद्र मिलाइ साथ कै लियौ ॥ १०९ ॥
विलख बदन मन चिंता करइ। बहुत दीठि मन लाजहिँ धरइ ॥
तव ब्रह्मा संबोधै ताहि। रहि सुरपति मन मति पछिताइ ॥ ११० ॥
प्रथम तोहि पातक अति घनौ। अव तिहि फल भुगतहु आपनौ ॥
जव मैं प्रथम सृष्टि है करी। तवहि एक सिरजी सुंदरी ॥ १११ ॥
नाम अहिल्या सब मुनवंत। गौतम रिषि भइ घरनि सुसंत ॥
राति द्यौस तेरे मन रही। तब तू बात न मो सहँ कही ॥ ११२ ॥
नरस सौक जव अंतर भए। तब हीं गौतम रिषि तप गए ॥
गौतम रिषि के गेइ मझारि। देखी तू वह सुंदर नारि ॥ ११३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

असौ कर्म जानि मैं लियौ। गौतम रिषि के क्रोध न भयौ ।।
कन्या बूझि लियौ व्यौहार। तब रिषि कहँ कीनौ जयकार ।। ११४ ।।
तरुनी सुंदर कौन न छरै। धनि धनि तू जैहि चित्त न टरै ।।
व्याह कर्म गति आपुन करी। गौतम कहँ सौंपी सुंदरी ।। ११५ ।।
दृढ़ पति भक्ति देखि व्योहार। तेरे चित्त भयौ अहंकार ।।
गौतम कबहूं तीरथ गयौ। ताके रूप तबहिँ तू भयौ ।। ११६ ।।
रिषिनि रमी भो तो कहँ पाप। जान्यो रिषि तब कह्यौ सराप ।।
इक भग लागि रमी परधनी। तेरे अंग होइँ भगघनी ।। ११७ ।।
ज्यौं तौं तू निंद्यौ सुरनाथ। त्यों तू परिए बैरी हाथ ।।
सुरपति सौं कहियौ ब्रह्मान। अन सो शापबढ़ी परमान ।। ११८ ।।
विस्मौ मति तू चित्त धराहि। अब चलि लोक आपुने जाहि ।।
सामुहिँ इन्द्र अमरपुर गयौ। वलि ब्रह्मा निज थानाहिँ भयौ ।। ११९ ।।
रावन राज करै गढ़ लंक। दैयत देवन की नहिँ संक ।। १२० ।।

।। इति श्री रामायने उत्तरकांडे इन्द्र हत्या अहिल्या उत्पत्ति वर्णनो नाम सर्गः ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

बहुत द्यौस ति हि कीन्हौं राज। रावन चल्यौ सैन करि साज॥
पच्छिम सागर पहूँच्यौ जाइ। बहुत जिते पच्छिम के राइ॥ १॥
ऊभौ भयौ समुद्र के तीर। पुरिष एक देव्यौ वर वीर॥
ताकौ बरन लाख सर भाइ। कर हथियार न दीसतु काइ॥ २॥
दूजो ताके पुरुष न साथ। ना मर्जाद सारिसौ हाथ॥
हँसि सु पुरुष रावन सों कहै। जूझ साध मो मन में रहै॥ ३॥
पुरऊँ तोहि जूझ की आरि। अब रावन आयुध संभारि॥
ब्रह्मा वर तैं त्रिभुवन जिन्यौ। तैं काहुहिँ तिन सम नहिँ गन्यौ॥ ४॥
तब लंकेसुर उठौ रिसाइ। काढि खड़ग तापहँ गो धाइ॥
माथैं दीन्हौं बाँयौं हाथ। गो धरनी परि राखस नाथ॥ ५॥
पूछत रावन धरती परचौ। तबहि घरिक महँ पुनि संभरचौ॥
पुरुष पैठि पातालहिँ गयौ। रावन मंत्री बूझन लयौ॥ ६॥
लंकापति तापहँ सुधि लही। गो पताल रिस जाइन सही॥
तीनि सहस्र कोरि तिहि माहँ। देख्यौ पुरुष लंक के राइ॥ ७॥
लीले, वस्त्र साँवरे रंग। नाचहि तार गीत के संग॥
एकहि रूप सकल इक सार। सबै चर्तुभुज रूप अकार॥ ८॥
देखत देखत आँगैं जाइ। हरष्यौ रावन अंग न माइ॥
सोवत पलिना रतननि जरचो। सोवत दृष्टि पुरुष तब परचौ॥ ९॥
पाँइ पलोटति ताकी धनी। रावन देखि भई सिंघनी॥
हिएँ लोभ सुंदरि कौ कियौ। ताहि गहन सनमुख धाइयौ॥ १०॥
तब तिहि नारि जगायौ कंत। रावन देखि उठौ बिहसंत॥
पाइनि पास आइ लरखरचौ। दृष्टि प्रमान मुरछि धर परचौ॥ ११॥
कहत सु पूरुष उठहि भुवार। तेरी मीच नहीं इहि बार॥
धाता वचन न मेटन जाइ। फिरि घर जाइ लंक के राइ॥ १२॥
रावन उठो चरन कर धरी। तब तिहि पुरुष हि अस्तुति करी॥
गोहंकार अचंभौ भयौ। वहुरि राउ लंका गिरि गयो॥ १३॥
अचिरज कथा सुनत यह राम। रिषि अगस्त हँसि पूछत ताम॥
कौन पुरुष वह रावन दीस। धोखो मोहिँ कहै रिषि ईस॥ १४॥
वहर कपिल जो पहिलैं डीठ। रावन मुरछित धरनि पईठ॥
वे सब पुत्र कपिल रिषि तनै। निरत करत देखे जो घनै॥ १५॥
पलिना सोवत देख्यौ जाइ। सो तू राम औतरचौ आइ॥
वह जो पद सेवति सुंदरी। सो सीता देवी औतरी॥ १६॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तवहि सु राम रिषिहि सों कहै। मेरे हिएँ अचंभौ यहै ॥
रावन मेघनाद मयमंत। इनहूं चाहि बली हनुमंत ॥ १७ ॥
वहुत जूझ मो देखत भयौ। तव मैं ताहि पटंतर दियो ॥
वायु समान वेग गुन ध्याहि। कहि अगस्ति उपमा द्यौं काहि ॥ १८ ॥
इतनी बात राम जब भनी। उतपति जैसी हनुमत तनी ॥
जब यह इंद्र वज्र तनु हयो। जैसे पुनि अमरंतनु भयो ॥ १९ ॥
बूझत राम बहुत सुख कीव। जैसैं भयौ बालि सुग्रीव ॥
कह्यौ रिषीस राज क्यों लह्यौ। चाहत सुन्यौ राम यों कह्यौ ॥ २० ॥
कहत अगस्त मेरु की पीठि। तहाँ ब्रह्म तप करचौ बईठि ॥
नैननि कीचरु डारचौ मली। तहाँ उपजियौ बानर बली ॥ २१ ॥
वीरज नाम पियामह कह्यौ। फिरि फल खाइ तिहीं वन रह्यौ ॥
वहुत काल सुख वीत्यौ ताहि। कबहुंक गयौ और बन माँहि ॥ २२ ॥
तिहि वन रहत पियासौ भयो। चाहत नीर कुंड मह गयौ ॥
पेखि नीर तिहि कुडहिँ पियौ। तब ता मह झाँई देखियौ ॥ २३ ॥
खिन बैठै खिन ऊभौ होइ। त्यों त्यों छाया चालै सोइ ॥
विरजा देखि छाय परिजरचौ। ता कारन पानी मह परचो ॥ २४ ॥
जो देखत तो कछू न आहि। ढूँढ़त फिरत न पीवत ताहि ॥
अति सरूप सुंदर सुठि नार। भींजे सिर मुकराएँ बार ॥ २५ ॥
देखी नारि अकेली एह। सूरज इंद्र तनै नहिँ गेह ॥
भनियों इंद्र सु नहि सुन्दरी। तू मोहिँ भजिहौं सुरपति बरी ॥ २६ ॥
जेठी नारि सकल परिहरौं। तोकों पाट महल तिय करौं ॥
ऊतरु कछू न दीनौ ताम। सविता मधुर बोलियो वाम ॥ २७ ॥
सूंदरि हँसि वरिहै जो छोहिं। छाया परिहरि मानौं तोहि ॥
भो संदेह कियौ सु विचार। सुन्दरि धर्म जु एक भतार ॥ २८ ॥
अब ए कंत दुवौ क्यों बरौं। सांईं पाप कुसल तैं डरौं ॥
समुझाएँ समुझति नहि नारि। व्याप्यो मदन न सकै सम्हारि ॥ २९ ॥
ऊपर तेज दुहूं परिहरचौ। सुफ़ल जानि सुन्दर दृढ़ धरचौ ॥
सुरपति तेज रह्यौ उर माँहिँ। बालि पुत्र उपज्यौ नर नाह ॥ ३० ॥
सूर तेज रह्यो कंठ सजीव। ता महँ तैं उपज्यौ सुग्रीव ॥
दोऊ पुत्र महाबल भए। कवहूं फिर न अहेरैं गए ॥ ३१ ॥
ईसूर तीरथ बैठे जाइ। माता सरि सर न्हाए भाइ ॥
ताखिन पुरुष रूप सो भए। फिर ब्रह्मा के आसन गये ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिन देखत हरष्यौ ब्रह्मान । देवनि कारज भयो परमान ।।
देवदूत सों कह्यो हँकारि । ए किष्किंध पर्बत वैठारि ।। ३३ ।।
कपि लँगूर रीछन कौं राउ । इनहि थापि तू मो पहँ आउ ।।
विरजा जनम कह्यो मैं तिसौ । नारद पास सुन्यो सब जिसौ ।। ३४ ।।
कह्यौ चरित्र सब रावन तनौ । त्रिभुवन फिरचौ गर्व गहि मनौ ।।
कबहुँक रावन उत्तर चले । आवत सनमुख नारद मिले ।। ३५ ।।
कर जोरैं रिषि विनवइ राइ । को मो जूझ पुजावइ साँईं ।।
बहुत द्यौस मो जूझत गए । बाँधि राइ त्रिभुवन के लए ।। ३६ ।।
सु मो बताउ निसाचर कहै । जो संग्राम घरी द्वै लहे ।।
धाता सुत सुन मन महँ हँस्यौ । रावन मूढ़ गर्व मन वस्यौ ।। ३७ ।।
जानत नहीं सिष्टि ब्यौहार । यह है बढ़ा वड़ी संसार ।।
रावन खीर समुद्र मँझारि । सेत दीप प्रगटचौ त्रिपुरारि ।। ३८ ।।
नारद कहै तहाँ जो जाइ । जूझ साध कबहूँ न रहाइ ।।
सुनि लंकेस पयानौ कियौ । ता खिन सेत दीप मन दियो ।। ३९ ।।
कहि नारद प्रथमहिँ मोंहि गयौ । तहाँ बैठि सोचत मन लयौ ।।
मंत्री जोधा बीच रहाई । रावन दीप पहूँच्यौ जाइ ।। ४० ।।
सुंदरी वहुत देखि चौपास । जे उपजीं हरि तनै अवास ।।
वूझति नारि कहचौ सति भाउ । को तुम कत अव धारेउ पाँउ ।। ४१ ।।
कौन देस उपजे किसि बंस । लख विपरीतिहिँ मोंहि प्रसंस ।।
तव रावन बोलौ सति भाइ । हौं उर धरयौ केकसी माइ ।। ४२ ।।
पिता विश्रवा गृह गढ़ लंक । त्रिभुवन जित्यौ न मानहुँ संक ।।
चाहत फिरचौ सकल संसार । कोऊ कहूँ न लह्यौ जुझार ।। ४३ ।।
बाँधी मृत्यु करी बस काल । जीत्यौ इंद्र वरुण जम साल ।।
इतनौ सुनत तियन रिस भई । हँसि कै एक सामुहीं गई ।। ४४ ।।
गहि गवनी ल्याई तव जाइ । गहि दूजी गहि लारचौं आइ ।।
छीर समुद्र माहिँ सौइ परचौ । चेति मुहूरति पुनि उलछरयौ ।। ४५ ।।
रावन राइ गर्व गड़ि गयौ । वस्त्र निचौवत ठाढ़ौ भयौं ।।
ऊभौ ह्वै जोवै चहुँ पास । मन मन सोचत लेत उसास ।। ४६ ।।
तीनि भुवन मैं फिरचौ पचारि । देखी सुनी न ऐसीं नारि ।।
बहुरौ जैवै कौ मन कियौ । सनत्कुमार आँगैं भेंरिटयौ ।। ४७ ।।
वूझै रावन लाग्यौ पाँइ । मो सन कहौ कवन तुम साँइ ।।
तब तिहि तुरुष कहयौं ब्यौहार । पिता ब्रह्म हौं सनतकुमार ।। ४८ ।।

साँचौ कहौ आपुनौ नाम। आदि पुरुष नित सेवत धाम ॥
वहुरौ बिनवत लंका राइ। आदि पुरुष मौहू दिखराइ ॥ ४९ ॥
कहाँ रहै कैसौ आकार। जानतु कैसौ सिरजनहार ॥
सुनि रावन जुग व्यापी सोइ। अब इत काल न दरसन होइ ॥ ५० ॥
त्रेता आउ आगरैं बीस। बीतहिं तू देखहिं जगदीस ॥
वह तो कहँ अवतरि है काल। तू द्वापर ह्वै है सिसुपाल ॥ ५१ ॥
तब पुनि तोहि वधैगो सोइ। तीजौ जनम मुकत तू होइ ॥
कछुवै सुख कछवै संताप। दुसह भयौ लंकेसुर दाप ॥ ५२ ॥
हरिनाकुस बध कौ ब्यौहार। निसुन्यौ नारसिंघअवतार ॥
रावन चरित जिसौ मैं भन्यौ। जैसे सकल गुरुन पहँ सुन्यो ॥ ५३ ॥
उत्तरकाँड सुनै धरि भाउ। पावहि गयौ राज सो राउ ॥ ५४ ॥
इतनी कथा अगस्ति मुनि भनी। भो आनंद राम जब सुनी ॥
आसिष दै रिषि पहुँचे थान। यह भुवि भुंजै इंद्र समान ॥ ५५ ॥
जो राजा आए पाहुनै। समदे सकल रतन दैं घनै ॥
एक जनक जोधाजित राउ। ते हठि रहे न देहिँ पसाउ ॥ ५६ ॥
जनकु राव सीता की तात। जोधाजित के कइ लघुभ्रात ॥
वंदर राखस आये जिते। समदे राम रतन दै तिते ॥ ५७ ॥
अंगद हनू जोग आभरन। दैं राघौ स्तुति लागौ करन ॥
अंकमाल कहि रघुपति भन्यौ। तुम प्रसाद रावन रन जिन्यो ॥ ५८ ॥
बार बार यों कहैं हसंत। लै वर माँगि देहु हनुमंत ॥
ज्यों ज्यों ससि सूरज आकास। त्यों संकर बसि है कैलास ॥ ५९ ॥
ज्यों ज्यों कथा राम की चलै। सो पाऊं हनुमत यों कहै ॥
हँसि राघव बौल्यौ परिमान। नाइ सीस तिन कियौ पयान ॥ ६० ॥

॥ इति श्री रामायने उत्तरकांडे बंदरसमदनं नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

सारदूल वंदर मुख घनै । ए सब चले राम गुन सनै ।।
समदे वानर राखस राइ । ते निज घरन पहुँचे जाइ ।। १ ।।
राघौ राज अजुध्या करै । मानौ इंद्र स्वर्ग संचरै ।।
सप्तद्वीप पूजा जैं काजु । मध्यदेस प्रतिपालै राजु ।। २ ।।
संध्याकरि सोवहि सुख सेज । फल तमोर रस सीता तेज ।।
रामहिं राज करत इहि रीति । वहुत दिवस तब भए बितीति ।। ३ ।।
सीता उदर रह्यौ औधानु । अदिति गर्भ ता तनै समान ।।
कवहूँ राम हंसत यों कहौ । माँगि सुनैनि तेहि मन चहौ ।। ४ ।।
मेरी आनि करहि मति लाज । सो मागै जो तेरैं काज ।।
नीचौ सिर करि बोली सियौ । जो महराज मौहिं वर दियौ ।। ५ ।।
गंग तीर बनखंड मँझारि । भेटौ जाइ रिषिन की नारि ।। ६ ।।
राजा कछू न ऊतरु दियौ । भीतर भवन गई वह सिगौ ।।
आयौ वेस भद्र जा नाम । साँची कह यह बूझत राम ।। ७ ।।
सिया मिलाई रावन मारि । राखस कुल घाले संघारि ।।
कइ महाजन मो सहँ कहै । भद्र मोहिं मन धौखौ रहै ।। ८ ।।
कहै वीर जस तेरौ घनौ । एक जौभ कैसैं कहि भनौ ।।
सीता गेह पराएँ रही । एक बात तिन मध्यम कही ।। ९ ।।
इतनौ सुनत राम बिलखान । वरूं गयौ आपुनै मिलान ।।
आयसु कहि लछिमनहिं बुलाइ । सीतहिं आवहु वन पहुँचाइ ।। १० ।।
आयसु मानि कुँअर लछिमना । सिया लिवाइ लई ततछिना ।।
रिषि के आश्रम पहुँच्यो जाइ । नमस्कार कहि कह्यौ सुनाइ ।। ११ ।।
छाँड़ी वन सिय जब बाहुरयो । मूरछि तीन वेर धर परयो ।।
सीता रुदन करति बिलखाइ । कौन पाप मैं कीन्हौं माइ ।। १२ ।।
तिहि ठाँ वालमीकि सुधि लही । मति सिय रोवहि रिषि यह कही ।।
निज आसमँहि गयौ लिवाइ । रोवति सिय राखी समुझाइ ।। १३ ।।
लछिमन जब घर पहुँच्यौ आइ । सुनी राम तब लयौ बुलाइ ।।
तिहि पहँ सुनि सुंदरि की सार । घरी माहिँ मुरछौ दो बार ।। १४ ।।
तब समुझावत लछिमन बीर । सोई पुरुष धरै मन धीर ।।
कर जोरे तब बिनती करै । फिरि महि मोहिं जनम मति करै ।। १५ ।।
जहँ सँजौग तहँ होइ वियोग । तिहि दुख व्याधि होइ मन सोग ।।
जिहि ठाँ लाभ होइ तहँ हानि । मन विस्मय न करहि जो मानि ।। १६ ।।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लछिमन वचन सुनत सुख भयो। राजा अंक माल भरि लयौ॥
जहँ जहँ सोग समुद हौं परचौ। तो पसाउ लछिमन निरधरचौ॥ १७ ॥
रोदन करत चार दिन भए। मंत्री सुनी सभा फिरि गए॥
होत अलोक राइ कौ घनौ। जो न धर्म पालतु आपुनौ॥ १८ ॥
प्रथम भए राजा नृग राउ। अहि निसि ताहि धर्म पर भाउ॥
विप्रन भक्ति करत नित ऐसी। वेद पुरान सुमृति महँ जैसी॥ १९ ॥
कबहू ताकौ जग्य सिरान। कोटि गाय दीन्हीं तिहि दान॥
भूलि एक बाँभन की गाइ। मिली राइ के वागर आइ॥ २० ॥
जा कहँ दीनी सो लै गयौ। सुनी गुसाईं गोहिन भयौ॥
देखि गाइ तिहि विप्र बुलाइ। ता सँग दौरि लगी वह गाइ॥ २१ ॥
मैरी मेरी दोऊ करहिं। सूधी गाइ गरौ गहि रहहिं॥
ऊपर पर बढ़ दोउ द्विज अधिकार। लरत गए राजा के द्वार॥ २२ ॥
दस दिन बीतैं पकरी गाइ। तौ लौं सुधि नहिं पाई राइ॥
अैसौ मतौ पाँच मिलि पुरचौ। छाँड़ि गाय सो द्विज घर मुरचौ॥ २३ ॥
विप्र रिसानौ देख्यौ लोग। कही सराप राइ नृग जोग॥
बरस सहस दस रहौ अदीठ। रहौ क्रिकिट ह्वै कूप बईठ॥ २४ ॥
दै सराप सो गयो रिसाइ। तब भीतर राजा सुधि पाइ॥
दौरि राइ वह बाँभन गह्यौ। बिनती करहि चरन गहि रह्यौ॥ २५ ॥
हौं न तिहारी जानी सार। रहे बहुत दिन सिंह दुवार॥
अब तुम हिएँ बिचारौ साँइ। यह अपराध हमारौ काँइ॥ २६ ॥
भोरैं लई तुम्हारी गाइ। मो कहँ मोच्छ कहौं समुझाइ॥
अनया पासु न बाहुरि लैहुँ। औरै लेउ सहस द्वै देहुँ॥ २७ ॥
इतनौ सुनत भयो संतोष। कह्यो राइ पावहि तब मोष॥
नारायण सों दरसन होइ। तबहि रूप परिहरि नर होइ॥ २८ ॥
सुनत राइ कछुवै सुख भयौ। बाँभन थान आपुनै गयौ॥
लछिमन सरिस राम सों कह्यौ। राजा होइ मन विकल न लह्यौ॥ २९ ॥

॥ इति श्री रामायने उत्तरकांडे राजा नृग आख्यानो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

वहुरौ लखन राम पहँ सुनी । उत्पात्ति जस अगस्ति रिषि तनी ।।
अरु तिहि सुनी क्रोध की ख्याति । पुत्र सरापौ राइ जजाति ।। १ ।।
कहै राम जौ चित्त न करै । पुहुमि अलोक नर्क अनुसरै ।।
परजा-पुत्र हिएँ दै भाउ । करौ सु लछिमन उत्तम भाउ ।। २ ।।
इतनौ कहत भयौ परभात । छत्र तन्यों सिर वैठ्यौ तात ।।
लछमन कुँवर भयौ प्रतिहार । ऊभौ राखैं सिंघ दुवार ।। ३ ।।
कछूजु बिनवत आवै कोइ । कहै राम जनि बरजौ सोइ ।।
वेग ताहि मो पहँ लै आउ । माता पिता लोक कौ भाउ ।। ४ ।।
लछिमन कही राज तुम तनै । परजा सुखी गेह आपुनै ।।
मीच अकाल न व्यापै सोग । चोरि चंडाली करइ न लोग ।। ५ ।।
कोऊ करै न पर की आस । को विनवन आवैं तुम पास ।।
घर घरै नगर जगाँ उत्साह । यह चिंता परिहर नरनाह ।। ६ ।।
सुनि कै राम घरी द्वै रहे । बहुरि बचन लछिमन सों कहे ।।
वाँधव जाइ करौ तुम सार । मत कोउ होइ पुकारू वार ।। ७ ।।
यहै वात लछिमन सुन गयौ । सिंघ दुवारैं डाढ़ौ भयौ ।।
❖ ❖ ❖ ।। ८ ।।
तहं इक ऊभौ देख्यौ स्वान । बोलै भाषा पुरुष समान ।।
लछिमन कुँवर सो बूझन लयौ । वह न कहै कोपंतर भयौ ।। ९ ।।
जो राजा पहुमी कौ धनी । तासौं वात कहौं आपुनी ।।
इतनी सुनि तिहि आयसु लह्यौ । स्वान लिवाइ राम पहँ गयौ ।। १० ।।
मधुरी बानी बूझै राइ । कहितू कवन काज का आइ ।।
तब सो स्वान सीस महि धरचौ । राघव तनी बहुत थुति करचौ ।। ११ ।।
धनि दसरथ कौंसिल्या माइ । धनि ते लोग जे परसे पाँइ ।।
तुम रावन वधि जग जस लियौ । बंदि-मोक्ष देवन कौं दियौ ।। १२ ।।
राम-चरन की लागी खेह । मुकुति अहिल्या गई सदेह ।।
आहिअनीत चलै जौ कोइ । पाप विभागी सो नर होइ ।। १३ ।।
हीन दीन की करं न सार । धरती फाटै ताके भार ।।
जती एक निवसै इहि गाँउं । देव सरबसिद्धारथ नाउँ ।। १४ ।।
औगिन कियौ न लागी खोर । हौं सोवत मारौ सिर जोर ।।
सुनतहि राम दूत पठवायौ । ताहि लिवाइ सभामहँ लायौ ।। १५ ।।
बूझै राघव कहि सति भाउ । काहे कारन घालौ घाउ ।।
कह्यौ जती मो लागी भूख । दुपहर माँगन निकरौ भीख ।। १६ ।।

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह नरि पारे देइ न जान। तब मैं मारचौ पाँइ पिरान ॥
यह साँकरैं सकौ नहिँ भाग। सवल दंड गो सिर महँ लाग ॥ १७ ॥
अबहि मोहिं निदैं सब कोई। या कहँ दंड़ वूझिए सोइ ॥
रिषि वसिष्ठहीं बूझैं राइ। जिहि भागैं मेरौ संदेह ॥ १८ ॥
कहै वसिष्ठ सुनौ रघुराइ। विप्र अदंडच दंड नहिँ जाइ ॥
अब निज हरत परत तो रहै। सोई करौ जु सुनहा कहै ॥ १९ ॥
सुनतै राम वचन यौं कह्यौ। बहुर स्वान है बूझन लयौ ॥
तेरौ वचनं न मेटै कोइ। कहि कुदंड जिहि पाप न होइ ॥ २० ॥
सुनहा हँसि कैं कहि ता दंड। कालिजर मठ कीजे गंड ॥
पूजा होइ निर्मलहिँ खाइ। इहि विधि तुम्हैं धर्म रघुराइ ॥ २१ ॥
सुनहा वचन सुनै रघुराइ। समदौ ता छिन हस्ति चढ़ाइ ॥
दोनै कुंजर कापर घनै। पहुंचो मठ कालिंजर तनै ॥ २२ ॥
उपरा उपर हँसै सब कोइ। कहाँ दंड दिय ब्राह्मन तोइ ॥
हस्ति चढ़ायौ बूझौ राउ। कहो महाजन कीन्हौ भाउ ॥ २३ ॥
डरपे सामु कहै मनुहार। तुम यह बात न सकौ विचार ॥
तबै स्वान कहँ आयसु दियौ। हमसौं कहि क्यों महपति कियौ ॥ २४ ॥
पहिले जन्म स्वान यों कहौ। हौं मठ देव गंड ह्वै रहौ ॥
रहै सुमारग दै बहु दान। तऊ आइ औतरचो सुवान ॥ २५ ॥
यह पापी क्रोधी अपकार। याकी गति को जाननहार ॥
बहुत जोरि अवतरु दुख सहै। कोटि वर्ष यह स्वर्ग न लहै ॥ २६ ॥
बाँभन गऊ देव अधिकार। दीजे राम जाहि आभार ॥
जो कछु द्रव्य तहाँ कौ गहै। कुटुम समेत नरक सो परै ॥ २७ ॥
इतनौ वचन स्वान जब कह्यौ। सबै लोग विस्मय कर रह्यौ ॥
राम प्रसाद सुगति तिहि लही। कथा विचारि विष्नु कवि कही ॥ २८ ॥
बोतीं घरी और दो चार। ब्राह्मन आए सभा मँझार ॥
राजा नमस्कार उठि कियौ। हँसि विप्रन तब आयसु दियौ ॥ २९ ॥
बूझै राम मयाकर बात। मधुपुर नगर तनी कुसरात ॥
सब ब्राह्मन आए किहि काज। दुखी न आहि हमारे राज ॥ ३० ॥
बोले ब्राह्मन सुनौ जु राम। तुम रावन मारौ संग्राम ॥
त्रिभुवन लोक निकंटक भए। बंदि छुड़ाइ देव जस लए ॥ ३१ ॥
जिते असुर तुम भुज बल बहे। ते हम पास न जाहीं कहे ॥
बहुम भाँति थुति लागे करन। हमहिँ राख रघुनंदन सरन ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा कहै तुम्हैं भय काँहि । बसौ मधुपुरी उत्तम ठाँहि ॥
राजा होइ न चिंता करैं । सो निज नरक कुंड अनुसरैं ॥ ३३ ॥
कुँभीनासि जननि गजु जाम । दैयत बल न अंत भरि बाम ॥
आहि भनैज जु रावन तनौ । बल आहार बहुत वा घनौ ॥ ३४ ॥
लाख महिस मृग कोटिक खाइ । सौ मानस सौ मारै गाइ ॥
ईसुर पास त्रिसूल वर लियौ । सो कर गहै न संकै हियौ ॥ ३५ ॥
सुनत राम कोपंतर भयौ । कुँअर बुलाइ शत्रुघन लयौ ॥
देवदत्त सर दीनौ हाथ । बहुत सैन दीन्हीं ता साथ ॥ ३६ ॥
चार सहस रथ मैगलजुरी । रथ सजि चले सहस दो गुरी ॥
पैंदल लाख द्रव्य बहु भार । लोपी दस दिसि उड़हीं छार ॥ ३७ ॥
वाल्मीकि के आश्रम गए । तवही लौकुस सीतहिँ भए ॥
सुनौ सत्रुघन तनौ पयान । गंग जमुन विच देस अकुलान ॥ ३८ ॥
वाल्मीकि बहुरे पहुँचाइ । मधुवन कुँवर पहूँच्यौ जाइ ॥
नगरी काहू सुधिन लही । वन पैसार सैंन सब रही ॥ ३९ ॥
सैन जु तंबू वीच राखियौ । धनुष चढ़ाइ ब्रह्म सर लियौ ॥
ऊभौ भयौ गुफा के द्वार । तब लवणासुर पाई सार ॥ ४० ॥
बन में लैन महिष मृग गयौ । बहुरि जु आवत असगुन भयौ ॥
आवत दीठि सत्रुहन परचौ । बोलौ असुर कोप परजरचौ ॥ ४१ ॥
अरे शत्रुघन मूढ़ गमार । तू न हमारी जानहि सार ॥
मायावी अरु रासा दासु । मैं रनभूमि लिवाई लासु ॥ ४२ ॥
कहै सत्रुघन जब तैं हयौ । तबहि हमारौ जनमु न भयौ ॥
अब हौं तेरौ हरौं पिरान । स्वर्ग पताल न पावहि जान ॥ ४३ ॥
कोप्यौं असुर करै गलदार । गरजौ कुँवर गुफा के द्वार ॥
दूहू वीर सर बरसैं तिसे । पावस काल मेघ घन जिसे ॥ ४४ ॥
लवनासुर किय अंतर्जूंभ । घरी चार दिसि विदिस न सूझ ॥
जानौ असुर वहुत बल करै । ब्रह्म वान कुँवर गुनधरैं ॥ ४५ ॥
तानौ कान प्रमान कुमार । छोड़त ताहि भई ना वार ॥
बीच जात सो सक न निवार । वध्यौ असुर सिर टोरचौ मारि ॥ ४६ ॥
ता छिन कुँवर नगर महँ गयौं । निमसौ लोग निकंटक भयौ ॥
नगरी बारह वर्ष दृढ़ाइ । राम पास पुनि पहुँच्यौ जाइ ॥ ४७ ॥
दिन दस बीस रह्यौ तिहठांइ । पुनि वाहर समदौ रघुराइ ॥
करि अभिषेक छत्र सिर दयौ । मधुवन केरौ अधिपति कियौ ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

× × × ×

× × × ×

राघौ करै निकंटक राज । नव निधि दल चतुरंग जु साज ।।
आँगें बंधु भरत लछमना । सेवहि राम बली ता घना ।। ४६ ।।
नित नित सभा वईठै राउ । छह दरसन कह करै पसाउ ।।
लोग सुखी दीसै धन धान । करै राज सो इंद्र समान ।। ५० ।।

।। इति श्री रामायने उत्तरकांडे लवनासुरवधो नाम सत्रुघन विजय नाम सर्गः ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कबहूं राजसभा जु बईठ। आँगैं ऊभौ वामन दीठ॥
मृतक पुत्र लिए अंकवार। सभा माँझ तिहि दीनौं डार॥ १॥
रामतनी निर्भासा करै। धिक तू राज जु बालक मरै॥
धिक बांधव धिक गुरु परधान। धिक् ये लोग परीजन आन॥ २॥
राज तुम्हारे बालक मरे। तो सौ राउ कहा जी करै॥
राजा वचन सुनै जब एह। कछु हाँसी कछु भौ संदेह॥ ३॥
बाँभन सरिस न ऊतरु कहै। घरियक राम मौन हो रहै॥
जब जान्यौ अब बोलैं रह्यौ। नारद वचन सभा महँ कह्यौ॥ ४॥
तुम सौं विप्र पुकारै येहु। तिहि कछु काहे न ऊतरु देहु॥
दोउ कर जोर राम यों कहै। सोई कोऊ मरम न लहै॥ ५॥
यह मेरे मन धोखौ भयौ। कारन कहा जु बालक मुयौ॥
नारद कहै पाप ब्योपरै। कोऊ नीच कठिन तप करै॥ ६॥
अैसौ दूजौ कारन नाइँ। बालक मुयौं देव इहि भाइ॥
इतनौ सुनि कोपंतर भयौ। उठौ राम कर धनुहर लयौ॥ ७॥
लये साथ मंत्री परधान। रिषि सब चले आरुहे किंक्यान॥
पुहुप विमान कुबेरजु दियौ। सब वर फिर दक्षिन दिसि गयौ॥ ८॥
जाइ सरोवर ठाढ़ौ भयौ। दस दिसि जोहि अचंभौ भयौ॥
सूद्र एक ता संबुक नाम। देखि राम ता बूझै ताम॥ ९॥
को तू औंधे मुख तप करहि। का मन इच्छा जो तू धर्रहि॥
मैं देखे तीरथ तप थान। यह तप देखौ सुनौ न कान॥ १०॥
संबुक कहै आपुनो भाउ। चाहौं भयौ सुरन कौ राउ॥
अरु मो दूजी इच्छा येह। स्वर्ग जाउँ मैं याही देह॥ ११॥
इतनौ सुनत राम परजरयौ। काटौ सीस टूटि धर परयौ॥
जै जै सबद अकासहिँ भयौ। सूद्र लही गति सुरगहिँ गयौ॥ १२॥
जियौ जु बालन बाँभन तनौ। बोलहिँ लोग राम जस घनौ॥
पर्वत माँझ पयानौ कियौ। गीध उलूक बीच भेंटियो॥ १३॥
दोउन करी राम थुति घनी। पुनि विनवही बात अपनी॥
साँई निर्बल कौ बल राइ। उलुक लियौ मेरौ घर ठाँइ॥ १४॥
इतनौ सुन रथ तैं ऊतरौ। बंठे राम सिँघासन धरौ॥
मंत्री पास बुझाए सोइ। पहिल कहौ जो लागू होइ॥ १५॥
तब वसिष्ठ रिषि बूझौ ताहि। कहि कब तैं घर तेरौ आहि॥
केतिक दिवस बसौ इहिवास। कैसै उँलुक लयौ तो पास॥ १६॥

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बोलौ गीध राम की आन । जब तें धर्रनि सृजी ब्रह्मान ।।
तब तैं यह घर मेरौं आहि । तब की साख बुलाउँ काहि ।। १७ ।।
दूजौ उलुक कहौ सतभाउ । यह घर देव हमारौ ठाँउ ।।
जब हो रिषि जे तरी न भए । तब तें हम जे घर कौं लए ।। १८ ।।
सुनियौ मंत्र विचारौ न्याउ । यह घर सही उलुक कौ ठाँउ ।।
जब की धरती तब को कहै । झूठो गीध ग्रेह क्यों लहै ।। १९ ।।
धरती सिरजैं बहु जुग गये । ता पाछैं तरवर निरमये ।।
जो छाँड़िये तो पाप अकाज । जा कहुँ जुकति दंड दै आज ।। २० ।।
इतनौ सुनत दंड लिय हाथ । भइ-अकास गिरा तब साथ ।।
सम्हरै देव करहि जनि घाउ । पूरब जनम गीध तौ राउ ।। २१ ।।
ब्रह्मदत्त यह पहुमी भयौ । रिषि अपराध ग्रेह लै गयौ ।।
वर्ष सहस दस अधिक पचीस । गौतम घर राखे नर ईस ।। २२ ।।
दिन दिन इच्छा भोजन देइ । आपुन राजा-अंचल लेइ ।।
कबहूँक ऋषि उठायौ ग्रास । अन्न माँहि तै निकसौ मांस ।। २३ ।।
देखत रिषि मन उपजौ दाप । ब्रह्मदत्त कहँ कहौ सराप ।।
पापी पंखि जौनि तू जाहि । काचौ मांस गीध ह्वै खाहि ।। २४ ।।
तब राजा विनयौ कर जोर । साँई मोहिँ न लागै खोर ।।
अब सब काज विनासौ सेव । बहुत दंड मुहिं दीनौ देव ।। २५ ।।
इतनौ सुनि रिषिवाचा करी । तासौं कहौ मया मन धरी ।।
दशरथ घरै राम अवतार । छुवै हाथ छाँड़े संसार ।। २६ ।।
इतनौ कहि तजि गौतम गए । गीध पंख राजा तन भए ।।
सुनि के बात राम सुख भयौ । राजा हाथ छुयौ गत गयौ ।। २७ ।।
बहुरि जाइ चढ़ि चले बिमान । गये अगस्त रिषीस्वर थान ।।
हँसि रिषि राम अंक भरि लयो । आसन अर्घ राम कहँ दयौ ।। २८ ।।
धरी एक रहिं बूझी बात । लछिमन सिया तनी कुशलात ।।
तूठों रिषी देइ आभरन । राघौ विनती लागौ करन ।। २९ ।।
हौं राजा क्यों प्रतिग्रह करौं । ब्रह्मदोष के पातक डरौं ।।
तबहि ऋषिसुर कहै सुभाई । देवतेज लैं उपजौ राइ ।। ३० ।।
परजा पालै हेठ करेइ । छठौं भाग लोगन पर लेइ ।।
इतनौ कहत दिये आभर्न । राम अचंभौ लागे कर्न ।। ३१ ।।
दिव्य रतन ता लागे घनै । कहि रिषि कौन दिसावर तनै ।।
दीप राघु गयौ तपहि बईठ । तहाँ एक मैं अचरज दीठ ।। ३२ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आसन लगतौ सरवर तीर। मनौ परौ अति धूल सरीर ॥
हौं मन सक्यौ न कुछ हू जान। राति कहा तैं डारौ आन ॥ ३३ ॥
काल्हि न मैं दीठों इहि ठाँइ। भूतन प्रेत आई कहु काइ ॥
पहर एक मुहिं सोचत गयौ। सबद अनाअयासहि तब भयौ ॥ ३४ ॥
जो देखों तो चढ़ों विमान। पुरुष एक देवता समान ॥
अरु विहँसैं अपछरा कुमार। अति स्वरूप रंभा उनहारि ॥ ३५ ॥
नाचहिं गावहिं जै जैं करहिं। ढारहिँ चौंर छत्र सिर धरहि ॥
देखत मोहिं सो छायो तहाँ। मानस मुयौ परो है जहाँ ॥ ३६ ॥
उतरो अंतर छोड़ विमान। मांस तासु कौ लाग्यौ खान ॥
खाइ सरोवर पानी पियौ। बहुरि जो मन चलिबे कौ कियौ ॥ ३७ ॥
मैं आगैं हो बूझों जाइ। मो सौं कारन कहि समुझाई ॥
उत्तम पुरुष देव उनहार। अख भखन आयौ संसार ॥ ३८ ॥
मेरे मनहिं भयो संदेह। कहौ गुसाई कारन येह ॥
तबहि पुरुष परगासौ भेउ। रतन नाम भाखौ सी देउ ॥ ३९ ॥
देस विदर्भ तीन खो रहै। लोभ अमारग अंत न धहै ॥
सेवत स्वर ताके दो पूत। राजनीति गुन धर्म संजूत ॥ ४० ॥
आनंद करहिँ निकंटक भोग। घर घर सुखी महाजन लोग ॥
सुरथराउ पहुमी महँ भयौ। हौ तप करन सरोवर गयौं ॥ ४१ ॥
वरस सहस्र तीन अनियार। याही ठौर रहे निरहार ॥
या सरवर ढिग गये परान। सुरग पहुँचौ चढ़चौ विमान ॥ ४२ ॥
तवहि इंद्र आगैं हो लियौ। वहुत मान देवन महँ दियौ ॥
तव मो व्यापन लागी भूख। सब सुर सुखी मोहि अति दुख ॥ ४३ ॥
सबै पीर दुख प्रानी सहैं। क्षुधा न सहत तपोधन कहै ॥
जब मो व्यथा न जाई सही। तब मैं बात ब्रह्म सौं कही ॥ ४४ ॥
माया अपर लगी मो पाँइ। सुर्ग तौं देव भूख दुख काँइ ॥
ब्रह्या कह्यौ छिनकु धारि ध्यान। तैं तप कियौ दयौ नहिँ दान ॥ ४५ ॥
प्रानी अन्न दयैं यों लहै। कर्म आपुनै सुख दुख सहै ॥
मैं विलखौ होइ बूझौ सोइ। कैसी गति क्यों जीवन होइ ॥ ४६ ॥
अब हौं खरो भूख तै डरौं। बलि पशु धेनु जाइ औतरों ॥
कहै ब्रह्म नित सरवर जाहि। वहै शरीर आपुनौ खाहि ॥ ४७ ॥
रिषि अगस्ति कर परसैं तोहि। पावहि मोक्ष सुखी निज हौहिं ॥
मृतक शरीर सदा नितखाहुँ। नित आऊं नित स्वर्गहि जाउं ॥ ४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मो सौं कहौ नाम आपुनौ । तुव दरसन सुख उपज्यौ घनौ ॥
अस बन माँझ रहौ किहि काज । सांची बात कहौ रिषि राज ॥ ४९ ॥
तब मैं नाम आपुनौ कहौ । सुनकर नाम चरन गहिं रह्यो ॥
दए मोहि अपने आभर्न । वहुत भाँति थूति लाग्यौ कार्न ॥ ५० ॥
मैं वाके माथे कर धरचो । गोतम मोक्ष राउ निस्तरचो ॥
ते आभरन रतन बहु जरे । अबहि राम तेरे कर परे ॥ ५१ ॥
सुनत राम थुति लाग्यौ करन । ये निज सुरन तनै आभरन ॥
राम रिषीसुर बूझन लग्यौ । यह बन कोई उदबस भयौ ॥ ५२ ॥
तवहि अगस्त राम सन कहै । इहि बन भरद्वाज रिषि रहै ॥
अरजा नाम तासु की धिया । वन महँ रहै मुनीसुर प्रिया ॥ ५३ ॥
सोइ अकेली गइ वन माँहँ । देखी राइ आम के छांहँ ॥
देखत पापी मोहहि गयो । कहै बात अति आतुर भयौ ॥ ५४ ॥
कौ तू कौन पिता के माई । रानी होइ हमारैं आइ ॥
सुंदरी प्रान दान दे मोहि । ऊपर पाट बधाऊँ तोहि ॥ ५५ ॥
तू जजमान पिता गुरु तोहिँ । पापीं रमन कहत क्यों मोहि ॥
जो जानै तौ विनसै कांज । छिनुक माँझ छँ घालै आज ॥ ५६ ॥
अरु हौं अजगुत कर्मन करौं । वहुत डरात लाज मन धरौं
व्यापौं काम न सकत सम्भार । बलकर मूढ़ रगी वर नार ॥ ५७ ॥
बिलखि होइ कन्या घर गई । देखे चिन्ह रिषी रिस भई ॥
सहौ न जाइ क्रोध संताप । राजा कहँ रिषि कह्यो सराप ॥ ५८ ॥
या पापी के देस मँझार । दिवस सात बरसै तहँ छार ॥
सब कुटुंब साथ कै लयौ । छोड़ रिषीसुर को सक गयौ ॥ ५९ ॥
तिहि ठाँ सकल भए आसार । बरसे पाहन अरु अंगार ॥
जहाँ रिषीसुर आसन ठयौ । जोजन एक तहाँ पर गयौ ॥ ६० ॥
राजा सैन बंधु गिर गये । उदवद देस तवहि तैं भए ॥
राख कुटुंब आपुनौ लगौ । दंडक राज्य नाम इहि भयौ ॥ ६१ ॥
तव अरजाई सरवर रही । कथा अगस्त राम सौं कही ॥

॥ इति श्री रामायने उत्तरकांडे अरजामथन श्रापनो नाम सर्गः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपही

सुनत कहानी दिन आथयौ। तिहि दिन तहाँ बसेरौ लयौ॥
अरु सब सुनी रिषिन की बात। नाय सीस चलियौ सरभात॥ १॥
रिषि वहुरे कोसक पहुँचाइ। राम अजुध्या पहुँचे जाइ॥
बहुत दिवस सुख बीते राइ। दोऊ बंधू लिए बुलाइ॥ २॥
लछिमन भरथहिँ बूझै येहू। जो तुम मेरौ कहौ करेंहु॥
तौ हौं जज्ञ राजसी करौं। काटों सकल पाप निस्तरौं॥ ३॥
भरथ जोरि कर बिनई सेव। जज्ञ राजसू परिहरि देव॥
कियौ गुसाई जज्ञ जिहि राइ। वहुत जूझ उपजौ तिहि ठाँइ॥ ४॥
पहलैं जज्ञ वरुन यह कियो। दैंयत देव जूझ तब भयौ॥
हरिचंद जज्ञ अरंभ्यो जाम। उपज्यो बहुत काल संग्राम॥ ५॥
नौ ग्रह जूझ चंद तहँ ठयो। बहुत दिवस त्रिभुवन खै लयौ॥
जिहि परजा जु दुखारीं होइ। जज्ञ साँई परिहरिए सोइ॥ ६॥
भरथ वचन सुनि हरप्यो राम। दूजौ लछिमन बिनयौ ताम॥
अस्वमेध आरंभौ राउ। बहुत धर्म परजा सौ चाउ॥ ७॥
पहिलै इंद्रहि हत्या भइ। अस्वमेध कीनौ तव गई॥
मेरौ वचन हिए जो धरौ। अस्वमेध तुम राजा करौ॥ ८॥
तवहिँ राम लछिमन सौं कह्यौ। कथा आदि तैं सुन्यो जो चह्यौ॥
काहे की हत्या क्यौं भई। इंद्रहि छोड़ि कहाँ सो गई॥ ९॥
लछिमन कहै व्रतेसुर भयौ। तप करि चाहै त्रिभुवन लयौ॥
डरपे देव देखि भरियाउ। नारायन पहँ सुनौ उपाउ॥ १०॥
इंद्र जोग हरि आयसु दयौ। जौ दैयत छं चाहत लयौ॥
दीह घाइ कर तिहि विस्वास। न्याइ कुन्याइ बिपातहु त्रास॥ ११॥
दो सै जोजन ऊभौ होइ। सौ जोजन चाकरौ सोइ॥
देखत इंद्र न हियैं समाइ। तासौं मिल्यौ प्रीति उपजाइ॥ १२॥
बहुत काल ता सेवत गए। छाँड़ौ बज्र बान उर हए॥
धरती परत जीव उड़ि गयौ। तब सुरपति हत्यारौ भयौ॥ १३॥
सत्यवंत कस्यप को पूत। एक चित्त तप करे बहूत॥
कर विस्वास मित्र कर वह्यौ। तबहि इंद्र पदवी तैं गयौ॥ १४॥
मिलि सब देव एक ठाँ भए। जज्ञ करन सुरपति कौ गए॥
अस्वमेध तब पूरौ कियौ। हत्या जानि वचन माँगियौ॥ १५॥
मो पहँ सुरपति लियौ छुड़ाइ। अब हौं कहाँ बिलबौ जाइ॥
जो तुम मो कहँ ठौर न देहु। होइहि पाप सबन कहँ येहु॥ १६॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डरपे देव दियौ वर ताहि । तू निज चार पुरुष कै जाहि ॥
पानी महँ जो बाहिर फिरै । हरौ रूख लेई धन करै ॥ १७ ॥
रमै जो माथै मैली नारि । अरू जो ब्राह्मन डारै मारि ॥
इन्ह चौ पुरुष न व्यापै जाइ । तब छोड़हि जो गंग नहाइ ॥ १८ ॥
इतनौ कहि देवन पाठई । हत्या तबहि इंद्र की गई ॥
अैसी अस्वमेध परभाउ । लछिमन कहै सुनौ रघुराइ ॥ १९ ॥
इतनी बात सुनी जब राम । हरषौ अंग न माई ताम ॥
मैं हू एक बात है सुनी । पहिलैंई उतरे सुरतनो ॥ २० ॥
बंधौ कहै सुनो तब राम । सुनौ प्रजापति कुंदू नाम ॥
ताकौ पुत्र इंद्र भौ राउ । बहुत करै परजा पर भाउ ॥ २१ ॥
जिसे पुत्र दो जानै लोग । धन विद्रवै दान सुख भौग ॥
एक विसुन पर मध्यम भयौ । सुनहा सरिस अहेरैं गयौ ॥ २२ ॥
कबहूँ फिरत फिरत गो तहाँ । गौर कुंड बनखंड महँ जहाँ ॥
पैसत छितु सरवरहि मँझारि । सबई भए पुरुष तैं नारि ॥ २३ ॥
तव करभार इंद्र पहँ गयौ । बिनती कर इत विलखौ भयौ ॥
कहै देव तौ राखयौं मान । पुरिष न होइ माँगि वर आन ॥ २४ ॥
मासुदिन पुरुष मासुदिन नारि । इति गत वर लै वनहि गँझार ॥
देख सुलच्छन काम सु रह्यौ । वर आपनै बुद्धि लै गयौ ॥ २५ ॥
और अनेक नारि जे भईं । ते सब कन्या पर्वत गईं ॥
मासक माँझ पुरुष जब भयो । बूझै तबहि सैन काँ गयौ ॥ २६ ॥
देख कुबुद्धि सबै उर हयौ । देखि मोहि कटु कूलै गयौ ॥
तू मेरैं आ परी आसर्म । भईं कुबुद्धि पूवं कृत कर्म ॥ २७ ॥
ज्यों ज्यों बीते बारह मास । त्यों त्यों राइ रहहि मो पास ॥
पुनि तो कहँ दैऊं उपदेश । ज्यों छाँड़ै तिवई कौ भेस ॥ २८ ॥
कीयौ बुद्धि राइ कै कह्यौ । वर्ष एक तिहि आसन रहचो ॥
ताके पुत्र पुरूरव भये । सोंपौ आन बुद्धि हँसि लए ॥ २९ ॥
तव रिषि लयऊ बुद्ध हँकार । कही बात आसन बैठारि ॥
याकौ जज्ञ करौ सब कोइ । ज्यों याकौं पुरुषंतन होइ ॥ ३० ॥
तहाँ प्रजापति कुंदू गयौ । पूरौ जग्य राइ कौ भयौ ॥
संतोषौ ईश्वर यों कहै । माँगि राइ जो तो मन रहै ॥ ३१ ॥
जो तैं साइं कियौ पसाउ । तबहि रूद्र सौं माँगौ राइ ॥
यह वरु मोकौं देउ गुसाँइ । नारि जन्म न कबहू पाँइ ॥ ३२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईश्वर ताहि विहँसि वर दियौ । बहुरि पुरुष तिवई तैं भयौ ।।
अश्वमेध फल ताछिन लह्यौ । राम भरथ लछिमन सो कह्यौ ।। ३३ ।।
मंत राम कौ भयौ प्रमान । रिषि आनै बैठारि विमान ।।
वेदी कुंड कियौ तहँ थंभु । भये तिसाल जज्ञ आरंभ ।। ३४ ।।
विधि कर तव मेलौ यव रासु । कुँअर सत्रुधन राख्यौ तासु ।।
छोहिनि त्रय चतुरंगिनि संग । सव दल भयौ अश्व के संग ।। ३५ ।।

× × × ×

तौ निज धरती निग्रह मोहि । और कहा आभारौं तोहि ।।
जै जै कार अकासहिँ भयौ । देखत सभा व्यौंर हौ गयौ ।। ३९ ।।
कनक सिँघासन सहित वईठ । सकल लोग तिन्ह तिवई दीठ ।।
तिहि सोता बैठारी छोरि । व्यौर पूर तहँ गए बहोरि ।। ४० ।।
सभा माँझ कोलाहल भयौ । कोप राम कर धनुहर लयौ ।।
दीसौ जानि रिसानौ काल । अगनित बन जारौं पाताल ।। ४१ ।।
घर आनौ जानकी वहोरि । नाग लोक सर घालौं फोरि ।।
तव अकास भाषा उच्चरी । सिरी राम तुम त्रिभुवन बरी ।। ४२ ।।
अव पताल जनि घालै मार । जन भूलै तो आप सम्हार ।।
बैठौ राज अजुध्या करै । छिनकु न ताहि सिया बीसरै ।। ४३ ।।
राम जु जोधा जित पाठए । ता सिख दैन नगर पुर गए ।।
आइसु गर्भ कहौ सुनि राम । नगर बसाउ पुत्र के नाम ।। ४४ ।।
बहुत तुम्हारी कीरति होइ । पाछैं कंदल करै न कोइ ।।
बात रिषीस्वर की मन धरै । राम तिलक राउन कौ करै ।। ४५ ।।
रामचंद्र पुत्रन के नाम । नगर बसाए राजा राम ।।
पर्व द्यौस जे बन तर गये । देवन तवहि दूत पठवये ।। ४६ ।।
तिन भेंटे रघुनंद नरेस । बूझी कुसल कहौं संदेस ।।
कहियौ दूत ब्रह्म पठवयौ । वचन प्रमान तिहारौ भयौ ।। ४७ ।।
ग्यारह सहस वर्ष बलवंड । कियौ राज पुहुमी नव खंड ।।
अब जनि रहौ दूत यो कह्यौ । जो तुम पृथिवो चाहौ रह्यौ ।। ४८ ।।
नातरु स्वर्गहिँ धारौ पाँइ । समदि मोहिँ नाकरु विसमाइ ।।
ता सह राम प्रमानौ कह्यौ । आऊं स्वर्ग न चाहौं रह्यौ ।। ४९ ।।
तुम जनि देव करौ संदेहु । सोई करौ जु आइसु देहु ।।
कहै दूत ज्यों हंसैं न लोग । येक संदेस निनारे जोग ।। ५० ।।

 0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीजौ तहाँ जो आवै कोइ। राजा जीव बिनासै सोइ ॥
रामजु कहौ दूतकौ कियौ। लखन कुमारहिँ आयसु दियौ ॥ ५१ ॥
भीतर कोउ न आवन लहै। मारौं जीव राम यों कहै ॥
पौर रह्यौ लछिमन सिर नाइ। दुर्वासा रिषि पहुँच आइ ॥ ५२ ॥
कहो रिषोस्वर वेगै काम। लछिमन मोहिँ मिलावहि राम ॥
मन महँ लछिमन कियौ विचार। जो न दैउँ रिषि कहँ पैसार ॥ ५३ ॥
तो राघौ कहँ कहै सराप। बिनुसै काज होइ मुहिँ पाप ॥
अैसौ सोच गयौ सो तहाँ। राजदूत सों बातैं जहाँ ॥ ५४ ॥
मन महँ राघौ उठे रिसाइ। दुर्वासा भैटियो बुलाइ ॥
कोपौ दूत सो बातैं कहै। राजा विलख बदन हो रहै ॥ ५५ ॥
लछिमन दौरि गहे ता पाँइ। सारौ मोहिँ वचन जनि जाइ ॥
भैया वध के पापहिँ डरौं। रामचंद्र लछिमन पहँ कह्यौ ॥ ५६ ॥
नाइ सीस सो सरजू गए। छोड़ सरीर स्वर्ग आरुए ॥
दुहूँ पुत्र कहँ दीनौ राज। आये आप देस दल साज ॥ ५७ ॥
दुहूँ छत्र सिंधासन दियौ। पुनि अभिषेक पुरोहित कियौ ॥
पाइब लाख सहस मय मंत। आठ सहस रथ सजे तुरंत ॥ ५८ ॥
असी सहस हय वर निर्वान। कनक रतन ते कसे पलान ॥
छोहनि दस दीनौ ता साज। सोंपौ राम कुसहिँ दै राज ॥ ५९ ॥
लव कहँ दीनौ सरजू पार। औरउ भास्यौ न्याइक सार ॥
मधुवन कहँ जावन पाठए। कुँवर बुलाय सत्रुघन लए ॥ ६० ॥
नमस्कार राम कहँ कियौ। हँसि राघौ अंकौ भरि लिगौ ॥
कहै राम बोल्यौ ईहि काज। सौपौं तोहिँ आपुनौ राज ॥ ६१ ॥
अब हौं ब्रह्मा लियौ बुलाइ। पुहुमी वीर रहन क्यों जाइ ॥
यहै बचन कहि राघौ रह्यौ। वहुरौ बचन विभीषन कह्यौ ॥ ६२ ॥
राखस कपि जेते रघुनाथ। ते सव चलैं तिहारे साथ ॥
रिषभ विभीषन अरू हनुमंत। रीछ राउ राजा जामवंत ॥ ६३ ॥
ये चारौं पृथिवी महँ रहै। औरै चलैं राम यों कहै ॥
जौलौं धरनि नाग के सीस। जौलौं चंद्र सूर्य ग्रह दीस ॥ ६४ ॥
जौलौं ध्रुव ऊवै आकास। तौलौं राज करौ धर पास ॥
जामवंत तब लियौ बहोर। कही बात नियरैं ढिग वोर ॥ ६५ ॥
सुनै बचन सुख भयो तुरंत। सौसु नाइ पग पर्से जांमवंत ॥
दुविद मयंदर विभीषन राइ। ये चारौं राखे समुझाइ ॥ ६६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और सबन लै स्वर्ग समाह्यौ। नगर समेत विष्नु कवि कह्यौ ॥ ६७ ॥

× × × ×

मन थिर बुद्धि सुनै जो कोइ। ता कहँ व्याधि पीर ना होइ ॥
अरसठ तीरथ कौ फल लहै। विष्नुदास निज गुरु वर कहै ॥ ७० ॥

इति श्री रामायने उत्तरकांडे रामचंद्र स्वर्ग आरोहनो नाम सर्गः ॥

पुष्पिका

जद्रसं पुस्तकं दृष्ट्वा तद्रसं लिखितं मया। यदि शुद्धं अशुद्धं वा मम दोषो न दीयते। शुभं मंगलं ददात्। संवत् १९२० प्रथम श्रावणे कृष्णे पक्षे तिथौ ४ शनिवासरे तदिम् समाप्तम्। आदि पथ रिया जान जँ जै गनकुरी सुषाम। श्री महाराज कोमार कहि भूपसिंघ तस ना म शुभं भवतु।

—o—

State Museum Library Lucknow 4314

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

4314

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड
इलाहाबाद